



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

 KAPWING

विक्रय पुस्तके—वैद्यक ग्रन्थ ।

लेखक	नाम.	कि०	रु० आ०
कङ्कदत्त—भाषाटीका	सहित । इसमें और चिकित्साओंके अलावा		
रैल साधनादि प्रकार बहुत अच्छा लिखा है	...	३-०	
चरकसंहिता—टकसाल निवासी वैद्यकशानन पं० रामप्रसाद			
वैद्योपाध्यायकृत प्रसादनी भाषाटीकासहित । चरकके			
आठोंस्थान एकसे एक अर्पूर्व होनेपर भी “चिकित्सास्थान”			
तो आदितीय है वैद्यमात्रको यह ग्रन्थ अवश्य संप्रह करनाचाहिये	९-०		
तिव्रअकवर—हकीम अकवर अलीखाँ लिखित तथा देवीप्रसाद-			
छत हिन्दी भाषामें धनुवादित । इसमें—सब्वीस अध्यायोंमें			
सम्पूर्ण रोगोंका लक्षण और यूनान मतसे एक २ रोगोंपर			
सैकड़ों औपधोंका उपचार वर्णित है	७-०
त्रिशती—५० वैद्यवल्लभमद्विरचित संस्कृतटीका—तथा भाषा-			
टीकासहित	१-२
वृहन्निवण्टुरत्नाकर—प्रथम भाग ३] तथा द्वितीय भाग...			३-८
वृहन्निवण्टुरत्नाकर—तृतीय भाग । (विविध रोगोंकी चिकि-			
त्साका संप्रह)	३-८
वृहन्निवण्टुरत्नाकर—चौथा भाग । (चिकित्साग्वण्ड)		२-८
वृहन्निवण्टुरत्नाकर—पञ्चम भाग । (रोगोंका कर्मविधक)...			९-८
वृहन्निवण्टुरत्नाकर—पठमाग । (रोगोंका चिकित्साभाग)			४-८
वृहन्निवण्टुरत्नाकर—सप्तम अष्टम भाग । संस्कृत, हिन्दी,			
बँगला, मराठी गोर्जरी, द्वाविड़ी, आदि भाषाओंमें सर्वे			
औपधोंके नाम और गुणोंका वर्गन औपधियोंके चित्रोंसमेत.			८-०
पुस्तक मिलनेका ठिकाना—उत्तर ३०-४			

खेमराज श्रीकृष्णदास,
“श्रीब्रह्मदेव्यर” स्टीम-प्रेस-मुंबई.

॥ श्रीः ॥

भूमिका.



कोटिशः धन्यवाद हैं, उस सर्व शक्तिमान् पूर्णत्रिल अविनाशी श्रीकृष्णचंद्र देवकीनन्दनको कि जिनकी अतुल कृपासे भावप्रकाश निघण्टु सटिष्पणी छप- कर तथ्यार होगया है। आज कल आयुर्वेदिक चिकित्साकी अल्पज्ञता तथा समेयके प्रभावसे चिकित्साशास्त्रमें बड़ी २ कठिनाइयें प्राप्त होगई हैं, जिनका यदि पूर्ण रूपसे वर्णन किया जाय तो एक इतना ही पुस्तक और लिखा जासकता है। उन कठिनाइयोंमें से सबसे बड़ी और आयुर्वेदिक चिकित्सासे सर्व साधारणको वृणाजनक कारणरूप कठिनाई एक मात्र शास्त्रोक्त औषधियोंका समझमें न आना, और अमसे पड़जाना है, क्योंकि हर एक औषधिका पहिले तो यथार्थ रूपसे पहिचानना कठिन होगया है, दूसरा यह भिन्न २ स्थानोंमें भिन्न २ नामोंसे पुकारी जाती हैं, जिससे सर्व साधारण तो क्या सामान्य वैद्य भी चकरा जाते हैं। और कई वैद्य भी विहित औषधिके स्थानमें विपरीत औषधि वरत लेते हैं, जिससे लाभके स्थानमें परम हानि होती है, और हानि होनेसे लोगोंका विश्वास उठता जाता है। इस त्रुटिको देख, चिरंजीव पं० बखशीराम वैद्य मैनेजर आयुर्वेदिक औषधालय सूत्रमंडी लाहोरने प्रार्थना की; कि कोई ऐसा उपाय कृपा करके निकालें कि जिससे औषधियोंका विज्ञान हो जाय।

उक्त वैद्यजीकी प्रार्थनाको स्वीकार कर अतीव परिश्रमद्वारा इस पुस्तकमें प्रत्येक औषधिके भिन्न २ नाम, जो भिन्न २ देशोंमें पुकारे जाते हैं २९ वर्ष के तजुरबेके अनंतर लिखे हैं, इस पुस्तकमें टिष्पणीके रूपमें प्रत्येक पृष्ठके नीचे हर एक औषधिका अंक देकर उसका हिन्दी नाम (जो पश्चिमोत्तर प्रदेशमें पुकारा जाताहै,) पंजाबी नाम, (जो पंजाबप्रांतमें कहलाता है) फारसी नाम, (यूनानियोंने जो नाम नियत किया है) बङ्गाली नाम,

(जो बङ्गालप्रान्तमें प्रसिद्ध है) लिखा है । और यथा लाभ झंगरंजा नाम भी लिख दिये हैं । और मूलमें भी यथाशक्ति न्यूनता पूर्ति की गई है । इसके अतिरिक्त एक परिशिष्टमें उन औषधियोंकी नामावाली दी है, जो निघण्टुके मूलमें नहीं आई । यह परिशिष्ट पहिले संस्कृत फिर भाषाके रूपमें है और फिर भाषा नामोंका संस्कृतमें अनुवाद किया है जिससे यह पुस्तक ३०० पृष्ठोंसे भी अधिक होगई है । और हमारी सम्मतिसे निस्सदेह अब पूर्वोक्त त्रुटियोंको पूर्ण करनेके योग्य है ।

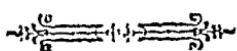
इस पुस्तक के छापनेमें मेरे परम मित्र श्रीयुत विचारत्न पण्डित भानुदत्तजी वी० एम, परमोदार सर्वविद्या विभूषित पण्डितवर गवर्नर्मेन्टपेनशनर, संस्कृताध्यापक एचीसन चीफ़स कालिज लाहौरने परोपकार दृष्टिसे प्रकाशित करनेका भार अपने ऊपर लेकर उत्तम, मोटे, सौंर चिकने कागज पर निजव्ययसे छपवाया है, और सर्व साधारणके सुभीतेके लिए ३०० पृष्ठसे भी बड़ी पुस्तकका मूल्य केवल १॥) रखया रखखा है और पूर्फ संशोधन करनेमें भी सहायता प्रदान की है जिससे मैं उनका अतीव कृतज्ञ हूँ ।

चंतमें विद्वज्जन मंडलीकी सेवामें सविनय निवेदन है, कि इसके प्रचार, और विशेष करके आयुर्वेदिक विद्यार्थियोंको इसके पढ़नेका उद्योग दिलाकर प्रथकर्त्ताके उत्साहको वर्धन करें ।

आपका-

ए० नंगाविष्णु धार्म्मि वैद्यराज.

द्वितीयावृत्तिकी भूमिका ।



अथर्ववेदमें देव ग्रहाद्वूपजन, प्रायश्चित्त, उपवास आदिके अनन्तर देहको आरोग्य रखनेके लिये चिकित्साका उपदेश किया है । द्रव्य, गुण, क्रमके विचार करनेसे आरोग्य लाभ होताहै । किस द्रव्यमें क्या गुण है उसकी इतिकर्तव्यता किस प्रकारसे है इतना जानलेना सभीको आवश्यक है । बात पित्त कफ़ अथवा इनके संयोगसे हुई प्रकृतियोंके अनुकूल पदार्थोंके सेवन करनेसे देहमें रोग नहीं होसकते कदाचित् विरुद्ध पदार्थोंके सेवनसे रोग हो भी जावें तो सुचिकित्सासे शीघ्र नष्ट होसकते हैं । यही सब विचार करके आयुर्वेदतत्त्वज्ञ भावमिश्रने अपने निर्मित भावप्रकाशमें नाना प्रकारके अन्न, शाक, फल, मूल, जल, दही, दूध, शर्करा आदि नित्यके उपयोगी प्रायः सभी पदार्थोंके गुण अवगुण कहे हैं । उसी भावप्रकाशमें संग्रहकर यह भावप्रकाशनिष्ठण्टु बनाया गया है । यह ऐसा उत्तम निष्ठण्टु बना है कि धैर्य तथा अन्य आयुर्वेदप्रेमी मनुष्योंने इसको अत्यन्त आदरसे पठन पाठन आदिकार्यमें ग्रहण किया है । इसके द्वारा देशवासियोंका जो उपकार हुआ है इसके लिये उत्तरैव्यराजके लोग अत्यन्त उपकृत और ऋणी हैं । ऐसे^२ सर्व प्रिय—सर्वमान्य निष्ठण्टुका सर्वत्र सुलभ प्रचार हो इस इच्छासे हमने इसकी यह द्वितीयावृत्ति अपने “श्रीवेङ्कटेश्वर” स्तीम प्रेसमें मुद्रित की है पूर्वावृत्तिमें जो दोष मुद्रण होते समय होगये थे वह सब पण्डितों द्वारा शुद्ध कराकर यह द्वितीयावृत्ति प्रकाशित की है । आशा है कि आरोग्यको सबसे अधिक लाभ समझनेवाले नीतिज्ञ पुरुष तथा आयुर्वेदविद्याप्रेमी इसका संग्रह कर लाभ उठावेंगे ।

खैसराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेङ्कटेश्वर” यन्त्रालयाध्यक्ष,
बद्दलद्वई ।

॥ श्रीः ॥

अथ भावप्रकाशनिष्ठुस्थ वर्गोंकी सूची ।

पृष्ठ	वर्ग	पृष्ठ	वर्ग ।
१	हरीतक्यादिवर्ग ।	१८३	दधिवर्ग ।
३४	कर्पूरादिवर्ग ।	१८९	तत्रवर्ग ।
४९	गुड्ड्यादिवर्ग ।	१८७	नवनीत वर्ग ।
८७	पुष्पवर्ग ।	१८७	बृतवर्ग ।
९९	फलवर्ग ।	१८९	मूत्रवर्ग ।
११३	वटादि वर्ग ।	१९०	तैलवर्ग ।
१२२	धातुवर्ग ।	१९२	मधुवर्ग ।
१४६	धान्यवर्ग ।	१९९	इक्षुवर्ग ।
१५५	शाकवर्ग ।	१९८	संधानवर्ग ।
१६९	वारिवर्ग ।	२०१	द्रव्यपरीक्षावर्ग ।
१७८	दुग्धवर्ग ।		

अथ भावप्रकाशनिष्ठुस्थ सर्व औषधियोंकी अकारादिसूची

पृष्ठ	नाम औपधी.	पृष्ठ	नाम औपधी.
५७	अकरकरा ।	१०	अजवायन ।
५७	अक्कदोनों ।	१९२	अतसी ।
११०	अखरोट ।	२७	अतिविपा ।
६३	अगस्तपुष्प ।	६६	अतिवला ।
१६१	अगस्तशाक ।	६४	अदरक ।
३६	अगुरु ।	७९	अस्थिसंहारी ।
६२	अग्निमय ।	१०७	अनार ।
१०	अजमोदा ।	७७	अनन्तमूल ।

औषधियोंकी अकारादिसूची ।

(५)

पृष्ठ नाम औषधी ।	पृष्ठ नाम औषधी ।
६२ अपराजिता दोनों ।	१६६ आलु ।
७९ अपामार्ग ।	११८ इंगुदी ।
३० अफीम ।	६९ इजल ।
१३३ अत्रक ।	७६ इटसिट ।
११० अमृतफल ।	१९९ इक्षु ।
११७ अरिष्टक ।	११७ इरिमेद ।
२०६ अनेकार्थ वर्ग ।	४१ इलाची दोनों ।
११२ अम्लवेतस ।	२१ इंद्रयव ।
८२ अर्कपुष्पी ।	१११ इवली ।
११६ अर्जुन ।	११४ उडुंबर ।
८२ अलंबुषा ।	१४९ उड्ड (मांह)
२४ अश्मभेद ।	१७३ उद्धिद जल ।
९२ अशोक ।	१४२ उपरत्न ।
११३ अश्वत्थ ।	१४९ उपविष ।
११४ अश्वत्थभेद ।	१३२ उपरस ।
७१ अश्वगंध ।	४४ उशीर ।
१६ अष्टवर्ग ।	१८० ऊँटनी का दूध ।
६६ अंकोटवृक्ष ।	१८ कह्वि ।
१९ अम्लतास ।	१७ क्रष्ण ।
६२ अम्लतास पुष्प ।	४९ एकांगी ।
६७ अंबकी गुठली ।	५६ एरड
८० अमरवेल ।	६८ एरका ।
६७ अंबाडा ।	४८ एलवालुक ।
६ आमला ।	७३ ऐन्द्रवारुणी ।
१९ आम्रफल ।	३२ औद्धिदलवण ।
	१३८ कूपर्दिका ।

(६)-

भावभक्ताशनिवण्टुस्थ-

पृष्ठ नाम औपधी	पृष्ठ नाम औपधी
२३ ककड़ासिंगी ।	१२० करीर ।
८४ ककडै ।	१६३ करेला ।
१६९ ककोडेशाक ।	१०४ करौंदी ।
६१ कचनार ।	६३ करंजुवा ।
४९ कचूर ।	१६२ ककड़ी (तर) ।
२६ कचूर हलदी ।	१९१ कलाय ।
६९ कटतृण ।	११ कलोंजी ।
२१ कटभी ।	१६८ कसेरु ।
९२ कटसरेया ।	१६० कसौंदी ।
९७ कटहड ।	१९४ कसुमबीज ।
१०९ कटाई ।	३४ कस्तूरी ।
२० कटुकी ।	१३९ कंकुष्ठ ।
१६२ कटुतुंबी ।	४७ कंकोल ।
१०८ कतकफल ।	१६६ कंटकारीशाक ।
६० कदंबपुष्प ।	१९३ कंगनी ।
१६७ कदलीकंद ।	३९ कस्तूरिदाना ।
१६१ कदलीपुष्प ।	५४ कंटकारिद्रव्य ।
९९ कनेर ।	१६६ कंदशाक ।
६४ कपिकच्छु ।	१६४ कंदूरी ।
१०२ कपित्य ।	१९ कंवीला ।
३४ कदूर ।	७९ काकजंघा ।
१११ कमरख ।	७९ काकतासा ।
८७ कमलपुष्प ।	७९ काकमाची ।
१९७ करमशाक ।	१७ काकोली ।
६९ करिहारी ।	

पृष्ठ	नाम औपचारी	पृष्ठ	नाम औपचारी
६७	कार्पास ।	१०६	कुमुदवीज ।
१५७	काढशाक ।	१८८	कुमुदिनी ।
१४४	कालकूट विष ।	१९१	कुलत्थ ।
११	काला जीरा ।	१४	कुलंजन
१३८	काली मृतिका ।	६८	कुशा ।
९९	कालिंद ।	२९	कुसुमा ।
६८	काश ।	८६	कुकुंदर ।
१९६	काषेशु ।	४२	कुंकुम ।
९१	काश्मरी ।	९२	कुंदपुष्प ।
१२९	कांसी ।	४०	कुंदरु ।
१३८	कासीस ।	१२०	कूटशालमली ।
१९८	कांजी ।	१७४	कूपजल ।
२४	कायफ़ल ।	१६१	कूष्मांड ।
१२७	कांतलोह ।	१६२	कूष्मांडी ।
२०	किरायता ।	७७	कृष्णसारिवा ।
११७	किक्र ।	९१	केउडा ।
१२७	किट्ट (मंडूर) ।	४८	केउटीमोथा ।
९१	किंकरात ।	१७९	केदार जल ।
११०	विंव ।	१६८	केरभाकंद ।
१०८	किशमिश ।	९८	केला ।
७६	कुआर गन्दल ।	१९४	कोदों ।
६३	कुटज ।	१०८	खूर्जर ।
२३	कुठ ।	१११	खट्टियां जंभीरी ।
१०२	कुपील ।	१३८	खपरियां ।
९३	कुब्जक ।	१००	खरबूजा ।

पृष्ठ नाम औषधी	पृष्ठ नाम औषधी
३१ खसखास ।	१३७ गेही ।
१९७ खंड ।	१६० गोभी ।
१०६ खिरनी ।	४३ गोरोचन ।
१०० खीरा ।	१५२ गोरीसरों ।
१४ खुरासानी वच ।	९९ गोक्षुरु ।
११ खुरासानी जवायन ।	४६ ग्रन्थिपर्ण ।
१८१ खोया ।	८४ घगरवेल ।
१९६ गन्ने का रस ।	१६३ घीया ।
९ गजपिप्पली ।	१८७ घृत ।
५० गिलो ।	१८० घोड़ीका दुग्ध ।
१६० गिलोशाक ।	२७ चकमद ।
१९४ गवेषुक ।	३२ चणकाम्लक ।
७० गंददूर्वा ।	१५० चणे ।
१३२ गंधक ।	१६० चणेका शाक ।
३६ गंधमार्जार ।	४२ चतुर्जाति ।
१६७ गाजर ।	२११ चतुर्थक ।
३८ गुगुल ।	११२ चतुराम्ल ।
१९७ गुड ।	९ चतुरूपण ।
९३ गुलहुपहरिया ।	१३७ चुंवक ।
९३ गुलतुर्रा ।	९ चवक ।
१४२ गुलियां (मुंगा)	१९८ चंचुशाक ।
६४ गुंजा (रतियां)	३१ चन्दन तीनों ।
६८ गुंदा ।	१३ चंद्रशूर ।
११४ गुलब ।	९० चंद्रा ।
८३ गुमा ।	१९८ चांगेरी ।

आँषधियोंकी अकारादिसूची ।

(९)

पृष्ठ नाम औषधी	पृष्ठ नाम औषधी
१२३ चांदी ।	१६९ जलवर्ग ।
१६ चारदाना ।	६९ जल वेतस ।
१६३ चिंचिंडा ।	१२१ जलशिरीह ।
११ चिटाजीरा ।	७४ जवांह ।
८ चिटी मिरच ।	१२९ जस्त ।
९९ चिभड ।	१२१ जंडी ।
१०४ चिरौजी ।	१०३ जंबूफल ।
९ चित्रा ।	४० जायफल ।
३४ चीनिया कपूर ।	४० जावित्री ।
१९३ चीना ।	१६६ जिसीकन्द ।
६९ चीत्ह वृक्ष ।	११८ जंगनी ।
३३ चुक्र ।	१७ जीवक ।
१९८ चुक्रिका ।	९६ जीवनीयगण ।
१९७ चुलाईशाक ।	११८ जीयोपोता ।
२३ चोक ।	९० जूही ।
१४ चोबचीनी ।	३३ जौखार ।
१७४ चोहेका पानी ।	१६९ टिण्डे ।
१११ चौहार निम्बू ।	३७ तेगर ।
४४ छलीरा ।	४१ तज ।
१८९ छाछ ।	१७४ तडागजल ।
१८० छागी दुग्ध ।	१७६ तस्तजल ।
१०८ छुहारा ।	४२ तमालपत्र ।
१६७ छोटी मूली ।	१६ तवाशीर ।
१७८ जलदोष निवारण ।	१७९ तंडुलोदक ।
१७९ जलपानवित्रि ।	१०१ तालवृक्षफल ।

पृष्ठ नाम औपवी	पृष्ठ नाम औपवी
१२८ तारमाखी ।	१८३ दधिवर्ग ।
७९ तालमखाना ।	४२ दालचीनी ।
१२४ तांबा ।	२६ दारु हलदी ।
९० तांबूल ।	१७८ दुग्धवर्ग ।
१२२ तिनिशबृक्ष ।	७४ दुरालना ।
७२ तिरीवी ।	८२ दोधक ।
१९३ बिल ।	६९ दूर्वा ।
३ त्रिफला ।	३७ देवदारु ।
११८ तुणीबृक्ष ।	२०१ द्रव्य पर्णक्षा ।
१९२ तुवरी ।	५९ घतूरा ।
९४ तुलसी ।	११३ घनिश्चान् ।
१७१ तुपारजल ।	१२० घन्वंग ।
१६ तुंबरफल ।	६१ घरेका ।
१०७ तूत ।	१४६ घान्यवर्ग ।
२२ तेजबल ।	१२० घामन ।
१९० तैलवर्ग ।	१७० घाराजल ।
१६३ तोरी वडी । (कढ़ी)	१८० घारोण्ड दुग्ध ।
८ त्रिकटु ।	२४ घावेके पुष्प ।
२०९ त्र्यर्थक ।	८९ नक्तिकन्ती ।
४२ त्रिजात ।	४२ नख ।
७८ त्रायमाण ।	६७ नलः ।
२८ थोम (रसोन) ।	१७३ नदीका जल ।
१९३ दड़ौ ।	६९ नरेल ।
९४ दमनक ।	१९९ नवीन धान्य ।
१३ दशमूल ।	१८७ नवनीत ।

ओौषधियोंकी अक्षारादिसूची ।

(११)

पृष्ठ नाम औषधी	पृष्ठ नाम औषधी
४९ नलिका ।	४९ दर्पटी ।
२२ नाकुली ।	१६० पित्तपापडेका शाक ।
४२ नागकेसर ।	११४ पुक्ष ।
८९ नागदमनी ।	११९ पलाश ।
१२९ नाग । (सिक्का)	७१ पाठा ।
७९ नागपुष्पी ।	११२ पंचाम्ल ।
६६ नागबला ।	१० पंचकोल ।
१०२ नारंगी ।	९९ पंचमूल ।
१११ निम्बू ।	९२ पाटल ।
१७३ निर्जरजल ।	८० पतालगरुडी ।
६० निम्ब ।	१६९ पानीयवर्ग ।
७३ नीली ।	११३ पारसपिष्ठल ।
६९ नीलद्वार्ण ।	१३१ पारा ।
१६४ नीवार ।	१०६ पालेवत ।
४३ नेत्रवाला ।	६१ पारिभद्र ।
२१३ परिशिष्ट ।	१५७ पालक शाक ।
४६ पलाशी ।	१२९ पितल ।
१५७ पटुशाक ।	१६६ पिण्डार ।
१६० पटौल ।	८ पिष्पली मूल ।
३६ पतङ्ग ।	७ पिष्पली ।
२७ पद्मवृक्ष ।	१०८ पिण्डखर्जूर ।
८७ पद्मिनी ।	११० पीछु ।
१४१ पत्ता ।	१४१ पुखराज ।
१०६ पसष्क ।	८९ पुदीना ।
२९ पलांडु ।	२३ पुष्कर मूल ।

पृष्ठ नाम औषधी	पृष्ठ नाम औषधी
१६१ पुष्पशाक ।	८६ वर्बरी ।
८७ पुष्पवर्गः ।	६६ बला ।
५३ पृथ्विपर्णी ।	१०७ बहुआर ।
१६१ पेठा ।	२१२ वहर्य शब्द ।
१९६ पोई शाक ।	५ वहेडा ।
३० पोस्त ।	१०३ वदर ।
७७ प्रसारणी ।	१४३ वत्सनाम ।
२०३ प्रतिनिधि ।	१०९ वादाम ।
१४३ प्रदीपन ।	८० वन्दा ।
४९ प्रपौंडरोक ।	९३ वंधूक पुष्प ।
१७७ प्रशस्त जल ।	१९६ वायूशाक ।
४६ प्रियंगू ।	९२ वाणपुष्प ।
११४ फगवाडा ।	१३७ वालु ।
१३६ फटकडी ।	११० विजौरा ।
१६१ फलशाकानि ।	१०१ विल्वफल ।
१०९ फूलमखाना ।	५१ विल्ववृक्ष ।
९० वकपुष्प ।	४४ वीरण ।
६१ वकायण ।	७४ वृद्धदारक ।
९० वकुल ।	५३ वृहत्पंचमूल ।
११३ वट वृक्ष ।	११२ वृक्षामूल ।
८१ वटपत्री ।	१८ वृद्धी ।
९८ वडहर ।	१३९ वोल ।
१६४ विंगत ।	१४४ व्रहपुत्र ।
१२१ वरना ।	८३ व्रहमंडूकी ।
	८३ व्राही ।

पृष्ठ	नाम औषधी	पृष्ठ	नाम औषधी
१४६	न्रीहिघन्य ।	९४	मरुवकः ।
२४	भांडंगी ।	९१	महिका पुण्य ।
२९	मल्हातक ।	१५०	मसर ।
३०	भंग ।	६१	महानिव ।
७८	भंगरा ।	६६	महावला ।
२१८	भाषा परिशिष्ट ।	१४	महाभरी वचा ।
१२२	भूमीसहा ।	१७	महामेदान ।
८२	भूम्यामलकी ।	१७९	महिषीदुग्ध ।
६९	भूस्तृण ।	२२	माचिका ।
२०३	भेषजसंकेत ।	९१	माधवी लता ।
१८०	भेडीदुग्ध ।	१६७	मानकंद ।
११९	मोजपत्र ।	८४	मार्किङ्किका ।
१८२	मोजनांते दुग्धपान ।	२२	मालकंगुनी ।
८१	भोयेभुरक (शंखपुष्पी) ।	९६	माषपर्णी ।
१७३	भौमजल ।	१६२	मिष्टुंबी ।
२६	मंजीठ ।	८	मिरच ।
८१	मत्स्याक्षी ।	१९८	मिशरी ।
२१	मयनफल ।	९६	मुद्गपर्णी ।
२००	मद्य ।	७४	मुण्डी दोनों ।
१९	मुलठी ।	४९	मुस्तक ।
१९२	मधुवर्गः ।	१४९	मुंगी
१४१	मधूक ।	१०८	मुतका ।
१३६	मनशिल ।	६८	मुंज ।
८६	मयूरशिखा ।	९३	मुचकुंद ।

पृष्ठ नाम ओपधी	पृष्ठ नाम ओपधी
३९ सुष्क दाना ।	१९६ राव ।
३१० मकुष्ट ।	१८४ रात्रौ दधि निषेध ।
४३ सुष्क वाला ।	३७ राल ।
७८ सूर्वा ।	२१ रास्ता ।
१८९ सूतवर्ग ।	६९ रोहिणी ।
१६६ सूलकनाल ।	१३९ रत्न ।
१९९ सूद्धी ।	४६ रेणुका ।
३० सूसली ।	११७ रोहेडा ।
८६ सूसाकर्णी ।	४१ लवंग ।
१६८ सृणालशाक ।	१०४ लवली ।
१३ मेर्थी ।	६६ लक्ष्मणा ।
१७ मेदा ।	२९ लाख ।
७९ मेढासिंगी ।	१३७ लाजवर्द ।
११९ मोचरस ।	१४० लाल ।
१२१ मोती ।	८२ लाजवंती ।
१५९ यवानीशाक ।	१८ लामजक ।
३६ रक्तचंदन ।	२८ लोत्र ।
१४६ रक्त धान्य ।	१९८ लोनीशाक ।
१५२ रक्त सरसों ।	१२६ लोहा ।
१६६ रतालु ।	१४ वचा ।
१५० रवांह ।	१७० वर्पाजल ।
२६-रसौत ।	१२६ वंग ।
११३ राई ।	८१ वंशपत्री ।
६३ राजान्न ।	

पृष्ठ नाम औषधी	पृष्ठ नाम औषधी
६७ वंशवीज ।	१५९ शितिवार ।
६७ वंशांकुर ।	११४ शिरीष ।
२७ वाकुची ।	१३० शिवाजीत ।
१७४ वापीजल ।	४० शिलारस ।
१९ वायविडंग ।	१३३ शिंगरफ ।
७० वाराही कंद ।	११४ शिंशपा ।
८९ वार्षिकी फूल ।	७७ शुक्ल कृष्ण सारिवा ।
६० वांसा ।	१४३ शृंगक विष ।
१४३ विष ।	८९ शैवाल ।
८९ वेळंतरु ।	१९४ श्यामाक ।
१०९ विकंकतफल ।	९४ श्वेतकंटकारी ।
११६ विजयसार ।	६९ श्वेत दूर्वा ।
३१ विडलवण ।	१० षड्युण ।
७० विदारीकंद ।	१४७ षष्ठिका ।
१९८ वृहद्गोनीशाक ।	१४३ सक्तुक विष ।
१४१ वैद्यर्थ ।	३३ सज्जी ।
७० शतावरी ।	१२१ सतपर्ण ।
७८ शगपुणी ।	१६ समुद्रज्ञाग ।
१९२ शहत ।	७६ सरना ।
१३९ शंख ।	१२८ सप्तोपधातु ।
३९ श्रीवास ।	१६१ सर्षपशाक ।
१२० शाखोट ।	१२० सहोडा ।
१९९ शाकर्वग ।	२०३ संयोग विरुद्ध ।
११८ शालभेद ।	१६९ संस्वेदज ।
१०१ शाल ।	६६ सहदेवी ।
१४९ शालिधान्त्य ।	१९८ संधान वर्ग ।
६३ शालपर्णी ।	६२ संभालु ।
११९ शालमली ।	३१ सांभरतसक ।

(१६) भावप्रकाशनिघण्टुस्थ—ओ० अकारादिसूची ।

पृष्ठ नाम औपधी ।	पृष्ठ नाम औपधी
१०९ सिंघाड़ा ।	८९ स्वर्ण जातिका ।
१४२ सिप्पी ।	६७ स्वर्णवल्ली ।
१५६ सील ।	१३९ हडताल ।
१३० सिन्दूर ।	४३ हीवेर ।
९३ सिंदूरी ।	१५० हरहरकी दाल ।
८६ सुदर्शना ।	१८० हरणीदुर्ग ।
१३६ सुरमा ।	१६८ हस्तिकर्णी ।
१२२ स्वर्ण ।	२२ हरीड़ ।
३७ सुहागा ।	२९ हलदी ।
६ सुंड ।	१ हरीतक्यादिवर्ग ।
३१ सेवा नमक ।	१ हस्तनीदुर्ग ।
४८ स्पृका ।	८० हंसपदी ।
१०९ सेव ।	१९ हाऊवेर ।
८९ सेवती ।	१४३ हारिद्रविष ।
३२ सौंचल नमक ।	१७२ हिमजल ।
१२८ सोनामखी ।	१३ हिंगु ।
८० सोमलता ।	८१ हिंगुपत्री ।
१६१ सौभांजनपुष्पशाक ।	१४० हीरा ।
१६४ सौभांजन फल ।	१३८ हीराकसीस ।
१४३ सौराष्ट्रिकविष ।	१४४ हालाहल ।
१३८ सौराष्ट्री ।	१९९ हुलहुल ।
१२ सोये ।	३३ क्षारद्रव्यं, त्रयंच ।
१२ सौंफ ।	३३ क्षाराष्ट्रक ।
८८ स्थलकमल ।	१७ क्षीरकाकोली ।
९२ स्योनाक ।	११९ क्षीरवृक्षपंचक ।
२०२ स्वभावसे हित अहित ।	१९३ क्षुद्रवान्य ।
९१ स्वर्ण केतकी ।	

इत्यकारादिसूची समाप्ता ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

भावप्रकाशनिधण्टुः । टिप्पणीसहितः ।

भिषजामुपकाराय निधण्टोरुपरि कृता ।
टिप्पणी वैद्यराजेन गंगापूर्वकविष्णुना ।

अथ प्रथमं हरीतक्या उत्पत्तिर्नाम लक्षणं गुणाश्चः ।
दक्षं प्रजापतिं स्वस्थमश्विनौ वाक्यमूच्यतुः ।
कृतो हरीतकी जाता तस्यास्तु काति जातयः ॥ १ ॥
रसाः कति समाख्याताः कति चोपरसाः स्मृताः ।
नामानि कति चोक्तानि किंवा तासां च लक्षणम् ॥ २ ॥
के च वैर्णा गुणाः के च का च कुत्र प्रयुज्यते ।
केन द्रव्येण संयुक्ता कांश्च रोगान्वयपोहति ॥ ३ ॥
प्रश्नमेतं यथा पृष्ठं भगवन्वक्तुमर्हसि ।
अश्विनोर्वचनं श्रुत्वा दक्षो वचनमब्रवीत् ॥ ४ ॥
उत्पत्तिः ।

पपात विन्दुर्भेदिन्यां शक्रस्य पिबतोऽमृतम् ।

ततो दिव्या समुत्पन्ना सतजातिर्हरीतकी ॥ ५ ॥

१ रसाः मुख्यरसाः तुवरादयः । २ उपरसाः गौणरसाः कट्टादयः
३ वैर्णः पीतादयः जीवन्ती स्वर्णवर्णिनीत्यादि । ४ लवणेन कफमित्यादि
५ अश्मरीं मूत्रकुच्छ्रमित्यादि । ६ दिव्या हरीतकी ।

नाम ।

हरीतकयभयः पथ्या कायस्था पूतनामृता ।
हैमवत्यव्यथा चापि चेतकी श्रेयसी शिवा ॥
वयस्या विजया चापि जीवन्ती रोहिणीति च ॥ ६ ॥

जातयः ।

विजया रोहिणी चैव पूतना चामृताभया ।
जीवन्ती चेतकी चेति पथ्यायाः सत जातयः ॥ ७ ॥

लक्षणम् ।

अलाकुवृत्ता विजया वृत्ता सा रोहिणी स्मृता ।
पूतनास्थिमती सूक्ष्मा कथिता मांसलामृता ॥ ८ ॥
पंचरेखाभया प्रोक्ता जीवन्ती स्वर्णवर्णिनी ।
विरेखा चेतकी ज्ञेया सतानामियमाकृतिः ॥ ९ ॥

गुणाः ।

विजया सर्वरोगेषु रोहिणी व्रणरोपणी ।
प्रलेपे पूतना योज्या शोधनार्थेऽमृता हिता ॥ १० ॥
अक्षिरोगेऽभया शस्ता जीवन्ती सर्वरोगहत् ।
चूर्णर्थे चेतकी शस्ता यथायुक्तं प्रयोजयेत् ॥ ११ ॥
चेतकी द्विविधा प्रोक्ता श्वेता कृष्णा च वर्णतः ।
षडंगुलायता श्वेता कृष्णा त्वेकांगुला स्मृता ॥ १२ ॥
काचिदास्वादमावेण काचिद् गंधेन भेदयेत् ।
काचित्स्पर्शेन दृष्टचान्या चतुर्धा भेदयेच्छिवा ॥ १३ ॥
चेतकी पादपच्छायामुपसर्पति ये नराः ।
भिद्यन्ते तत्क्षणादेव पशुपक्षिमृगादयः ॥ १४ ॥
चेतकी तु धृता हस्ते यावत्तिष्ठति देहिनः ।

१ देश भाषा हरड़ फारसी हलेला ज़र्द । अङ्ग्रेजी मिरोबेल्न्स balloons ।

२ कृष्णा ज़ङ्ग हरड़ ।

तावत् भिद्येत् वैगैस्तु प्रभावान्नात्र संशयः ॥ १५ ॥
 तृपादिसुकुमाराणां कृशानाम्भेषजाद्विषाम् ॥
 चेतकी परमा शस्ता हिता सुखविरेचनी ॥ १६ ॥
 संतानामपि जातीनाम्प्रधानं विजया स्मृता ।
 सुखप्रयोगा सुलभा सर्वरोगेषु शस्यते ॥ १७ ॥
 हरीतकी पञ्चरसाऽलवणा लुवरा परम् ।
 रुक्षोष्णा दीपनी मेध्या स्वादुपाका रसायनी ॥ १८ ॥
 चक्षुष्या लघुरायुष्या बृंहणी चानुलोमनी ।
 श्वासकासप्रमेहार्शः कुष्ठशोथोदरकूमीन् ॥ १९ ॥
 वैसर्प्यग्रहणीरोगविवन्धविषमज्वरान् ।
 गुल्माध्मानव्रणच्छर्दिहिक्काकंठहदामयान् ॥ २० ॥
 कामलां शूलमानाहं प्लीहानं च यकृद्गदम् ।
 अश्मरीं मूत्रकृच्छ्रं च मूत्राद्यातं च नाशयेत् ॥ २१ ॥
 स्वादुतिक्तकषायत्वात् पित्तहत्कफहत्तु सा ।
 कटुतिक्तकषायत्वादम्लत्वाद्वात्तहच्छिवा ॥ २२ ॥
 पित्तकृत्कटुकाम्लत्वात् वातकृत्र कर्थं शिवा ।
 प्रभावादोषहंतृत्वं सिद्धं यत्तत्रकाश्यते ॥ २३ ॥

१ उत्पत्तिस्थानं—विध्याद्रौ विजया हिमाचलभवा स्याचेतकी पूतना सिंधौ स्यादथ रोहिणी तु विजया जाता प्रतिष्ठानके । चंपायामसृताऽभया च जनिता देशे सुराश्वैर्हये जीवन्तीति हरीतकी निगदिता सप्तप्रमेदा बुधैः ॥ १ ॥ अम्लभावाजयेद् वातं पित्तं मधुरतिक्तता । कफरुक्षकषायत्वात्रिदोषव्याती ततोऽभया ॥ २ ॥ हरीतकी मनुष्याणां मातेव हितकारिणी । कदाचित्कुप्यते माता नोदरस्था हरीतकी ॥ ३ ॥ हरस्य भवनै जाता हरिता तु स्वभावतः । हरेतु सर्वरोगांश्च तेन प्रोक्ता हरीतकी ॥ ४ ॥ हरीतक्ष्याः स्मृतं वीजं चक्षुष्यं गुरु वातनुत् । पित्तनाशकं चैव मुनिभिः परिकीर्तिम् ॥ ५ ॥

१ प्रतिष्ठानयुरं विशूर ज्ञांसी इति प्रसिद्धम् ।

हेतुभिः शिष्यवोधार्थं पूर्वं तु क्रियते ऽबुना ।
 कर्मान्यत्वं गुणः साम्यन्दृष्टमाश्रयभेदतः ॥ २४ ॥
 यतस्ततो नेति चित्यं धात्रीलङ्कुचयोर्यथा ।
 पथ्याया भज निस्वादु स्त्रायावम्लो व्यवस्थितः ॥ २५ ॥
 वृत्ते तिक्तस्त्वचि कटुरस्थिस्थः तुवरो रसः ।
 नवा स्त्रिया घना वृत्ता गुर्वी क्षिता च यांभसि ॥ २६ ॥
 निमज्जेत्सा सुप्रशस्ता कथितातिगुणप्रदा ।
 नवादिगुणयुक्तत्वं तथैवात्र द्विकर्षता ।
 हरीतक्याः फले यत्र द्वयं तच्छ्रेष्ठमुच्यते ॥ २७ ॥
 चर्विता वर्द्धयत्यग्नि पेषिता मलशोधनी ॥
 स्त्रिना संग्राहिणी पथ्या भृष्टा प्रोक्ता त्रिदोषनुत ॥ २८ ॥
 उन्मीलिनी बुद्धिवलेन्द्रियाणां
 निर्मीलिनी पित्तकफानिलानाम् ।
 विद्युसनी मृत्रशकून्मलानां
 हरीतकी स्यात्सह भोजनेन ॥ २९ ॥
 अन्नपानकृतान्दोषान्वातपित्तकपोद्भवान् ।
 हरीतकी हस्त्याशु भुक्तस्योपरि योजिता ॥ ३० ॥
 लवणेन कक्षं हन्ति पित्तं हन्ति सशर्करा ।
 वृत्तेन वातजात्रोगान्वर्षरोगान्गुडान्विता ॥ ३१ ॥
 सिंधु*त्यशर्करा शुंठी कणा मधुगुडः क्रमात् ।
 वर्षादिप्वभया प्राश्या रसायनगुणैषिणा ॥ ३२ ॥
 अव्वातिखिन्नो वलवर्जितश्च रुक्षः कृशो लंबनकर्षितश्च ।
 पित्ताधिकोगर्भवतीचनारीविमुक्तरक्तस्त्वभयान्नखादेत् ॥ ३३

१ अबुना पूर्वं द्वित्रिपत्रेषु प्रभाववर्णनं कृतं क्रियते वर्तमानसमीपे वर्तमानवत् । २ लकुचं, वढ़हल वाढेऊ इति प्रसिद्धम् । ३ स्नायौ मध्यतन्तौ ।
 ४ वृत्तं प्रसववंधनमित्यमरः । * सिंधूत्यं, सैंधवं द्ववणम् । वर्षादिगुड़ पट् क्रतुषु हरीतकीप्रयोगः ।

विभीतकः ।

विभीतकस्त्रिलिङ्गः स्यादक्षः कर्षफलस्तथा ।

कलिदुमो भूतवासस्तथा कलियुगालयः ॥ ३४ ॥

विभीतकं स्वादुपाकं कषायं कफपित्तनुत् ।

उष्णवीर्यः हिमस्पर्शं भेदनं कासनाशनम् ॥ ३५ ॥

रुक्षं नेत्रहितं केशं कृमिवैस्वर्यनाशनम् ।

विभीतमज्जातृच्छर्दिकफवात्हरी लघुः ॥ ३६ ॥

कृषाया मदकृच्चाथ धात्रीमज्जापि तद्गुणा ।

ओमलकी ।

वयस्यामलकी वृष्या जातीफलरसं शिवम् ॥ ३७ ॥

धात्रीफलं श्रीफलं च तथाभूतफलं स्मृतम् ।

निष्वामलकमार्घ्यातं धात्री तिष्यफलाभूता ॥ ३८ ॥

हरीतकीसमं धात्री फलं किन्तु विशेषतः ।

रक्तपित्तप्रभेदव्यं परं वृष्यं रसायनम् ॥ ३९ ॥

हांति वातं तदम्लत्वातिपत्तं माधुर्यर्थैत्यतः ।

कफं रुक्षकषायत्वात्फलं धात्र्याः निदोषजित् ॥ ४० ॥

यस्ययस्य फलस्येह वीर्यं भवति यादृशम् ।

तस्यतस्येव वीर्येण मज्जानामपि निर्दिशेत् ॥ ४१ ॥

१ देशभाषा वहेडा । फारसी बलेले । अझरेजी मेरोबेलन् वेलिरिक ।

Myrevallan BelliriRi । २ देशभाषा आमला फारसी अस्लिङ्ग । अझरेजी

ऐविलकमिरो बेलन् । Emblic Myropalan आमलस्य फलं शुष्कं तिक्त-

सम्लं कटु स्मृतम् । मधुरं तुवरं केशं भग्नसंधातकारकम् ॥ १ ॥ धातुबृद्धिकरं

रोध्यं लेपनात्कांतिकारकम् । पित्तकफं तृष्णा घर्म मेदोरोगं विषं तथा । निदोष

नाशयत्यैव पूर्वाचार्यैर्निरूपितम् ॥ २ ॥ तन्मज्जा प्रदरच्छर्दिवातपित्तज्वरापहा ।

कषायमधुरा वृष्या श्वासकासनिर्वर्हणा ॥ ३ ॥

त्रिफला ।

पथ्या विभीतधात्रीणां फलैः स्यात्रिफला समैः ।
फलत्रिकं च त्रिफला सा वरा च प्रकीर्तिता ॥ ४२ ॥
त्रिफला कफपित्तग्नी मेहकुष्ठहरा सरा ।
चक्रुप्या दीपनी रुच्या विषमज्वरनाशिनी ॥ ४३ ॥

शुंठी ।

शुंठी विश्वा च विश्वं च नागरं विश्वभेषजम् ।
ऊषणं कटु भद्रं च शृंगवेरं महोषधम् ॥ ४४ ॥
शुंठी रुच्यामवातग्नी पाचनी कटुका लघुः ।
स्त्रिग्धोणा मधुरा पाककफवातविवंधनुत ॥ ४५ ॥
बृप्या स्वर्या वमिश्वासशूलकासहदामयान् ।
हंति श्लीपदशोफार्शआनाहोदरमारुतान् ॥ ४६ ॥
आग्रेयगुणभूयिष्टं तोयांशं परिशोषयेत् ।
संगृह्णाति मलं तत्तु ग्राहि शुम्बादयो यथा ॥ ४७ ॥
विवंधभेदनी या तु सा कथं ग्राहिणी भवेत् ।
शक्तिर्विवंधभेदेऽस्या यतो न मलपातने ॥ ४८ ॥

आद्रकम् ।

आद्रकं शृंगवेरं स्यात्कटु भद्रं तथाद्रिका ।
आद्रिका भेदनी गुर्वी तीक्ष्णोणा दीपनी मता ॥ ४९ ॥

१ त्रिफला द्विविधा—लब्धी, महती च, खजूर, फालसा, जिरिङ्क, छोटी ।
पथ्या विभीतकं धात्री महती त्रिफला मता । स्वत्पा काश्मीरखजूरपरपूकफलै-
र्मध्ये ॥ १ ॥ २ देशभाषा सुंड, फारसी जंजबील, अझरेजी डाईजज्जर
Dyginger ३ देश भाषा अदरक । फारसी जिजिविलिरतवा । अझरेजी
जिजरुट् Gingerroot, वातपित्तकफेमानां शरीरं वनचारिणाम् । एक एव नि-
हंस्यत्र लवणाद्रिककेसरी ॥ १ ॥

कटुका मधुरा पाके स्वक्षा वातकफापहा ।

ये गुणाः कथिताः शुठ्यां तेषि संत्यार्द्रकेखिलाः ॥ ५० ॥

भौजनाये सदा पथ्यं लवणार्द्रकभक्षणम् ।

अग्निसंदीपनं रुच्यं जिह्वाकंठविशोधनम् ॥ ५१ ॥

कुष्ठे पांडवामये कृच्छ्रे रक्तपित्ते ब्रणे ज्वरे ।

दाहे निदाघशरदोन्नैव पूजितमार्द्रकम् ॥ ५२ ॥

पिप्पली ।

पिप्पली मागधी कृष्णा वैदेही चपला कणा ।

उपकुल्योषणा शौंडी कोला स्यात्तीक्ष्णतंडुला ॥ ५३ ॥

पिप्पली दीपनी वृष्या स्वादुपाका रसायनी ।

अनुष्णा कटुका स्त्रिग्धा वातश्लेष्महरी लघुः ॥ ५४ ॥

पिप्पली रेचनी हंति श्वासकासोदरज्वरान् ।

कुष्ठप्रमेहगुल्मार्थः पूर्णिहशूलाममारुतान् ॥ ५५ ॥

आद्रा कफप्रदा स्त्रिग्धा शीतला मधुरा गुरुः ।

पित्तप्रशमनी सा तु शुष्का पित्तप्रकोपनी ॥ ५६ ॥

पिप्पली मधुसंयुक्ता मेदःकफविनाशनी ।

श्वासकासज्वरहरी वृष्या मेध्याम्रिवर्द्धनी ॥ ५७ ॥

—(केवदेवीये) अंकुरं शृंगवेरस्य रक्तजिञ्च्छेष्मवातहृत् । अव्यक्तरसवीर्यत्वा तत्परं तु कफापहम् ॥ २ ॥ कांजिकार्द्रं सलवणं दीपनं पाचनं परम् । वातश्लेष्मविवंधनं विशेषादामवातनुत् ॥ ३ ॥ वातश्लेष्महरं रुच्यं दीपनं पाचनं परलकुचस्य रसे क्षितमार्द्रकं मुखशोधनम् ॥ ४ ॥

१ देशभाषा मध,फारसी पिलिप्पलादराज,अङ्गरेजी लांग पीपर Pepper Long पिप्पली त्रिविधा, १ गजपिप्पली, २ जलपिप्पली, ३ पिप्पली च । कटूष्णं लूतच्छुष्कमवृष्यं कफवातजित् । नात्युष्णं नातिशीतं च वीर्यतो मरिचं सितम् ॥ १ ॥ गुणवन्मरिचेभ्यश्च चक्षुष्यं च विशेषतः । २ अनुष्णा, ईषदुष्णा देव माछोटी पीपल ।

जीर्णज्वरे ग्रिमांद्ये च शस्यते गुडपिप्पली ।
 कासाजीर्णारुचिश्वासहृष्टां दुकूमिरोगनुत् ॥ ५८ ॥
 द्विगुणः पिप्पलीचूर्णादिगुडोत्रं भिषजां मतः ॥
 मरिचम् ।

मरिचं * वेल्लजं कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् । * वल्लिजमित्यपपाठः
 मरिचं कटुकं तीक्ष्णं दीपनं कफवातजित् ॥ ५९ ॥
 उष्णं पित्तकरं स्लक्ष्मं, श्वासशूलकूमीन् हरेत् ।
 तदार्द्रं मधुरं पाके नात्युष्णं कटुकं गुरु ॥ ६० ॥
 किंचित्तीक्ष्णगुणं श्वेष्मप्रसेकि स्यादपित्तलम् ।

त्रिकटु ।

विश्वोपकुल्या मरिचं वयं त्रिकटु कथ्यते ॥ ६१ ॥
 कटुकिं तु त्रिकटु उष्णं व्योषमुच्यते ।
 उष्णं दीपनं हंति श्वासकासत्वगामयान् ॥ ६२ ॥
 गुलममेहकफस्थौल्यमेदः क्षीपदपीनसान् ।
 पिप्पलीमूलम् ।

अंथिकं पिप्पलीमूलमूषणं चटकाशिरः ॥ ६३ ॥
 दीपनं पिप्पलीमूलं कटूष्णं पाचनं लघु ।
 स्लक्ष्मं पित्तकरं भेदि कफवातोदरापहम् ॥ ६४ ॥
 आनाहल्लीहगुलमध्यं कृमिश्वासकफापहम् ।

१ दे० भा० काली मारिच फा० पिल पिले अस्वद हलपिले रिद इ०
 लाक् पेपर Blacrr Tpper । शोभांजनबीजं श्वेतमरिचं केचिद्वदंति । कटूष्णं
 श्वेतमरिचं विपन्नं भूतनाशनम् । अवृष्टं दृष्टिरोगन्नं युक्तं चैव रसायनम् ॥ १ ॥
 राजनिधन् । २ अपित्तलम् ईपतित्तलम् ईपदर्थे नब् । ३ दे० भा० पिप्पला-
 मूल फा० फिलफिल मोया इ० पाइपररूट Piper root. ।

चतुरुषणम् ।

ऋषणं सकणामूलं कथितं चतुरुषणम् ॥ ६५ ॥

व्योषस्यैव गुणाः प्रोक्ता अधिकाश्चतुरुषणे ।

चैव्यम् ।

भवेच्चव्यन्तु चविका कथिता सा तथोषणा ॥ ६६ ॥

कणामूलगुणं चव्यं विशेषादुद्जापहम् ।

गजपिष्पली ।

चविकायाः फलं प्राङ्गेः कथिता गजपिष्पली ॥ ६७ ॥

कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरश्च सा ।

गजकृष्णा कटुवातश्लेष्महृद्धिवर्धिनी ॥ ६८ ॥

उषणा निहंत्यतीसारं व्यासकण्ठामयकृमीन् ।

चिंत्रकः ।

चित्रकोऽनलनामा च पाठी व्यालस्तथोषणः ॥ ६९ ॥

१ दे, भा, चवक । वंग, भा, चर्डगछ । चव्यपुष्पं गरव्यासकासक्षयविनाशनम् । (मदनपाल) तंत्रांतरे—चव्यं तु चविका चाय विंबीगुजे तु कृष्णला । चविका कटु तिक्कोष्णा दीपनी पाचनी लघुः ॥ १ ॥ कफपित्तहरी चैव किंचिद्वात् प्रकोपनी । अस्य शाकं श्लेष्मपित्तजित् । लैटनभा, एक्स वर्धा आईपाइपर चव । ChavicaEzwhraiaye piper chava. २ दे० भा० गजपीपल, बड़ीपीपल । सैंहली, पिष्पली, वनपिष्पली, मरकिटपिष्पलीत्यादयः पृथग्गुणाः । वं० भा० गजपिपुल लै० भा० प्लैटेगोएंप्लक्सिको लिससिन्डाप्सन् जोक्सिनेलिम् । Pluntago amplexcaulis scanpans officinalis. ३ दे० भा० चित्रा फा० वेखबरंदा इ० पलं विगौ कौसलेएसो । चित्रको द्विविधः कृष्णरक्तभेदात् (रक्त चित्रक नाम) कालो व्यालः कालमूलीति दीप्यो मार्जारो मिर्दाहकः पावकश्च । चित्रांगोप्यारक्तचित्रो महांगाः स्यादुद्ग्राहश्चिलकोन्यो गुणादयः । तच्छाकं लघु संप्राहि कफपित्तविनाशनम् ॥ केवदेवीये ।

चित्रकः कटुकः पाके वह्निकृतपाचनो लघुः ।

स्फक्षोष्णो ग्रहणीकुष्ठशोथार्शः कृमिकासलुत् ॥ ७० ॥

वातश्लेष्महरो ग्राही वातार्शः श्लेष्मपित्तहृत् ॥

पंचकोलम् ।

पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरैः ॥ ७१ ॥

पंचभिः कोलमात्रं यत्पंचकोलं तदुच्यते ।

पंचकोलं रसे पाके कटुकं रुचिकृन्मतम् ॥ ७२ ॥

तीक्ष्णोष्णं पाचनं श्रेष्ठं दीपनं कफवातनुत् ।

गुलमझीहोदरानाहशूलन्नं पित्तकोपनम् ॥ ७३ ॥

षडूषणम् ।

पंचकोलं समरिचं षडूषणसुदाहृतम् ।

पंचकोलगुणं तत्तु स्फक्षसुष्णं विषापहम् ॥ ७४ ॥

यवानिका ।

यवानिकोग्रंधा च व्रह्मदर्भजमोदिका ।

सैवोक्ता दीप्यका दीप्या तथा स्याद्यवसाह्या ॥ ७५ ॥

यवानी पाचनी रुच्या तीक्ष्णोष्णा कटुका लघुः ।

दीपनी च तथा तिक्ता पित्तला शुक्रशूलहृत् ॥ ७६ ॥

वातश्लेष्मोदरानाहगुलमझीहकृमिप्रणुत ।

अजमोदा ।

अजमोदा खराधा च मायूरो दीप्यकस्तथा ॥ ७७ ॥

तथा व्रह्मकुशा प्रोक्ता कारबी लोचमस्तका ।

१ दे० मा० अजवाइन । फा० नानुखा इ० विश्वस वीडसीड Bishop's

Weed Seed. २ दे० मा० अजमोदा अजवाइन वह्निजवाइन, फा० करपस,

इ० सेल्वरी सीड । Clergy seed

अजमोदा कटुस्तीक्ष्णा दीपनी कफवातनुत् ॥ ७८ ॥

उष्णा विदाहिनी हृद्या वृष्णा बलकरी लघुः ।

नेत्रामयकफच्छर्दिहिक्काबस्तिरुजो हरेत् ॥ ७९ ॥

पारसीकथवानी ।

पारसीकथवानी तु यवानीसद्वशा गुणेः ।

विशेषात्पाचनी रुच्या ग्राहिणी मादिनी गुरुः ॥ ८० ॥

शुद्धजीरकं कृष्णजीरकमुपकुञ्ची ।

जीरको जरणोजाजी कणा स्याद्वीर्जीरकः ।

कृष्णजीरः सुगंधिश्च तथैवोद्भारशोधनः ॥ ८१ ॥

कालाजाजी तु सुषबी कालिका चोपकालिका ।

पृथ्वीका कारवी पृथ्वी पृथुः कृष्णोपकुञ्चिका ॥ ८२ ॥

उपकुञ्ची च कुञ्ची च बृहजीरकमित्यपि ।

जीरकनितयं रुक्षं कटूष्णं दीपनं लघु ॥ ८३ ॥

संग्राहि पित्तलं मेधयं गर्भाशयविशुद्धिकृत ।

पारसीका यवानी स्याच्चौहारो जंतुनाशनः । पारसी यावनी गंधच्छारश्च
खरपुष्पका । (खुरासानी) यवानी यावनी तीत्रा तुरुष्का मदकोरिणी । दीप्ता
श्यामकुवेराख्यो मादको मदकारकः । ८० भा० खुरासानी अजवाइन फा०
तुख्यइस्से । इ० आर्टिमिस्या मेरिटिमा, Artemisia maritima । २ दे०
भा० सुफेद जीरा । फा० जीरा । इ० कूटयमिन् सीड़ CumminSeed ३ दे०
भा० काला जीरा । फा० जीराश्याह । इ० ब्लाक् कारवेसीड़ Black Caraway
Seed । ४ दे० भा० कलौंजी, मगरेला । फा० शोनिङ्ग, श्याहदाने । इ०
स्माल फेनेल फ्लावर Small Fenel filawer । कलौंजी तु बृहजीरकस्य
जीरीनामकस्य भेद एव नतु पलांडुबीजानि ।

ज्वरव्वं पाचनं वृष्यं वल्यं रुच्यं कफापहम् ॥ ८४ ॥
चक्षुप्यं पवनाद्यनानगुलमच्छर्द्यतिसारहत् ।

धान्यकम् ।

धान्यकं धानकं धान्यं धाना धानेयकं तथा ॥ ८५ ॥
कुनटी धेनुका छत्रा कुस्तुंबुरुवितुवकम् ।
धान्यकान्तुवरं स्त्रिगधमद्वयं मूत्रलं लघु ॥ ८६ ॥
तिक्तं कटूप्णवीर्यं च दीपनं पाचनं स्मृतम् ।
ज्वरव्वं रोचनं ग्राहि स्वादु पाकि विदोषनुत् ॥ ८७ ॥
तृष्णादाहवमिश्वासकासामार्शःकृमिप्रणुत् ।
आर्द्रं तु तद्गुणं स्वादु विशेषात्पित्तनाशि तत् ॥ ८८ ॥

शतपुष्पा मिश्रेया ।

शतपुष्पा शताह्वाच मधुरा कारवी मिसिः ।
अतिलंबी सितच्छत्रा संहितच्छत्रकापि च ॥ ८९ ॥
छत्रा शालेयशालीनौ मिश्रेया मधुरा मिसिः ।
शतपुष्पा लघुस्तीक्ष्णा पित्तकृदीपनी कटुः ॥ ९० ॥
उष्णा ज्वरानिलश्लेष्मब्रणशूलाक्षिरोगहत् ।
मिश्रेया तद्गुणाः प्रोक्ता विशेषाद्योनिशूलनुत् ॥ ९१ ॥
अग्रिमांद्यहरी हृद्या बद्रविट्कृमिशुक्रहत् ।
सूक्ष्मोष्णा पाचनी कासवमिश्लेष्मानिलान् हरेत् ॥ ९२ ॥

१ दे०भा० धनियां,फा०तुखमेकस्नीझई,कोरिएंडिरसीड। Corian derSeed
२ दे०भा० सौंफाफा०वादियान। इ० फेनिलसीड। Fenalseed सिता मधु-
रिका चापि माधुरी तापसप्रिया। गंधाविका वोपवती मुगंधा च तृषाहरा।
३ दे० भा० सोये, सोये के बीज। फा० शुत-तुखमेशूता। इ० डिलसीड
Dillseed। तजलं शीतलं रुच्यं कटुरीपत्तपाचनम्। मधुरं तृद् हृद्याति पित्त-
दाहं च नाशयेत् ।

मेथिका वनमेथिका ।

मेथिका मेथनी मेथी दीपनी बहुपत्रिका ।

बोधनी बहुबीजा च जातीगंधफला तथा ॥ ९३ ॥

बल्लरी चंद्रिका मंथा मिश्रपुष्पा च कैरवी ।

कुंचिका बहुपर्णी च पीतबीजा मुनिच्छदा ॥ ९४ ॥

मेथिका वातशमनी श्लेष्मघ्नी ज्वरनाशनी ।

ततः स्वल्पगुणा वन्या वाजिनां सा तु पूजिता ॥ ९५ ॥

चंद्रशूरम् ।

चंद्रिका चर्महंत्री च पशुभेदनकारकः ।

नंदनी कारवी भद्रा वासपुष्पा सुवासरा ॥ ९६ ॥

चंद्रशूरं हितं हिक्कावातश्लेष्मातिसारिणाम् ।

असृग्वातगदद्वेषि बलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ ९७ ॥

चतुर्वीजम् ।

मेथिका चंद्रशूरश्च कालजाजी यैवानिका ।

एतच्चतुष्टयं युक्तं चतुर्वीजमिति स्मृतम् ॥ ९८ ॥

तच्चूर्णं भक्षितं नित्यं निहंति पवनामयम् ।

अजीर्णशूलमाघ्मानं पार्वशूलं कटिव्यथाम् ॥ ९९ ॥

हिंगु ।

सहस्रवेषि जतुकं बाळीकं हिंगु रामठम् ।

१ दे० भा० मेथी । फा० तुख्मे शमपीत । इ० फेनरीक Fennyreek ।

२ दे० भा० हालीं, हालिम् । फा० हालम तुख्मतरातेजक । इ० कामन क्रेस, Common cress. । ३ दे० भा० चारदाना । फा० चारतुख्म । ४ दे०

भा० हींग । फा० अंगुज्ज दखंते अग्नुखालीस । इ० आस्साफो टीड (हिंगु शोधनं) अंगारसे लोहपात्रे संधृते रामठं क्षिपेत् ॥ १ ॥ चालयेत् किंचिदा-

रक्तवर्णं योगेषु योजयेत् ॥ २ ॥ नाडीहिंगु पलाशाख्या जंतुका रामठी च सा

वंशपत्री च पिंडाहा सुवीर्या हिंगु नाडिका ॥ ३ ॥

हिंगूणं पाचनं रुच्यं तीक्ष्णं वातवलासहृत् ॥ १०० ।
शूलगुलमोदरानाहक्रिमिघ्नं पित्तवर्धनम् ।

वचा ।

वचोग्रगंधा षड्ग्रंथा गोलोमी शतपर्विका ॥ १०१ ॥

क्षुद्रपत्री च मंगलया जटिलोग्रा च लोमशा ।

वचोग्रगंधा कटुका तिक्तोण्णा वांतिवह्निकृत् ॥ १०२ ॥

विवंधाधमानशूलघ्नी शकूनमूत्रविशोधनी ।

अपस्मारकफोन्मादभूतजंत्वनिलान् हरेत् ॥ १०३ ॥

पारसी-वचा ।

पारसीकवचा शुङ्खा प्रोक्ता हैमवतीति सा ।

हैमवत्युदिता तद्वद्रातं हंति विशेषतः ॥ १०४ ॥

महाभरी-वचा ।

सुगंधाप्युग्रगंधा च विशेषात्कफकासनुत् ।

सुस्वरत्वकरी रुच्या हृत्कंठसुखशोधनी ॥ १०५ ॥

अपरा सुगंधा स्थूलग्रंथिः यस्या लोके महाभरीति नाम

स्थूलग्रंथिः सुगंधा स्यात्ततो हीनगुणा स्मृता ॥ १०६ ॥

द्वैपांतरवचा ।

द्वैपांतरवचा किंचित तिक्तोण्णा वह्निदीतिकृत् ।

१ दे० भा० खुरासानी वच । फा० सोसन ज़र्द, अगरतुरकी । इ० स्वीट
फ्लॉर्ट Sweet Floyroot. । २ दे० भा० कुल्लिजन । फा० खिरदासा
इ० ग्रैटगलंगल Greatgalungal । ३ दे० भा० चोवचीनी । फा०
प्लवन । इ० चक्का । फिरंगदेशसंभूता चीनदेशेथ विश्रुता । नामतश्वोपचीनी
स्थादश्वगंधसमा भवेद् ॥ १ ॥ अश्वगंधा समं पत्रमोषधिप्रियिसंयुता ॥ वर्णतः
पाटला सा च द्वाच मधुरा रसे ॥ २ ॥ शिवनिर्घटुः ॥ मध्यन्यजेत्तथा तैलं
आंजिकं शाकमेव च । क्षारमस्तरसं चैव लक्षणं भोजनं तथा ॥ ३ ॥

विवंधाधमानशूलघ्री शकृन्मूत्रविशोधनी ॥ १०७ ॥
 वातव्याधीनपस्मारमुन्मादं तनुवेदनाम् ।
 व्यपोहति विशेषेण फिरंगामयनाशिनी ॥ १०८ ॥

हृपुषा ।

तन्मध्ये प्रथमफलं मत्स्यवद्विस्थगंधकम् ।
 द्वितीयमध्यत्थफलसदृशं मत्स्यगंधि च ॥ १०९ ॥
 हृपुषा हृपुषा विस्ता पराध्यत्थफला मत्ता ।
 मत्स्यगंधा प्लीहहंत्री विषघ्री ध्वांक्षनाशिनी ॥ ११० ॥
 हृपुषा दीपनी तिक्ता मृदूष्णा तुवरा गुरुः ।
 पित्तोदरसमीराशोग्रहणीगुल्मशूलहृत् ॥ १११ ॥
 पराप्येतद्गुणा प्रोक्ता रूपभेदो द्वयोरपि ॥

विडंगम् ।

पुंसि क्लीबे विडंगः स्यात्कृमिघो जंतुनाशनः ।
 तंडुलश्च तथा वेळममोघा चित्रतंडुलः ॥ ११२ ॥
 विडंगं कटु तीक्ष्णोष्णं रूक्षं वह्निकरं लघु ।
 शूलाधमानोदरश्लेष्मकृमिवातनिबन्धनुत् ॥ ११३ ॥

तुंबरुः ।

तुंबरुः सौरभः सौरो वनजः *सोऽणुजोऽधकः ।
 तुंबरु कथितं तिक्तं कटु पाकेषि तत्कटु ॥ ११४ ॥
 रूक्षोष्णं दीपनं तीक्ष्णं रूच्यं लघु विदाहि च ।

१ दे० भा० हाऊबेरलै० भा० थेवेटिया नेरिफोलिखां Thevetianerifolia.
 २ दे० भा० वायविडंग । फा० वरंग काबली । इ० वेब्रेंग । Bubreng. तुंबकः
 सौरभः सौरो वनजः सानुजोनिजः । तक्षवर्णस्तीक्ष्णवर्णो वर्तुलश्च महामुनिः ॥ १ ॥
 धन्वतरिनिघंटौ । ३ दे० भा० कवावे नैपाली धनियां । *सानुज इत्यपि पाठः ।

वातश्लेष्माक्षिकर्णोष्ठशिरोरुग्गुरुताकृमीन् ॥ ११५ ॥

कुष्ठशूलारुचिद्वासप्लीहकृच्छाणि नाशयेत् ।

वंशरोचना ।

स्याद्वंशरोचना वांशी तुगाक्षीरी तुगाशुभा ॥ ११६ ॥

त्वक्क्षीरी वंशजा शुभा वंशक्षीरी च वैष्णवी ।

वंशजा बृंहणी बृष्णा बल्या स्वाद्वी च शीतला ॥ ११७ ॥

टृष्णाकासज्वरश्वासक्षयपित्तास्त्रकामलाः ।

हेरेत्कुष्ठं ब्रणं पांडुं कषाया वातकृच्छजित् ॥ ११८ ॥

समुद्रफेनः ।

समुद्रफेनः फेनश्च हिंडीरोविधिकफस्तथा ।

समुद्रफेनश्वक्षुष्यो लेखनः शीतलश्च सः ॥ ११९ ॥

कषायो विषपित्तद्वः कर्णरुग्ग कफहलघुः ।

अष्टवर्गः ।

जीवकर्षभक्तौ मेदे काकोल्वा क्रद्धिवृद्धिके ॥ १२०

अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैः कथितश्वरकादिभिः ।

अष्टवर्गो हिमः स्वादुः बृंहणः शुक्रलो गुरुः ॥ १२१ ॥

भग्नसन्धानकृत्कामवलसंबलवर्द्धनः ।

वातपित्तास्त्रदाहज्वरमेहक्षयापहः ॥ १२२ ॥

१ दे० भा० तवाशीर, वंशलोचन । फा० तवाशीर । इ० थैि
क्रिशन । Thesiliceons concretion. तवक्षीरं पथः क्षीरं यवजंगवयोद्वस्मि-
त्यादि (तवक्षीर नाम) दे० भा० तवाशीर, इ० आरारोट । Arrowrot.

२ दे० भा० समुद्रज्ञग । फा— कफेदरिया । इ० कटल फीशबोन । Cattle
fishbone,

जीवकर्षभयोस्त्वतिर्लक्षणं नाम गुणाः ।
जीवकर्षभकौ ज्ञेयौ हिमाद्रिशिखरोद्भवौ ।
रसोनकंदवत्कंदौ निस्सारौ सूक्ष्मपत्रकौ ॥ १२३ ॥
जीवकः कूर्चिकाकारः क्रषभो वृषशृंगवत् ।
जीवको मधुरः शृंगी ह्रस्वांगो कूर्चशीर्षिकः ॥ १२४ ॥
क्रषभो वृषभो धीरो विषाणीद्राक्ष इत्यपि ।
जीवकर्षभकौ बल्यौ शीताँ शुक्रकफ्रदौ ॥ १२५ ॥
मधुरौ पित्तदाहास्त्रकाश्यवातक्षयापहौ ।

मेदामहामेदयोः ।

महामेदाभिधः कंदो मोरंगादौ प्रजायते ॥ १२६ ॥

महामेदावनीमेदा स्यादित्युक्तं मुनीश्वरैः ।

शुष्कार्द्रकनिभः कंदो लताजातः सपांडुरः ॥ १२७ ॥

महामेदाभिधो ज्ञेयो मेदालक्षणमुच्यते ।

*शुक्कंदो नखच्छेद्यो मेदोधातुमिव घेवत् ॥ १२८ ॥

यः स मेदेति विज्ञेयो जिज्ञासातपर्यज्जनैः ।

स्वल्पपर्णी मणिच्छिद्रा मेदा मेदोभवाधरा ॥ १२९ ॥

महामेदा वसुच्छिद्रा त्रिदंती देवतामणिः ।

मेदायुगं गुह्यं स्वादु वृष्यं स्तन्यकफावहम् ॥ १३० ॥

बृंहणं शीतलं पित्तरक्तवातज्वरप्रणुत् ।

काकोल्योः ।

जायते क्षीरकाकोली महामेदोद्भवस्थले ॥ १३१ ॥

यत्र स्यात्क्षीरकाकोली काकोली तत्र जायते ।

पीवरीसदृशः कंदः क्षीरं स्रवति गंधवान् ॥ १३२ ॥

—(योगतरंगिणी)—कर्णसावरुजागूथहरः पाचनदीपनः । अशुद्धः स करो-
त्यंगभंगं तस्माद्विशोधयेत् । समुद्रफेनः संपिष्ठो निम्बुतोयेन शुद्ध्यति । समुद्र-
फेनस्य समुद्रजलोपरि विद्यमानत्वात् समुद्रफेन इति संज्ञा । वस्तुतः मत्स्यास्येय ।
जीवको हस्तविटपः कूर्चशीर्षिश्व दक्षिणे । देशे संजायते कंदो निस्सारः सूक्ष्म-
पत्रकः * शुष्केति पाठांतरम् । १ सक्षीरप्रियगंधवान् इति पाठांतरम् ।

सा प्रोक्ता क्षीरकाकोली काकोलीलिंगमुच्यते ।

यथा स्यात्क्षीरकाकोली काकोल्यपि तथा भवेत् ॥ १३३ ॥

एषा किंचिद्वेत्कृष्णा भेदोयमुभयोरपि ।

काकोली वायसोली च वीरा कायस्थिका तथा ॥ १३४ ॥

सा शुक्ला क्षीरकाकोली वयःस्था क्षीरवल्लिका ।

कथिता क्षीरिणी धारी क्षीरशुक्ला पयस्त्विनी ॥ १३५ ॥

काकोलीयुगलं शीतं शुक्रलं मधुरं गुरु ।

वृंहणं वातदाहास्त्रपित्तशोथज्वरापहम् ॥ १३६ ॥

ऋद्धिवृद्धयोः ।

ऋद्धिवृद्धिश्च कंदौ द्वौ भवतः कोशयामले ।

थेतलोमान्वितौ कंदौ लताजातौ सरंध्रकौ ॥ १३७ ॥

तावेव वृद्धिर्ऋद्धिश्च भेदमप्येतयोर्ष्वै ।

तूलग्रंथिसमा ऋद्धिः वामावर्तफला च सा ॥ १३८ ॥

वृद्धिस्तु दक्षिणावर्तफला प्रोक्ता महीषभिः ।

ऋद्धियुग्मं सिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धेरप्याह्वया इमे ॥ १३९ ॥

ऋद्धिवर्लया त्रिदोषघ्नी शुक्रला मधुरा गुरुः ।

प्राणैश्वर्यकरी मूर्च्छारक्तपित्तविनाशिनी ॥ १४० ॥

वृद्धिर्गर्भप्रदा शीता वृंहणी मधुरा स्मृता ।

वृष्णा पित्तास्त्रशमनी क्षतकासक्षयापहा ॥ १४१ ॥

राजामप्यष्टुवर्गस्तु यतोऽयमतिदुर्लभः ।

तस्माद्दस्य प्रतिनिधिं गृहीयात्तद्गुणं भिषक् ॥ १४२ ॥

१ कई वायुनिक वैद्य ऐसे कहते हैं। जीवक, ऋग्मन्त्रके अभावमें सुफेह सुरख वैहान। मेदा महामेदाके अभावमें सालव शकाकल। क्षीरकाकोली काकोलीके अभावमें सुफेह सियाह मूसली। ऋद्धिवृद्धिके अभावमें उटंकन-बीज, बीजवन्द।

मुख्यसदृशः प्रतिनिधिः ।

मेदाजीवककाकोलीवृद्धिद्वंद्वेषि चासति ।

वरी विदायर्थगंधा वाराहीश्च क्रमात्क्षिपेत् ॥ १४३ ॥

मेदामहामेदास्थाने शतावरीमूलम् ।

जीवकर्षभक्स्थाने शतावरीमूलम् ॥ १४४ ॥

काकोलीक्षीरकाकोलीस्थाने अथगंधामूलम् ।

ऋद्धिवृद्धिस्थाने वाराहीकंदं गुणैस्तत्तुलयं क्षिपेत् ॥ १४५ ॥

यष्टीमधु ।

यष्टीमधु तथा यष्टी मधुकं क्लीतकं तथा ।

अन्यत्क्लीतनकं तत्तु भवेत्तोयमधूलिका ॥ १४६ ॥

यष्टी हिमा गुरुः स्वाद्वी चक्षुप्या बलवर्णकृत् ।

सुसिंधा शुक्रला केश्या स्वर्प्या पित्तानिलास्त्राजित् ॥ १४७ ॥

ब्रणशोथविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा ।

कांपिलः ।

कांपिलयः(ल) कर्कशश्वन्द्रो रक्तांगो रेचनोषि च ॥ १४८ ॥

कांपिलयः कफपित्तास्त्रकूमिगुल्मोदरव्रणान् ।

हंति रेची कटूषणश्च मेहानाहविषाशमनुत् ॥ १४९ ॥

आरग्वधः ।

आरग्वधो राजवृक्षः शंपाकश्वतुरंगुलः ।

आरेवतो व्याधिवाती कृतमालः सुवर्णकः ॥ १५० ॥

१ दे० भा० मुलठी । फा० वेख मेहेकूमडू । इ० लिक्करिसूख्ट । Lignorice Roor यष्टी द्विधा । जलजा स्थलजा । जलयष्टीगुणाः । जलयष्टी विषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा । २ दे० भा० कमीला । फा० कन्चिलाम । इ० केमिलरोटलीरा। Kamila Rocttlera तच्छाकं शीतलं तिक्तं वातसंग्राहि दीपनम् । ३ दे० भा० अमलतास । पत्रपुष्पमज्जमूलानां गुणाः पृथगन्यत्र दृष्टव्याः कर्णिकारोप्यस्यैव भेदः । इ० पुर्दिंगणईपटी पञ्जिङ्ग काश्या काश्यापल्प । Puddiny Pipetree Puring Cassia, Cassia palp. cassia fistula

कर्णकारो दीर्घफलः स्वर्णांगः स्वर्णभूषणः ।

आरग्वधो गुरुः स्वादुः शीतलः स्वंसनो मृदुः ॥ १५१ ॥

ज्वरहङ्गेगपित्ताम्बवातोदावर्त्तशूलनुत् ।

तत्फलं स्वंसंनं रुच्यं कोष्ठपित्तकफापहम् ॥ १५२ ॥

ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम् ।

कट्टबी ।

कट्टबी तु कटुका तिक्ता कृष्णमेदा कटंभरा ॥ १५३ ॥

अशोका मत्स्यशकला चक्रांगी शकुलादनी ।

मत्स्यपित्ता कांडरुहा रोहिणी कटुरोहिणी ॥ १५४ ॥

कटुका कटुका पाके तिक्ता रुक्षा हिमा लघुः ।

भेदनी दीपनी हृद्या कफपित्तज्वरापहा ॥ १५५ ॥

प्रमेहध्वासकासाम्बद्धाहकुष्ठकृमिप्रणुत् ।

किरातः ।

किराततिक्तः क्रेरातो कटुतिक्तः किरातकः ॥ १५६ ॥

कांडतिक्तोऽनार्थ्यतिक्तो भूनिंबो रामसेनकः ।

किरातकोऽन्यो नैपालः सोद्धतिक्तो ज्वरांतकः ॥ १५७ ॥

किरातः सारको रुक्षः शीतलस्तिक्तको लघुः ।

सन्निपातज्वरश्वासकफपित्ताम्बद्धाहनुत् ॥ १५८ ॥

कासशोथतृष्णाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ।

१ दे० भा० कौड़। फा० खर्तकसियाह । इ० व्लाक् हल्डेवरेलीस ।

Black Helllore, शुद्धिः ॥ कटुकामुष्णदुन्धेन प्रक्षाल्य ग्राहयेदपि । २ दे०
भा० चिरायता । फा० नैनिहाद । इ० चिरेटा, Chirata । नैपाल-
गुणाः—नैपालः सन्निपातारिज्वरनिद्रापहतया ।

इन्द्रयवम् ।

उत्तरं कुटजबीजं तु यद्मिन्द्रयवं तथा ॥ १५९ ॥

कलिंगं चापि कालिंगं तथा भद्रयवं स्मृतम् ।

इति कृष्णे अमरः प्राह ।

क्वचिदिन्द्रस्य नामैव भवेत्तदभिधायकम् ॥ १६० ॥

फलानीन्द्रयवास्तस्य तथा भद्रयवा अपि इति धन्वंतरिः ॥

इन्द्रयवं विदोषव्यं संग्राहि कटु शीतलम् ॥ १६१ ॥

ज्वरातीसाररक्तार्थः कृमिवीसर्पकुष्टनुत् ।

दीपनं गुदकीलाघवाताघ्लेष्मशूलजित् ॥ १६२ ॥

मैदनः ।

मदनश्छर्दनः पिंडीराठः पिंडीतकस्तथा ।

करहाटो मरुबकः शल्यको विषपुष्पकः ॥ १६३ ॥

मदनो मधुरास्तको वीयर्योष्णो लेखनो लघुः ।

वांतिकृद्विद्रधिहरः प्रतिश्यायव्रणान्तकः ॥ १६४ ॥

रुक्षः कुष्टकफानाहशोथगुलमवणापहः ।

रासना ।

रासना युक्तरसा रस्या सुवहा रसना रसा ॥ १६५ ॥

१ दे० भा० इन्द्रजौ । फा० जवानकुञ्जिस्क । इ० ओब्लिष्डरोसवे ।

Ovalleaved Rosebay, कुटजस्य त्वचा तिक्ता सर्वातीसारनाशिनी ॥ श्वेत-
कुटजपुष्पगुणाः—पुष्पं तु वत्सकस्योक्तं तुवरं चामिदीपकम् । तिक्तं शीत-
वातलं च लघु पित्तातिसारनुत् । २ दे० भा० मैनफल राढ़ । इ० बुशीगार्ड-
नीया Bushy Gardenia, कृष्णः श्वेतश्च मैदनः शीतलो मधुरः स्मृतः । कटुस्ति-
कश्च तुवरो वांतिकृकफनाशनः । पक्वामाशयशुद्धेश्च कारकः पित्तनाशकः । हृदो-
गनाशकश्चैव पूर्वस्मादुत्तमो गुणैः ॥ ३ दे० भा० जंतर । रहसन् क्षिजन फा०
रासुन । रासा तु विविधा प्रोक्ता मूलं पत्रं तृणं तथा । वैयौ मूलदलौ श्रेष्ठौ
तृणरासा तु मध्यमा ॥

एलापर्णी च सुरसा सुगंधा श्रेयसी तथा ।
 रास्तामपाचनी तिक्ता गुरुष्णा कफवातजित् ॥ १६६ ॥
 शोथश्वाससमीरास्ववातशूलोदरापहा ।
 कासज्वरविषाशीतिवातकामयहिध्महत् ॥ १६७ ॥
 नाकुली ।

नाकुली सुरसा नागसुगंधा गंधनाकुली ।
 नकुलेष्टा भुजंगाक्षी सर्पाक्षी विषनाशनी ॥ १६८ ॥
 नाकुली तुवरा तिक्ता कटुकोष्णा विनाशयेत् ।
 भोगिलृतावृश्चिकाखुविषज्वरकृमिव्रणान् ॥ १६९ ॥
 माचिका ।

माचिका प्रस्थकांबष्टा तथांबालिकांबिका ।
 मसूरविद्ला केशी सहस्रा बालमूलिका ॥ १७० ॥
 माचिकाम्ला रसे पाके कषाया शीतला लघुः ।
 पक्तातीसारपित्तास्वकफकंडवामयापहा ॥ १७१ ॥
 तेजवती ।

तेजस्विनी तेजवती तेजोह्वा तेजनी तथा ।
 तेजस्विनी कफश्वासकासास्यामयवातहृत् ॥ १७२ ॥
 पाचन्युष्णा कटुस्तिक्ता रुचिवह्निप्रदीपनी ।
 ज्योतिष्मती ।

ज्योतिष्मती स्यात्कटभी ज्योतिष्का कंगुनीति च ॥ १७३ ॥
 चारावतपदी पण्या लता प्रोक्ता कुरुद्नी ।

१ दे० भा० नई, हरकाई। चन्दा। फा० छोटा चांदा। नाकुची द्विधा,
 नाकुली, सुगंधनाकुली। २ पथिमदेश माई इति वृक्षविशेषे मोईया इति लोके।
 ३ दे० भा० तेजवल। इ० दुथपकटी। Toothache tree, ४ दे०
 भा० उमजिनी। मालकंगुनी। द्विधा, ज्योतिष्मती, महाज्योतिष्मती। फा०
 काल। इ० स्टाफट्री। Staff tree.

ज्योतिष्मती कटुस्तका सरा कफसमीरजित् ॥ १७४ ॥
अत्युष्णा वामनी तीक्ष्णा वद्विद्विस्मृतिप्रदा ।

कुष्ठं ।

कुष्ठं रोगाद्वयं वाप्यं परिभाव्यं तथोत्पलम् ॥ १७५ ॥

कुष्ठमुष्णं कटु स्वादु शुक्रलं तिक्तकं लघु ।

हंति वातास्त्रीसर्पकासकुष्ठमस्तकफान् ॥ १७६ ॥

पुष्करमूलम् ।

उक्तं पुष्करमूलं तु पौष्करं पुष्करं च तत् ।

पद्मपत्रं च काश्मीरं कुष्ठभेदमिमं जगुः ॥ १७७ ॥

पौष्करं कटुकं तिक्तमुक्तं वातकफज्वरान् ।

हंति श्वासारुचिशोथान् विशेषात्पार्वशूलनुत् ॥ १७८ ॥

हेमाह्वा ।

पटुपर्णी हेमवती हेमक्षीरी हिमावती ।

हेमाह्वा पीतदुग्धा च तन्मूलं चोकमुच्यते ॥ १७९ ॥

हेमाह्वा रेचनी तिक्ता भेदन्युत्केशकारिणी ।

कूमिकंडुविषानाहकफपित्तास्त्रकुष्ठनुत् ॥ १८० ॥

शृंगी ।

शृंगी कर्कटशृंगी च स्यात्कुलीरविषाणिका ।

अजशृंगी च वक्रा च कर्कटाख्या च कीर्तिता ॥ १८१ ॥

शृंगी कषाया तिक्तोष्णा कफवातक्षयज्वरान् ।

श्वासोर्ध्ववाततट्टकासहिक्कारुचिवमीर्हरेत् ॥ १८२ ॥

१ दे०भा० कुह ॥ २ दे०भा० पोहकर मूल । ३ दे०भा० चोक ।
इं० गेंवोश्थिसूल् gamboje-thistle, तस्याः क्षीरं बिंदुमात्रं नेत्रक्षितं घृतस्तु-
तम् ॥ शुक्रं च ह्यविमांसं च नेत्रांध्यं चैव नाशयेत् । ४ दे० भा० ककडसिंगी ।

कट्टफलः ।

कट्टफलः सोमवलकश्च कैटर्य्यः कुंभिकापि च ।

श्रीपर्णिका कुसुदिका भद्रा भद्रवतीति च ॥ १८३ ॥

कट्टफलस्तुवरस्तिक्तः कटुवर्वातकफज्वरान् ।

हंति श्वासप्रमेहार्शः कासकंडवामयारुचीः ॥ १८४ ॥

भाङ्गी ।

भाङ्गी भृगुभवा पद्मा फंजी व्रात्पणयष्टिका ।

व्रात्पण्यं गरवल्ली च खरशाकश्च हंजिका ॥ १८५ ॥

भाङ्गी रुक्षा कटुस्तिका रुच्योष्णा पाचनी लघुः ।

दीपनी तुवरा गुल्मरक्तजिव्राशयेद्वृष्टवम् ॥ १८६ ॥

शोथकासकफश्वासपीतसञ्चरमारुतान् ।

अङ्गमेदः ।

पाषाणमेदकोशमन्त्रो गिरभिद्वयोजनी ॥ १८७ ॥

अश्ममेदो हिमस्तिक्तः कषायो वस्तिशोधनः ।

मेदनो हंति दोषाशोगुल्मकृच्छ्राश्महृजः ॥ १८८ ॥

योनिरोगान्प्रमेहांश्च प्लीहशूलव्रणानि च ।

धातकी ।

धातकी धातुपुष्पी च वद्विज्वाला च सा स्मृता ॥ १८९ ॥

धातकी कटुका शीता मदकृत्तुवरा लघुः ।

तृष्णातीसारपित्तास्त्रविषकृमिविसर्पजित् ॥ १९० ॥

१ दे० मा० कायफल फा० उदुल्वर्क । २ दे० मा० भाङ्गी । वभनेटी, ब्रह्मदंडी । अस्याः पत्रगुणाः—पर्णमस्या ऊरं हन्ति दाहं हिकां त्रिदोषकम् ।
३ दे० मा० पाषाणमेद । फा० गोशाद । इ० आर्द्धरिसस्य । Irissp' क्षुद्रपापाषमेदश्च ब्रगकृच्छ्राश्मरीहरः । ४ दे० मा० धावेके फूल । इ० ग्रीसली आटो मेन्टोजा ।

मंजिष्ठा ।

मंजिष्ठा विकसा जिंगी समंगो कालमेषिका ।

मंडूकपर्णी मंडीरी भंडी योजनवल्यपि ॥ १९१ ॥

रसायन्यरुणा काला रक्तांगी रक्तयष्टिका ।

मंडीतकी च गंडीरी मंजूषा वस्त्ररंजनी ॥ १९२ ॥

मंजिष्ठा मधुरा तिक्ता कषाया स्वरवर्णकृत् ।

गुहरुणा विषश्लेष्मशोथयोन्याक्षिकर्णरुक् ॥ १९३ ॥

रक्तातीसारकुष्ठास्त्रवीसर्पवणमेहनुत् ।

कुसुंभम् ।

स्यात्कुसुंभं वद्विशिखं वस्त्ररंजकमित्यपि ॥ १९४ ॥

कुसुंभं वातलं कृच्छ्ररक्तपित्तकफापहम् ।

लौक्षा ।

लाक्षा पलंकषालक्तो यावो वृक्षामयो जतु ॥ १९५ ॥

लाक्षा वर्ण्या हिभा बल्या स्त्रिग्धा च तुवरा लघुः ।

अनुष्णा कफपितास्त्रहिक्काकासञ्चरप्रणुत् ॥ १९६ ॥

ब्रणोरःक्षतवीसर्पकुष्ठगदापहा ।

अलक्तको गुणस्तद्वद्विशेषाद् व्यंगनाशनः ॥ १९७ ॥

हरिद्रा ।

हरिद्रा कांचनी पीता निशाख्या वरवर्णिनी ।

१ दे० भा० मंजीठ । फा० रुनास । इं० मेडररुट । Maaaer root.
नस्याः शाकगुणाः—शाके स्यान्मधुरा लघ्वी स्त्रिग्धा दीतिकरी मता । वातपित्तहरी
त्रोक्ता ऋषिभिः सत्यवादिभिः ॥ फलमपि यकृदोषहरम् । २ दे० भा० कुसुंभा ।
गा० गुलेमारकर तुख्यमकाशा । इं० आफिसिनल् कार्थेमस् । Officinal
arthamus.कुसुंभपुष्पं सुस्वादु त्रिदोषप्रमं च भेदकम् । रुक्षमुष्णं पित्तल
व्र केशरंजककारकम् ॥ कफनाशकं चैव लघु प्रोक्तं मनीषिभिः । ३ दे० भा०
शेख । फा० लाक । इं० शेललाक् ॥ Shell lac. ४ दे० भा० हलदी ।
गा० जरद चौव । इं० टर्मेरिक् । Turmeric

कृमिन्द्रा हलदी योषित्प्रियाहृष्टविलासिनी ॥ १९८ ॥

हरिद्रा कटुका तिक्ता सूक्ष्मोष्णा कफपित्तनुत् ।

वर्ण्या त्वग्दोषमेहात्मशोषपांडुवणापहा ॥ १९९ ॥

आम्रगन्धिहरिद्रा ।

दार्वीभेदा सुगंधा च दार्वी दारुकदारु च ।

कर्पूरा पञ्चपत्रा स्थात्सुरभी सुरनायका ॥ २०० ॥

आम्रगन्धिहरिद्रा या सा शीता वातला मता ।

पित्तहन्मधुरा तिक्ता सर्वकंडूविनाशिनी ॥ २०१ ॥

अरण्यहरिद्रा ।

अरण्यहलदीकंदः कुष्ठवातात्मनाशनः ।

दारुहरिद्रा ।

दार्वी दारुहरिद्रा च पर्जन्या पर्जनीति च ॥ २०२ ॥

कटंकटेरी पीता च भवेत्सैव पचंपचा ।

सैव कालीयकः प्रोक्तस्तथा कालेयकोपि च ॥ २०३ ॥

पीतदुश्च हरिद्रदुश्च पीतदारुश्च पीतकम् ।

दार्वी निशागुणा किन्तु नेत्रकर्णास्यरोगनुत ॥ २०४ ॥

रसांजनम् ।

दार्वीक्षाथसमं क्षीरं पादं पक्त्वा यदा धनम् ।

तदा रसांजनं ख्यातं नेत्रयोः परमं हितम् ॥ २०५ ॥

१ दे० मा० चवां हलदी । अंविया हलदी । ३० मेंगोजिजर ।

Mungojinger. २ दे० मा० वनहलदी । जंगली हलदी । ३ दे० मा०

दारहलदी । फा० दारचोव । ४ दे० मा० रसांत । शोधनम्-तोयेत्युष्णे परि-

क्षिप्य द्रवीकुर्याद्रसांजनम् । वाससा स्वावयित्वा च शोधनं भादुरश्मिना ॥ १ ॥

स्वं विशोधितं तच्च सर्वकर्मसु योजयेत् । विशुद्धं नाशयेद् व्याधीन् नाविशुद्धं

कडाचन ॥ २ ॥ इंडियन बर्बरी Extract of Indian Berberry.

रसांजनं ताक्ष्यशैलं रसगर्भं च ताक्ष्यजम् ।
रसांजनं कटुक्षेष्मविषनेवविकारनुत् ॥ २०६ ॥
उष्णं रसायनं तिक्तं छेदनं व्रणदोषहत् ।
वाकुची ।

अवलगुजा वाकुची स्यात्सोमराजी सुपर्णिका ॥ २०७ ॥
शशिलेखा कृष्णफला सोमा पूतिफलीति च ।
सोमबली कालमेषी कुष्ठग्नी च प्रकीर्तिता ॥ २०८ ॥
वाकुची मधुरा तिक्ता कटुपाका रसायनी ।
विष्टभवद्धिमा रुच्या सरा श्लेष्मास्तपित्तनुत् ॥ २०९ ॥
रुक्षा हया श्वासकुष्ठमेहज्वरकृमिप्रणुत् ।
तत्फलं पित्तलं कुष्ठकफानिलहरं कटु ॥ २१० ॥
केशं त्वच्यं वभिश्वासकासशोथामर्पाङ्गुत् ।
चक्रमर्दः ।

चक्रमर्दः प्रपुन्नाटो इदुघ्रो मेषलोचनः ॥ २११ ॥
पद्माटः स्यादेडगजः चक्री पुन्नाट इत्यपि ।
चक्रमर्दो लघुः स्वादुरुक्षः पित्तानिलापहः ॥ ११२ ॥
हयो हिमः कफश्वासकुष्ठददुकूमीन् हरेत् ।
हंत्युष्मं तत्फलं कुष्ठकंडुददुविषानिलान् ॥ २१३ ॥
गुल्मकासकृमिश्वासनाशनं कटुकं समृतम् ।
अैतिविषा ।

विषा त्वतिविषा विश्वा शृंगी प्रतिविषाहृणा ॥ २१४ ॥
शुक्ळकंदा चोपविषा भंगुरा घुणवल्लभा ।

१ दे० भा० बाबची । श्विन्नारिवाकुचीमेदाः इ० एसक्यूलंट्लफाकुर्शा ॥
Esculent flacourtie. २ दे० भा० पवाड । फा० संजीस बोया । प०
भा० रालो । इ० ओवललीबृड केशिया ovalleaved cussia. ३ दे० भा०
अंतीस । बे० भा० आतडच । अतिविषा त्रिधा ज्ञेया शुक्ळा कृष्णा तथाऽरुणा ।
रसवीर्यविषाकेषु निर्विषेव गुणविका ॥ १ ॥

विषा सोष्णा कटुस्तिक्ता पाचनी दीपनी हरेत् ॥ २१५ ॥
कफपित्तातिसारामविषकासवमिकूमीन् ।
सावैरलोधः । पटियालोधः ।

लोधस्तिलस्तिरीटश्च सावरो गालवस्तथा ॥ २१६ ॥
द्रितीयः पटिकालोधः ऋसुकः स्थूलवलक्लः ।
जीर्णपत्रो वृहत्पक्षः पट्टीलाक्षा प्रसादनः ॥ २१७ ॥
लोधो य्राही लघुः शीतः चक्षुष्यः कफपित्तनुत् ।
कषायो रक्तपित्तासृग्ज्वरातीसारशोथहन् ॥ २१८ ॥
रसोनः ।

लशुनस्तु रसोनः स्यादुग्रगंधो महोषधम् ।
अरिष्टो म्लेच्छकदेश्च यवतेष्टो रसोनकः ॥ २१९ ॥
यदामृतं वैनतेयो जहार सुरसत्तमात् ।
तदा ततोऽपतद्विदुः स रसोनोभवद्विवि ॥ २२० ॥
पञ्चभिश्च रसेयुक्तो रसेनाम्लेन वर्जितः ।
तस्माद्भासोन इत्युक्तो द्रव्याणां गुणवेदिभिः ॥ २२१ ॥
कटुकश्चापि मूलेषु तिक्तः पत्रेषु संस्थितः ॥
नाले कषाय उद्विष्टो नालाग्ने लवणः स्मृतः ॥ २२२ ॥
बीजे तु मधुरः प्रोक्तो रसस्तद्गुणवेदिभिः ।
रसोनो वृंहणो वृष्यः स्त्रिगंधोष्णः पाचनः सरः ॥ २२३ ॥
रसे पाके च कटुकस्तीक्ष्णो मधुरको मतः ।
वलवर्णकरो मेधाहितो नेत्रयो रसायनः ॥ २२४ ॥
हुद्गोगजीर्णज्वरकुक्षिशूलविवंधगुलमारुचिकासशोफान् ।
दुर्नामकुष्ठानलसादजंतुसमीरणाधासकफांश्च हंति ॥ २२५ ॥

१ दे० भा० लोध, पठानीलोध । अरवी मुगाम । २ दे० भा० थोम ।
मध्यं मांसं तथान्तं च हितं लशुनसेविनाम् । व्यायाममातपं रोपमतिनीरं पयो-
गुडम् ॥ १ ॥ रसोनमश्वन् पुलदस्यजेदेतद्विरंतरम् ।

पलांडुः ।

पलांडुर्यवनेष्टश्च दुर्गंधो मुखदूषकः ।

पलांडुस्तु गुणेज्ञेयो रसोनसदशो बुधैः ॥ २२६ ॥

स्वादुः पाके रसेनोष्णः कफकृत्त्रातिपित्तलः ।

हरते केवलं वातं वलवीर्यकरो गुरुः ॥ २२७ ॥

भल्लातकम् ।

भल्लातकं त्रिषु प्रोक्तमरुष्कोरुष्करोऽग्निकः ।

तथैवाग्निमुखी भल्ली वीरवृक्षश्च शोफकृत ॥ २२८ ॥

भल्लातकफलं पक्कं स्वादु पाकरसं लघु ।

कषायं पाचनं स्निग्धं तीक्ष्णोष्णं छेदिभेदनम् ॥ २२९ ॥

मेध्यं वह्निकरं हांति कफवातवणोदरम् ।

कुष्ठार्थोग्रहणीगुल्मशोथानाहज्वरकृमीन् ॥ २३० ॥

तन्मज्जा भधुरा वृष्या वृंहणी वातपित्तहा ।

वृत्तमारुष्करं स्वादुपित्तघं केश्यमग्निकृत ॥ २३१ ॥

भल्लातकः कषायोष्णः शुक्रलो मधुरो लघुः ।

वातक्षेष्मोदरानाहकुष्ठार्थोग्रहणीगदान् ॥ २३२ ॥

हांति गुल्मज्वरवित्रवह्निमांद्यकृमिवणान् ।

+ गंधाकाररसैस्तुल्यो गृजनस्तु पलांडुना । सूक्ष्मनालाग्रपत्रत्वाद्विद्यतेसौ
पलांडुतः ॥ १ ॥ सच स्वेदनमोजने च प्रयुक्तः कफवातजान्यशासि हांति
पित्तवतां नराणामपथ्यः ॥ १ दे० भा० भिलाखे । नदीभल्लातकः वृषांकः ।
अस्य वृत्तगुणाः—भल्लातकवृत्तं मधुरं ॥ फा० विलादुर् । कषायं वातकोपनम् ॥
इं मार्किंगन्ट् ॥ Markingnut ॥ भल्लातकशुद्धिः । भल्लातकानां पवनोद्धतानां
वृत्ताच्युतानां च यदाढकं स्थात् । तच्चेष्टका चूर्णकणीविष्वाय प्रक्षालयित्वा
विसृजेत्प्रवाते ॥ १ ॥ शुष्कं पुनस्तद्विदलीकृतं च ततः पचेदप्सु चतुर्गुणासु ।
तत्पादशेषं परिपूतशीतं क्षीरेण तुलयेत् पुतः पचेत् ॥ २ ॥

भंगा ।

भंगा गंजा मातुलानी मादनी विजया जया ॥ २३३ ॥

भंगा कफहरी तिक्का ग्राहणी पाचनी लघुः ।

तीक्ष्णोष्णा पित्तला मोहमदवाग्विवर्द्धनी ॥ २३४ ॥
खसतिलः ।

तिलभेदः खसतिलः खाखसश्चापि संस्मृतः ।

स्यात्खाखसफलोदभूतं वल्कलं शीतलं लघु ॥ २३५ ॥

ग्राहि तिक्तं कषायं च वातकृत्कफकासहत् ।

थातूनां शोषकं रुक्षं मदकृद्वाग्विवर्द्धनम् ॥ २३६ ॥

मुहुर्मोहकरं रुच्यं सेवनात्पुस्त्वनाशनम् ।

अहिफेनकम् ।

उक्तं खसफलं क्षीरमाफूकमहिफेनकम् ॥ २३७ ॥

आफूकं शोषणं ग्राहि क्षेष्मन्नं वातपित्तलम् ।

तथा खसफलोदभूतवल्कलप्रायमित्यपि ॥ २३८ ॥

१ दे० भा० भांग-सा. चतुर्धा सितारक्तपीतनीलप्रसूनकैः । शंक्राशनं तु विजया बैलोक्यविजया जयेति १ तंत्रांतरे । फा० किन्नाविष, घरकुलख्याल, शवनवंग । इ० इंडियनहैम । Indian Hemp. । २ दे० भा० पोस्त । फा० कोकनार इ० पोपिकास्युलस Pop. py capsules. ३ दे० भा० अफीम । फा० तिर्याकअफयून । इ० औपियम् opium अहिफेनशुद्धिः । योगतरंगिण्याम्-अहिफेनं शृङ्खवेररसैर्भवियं त्रिसप्तधा । शुद्धत्युक्तेषु योगेषु योजयेत विधानतः ॥ १ ॥ अहिफेनश्चतुर्धा १ जारणे-श्वेतवर्णः २, मारणे कृष्णवर्णः ३, वारणे-पीतवर्णः ४, सारणे-चित्रवर्णः ५, विजयावीजचूर्णस्य भक्षणं विधिना प्रिये । सर्वोपकारकं तत्तु सर्वरोगापहारकम् ॥ १ ॥ परिप-क्वानि वीजानि वृक्षादानीय यत्नतः । छायायां पातयेदक्षेदक्षयेत्कर्षमात्रकम् ॥ २ ॥ कपिलापयसा सार्द्धं मासमात्रं वरानने । धातुवृद्धिर्मवेत्तस्य चांत्रवृद्धि-विनश्यति ॥ ३ ॥ मांसदाढ्यं वसादाढ्यं देहदाढ्यं भवेत् प्रिये । अग्निदीतिर्मनो-दीतिः कामदीसिस्तथैव च ॥ प्रजादीसिर्द्विदीसिर्दीसीनां पंचकं भवेत् ॥ ४ ॥

खसबीजानि ।

दुच्यंते खसबीजानि ते खाखसतिला अपि ।

खसबीजानि बल्यानि वृष्याणि सुगुरुणि च ॥ २३९ ॥

शमयन्ति कफं तानि जनयन्ति समीरणम् ।

सैन्धवम् ।

सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं पाणिमंथं च सिंधुजम् ॥ २४० ॥

सैन्धवं लवणं स्वादु दीपनं पाचनं लघु ।

स्तिर्घं रुच्यं हिमं वृष्यं सूक्ष्मं नेत्रयं विद्रोषहत् ॥ २४१ ॥

गडाख्यम् ।

शाकंभरीयं कथितं गडाख्यं रोमकं तथा ।

गडाख्यं लघु वातव्यमत्युष्णं भेदि पित्तलम् ॥ २४२ ॥

तीक्ष्णोष्णं चापि सूक्ष्मं चाभिष्यंदि कटुपाकि च ।

सासुद्रम् ।

सासुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वशिरं च तत् ॥ २४३ ॥

सासुद्रजं सागरजं लवणोदधिसंभवम् ।

सासुद्रं मधुरं पाके सतिकं मधुरं शुरु ॥ २४४ ॥

नात्युष्णं दीपनं भेदि सक्षारमविदाहि च ।

श्लेष्मलं वातवृत्तिक्रमरूक्षं नातिशीतलम् ॥ २४५ ॥

विडम् ।

विडं पाक्यं च कतकं तथा द्राविडमासुरम् ।

विडं सक्षारमूर्ढाधः कफवातानुलोमनम् ॥ २४६ ॥

१ दे० मा० खसखास । फा० तुखमे कोकनार । इ० पोपीसीड्स
Poppy seeds, २ दे० मा० सैंधानमक । फा० नमके संग । विलोरी
नमके सेंध इ० काराइड आफू सोयियं । Chloride of Sodium ३ दे० मा०
सांक नमक । फा० मिलहे अबकीर । ४ दे० फा० समुद्र नमक । फा०
नमक । इ० सालट । salt । ५ दे० मा० मनिआरी नमक । काचलक्षण-
मन्यत्र दर्शनीयम् । रोमकं, द्वोणी अन्यत्र दर्शनीयम् ।

ऊर्ध्वं कफमधो वातं संचारयोदित्यर्थः ।

दीपनं लघु तीक्ष्णोप्पणं रुच्यं रुच्यं व्यवायि च ॥ २४७ ॥
विवंधानाहविष्टुभोदर्दग्गौरवशल्लतुत ।

सौवर्चलम् ।

सौवर्चलं स्यादुचकमक्षपाकं च धातुमत् ॥ २४८ ॥

रुचकं रोचनं भेदि दीपनं पाचनं परम् ।

सस्नेहं वातनुन्नातिपित्तलं विशदं लघु ॥ २४९ ॥

ओद्धिदम् ।

ओद्धिदं पांशु लवणं यज्ञातं भूमितः स्वयम् ।

क्षारं गुरु कटु स्त्रिघं शीतलं वातनाशनम् ॥ २५० ॥

चणकाम्लकम् ।

चणकाम्लकमत्युष्णं दीपनं दंतहर्षणम् ।

लवणाम्लरसं रुच्यं शूलाजीर्णविवंधनुत् ॥ २५१ ॥

यवक्षाराँ स्वर्जिका सुवर्चिकाश्च ।

पाक्यः क्षारो यवक्षारो यावशूको यवाग्रजः ।

स्वर्जिकापि स्मृतः क्षारः कापोतः सुखवर्चका ॥ २५२ ॥

१ दे० भा० सौचल नमक । कालानमक । फा० नमक सियाह, इ० अनाक्या सोडिअं क्लोराइड । Unadua Sodium Chloride. भूमिसुद्धिद्यो-
त्पन्नस्य धारोदकस्य सूर्यरद्धिमिर्वा वहिना क्वथनाद्यहृष्णं तदौद्धिदम् । पांशु
लवणं पृथक् । २ दे० भा० औपर नमक । रेहग । फा० वोरे अर्मनी । इ०
कावोनेट ओफसोडा । Carbonate of Soda नवसादरः । नवसादरकस्तीक्ष्णः
सरोत्रणविदारणः । रसज्ञारणकारी स्यादत्युष्णश्चैव गुलमनुत् ॥ १ ॥ मलस्तंभं
चोदरं च छीहं शूलं च नाशयेत् । अस्य शुद्धिः । नवसारो भवेच्छुष्कश्चूर्णतोदे
विपाचितः । दोलायत्रेण यन्त्रेण भिषग्मिर्वोगसिद्धये ॥ २ ॥ ३ दे० भा० सज्जा ।
फा० संजार कलिया । इ० कावोनिट ओफसोडा । Carponate of Soda,

कथितः स्वर्जिकाभेदो विशेषज्ञः सुवर्चका ।

निहंति शूलवातामश्लेष्मध्वासगलामयान् ॥ २५३ ॥

पांडवशोग्रहणीगुलमानाहप्लीहहदामयान् ।

स्वर्जिकालपगुणा तस्माद्विशेषाद्गुलमशूलहत् ॥ २५४ ॥

सुवर्चका स्वर्जिकावद्वोद्धृत्या गुणतो जनैः ।

सौभाग्यम् ।

सौभाग्यं टंकणं क्षारं धातुद्रावकमुच्यते ॥ २५५ ॥

टंकणं वक्त्रिकृद्धूक्षं कफहद्रातपित्तकृत् ।

क्षारद्वयं क्षारत्रयं च ।

स्वर्जिका यावशूकश्च क्षारद्वयमुदाहृतम् ॥ २५६ ॥

टंकणेन युतं तत्तु क्षारत्रयमुदीरितम् ।

मिलितस्तूक्तगुणवद्विशेषाद्गुलमहत्परम् ॥ २५७ ॥

क्षाराष्टकम् ।

पलाशवज्जित्तिखरिचिंचार्कतिलनालजः ।

यवजः स्वर्जिका चेति क्षाराष्टकमुदाहृतम् ॥ २५८ ॥

क्षारा एतेऽग्निना तुल्या गुलमशूलहरा भृशम् ।

चूकम् ।

चुक्रं सहस्रवैधि स्याद्रसाम्लं शुक्रमित्यपि ॥ २५९ ॥

चुक्रमत्यम्लमुण्णं च दीपनं पाचनं परम् ।

शूलगुलमविवन्धामवातश्लेष्महरं परम् ॥ २६० ॥

वमितृष्णास्यवैरस्यहत्पीडावक्त्रिमांघ्रहत् ।

इति हरीतक्यादिवर्गः ।

१ दे० मा० सुहागा । फा० लीगार । इ० बोराक्स वाबोरेट् आॱ्फ सोडा ।

Borax Borate of Soda. २ दे० मा० चूक । आदौ टंकणमादाय कांजिकाम्ले विनिक्षिपेत् । एकरात्रात्सुदृत्य रौद्रयन्ते विभावयेत् ॥ १ ॥ नर-मूत्रगतं टंकं गवां मूत्रगतं तथा । दिनांते तत्सुदृत्य जम्बीराम्लगतं कुरु ॥ २ ॥-

कर्पूरादिवर्गः ।

कैर्पूरः ।

पुंसि छीवे च कर्पूरो हिमाह्नो हिमबालकः ।
 घनसारञ्चन्द्रसंज्ञो हिमनाभापि स स्मृतः ॥ १ ॥
 कर्पूरः शीतलो वृष्यः चक्षुष्यो लेखनो लघुः ।
 सुरभिर्मधुरस्तिक्तः कफपित्तविषापहः ॥ २ ॥
 दाहतृष्णास्यवैरस्यमेदोदौर्गन्धयनाशनः ।
 कर्पूरो द्विविधः प्रोक्तः पक्वापक्वमेदतः ॥ ३ ॥
 पक्वात्कर्पूरतः प्राहुरपक्वं गुणवत्परम् ।
 चीनिंसंज्ञा ।

चीनसंज्ञस्तु कर्पूरः कफक्षयकरः स्मृतः ॥ ४ ॥
 कुष्ठकंडूवभिहरस्तथा तिक्तरसश्च सः ।
 कस्तूरी ।

मृगनाभिर्मृगमदः कथितस्तु सहस्राभित ॥ ५ ॥
 कस्तूरिका च कस्तूरी वैधमुख्या च सा स्मृता ।

-जम्बीराम्लात्समुद्रत्य नारिकेलस्य पात्रके । मरीचं चूर्गसंयुक्तं क्षालयेच्छीत-
 लाम्बुना ॥ ३ ॥ एवं टंकणमादाय सर्वयोगेतु योजयेत् । टंकणं वहियोगेन
 शूटितं शुद्धतां ब्रजेत् ॥ ४ ॥ (श्वेतटंकणगुगाः) सुश्वेतं टंकणं ज्ञिग्वं कटूष्णं
 कफवातनुत् । आमक्षयापहच्छवासविषकासमलापहम् ॥ १ ॥

१ कपूर भीमसेनी । मिसरी वीकानेरी १ तो० इलायची छोटी १ तो०
 कापूर १ तो० खरल करना १ पहिर । शिरोमध्यं तलं चेति कर्पूरत्रिविधः
 स्मृतः । फा० कापूर । इ० केम्फर । Camphor. २ चीनिया कफ्तर आ-
 रती । ३ कस्तूरी, फा०मुष्क इ०मस्क Musk. (दुष्टपरीक्षा)-करतलजलमध्ये
 स्थापनीया महद्विः पुनरपि तदवस्यां चित्तनीयं मुहूर्तम् । यदि भवति च रक्तं
 तज्जलं पीतवर्णं न भवति मृगनाभिः कृत्रिमोऽयं विकारः ॥ १ ॥ कस्तूरीपंच
 मेदा अन्यत्र द्रष्टव्याः ।

कामरूपोद्भवा कृष्णा नैपाली नीलवर्णयुक् ॥ ६ ॥
 काश्मीरे कपिलच्छाथा कस्तूरी त्रिविधा स्मृता ।
 कामरूपोद्भवा श्रेष्ठा नैपाली मध्यमा भवेत् ॥ ७ ॥
 काश्मीरदेशसंभूता कस्तूरी हाथमा स्मृता ।
 कस्तूरिका कटुस्तिका क्षारोणा शुक्रला गुरुः ॥ ८ ॥
 कफवातविषच्छर्दिशीतदौर्गन्धदोषहत् ।

लता कस्तूरिका ।

लता कस्तूरिका तिक्ता स्वाद्वी वृष्ण्या हिमा लघुः ॥ ९ ॥
 चक्षुष्या छेदनी श्लेष्मतृष्णावस्त्यास्यरोगहत् ।

गन्धमार्जारवीर्यम् ।

गन्धमार्जारवीर्यन्तु वीर्यकृत्कफवातहत् ॥ १० ॥
 कण्डुकुष्ठहरं नेत्रयं सुगन्थं स्वेदगन्धनुत् ।

चन्दनम् ।

श्रीखण्डं चन्दनं न खी भद्रश्रीस्तैलपर्णिका ॥ ११ ॥

गन्धसारो भलयजस्तथा चन्द्रद्युतिश्व सः ।

स्वादे तिक्तं कषे पीतं छेदे रक्तं तनौ सितम् ॥ १२ ॥

अन्थिकोटरसंयुक्तं चन्दनं श्रेष्ठमुच्यते ।

चन्दनं शीतलं रक्षं तिक्तमाहादनं लघु ॥ १३ ॥

श्रमशोषविषश्लेष्मतृष्णापित्तालदाहनुत् ।

हरिचन्दनम् ।

कर्लंबकं तु कालीयं पीताभं हरिचन्दनम् ॥ १४ ॥

१ परीक्षा—स्वादे तिक्ता पिंजरा केतकीनां गन्धं धत्ते लाघवं तोलकेन । याप्तु न्यस्ता नैव वैवर्ण्यमीयात् कस्तूरी सा राजभोग्या प्रशस्ता ॥ १ ॥ मुसक-
 दाना । २ गौरासार, वेद अंजीर । मुष्कविलाई । खदाशी धोडा करंज ।
 ३ सुपेद चन्दन—चन्दनं द्विविधमन्यत्र द्रष्टव्यम् । कैरातं शंबरं च । फाल
 सुपेद सन्दल इं० सेंडलवुड Sandal wood. ४ पीतचन्दन ।

हरिप्रियं कालसारं तथा कालानुसार्थकम् ।
कालीयकं रक्तगुणं विशेषाद्व्यंगनाशनम् ॥ १५ ॥
रक्तचन्दनम् ।

रक्तचन्दनमाख्यातं रक्तांगं क्षुद्रचन्दनम् ।
तिलपर्णीं रक्तसारं तत्रवालफलं स्मृतम् ॥ १६ ॥
रक्तं शीतं गुरु स्वादु छर्दितृष्णास्त्रापित्तहत् ।
तिक्तं नेत्रहितं वृष्यं ज्वरब्रणविषापहम् ॥ १७ ॥
पैतंगम् ।

पतंगं रक्तसारं च सुरंगं रंजनं तथा ।
पटरं जक्कमाख्यातं पत्तूरं च कुचन्दनम् ॥ १८ ॥
पतंगं मधुरं शीतं पित्तश्लेष्मब्रणास्त्रात् ।
हरिचन्दनवद्वेद्यं विशेषादाहनाशनम् ॥ १९ ॥
चन्दनानि तु सर्वाणि सहशानि रसादिभिः ।
गन्धेन तु विशेषोऽस्ति पूर्वं श्रेष्ठतमं गुणैः ॥ २० ॥
अगुरुं । कृष्णागुरु । अगुरु सत्त्वं च ।

अगुरु प्रवरं लोहं राजार्हं योगजं तथा ।
वशिकं कूमिजं चापि कूमिजग्धमनार्थकम् ॥ २१ ॥
अगुरुष्णं कटुत्वच्यं तिक्तं तीक्ष्णं च पित्तलम् ।
लघुकर्णाक्षिरोगन्नं शीतवातकफप्रणुत् ॥ २२ ॥
कृष्णं गुणाधिकं तत्त्वं लोहवद्वारि मज्जाति ।
अगुरुप्रभवः स्त्रेहः कृष्णागुरुसमः स्मृतः ॥ २३ ॥

१ लालचन्दन फा० सन्दले सुखब इ० रेड सांडल बुड Red Sandal wood. २ वक्म, फा० वक्म इ० सेपन बुड Sappan wood, वर्वरोत्थं वर्वरकं श्वेतवर्वरकं तथा । शीतं सुगन्धिपित्तारिः सुरभिश्वेति सतधा ॥ १ ॥ वर्वं शीतलं तिक्तं कफमास्तपित्तजित् । कुष्ठकं बुत्रणान् हन्ति विशेषादक्तदोषजित् ॥ २ ॥ ३ अगुरु । काला अगुर । अगुरसत । काष्ठागुरु । दाहागुरु । मंगला-
गुरु । भेदा॒ इ० इगलबुड Eagle wood.

देवदारु ।

देवदारु स्मृतं दारु भद्रदारु वद्रदारु च ।

मस्तदारु द्रुकिलिमं किलिमं सुरभूलहः ॥ २४ ॥

देवदारु लघु स्तिग्धं तिक्तोणं कटुपाकि च ।

विबन्धाध्मानशोथामतंद्रा हिक्काज्वराम्बजित् ॥ २५ ॥

प्रमेहपीनसश्लेष्मकासकंडुसमीरनुत् ।

सरलः ।

सरलः पीतवृक्षः स्थातथा लुरभिदारुकः ॥ २६ ॥

सरलो मधुरस्तिक्तः कटुपाकरसौ लघुः ।

स्तिग्धोणः कर्णकण्ठाक्षिरोगरक्षोहरः स्मृतः ॥ २७ ॥

कफानिलस्वेददाहकासमूच्छ्वाप्रिणापहः ।

तंगरम् ।

कालानुसायर्थं तगरं कुटिलं नहुर्षं नतम् ॥ २८ ॥

अपरं पिण्डतगरं दण्डहस्तं च वर्हिणम् ।

तगरद्रव्यमुण्णं स्थात् स्वादु स्तिग्धं लघु स्मृतम् ॥ २९ ॥

विषापस्मारकूलाक्षिरोगदोषत्रयापहम् ।

पङ्ककम् ।

पद्मकं पद्मगन्धिं स्थातथा पद्माहयं स्मृतम् ॥ ३० ॥

पद्मकं तुवरं तिक्तं शीतलं वातलं लघु ।

विसर्पदाहविस्फोटकुष्टश्लेष्मासापित्तलुत् ॥ ३१ ॥

गर्भसंस्थापनं वृष्यं वसिव्रणतृष्णाप्रणुत् ।

१ दि. आर फा० देवदार । २० पाइन् सडीपौदर । स्तिग्धदारु काष्ठदारु ।
चीडा । दङ्गेदाः । २१ धूप वृक्ष । ३० लौग लिंबु पाईन् ३ तगर ब० तगर
पादुका अर० अशारुन । ४ पद्मकाष्ठ ।

गुगुलः ।

गुगुलुदेवधूपश्च जटायुः कौशिकः पुरः ॥ ३२ ॥
 कुम्भोल्लूखलकं क्षीवे महिषाक्षः पलंकषः ।
 महिषाक्षो महानीलः कुमुदः पद्म इत्यपि ॥ ३३ ॥
 हिरण्यः पंचमो ज्ञेयो गुगुलोः पंचजातयः ।
 मृगांजनसवर्णस्तु महिषाक्ष इति स्मृतः ॥ ३४ ॥
 महानीलस्तु विज्ञेयः स्वनामसमलक्षणः ।
 कुमुदः कुमुदाभः स्यात् पद्मो माणिक्यसन्निभः ॥ ३५ ॥
 हिरण्याख्यस्तु हेमाभः पंचानां लिङ्गभीरितम् ।
 महिषाक्षो महानीलो गजेद्राणां हितादुभौ ॥ ३६ ॥
 हयानां कुमुदः पद्मः स्वस्त्यारोग्यकरौ परौ ।
 विशेषेण भलुष्याणां कनकः परिकीर्तिः ॥ ३७ ॥
 कदाचिन्महिषाक्षश्च मतः कैश्चिन्नृणामपि ।
 गुगुलुर्विशदस्तित्तो वीर्योणः पित्तलः सरः ॥ ३८ ॥
 कषायः कटुकः पाके कटुरुक्षो लघुः परः ।
 भग्रसन्धानकृद्वृष्यः सूक्ष्मस्तप्यो रसायनः ॥ ३९ ॥
 दीपनः पिच्छिलो वल्यः कफवात्त्रणापचीः ।
 मेदोमेहाश्मवातांश्च क्लेदकुष्ठासमारुतान् ॥ ४० ॥
 पिण्डकाग्रंथिशोफाशो गण्डमालाकृमीञ्जयेत् ।
 माधुर्याच्छमयेद्वातं कषायत्वाच्च पित्तहा ॥ ४१ ॥
 तित्तत्वात्कफजित्तेन गुगुलः सर्वदोषहा ।
 स नवो वृंहणो वृप्यः पुराणस्त्वतिलेस्वनः ॥ ४२ ॥

१ गुगुल, गन्धराज गुगुल, भूमिजगुगुल । फा०वोराजहुदान इ० हिण्ड-
 यन् डेलियम् । शुद्धिः—दुग्धेन त्रिफलाक्वाद्ये दोलायने विपाचितः । वाससा-
 गालितो ग्राह्यः सर्वकर्मसु गुगुलः ॥ १ ॥

स्त्रिघः कांचनसंकाशः पक्षजंबूफलोपमः ।
 नूतनो गुगुलुः प्रोक्तः सुगंधिर्यस्तु पिच्छिलः ॥ ४३ ॥
 शुष्को दुर्गंधकश्चैव त्यक्तभृतिवर्णकः ।
 पुराणः स तु विजेयो गुगुलुर्वीर्यवर्जितः ॥ ४४ ॥
 अम्लं तीक्ष्णमजीर्ण च व्यवायं भ्रममातपम् ।
 मद्यं रोषं त्यजेत्सम्यक् गुणार्थी पुरसेवकः ॥ ४५ ॥
 श्रीवासः ।

श्रीवासः सरलस्त्रावः श्रीवेष्टो यक्षधूपकः ।
 श्रीवासो मधुरस्तिक्तः स्त्रिघोषणस्तुवरः सरः ॥ ४६ ॥
 पित्तलो वातनूर्धाक्षिस्वररोगक्षयापहः ।
 रक्षोन्नः स्वेददोर्गंधयूकाकंडूब्रणप्रणुत ॥ ४७ ॥
 रैलः ।

रालस्तु शालनिष्यासः तथा सर्जरसः स्मृतः ।
 देवधूपो यक्षधूपस्तथा सर्वरसश्च सः ॥ ४८ ॥
 रालो हिमो गुरुस्तिक्तः कषायो ग्राहको हरेत ।
 दोषात्त्वस्वेदवीर्सर्पज्वरब्रणविपादिकाः ॥ ४९ ॥
 ग्रहभग्नास्थिदग्धामशूलातीसारनाशनः ।

—अस्योत्पत्तिः—जायंते पुरपादपा मरुभुवि ग्रीष्मेकसंतापिताः शीततौ शिशिरेष्वि गुगुलुरसं मुंचन्ति ते पंचधा । हेमाभं महिषाक्षितुल्यमपरं सत्पद्मारागो-पमं भृंगाभं कुमुदद्युतिं च विधिना ग्राहा परीक्षा ततः ॥ १ ॥—परीक्षाः ॥ वह्नौ ज्वलन्ति तपने विलयं प्रयांति क्लिद्यन्ति कोष्णसलिले पयसः समानाः । ग्राह्याः शुभाः परिहरेविरकालजातान्सक्षारवर्णसमपूयविगन्धवर्णान् ॥ २ ॥ १ गन्धविरोजा फा० संदर्शस-काइरुवा वं० नवनीतखोटी इ० गमओपल सप्डरेक । (सतविरोजा) Gomeopal Sandaryack श्रीवाससारः कफनु-न्मूत्रलो ज्वरसंहरः । शोफविम्लापनो लेपात्कृमिहद्वेदनापहः ॥ १ ॥ २ राल फा० रालमगरेवी इ० नारसम् Yellow Risin तैलं-तैलं सर्जरसोद्धूतं विस्फोटब्रण-नाशनम् । कुष्ठपामाकृमिहरं वातक्षेष्मामयापहम् ॥ १ ॥

कुंदरुः ।

कुंदरुस्तु सुकुन्दः स्यात् सुगन्धः कुन्द इत्यपि ॥ ५० ॥

कुन्दरुमधुरस्तिक्षीणस्त्वच्यः कटुर्हरेत् ।

ज्वरस्वेदप्रहालक्ष्मीसुखरोगकफानलान् ॥ ५१ ॥

सिंहकः ।

सिंहकस्तु तुरुष्कः स्याद्यतो यवनदेशजः ।

कपितैलं स चार्ख्यातं तथा च कपिनामकः ॥ ५२ ॥

सिंहकः कटुकः स्वादुः स्त्रिग्धोष्णः शुक्रकांतिकृत् ।

वृष्यः कण्ठघः स्वेदकुष्ठज्वरदाहप्रहापहः ॥ ५३ ॥

जातीफलम् ।

जातीफलं जातिकोषं भालतीफलमित्यपि ।

जातीफलं रसे तिलं तिक्ष्णं रोचनं लघु ॥ ५४ ॥

कटुकं दीपनं ग्राहि स्वर्य्यं क्षेष्मानिलापहम् ।

निहंति सुखवैरस्यं यद्यदौर्गंध्यकृष्णताः ॥ ५५ ॥

कृमिकासे वभिश्वासशोषपीनसहदुजः ।

जातिपत्री ।

जातीफलस्य त्वक् प्रोक्ता जातीपत्री भिषगवरैः ॥ ५६ ॥

जातिपत्री लघुः स्वादुः कटूष्णा रुचिवर्णकृत् ।

कफकासवभिश्वासतृष्णाकृमिविषापहा ॥ ५७ ॥

- १ गुन्दवरोसा । फां० रुमीखोटी मस्तकी । इं० ओलिवेनम् Olibanum.
 २ मीआसाइला फा० सिलारस इं० लिकिडएम्बर Lipuid amber. ३ जाय-
 फल--जातीफलं सशब्दं च त्रिग्धं गुह च शस्यते । तैलं जातिफलोद्भूतं समु-
 त्तेजनमन्निदम् ॥ १ ॥ जीर्णतिसारशमनमाघानाक्षेपशूलहृत् । आमवातहरं वर्त्यं
 दंतवेष्टवणार्तिनुत् ॥ २ ॥ फा० जोभोवुवा इं० नट्मेग Nutmeg. ४ जावित्री ।
 फा० वजवार इं० मेस Mace.

लंबंगम् ।

लंबंगं देवकुसुमं श्रीसंज्ञं श्रीप्रसूनकम् ।

लंबंगं कटुकं तिक्तं लघु नेत्रहितं हिमम् ॥ ५८ ॥

दीपनं पाचनं रुच्यं कफपित्तास्थनाशनम् ।

तृष्णां छर्दिं तथाध्मानं शूलमाशु विनाशयेत् ॥ ५९ ॥

कासं श्वासं च हिक्कां च क्षयं क्षपयति धूवम् ।

बहुला ।

एला स्थूला च बहुला पृथ्वीका त्रिपुटापि च ॥ ६० ॥

भद्रैला वृहदेला च चन्द्रबाला च लिष्टुटिः ।

स्थूला च कटुका पाके रसे चानिलकृलघुः ॥ ६१ ॥

रुक्षोष्णा श्लेष्मपित्तास्थकण्डुश्वासतृष्णापहा ।

हल्लासविषवस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत् ॥ ६२ ॥

उपकुंचिका ।

सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरंगी द्राविडी त्रुटिः ।

एला सूक्ष्मा कफश्वासकासाशोभूत्रकृच्छ्रहत् ॥ ६३ ॥

रसे तु कटुका शीता लघ्वी वातहरी मता ।

त्वंक ।

त्वंकपत्रं च वरांगं स्याद् भृंगं चोचं तथोत्कटम् ॥ ६४ ॥

त्वंकं लघूष्णं कटुकं स्वादु तिक्तं च रुक्षकम् ।

पित्तलं कफवातम्रं कण्ड्वाभारुचिनाशनम् ॥ ६५ ॥

हृदस्तिरोगवातार्थः कुम्भिपीनसशुक्रहत् ।

१ लौंग फा० मेहक् । २ इलायची वडी फा० हैलं-
कलां । ३ लार्ज कोर्डमोम् । Large Cardamum. देवपुष्पोद्धवं तैलमस्ति-
कृद्वातनाशनम् । दन्तवेष्टकफार्त्तिं गर्भिष्या वमनापहम् ॥ १ ॥ ४ इलायची
छोटी फा० हैल० हिल ५ शिलिसर कार्डमोम Sheleser Cardamum.
६ तज इ० सिन्नामन्वार्क Cinnamon Bark.

दारुसिता ।

त्वक्स्वाद्वी ततुत्वक् सा स्यात्तथा दारुसिता मता ॥६६॥
उत्का दारुसिता स्वाद्वी तिक्ता चानिलपित्तहृत् ।
सुरभिः शुक्रला वर्ण्या मुखशोषतृष्णापहा ॥ ६७ ॥

तमालपत्रम् ।

पत्रं तमालपत्रं च तथा स्यात्पत्रनामकम् ।

पत्रकं मधुरं किंचित्तीक्ष्णोण्णं पिच्छिलं लघु ॥ ६८ ॥
निहंति कफवाताशेहृष्णासारुचिपीनसान् ।

नागपुष्पः ।

नागपुष्पः स्मृतो नागः केसरो नागकेसरः ॥ ६९ ॥

चांपेयो नागकिंजल्कः कथितः कांचनाह्रयः ।

नागपुष्पं कपायोण्णं रुक्षं लघ्वाभपाचनम् ॥ ७० ॥

खुड़कंडू तृष्णास्वेदच्छर्दिहृष्णासनाशनम् ।

दार्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् ॥ ७१ ॥

त्रिजातं चतुर्जातम् ।

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैः त्रिसुगन्धित्रिजातकम् ।

नागकेसरसंयुक्तं चतुर्जातकमुच्यते ॥ ७२ ॥

तदद्वयं रोचनं रुक्षं तीक्ष्णोण्णं मुखगन्धहृत् ।

लघुपित्ताग्निकृद्धर्ण्यं कफवातविषापहम् ॥ ७३ ॥

कुंकुमम् ।

कुंकुमं द्विसूणं रक्तं काश्मीरं पीतकंवरम् ।

संकोचं पिशुनं धीरं बाहीकं शोणिताभिधम् ॥ ७४ ॥

१ देश० दालचीनी फा० दार्चीनी । २ तेजपात फा० सादरम्ह इ०

फोलियामालावार्थी Folia Malabathy. तेल । वहिमांद्यानिलहराधमानाक्षेप-विनाशनम् । वांत्युल्लेशप्रशमनं संग्राहि दशनार्चिहृत् ॥ १ ॥ वाचं तैलं रजः-सावि तोये क्षिप्तं निमज्जति । ३ नागकेसर वं० नागेश्वर अर० नागरमुष्क-केसर फा० लरकीमास इ० सैफन् Saffron, ४ तृणाकुंकुम । ईरानी कुंकुम ।

काश्मीरदेशजे क्षेत्रे कुंकुमं यद्वेद्धितम् ।

सूक्ष्मकेसरभारतं पञ्चगन्धि तदुत्तमम् ॥ ७५ ॥

बालीकदेशसंजातं कुंकुमं पांडुरं यतम् ।

केतकीगन्धयुक्तं तन्मध्यमं सूक्ष्मकेसरम् ॥ ७६ ॥

कुंकुमं पारसीकं यन्मधुगन्धि तदीरितम् ।

ईषत्पांडुरवर्णं तत् ह्यधमं स्थूलकेसरम् ॥ ७७ ॥

कुंकुमं कटुकं सिगधं शिरोरुग्वणजन्तुजित् ।

तिक्तं वमिहरं वर्ण्य व्यंगदोषवयापहम् ॥ ७८ ॥

गोरोचना ।

गोरोचना तु मांगल्या बन्धा गौरी च रोचना ।

गोरोचना हिमा तिक्ता वश्या मंगलकांतिदा ॥ ७९ ॥

विषालक्ष्मीयहोन्यादगर्भस्वावक्षतास्त्रजित् ।

नखम् ।

नखं व्याघ्रनखं व्याघ्रायुधं तच्चक्रकारकम् ॥ ८० ॥

नखं स्वल्पं नखी प्रोत्ता हर्षद्विलासिनी ।

नखद्रव्यं ग्रहश्लेष्मवातास्त्रज्वरकुष्ठलुत् ॥ ८१ ॥

लघूणं शुक्रलं वर्ण्य स्वादुव्रणविषापहम् ।

अलक्ष्मीमुखदौर्गन्ध्यहृत्पाकरसयोः कटु ॥ ८२ ॥

हीवैरम् ।

बालं हीवैरवर्हिष्ठोदीच्यं केशांबुनाम च ।

१ गोलोचन फा० गायरोहन इ० गोलस्टोन विजोर Gollstone Bijoor,

२ नख० । नख० । नखी० । फा० नाखुन पर्या प्राहकसर इ० शेल Shall

नखशुद्धिः—(चण्डी) खण्डागौमयतोयेन यदि वा तिंतिणीजलैः । नखं

संकाथयेदेभिः भाँडे तु मृणमये तथा ॥ १ ॥ पुनरुद्धृत्य प्रक्षाल्य भर्जयित्वा

निषेचयेत् । गुडपथ्यांबुना ह्येवं शुद्धयति नात्र संशयः ॥ २ ॥ पंचपल्लवतोयेन

गन्धानां क्षालनं तथा ॥ ३ सुरनाली० । खाच सुगंधवाला फा० असारं मुष्क-

वाला, नेत्रवाला० । अस्य प्रतिनिधिः कसेरु जटा इ० म्यूरिकेट्स० Muricatus

बालकं शीतलं स्तक्षं लघुदीपनपाचनम् ॥ ८३ ॥
हल्लासारुचिवीसर्पहद्रोगामातिसारजित् ।
वीरणम् ।

स्याद्वीरणं वीरतरं वीरं च बहुमूलकम् ॥ ८४ ॥
वीरणं पाचनं शीतं स्तंभनं लघु तिक्तकम् ।
मधुरं ज्वरलुद्धांतिमदजित्कफपित्तहत् ॥ ८५ ॥
टृष्णास्वविषवीसर्पकृच्छ्रदाहप्रणापहम् ।
उशीरम् ।

वीरणस्य तु मूलं स्यादुशीरं नलदं च तत् ॥ ८६ ॥
असृणालं च सेव्यं च समगन्धकमित्यपि ।
उशीरं पाचनं शात स्तंभनं लघु तिक्तकम् ॥ ८७ ॥
मधुरं ज्वरहद्धांतिमदलुत्कफपित्तहत् ।
टृष्णास्वविषवीसर्पदाहकृच्छ्रप्रणापहम् ॥ ८८ ॥
जटामांसी ।

जटामांसी भूतजटा जटिला च तपस्विनी ।
मांसी तिक्ता कषाया च मेध्या कांतिबलप्रदा ॥ ८९ ॥
स्वाद्वी हिमा त्रिदोषास्वदाहवीसर्पकुष्ठलुत् ।
शिलापुष्पम् ।

शेलेयं तु शिलापुष्पं वृद्धं क्लालालुसार्यकम् ॥ ९० ॥
शेलेयं शीतलं हृदयं कफपित्तहरं लघु ।
कण्डुकुष्ठाश्मरीदाहविषहल्लासरक्तजित् ॥ ९१ ॥

१ वेरन् पन्ही । २ खस्स व० व्याणार मूल अस्य प्रतिनिधिः कालावाढा ।
३ वालछड, विल्डीलोटन । फा० शुब्र० । गंधमांसी अम्रमासी इ०स्पिकनार्ड
Spikenard ४ छेल चलारा, पत्थरफळ फा० दहल ।

मुस्तकं (नागरमुस्तकम्) ।

मुस्तकं न स्त्रिया मुस्तं विषु वारिदनामकम् ॥
कुरुविन्दो परो भद्रमुस्तो नागरमुस्तकः ॥ ९३ ॥
मुस्तं हिमं कटु ग्राहि तिक्तं दीपनपाचनम् ।
कथायकफपित्तास्तटज्वरास्त्रिजंतुजित् ॥ ९३ ॥
अनूपदेशे यज्ञातं मुस्तकं तत् प्रशस्यते ।
तत्रापि मुनिभिः प्रोक्तं वरं नागरमुस्तकम् ॥ ९४ ॥
कैचूरः ।

कर्चूरो वैधमुख्यश्च द्राविडः कालिपकः शटी ।
कर्चूरो दीपनो रुच्यः कटुकस्तिक्त एव च ॥ ९५ ॥
सुगन्धिः कटुपाकः स्याल्कुष्टाशाँव्रणकासतुत् ।
उष्णो लघुर्हरेच्छवासगुलभवातकफक्रिमीन् ॥ ९६ ॥

मुरा

मुरा गन्धकुटी दैत्या सुरभिस्तालपर्णिका ।
मुरा तिक्ता हिमा स्वाद्वी लघवी पित्तानिलापहा ॥ ९७ ॥
ज्वरासुग्भूतरक्षोद्धी कुष्टकासविनाशिनी ।
पैलाशी ।

शटी पलाशी षट्यन्था सुवता गन्धमूलका ॥ ९८ ॥

१. मोथा । नागरमोथा । फा० शादकफी । भद्रमुस्तक । कैवर्त्तमु-
स्तक । वामुस्तक । डोलेकी जड । तन्नान्तरे-जटामांसी जटी पेषी लोमशा-
जटिला मिसि । मांसी तपस्विनी हिंसा मिषिका चक्रवर्त्तिनी ॥ १ ॥ अनुलेपन-
ज्वरहत् रुक्षतां चैव नाशयेत् । मुस्तकशुद्धिः-मुस्तकं तु मनाकू क्षुण्णकांजिके
विदिनोषितम् । पञ्चपल्लवतोयेन स्विन्मातपशोषितम् ॥ १ ॥ गुण्डांबुना
सिच्यमानं भर्जयेच्चूर्णयेत्ततः ॥ आजशोभाजनजलैर्भावयेचेति शुद्धयति ॥ २ ॥
३ नरकचूर । फा० जरंबाद, इ० लौगज्जेडआरी ३ कचूरमेदः एकाङ्गी ।
४ कपूर कचूरी वं० आदा, गन्धशटी ।

गन्धारिका गन्धवपुर्वधूः पृथुपलाशिका ।

भवेद् गन्धपलाशी तु कषाया ग्राहणी लघुः ॥ ९९ ॥

तिला तीक्ष्णा च कटुका उष्णास्यमलनाशिनी ।

शोथकासब्रणश्वासशूलहित्यग्रहापहा ॥ १०० ॥

प्रियंगुः ।

प्रियंगुः फालनी कांता लता च महिलाह्या ।

गुन्द्रा गन्धफली श्यामा विष्वक्सेनांगनाश्रिया ॥ १ ॥

प्रियंगुः शीतला तिला तुवरानिलपित्तहृत् ।

रत्नात्तिसारदौर्गच्यस्वेददाहसुवरापहा ॥ २ ॥

गुल्मतृट्विषमेहस्ती तद्वद्गन्धप्रियंगुका ।

तत्फलं मधुरं रुक्षं कषायं शीतलं शुरु ॥ ३ ॥

विवन्धाधमानबलकृत् संग्राहि कफपित्तजित् ।

रेणुका ।

रेणुका राजपुत्री च नन्दनी कपिला द्विजा ॥ ४ ॥

भस्मगन्धा पाण्डुपुत्री स्मृता कौती हरेणुका ।

रेणुका कटुका पाके तिलाउष्णा कटुर्लघुः ॥ ५ ॥

पित्तला दीपनी मेध्या पाचनी गर्भपातिनी ।

बलासवातकृच्चैव तट्टकण्डुविषदाहनुत् ॥ ६ ॥

त्रैनियपर्णम् ।

त्रनियपर्णं त्रनिथिकं च काकपुच्छं च गुत्थकम् ।

नीलपुष्पं सुगन्धश्वं कथितं तैलपर्णिकम् ॥ ७ ॥

अंथिपर्णं तिक्ततीक्षणं कटुष्णं दीपनं लघु ।

कफवातविषश्वासकण्डुदौर्गच्यनाशनम् ॥ ८ ॥

१ फुल फिरंग, गुलफिरंग, वं० गन्धप्रियंगु हरिद्वारे, गून्दनी इसके अभाव में मैहदी । २ वं० रेणुक इसके अभाव में संभाल वीज । ३ चौर नाम गन्ध-
च्य गठीवन, गण्डीवल, टेकन ।

स्थौरेयं कम् ।

स्थौरेयकं वर्हिवर्हं शुकवर्हं च कुकुरम् ।

शीर्णं रोमं शुकं चापि शुकपुष्पं शुकच्छदम् ॥ ९ ॥

स्थौरेयकं कटु स्वादु तिक्तं स्निग्धं त्रिदोषलुत् ।

मेधाशुक्रकरं रुचयं रक्षोऽश्रीज्वरजंतुजित् ॥ १० ॥

हंति कुष्टास्तृट्टाहदौर्गंध्यतिलकालकान् ।

निशाचरः ।

निशाचरो धनहरः कितवो गणहासकः ॥ ११ ॥

रोचकः शंकितश्वण्डो दुष्पत्रः क्षेमको रिपुः ।

रोचको मधुरस्तिक्तो कटुः पाके कटुर्लघुः ॥ १२ ॥

तीक्ष्णो हृद्यो हिमो हंति कुष्टकंडूकफानिलान् ।

रक्षोऽश्रीस्वेदमेदोम्बज्जरगन्धाविषव्रणान् ॥ १३ ॥

तालीसपत्रम् ।

तालीसमुक्तं पत्राढ्यं धात्रीपत्रं च तत्समृतम् ।

तालीसं लघु तीक्ष्णोष्णं धासकासकफानिलान् ॥ १४ ॥

निहन्त्यरुचिगुलमामवहिमांद्यक्षयाभयान् ।

कक्षोलम् ।

कक्षोलं कोलकं प्रोक्तं तथा कोशफलं समृतम् ॥ १५ ॥

कक्षोलं लघु तीक्ष्णोष्णं तिक्तं हृद्यं रुचिप्रदम् ।

आस्यदौर्गंध्यहृद्रोगकफवाताभयांध्यहत् ॥ १६ ॥

गन्धकोकिला गन्धमालती ।

स्निग्धोष्णा कफहत्तिका सुगन्धा गन्धकोकिला ।

गन्धकोकिलया तुल्या विजेया गन्धमालती ॥ १७ ॥

१ ग्रन्थिपर्ण भेद थुनेर । २ ग्रन्थिपर्ण भेद भटीटर । ३ मटोरा । ४ ताली-
सपत्र । भूम्यामलकी । ५ जरनवा । ६ कंकोल मिरच वं ० कांकला । ७ फल-
कपूर । ८ गद्दला इं० क्यूबेब पेपर Cubeb Pepper

भावप्रकाशनिष्ठण्डः-

लामज्जकम् ।

लामज्जकं सुनालं स्याद्मृणालं लयं लघु ।
 इष्टकावथकं सेव्यं नलदं चावदातकम् ॥ १८ ॥
 लामज्जकं हिमं तिकं लघु दोषत्रयास्वजित ।
 त्वगामयस्वेदकृच्छ्रदाहपित्तास्वरोगलुत ॥ १९ ॥

एलावालकम् ।

एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ।
 एलवालुकमैलालुकपित्यफलमीरितम् ॥ २० ॥
 एलवालुं कटुकं पाके कषायं शीतलं लघु ।
 हांति कंडुब्रणच्छर्दितृदकासारुचिह्नुजः ॥ २१ ॥

कुटनटम् ।

कुटनटं दासपुरं वानेयं परिपेलवम् ॥ २२ ॥
 पुवगोपुरगोनदं कैवर्तीं मुस्तकानि च ।
 मुस्तावत्पेलवपुटं शुकाहं स्याद्वितुन्नकम् ॥ २३ ॥
 वितुन्नकं हिमं तिकं कषायं कटुकांतिदम् ।
 कफपित्तास्ववीसर्पकुष्ठकंडुविषप्रणुत ॥ २४ ॥

स्पृका ।

स्पृकास्त्रक ब्राह्मणी देवी मरुन्माला लता लघुः ।
 ससुद्रांता बधूकोटिवर्षालं कोंपकैत्यपि ॥ २५ ॥
 स्पृका स्वाद्वी हिमा वृप्या तिका निखिलदोषलुत ।
 कुष्ठकण्डुविषस्वेददाहाट्यज्वररक्तहत ॥ २६ ॥

१ उशीरवत् पीतच्छवितृणविशेषः २ लालुका । पक
 कपित्यफल वं० राल वालुका । ३ कैवर्ती मौथा । गुडतज्जी । इयंतितन्नकवृक्षस्य
 तक् मस्ताकृतिः । ४ असवरग, आसारक । वं० पिडिशाक ।

पैर्षटी ।

पैर्षटी रंजनी कृष्णा जतुका जननी जनिः ।
जंतुकृष्णाम्निसंस्पर्शा जतुकृच्छ्रवर्त्तनी ॥ २७ ॥
पैर्षटी तुवरा तिक्ता शिशिरा वर्णकृलघ्नः ।
विषव्रणहरी कण्डुकफपित्ताम्बुद्धुत् ॥ २८ ॥
नलिका ।

नलिका विदुमलता कपोतचरणा नटी ।
धमन्यंजनकेशी च निर्मथ्या सुपिरा नली ॥ २९ ॥
नलिका शीतला लघ्वी चक्षुष्या कफपित्तहृत् ।
कृच्छ्राश्मवाततृणाम्बुद्धुकण्डुजवरापहा ॥ ३० ॥
प्रपौण्डरीकम् ।

प्रपौण्डरीकं पौँडर्यं चक्षुष्यं पौण्डरीयकम् ।
पौँडर्यं मधुरं तिक्तं कषायं शुक्रलं हिमम् ॥ ३१ ॥
चक्षुष्यं मधुरं पाके वर्णं पित्तकफप्रणुत् ।
व्यंजनो वांतिहारी च रुचिश्यः शोकशोभनः ।
इति कर्पूरादिवर्गः ।

गुडूच्यादि वर्गः ।

पुँदीना ।
तत्रादौ गुडूच्या उत्पत्तिर्नाम गुणाश्र ।
अथ लंकेश्वरो मानी रावणो राक्षसाधिपः ।
रामपत्रो वनात्सीतां जहार मदनातुरः ॥ १ ॥

१ चकवत् पद्मावती पापडी । २ सुगन्धा, प्रवालाङ्गति । ३ पुण्डे-
रिआ वं० पुण्डरिआ अस्य प्रतिनिधिः स्थल-कमलम् । ४ फा० नोअना इ०
टोलरेड मिंट Tallredment पुदीना प्राचीन नहीं है, और किसी ग्रन्थ में
नहीं देखा जाता ।

ततस्तं बलवान् रामो रिपुञ्जायापहारिणम् ।
 चृतो वानरसैन्येन जघान रणमूर्ढनि ॥ २ ॥
 हृते तस्मिन् सुरारातौ रावणे बलगर्विते ।
 द्रुवराजः सहस्राक्षः परितुष्टो हि राघवे ॥ ३ ॥
 तत्र ये वानराः केचित् राक्षसैर्निहता रणे ।
 ज्ञानिन्द्रो जीवयामास संसिच्यामृतवृष्टिभिः ॥ ४ ॥
 त्वतो येषु प्रदेशेषु कपिगात्रात्परिच्युताः ।
 श्रीयूषविन्दवः पेतुस्तेभ्यो जाता गुडूचिका ॥ ५ ॥
 गुडूची मधुपर्णी स्यादमृतवल्लरी ।

छिन्ना छिन्नरुहा छिन्नोद्धवा वत्सादिनीति च ॥ ६ ॥
 जीवंती तंत्रिका सोमा सोमवल्ली च कुण्डली ।
 चक्रलक्षणिका धारा विशल्या च रसायनी ॥ ७ ॥
 चन्द्रहासा वयस्या च मंडली देवनिर्मिता ।
 गुडूची कटुका तिक्ता स्वादुपाका रसायनी ॥ ८ ॥
 संग्राहणी कषायोषणा लक्ष्मी बल्याग्रिदीपनी ।
 दोषव्यामृतदाहमेहकासांश्च पांडुताम् ॥ ९ ॥
 कामलाकुष्ठवातास्त्रज्वरकृमिवमीहरेत् ॥
 तांबूलम् ।

तांबूलवल्ली तांबूली नागिनी नागवल्लरी ॥ १० ॥
 ज्ञांबूलं विशदं रुच्यं तीक्ष्णोषणं तुवरं सरम् ।
 चश्यं तिक्तं कटुक्षारं रक्तपित्तकरं लघु ॥ ११ ॥
 चलयं शेषमास्यदौर्गंध्यमलवातश्रमापहम् ।

१ दे० भा० गिलो । फा० गिलाई । इ० गुडांचा । गुडूचिसत्त्वं सुस्थादु
 चश्यं लघु च दीपनम् । चक्षुष्यं धातुकृन्मेश्वं वयःस्थापनकारकम् ॥ (मदनविनोदे)
 चृतेन वातं सगुडा विवर्वं पित्तं सितादया मधुना कफं च । वातास्त्रमुग्रं रुतौ-
 चमिश्वं शुठ्यामवातं श्वमयेदुहृची ॥ २ दे० भा० पान नागर वैङ्ग फा०-

बिल्वः ।

बिल्वः शांडिल्यशैल्देषो माल्दरश्रीफलावपि ॥ १२ ॥
गंधगर्भः शलाटुश्च कंटकी च सदाफलः ।
श्रीफलस्तु वरस्तिको ग्राही रुक्षोऽश्रिपित्तकृत् ॥ १३ ॥
वातश्लेषमहरो बल्यो लघुरुष्णश्च पाचनः ।

गंभारी ।

गंभारी भद्रपर्णी च श्रीपर्णी मधुपर्णिका ॥ १४ ॥
काश्मरी काश्मरी हीरा काश्मर्यः पीतरोहिणी ।
कृष्णवृत्ता मधुरसा महाकुमुकापि च ॥ १५ ॥
काश्मरी तुवरा तिका वीयर्येष्णा मधुरा गुहः ।
दीपनी पाचनी मेध्या भेदनी भ्रमशोथजित् ॥ १६ ॥
दोषतृष्णामशूलाशौविषदाहज्ज्वरापहा ।
तत्फलं बृंहणं वृष्णं गुह केशं रसायनम् ॥ १७ ॥

—वर्ग तंबोल । इ० बिट्ल लीफ Betel Leaf. श्रीवाटी, अम्लवाटी, सातसी-
पर्ण, इत्यादि नाना भेदाः नागवल्लीमूळं—हृष्णं सुगन्धि कफवातजित् । आयुर्ग्रे-
यशो मूळे लक्ष्मीर्मध्ये वयवस्थिता । तस्माद्यत्र तथा मूळं मध्यं पर्णस्य वर्जयेत् ॥ १ ॥
तांबूलं न हितं दन्तदुर्बलेशगरोगिणाम् । विषमूर्ढामर्दानां क्षतिनां रक्तपित्तिनाम्
॥ २ ॥ कुञ्जजनम् । तांबूलस्त्रीमूळं तु रुक्षोष्णं कफवाताशनम् । तीक्ष्णं वृत्तं च
वातमन्तं पौष्टिकं दीपनं सरम् ॥ ३ ॥ श्लेषमन्तं पित्तजनकं वृद्धानां चापि शश्यते ॥

१ दे० भा० बिल, वेल । इ० वेगालंकिन्स ॥ तत्पत्रं कफवातामशूलमन्तं
ग्राहि रोचनम् । हन्याद्विविल्वजं पुष्पमतीसारं तृष्णां वसिम् ॥ १ ॥ बिलका
सूखा गूदा ॥ कफवातामशूलस्त्री ग्राहिणी विल्वपेशिका । २ दे० भा० खंभारी,
कुम्भेरेन । घुमार । बं० भा० गामार । अस्य फलं जिरिङ्क० तत्पुष्पं मधुरं शीतं
तिकं संग्राहि वातलम् । कषायं मधुरं पाके पित्तासासृगगदापहम् ॥ गंभारीमूळ-
मत्युष्णमहितं सातुषेषु तत् ।

वातपित्ततृष्णारक्तक्षयमूवविबंधनुत् ।
 स्वादु पाके हिमं स्थिरं तुवराम्लं विशुद्धिकृत् ॥ १८ ॥
 हन्यादाहतृष्णावातरक्तपित्तक्षतक्षयान् ।
 पाटला ।

पाटली पाटला मोघा मधुदूती फलेस्त्रहा ॥ १९ ॥
 कृष्णवृत्तता कुबेराक्षी काचस्थाल्यलिवल्लभा ।
 ताम्रपुष्पी च कथिता परा स्यात्पाटला सिता ॥ २० ॥
 मुष्कको सोक्षको वंटा पाटलिः काष्ठपाटला ।
 पाटला तुवरा तिक्तानुष्णा दोषत्रयापहा ॥ २१ ॥
 अरुचिश्वासशोथार्शश्वर्द्धिहिङ्कातृष्णाहरी ।
 पुष्पं कषायं मधुरं हिमं हयं कफास्त्रनुत् ॥ २२ ॥
 पित्तातीसारहत्कंञ्चं फलं हिङ्कास्त्रपित्तहत् ।

ॐिमंथः ।

अग्निमंथो जया स स्यात् श्रीपर्णी गणकारिका ॥ २३ ॥
 जया जयंती तर्कारी नादेयी वैजयंतिका ।
 अग्निमंथः श्वयथुनुद्वीयर्थोष्णः कफवातहत् ॥ २४ ॥
 पांडुनुत् कटुकस्तिकस्तुवरो मधुरोऽग्निदः ।
 स्योनाकः ।

स्योनाकः शोषणश्च स्यान्नटकट्वंगठुंटुकः ॥ २५ ॥

१ दे० भा० पाढल, वं० भा० वंटा पारुल । गौ० भा० पारुलगाछधेत,
 रक्त, भूमिपाटला । क्षुद्रपाटला । वल्लीपाटला । २ दे० भा० अगेथु गनियार ।
 वं० भा० आगरंत । लव्वभिमंथस्य गुणाः प्रोक्ता वृद्धशिमंथवत् । विशेषाल्लेपने
 चोपनाहे शोके च कीर्तिताः ॥ १ ॥ तेजोमंथगुणाः प्रोक्ताश्वाभिमंथसमा
 वृद्धिः । विशेषादातशोके च प्रोक्तः पूर्वेश्च सूरिभिः ॥ ३ दे० भा० अरछु, टेँडु ।
 युगलं । वं० भा० सोनालु । श्योनाकयुगले तिक्तं शीतलं च त्रिदोपजित् ।
 पित्तल्लेष्मातिसारत्वं सन्निपातज्यरापहम् ॥

मंडूकपर्णपत्रोर्णशुकनाशकटुनटाः ।
 दीर्घवृन्तोरलुश्चापि पृथुशिवः कटभरः ॥ २६ ॥
 स्योनाको दीपिनः पाके कटुकस्तुवरी हिमः ।
 आही तिकोऽनिलक्षेष्मपित्तकासामनाशनः ॥ २७ ॥
 ढुँटुकस्य फलं बालं रुक्षं वातकफापहम् ।
 हृद्यं कषायं मधुरं रोचनं लघुदीपनम् ॥ २८ ॥
 गुलमार्शः कृमिहत्प्रौढं गुरुवातप्रकोपनम् ।
 वृद्धत्पञ्चमूलम् ।

श्रीफलः सर्वतोभद्रा पाटला गणिकारिका ।
 स्योनाकः पञ्चभिश्चैतैः पञ्चमूलं महन्मतम् ॥ २९ ॥
 पञ्चमूलं महत्तिकं कषायं कफवातद्गुत् ।
 मधुरं श्वासकासम्मुण्डं लघुदीपनम् ॥ ३० ॥
 शालपर्णी ।

शालपर्णी स्थिरा सौम्या त्रिपर्णी पीवरी गुहा ।
 विदारिगंधा दीर्घाग्रिदीर्घपत्रांशुभत्यपि ॥ ३१ ॥
 शालपर्णी गुरुश्छर्दिंज्वरश्वासातिसारजित् ।
 शोषदोषव्यहरी बृंहण्युक्ता रसायनी ॥ ३२ ॥
 तिक्ता विषहरी स्वादुः क्षतकासकृमिप्रणुत ।

पृश्निपर्णी पृथक्षपर्णी चित्रपर्णीग्रिपर्णिका ॥ ३३ ॥
 क्रोष्टविन्ना सिंहपुच्छी कलशी धावनी गुहा ।
 पृश्निपर्णी चिदोषव्यी वृष्णोष्णा मधुरा सरा ॥ ३४ ॥
 हंति दाहज्वरश्वासरक्तातिसारदृवसीः ।

१ दे० भा० सरिवन, कवरी, नौली । बं० भा० शालपान । २ दे० भा० पिठौनी, कवरा । बं० भा० चाकुलिया ।

बृहती ।

वार्ताकी क्षुद्रभंटाकी महती बृहती कुली ॥ ३५ ॥

हिंगुली राष्ट्रिका सिंही महोटी दुःप्रधर्षणी ।

बृहती ग्राहणी हृदा पाचनी कफवातहत् ॥ ३६ ॥

कटुतिकास्यवैरस्यमलारोचकनाशनी ।

उष्णा कुष्ठज्वरव्यासशूलकासाम्रिमांद्यजित् ॥ ३७ ॥

कंटकारी ।

कंटकारी तु दुःस्पर्शा क्षुद्रा व्याघ्री निदिग्धिका ।

कंटारिका कंटकिनी धावनी बृहती तथा ॥ ३८ ॥

उभे च बृहत्यौ यत आह सुश्रुतः ।

क्षुदायां क्षुद्रघंटाक्यां बृहतीति निगद्यते ।

श्वेता क्षुद्रा चंद्रहासा लक्ष्मणा क्षुद्रदूतिका ॥ ३९ ॥

गर्भदा चंद्रभा चंद्रा चंद्रपुष्पा प्रियंकरी ।

कंटकारी सरा तिक्ता कटुका दीपनी लघुः ॥ ४० ॥

सूक्ष्मोष्णा पाचनी कासव्यासज्वरकफानिलान् ।

निहंति पीनसं पार्वीपीडाकृमिहदामयान् ॥ ४१ ॥

तयोः फलं कटु रसे पाके च कटुकं भवेत् ।

शुक्रस्य रेचनं भेदि तिक्तं पित्ताम्रिकृलघुः ॥ ४२ ॥

१ दे० भा० वरहंटा, ममोली वडी । वं० व्याकुड । फा० उस्तरगार,
वाढं जान जंगली । (फल) फलानि बृहतीनां च कटुतिक्तलघूनि च ।
कंडुकुष्ठकृमिनानि कफवातहणि च ॥ १ ॥ श्वेत । श्वेता बृहतिका रुच्या
कफवातविनाशनी । अंजनानेत्ररोगम्नी गुणास्त्वन्ये तु पूर्ववत् ॥ २ ॥ २ दे० भा०
ममोली, कटेरी, वं भा० कंटकारी । प० भा० मोकडी । फलं तस्याः कटु
पाके रसे च कटुकं भवेत् । शुक्रस्य रेचनं भेदि तिक्तं पित्ताम्रिकृलघुः ॥ लक्ष्मणा
कटुका चोष्णा चक्षुष्णा चामिदीपनी । गर्भस्थापनकर्त्ती च पारदस्य नियामिका ॥
रुचिकृत्कफवातानां नाशनी परमा मता । शेषाश्रास्या गुणाः प्रोक्ताः फल-
स्यापि च पूर्ववत् ॥

हन्यात्कफमरुत्कंडूकासमेदः कृमिज्वरान् ।
तद्वत्प्रोक्ता सिता क्षुद्रा विशेषाद्भर्त्कारिणी ॥ ४३ ॥
गोक्षुरः ।

गोक्षुरः क्षुरकोऽपि स्यात् त्रिकंटः स्वादुकंटकः ।
गोकंटको भक्षण्टको वनशृंगाट इत्यपि ॥ ४४ ॥
पलंकषाथ्वदंष्ट्रा च तथा स्यादिक्षुगंधिकः ।
गोक्षुरः शीतलः स्वादुर्बलकृद्वस्तिशोधनः ॥ ४५ ॥
मधुरो दीपनो वृष्यः पुष्टिदश्वाश्मरीहरः ।
प्रमेहश्वासकासार्शः कृच्छ्रहृद्रोगवात्नुत् ॥ ४६ ॥
लघुपंचमूलम् ।

शालपर्णी पृथिवर्णी वार्ताकी कंटकारिका ।
गोक्षुरः पंचभिश्वैतैः कनिष्ठं पंचमूलकम् ॥ ४७ ॥
पंचमूलं लघु स्वादु बल्यं पित्तानिलापंहम् ।
नात्युष्णं बृहणं ग्राहि ज्वरश्वासाश्मरीप्रणुत् ॥ ४८ ॥
दशमूलम् ।

उभाभ्यां पंचमूलाभ्यां दशमूलसुदाहृतम् ।
दशमूलं त्रिदोषम्भं श्वासकासशिरोरुजः ॥ ४९ ॥
तंद्राशोथज्वरानाह पार्षीपीडारुचीर्हरेत् ।
जीवन्ती ।

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्ववा ॥ ५० ॥

१ दे० भा० भखडा, गोखरु । वं० भा० गोखरि । फा० तुखमे खारखस्क
शुद्रबृहत् । (वीज) बीजं गोक्षुरुकं शीतं मूत्रलं शोथवारणम् । वृष्यमायुष्कर्णं
शुक्रमेहनुकृच्छ्रनाशनम् ॥ १ ॥ (क्षार) क्षारस्तु गोक्षुराणां तु मधुरः शीतलौ
मतः । स्रोतोविशोधनश्वैव वातघो वृष्य एव च ॥ २ ॥ (शाक) तिक्तं
गोक्षुरुकं शोकं वृष्यं स्रोतोविशोधनम् ॥ २ दे० भा० डोडी । वं० भा० जीवद्वृ
इ० शाशा प्रेरला । बृहती क्षुद्रा तिक्तजीवन्ती स्वर्णजीवन्ती । अर्कवत् मधुर-
मुष्पा त्रतिः । हिरण्वेला स्वर्णवर्णपत्रमूलनालादिका ।

मांगल्यनामधेया च शाकश्रेष्ठा पयस्विनी ।
जीवंती शरीरला स्वादुः स्निग्धा दोषत्रयापहा ॥ ५१ ॥
रसायनी बलकरी चक्षुष्या ग्राहणी लघुः ।
सुद्रपर्णी ।

सुद्रपर्णी काकपर्णी शूर्पपर्ण्यलिपका सहा ॥ ५२ ॥
काकसुद्रा च सा प्रोक्ता तथा मार्जारंगंधिका ।
सुद्रपर्णी हिमा रुक्षा तिक्ता स्वाद्वी च शुक्रला ॥ ५३ ॥
चक्षुष्या क्षतशोथघ्नी ग्राहणीज्वरदाहनुत् ।
दोषत्रयहरी लघ्वी ग्रहण्यशेंतिसारजित् ॥ ५४ ॥
माषपर्णी ।

माषपर्णी सूर्यपर्णी कांबोजी हयपुच्छिका ।
पांडुलोमशपर्णी च कृष्णवृन्ता महासहा ॥ ५५ ॥
माषपर्णी हिमा तिक्ता रुक्षा शुक्रबलासकृत् ।
मधुरा ग्राहणी शोथवातपित्तज्वरास्त्रजित् ॥ ५६ ॥

जीवनीयगणः ।

अष्टवर्गः सयष्टीको जीवंती सुद्रपर्णिका ।
माषपर्णीगणोऽयं तु जीवनीय इति स्मृतः ॥ ५७ ॥
जीवनो मधुरश्चापि नाम्ना स परिकीर्तिः ।
जीवनीयगणः प्रोक्तः शुक्रकृत वृंहणो हिमः ॥ ५८ ॥
गुरुर्गर्भप्रदः स्तन्यकफकृतिपत्तरक्तहत् ।
तृणां शोषं ऊरं दाहं रक्तपित्तं व्यपोहति ॥ ५९ ॥
शुक्ररक्तेरंडौ ।

शुक्र एरंड आमंडश्चित्रो गंधर्वहस्तकः ।

१ दे० भा० सुगवन । वं० भा० सुगानि । २ दे० भा० जंगली सांह ।
माष । वं० भा० पमाणी । ३ दे० भा० हंडोल, अरंड । फा० वेंजीर, तुखमे
चेदजीर । इ० कास्टर ओइल प्लांट कास्टरसीड Casteroil Plant castor—

पंचांगुलो वर्धमानो दीघदंडो व्यडंबकः ॥ ६० ॥
 रक्तोऽपरोरुवूकः स्याङुरुवूको रुवुस्तथा ।
 व्याघ्रपुच्छश्च वातारिश्चुरुत्तानपत्रकः ॥ ६१ ॥
 एरण्डयुग्मं मधुरमुष्णं गुरु विनाशयेत् ।
 शूलशोथकटीवस्तिशिरः पीडोदरज्वरान् ॥ ६२ ॥
 ब्रह्मथासकफानाहकासकुष्ठाभमारुतान् ।
 एरंडपत्रं वातग्नं कफकूमिविनाशनम् ॥ ६३ ॥
 मूत्रकूच्छूहरं चापि पित्तरक्तप्रकोपनम् ।
 वातार्थ्यग्रदलं गुल्मवस्तिशूलहरं परम् ॥ ६४ ॥
 कफवातकूमीन् हंति वृद्धिं सतविधामपि ।
 एरंडफलमत्युष्णं गुल्मशूलानिलापहम् ॥ ६५ ॥
 यकृतप्लीहोदराशोग्नं कटुकं दीपनं परम् ।
 तद्वन्मज्जा च विडभेदी वातश्लेष्मोदरापहा ॥ ६६ ॥

आकारकरभः ।

आकारकरभश्चैवाकल्पकोथ ह्यकल्पकः ।
 अकल्पकोष्णो वीर्येण बलकृतकटुको मतः ॥ ६७ ॥
 प्रतिश्यायं च शोथं च वातं चैव विनाशयेत् ।
 दुङ्करक्तार्की ।

श्वेताकों गणस्तपः स्यान्मदारो वसुकोऽपि च ॥ ६८ ॥
 श्वेतपुष्पः सदापुष्पः स बालार्कः प्रतापसः ।
 रक्तोऽपरोर्कनामा स्यादर्कपणो विकीरणः ॥ ६९ ॥

—seed. एरंडतैलं मधुरं गुरु श्लेष्माभिवर्द्धनम् । वातासृगुल्महृदोगजीर्णज्वरहर्म परम् ॥ रक्तोऽपरो हस्तिकर्णो व्याघ्रो व्याघ्ररो रुवुः । त्रिवीजश्च रुवूकश्च चारुत्तानपत्रकः (तंत्रांतरम्) ।

१ दे० भा० अकरकर । वं० भा० अकोरकोश । इ० पेलेटरखूट ।
 २ दे० भा० छाल आक, सुफेद आक, मंदार फा० खुर्क, दूध वं० भा० आकंद । इ० जाईगोटिक्स्वोलोवर्ट । Gigantic sivallowwart.

रक्तपुष्पः शुक्लफलस्तथा स्फोटः प्रकीर्तिः ।
 अर्कद्वयं सरं वातकुष्ठकंडुविषब्रणान् ॥ ७० ॥
 निहंति प्लीहगुल्मार्शःशेषमोदरशकृत्कृमीन् ।
 अलर्ककुसुमं वृष्णं लघुदीपनपाचनम् ॥ ७१ ॥
 अरोचकप्रसेकार्शः कासधासनिवारणम् ।
 रक्तार्कपुष्पं मधुरं सतिकं कुष्ठकुमिन्नं कफनाशनं च ॥ ७२ ॥

अशोंविषं हंति च रक्तपित्तं ।
 संग्राहि गुल्मे व्यथौ हितं तत् ॥ ७३ ॥

क्षीरमर्कस्य तिक्तोष्णं स्त्रिघं सलवणं लघु ।
 कुष्ठगुल्मोदरहरं श्रेष्ठमेतद्विरचनम् ॥ ७४ ॥

सेहुंडः ।

सेहुंडः सिंहतुंडः स्याद्वज्री वज्रद्वमोऽपि च ।

सुधासमंतदुग्धा च स्तुक्खस्त्रियां स्यात्स्तुही गुडा ॥ ७५ ॥

सेहुंडो रेचनस्तीक्ष्णो दीपिनः कटुको गुरुः ।

शूलामष्टीलिकाधमानकफगुल्मोदरानिलान् ॥ ७६ ॥

उन्मादमेहकुष्ठार्शःशोथमेदोशमपांडुताः ।

ब्रणशोथज्वरप्लीहविषदूषीविषं हरेत् ॥ ७७ ॥

उष्णवीर्यं स्तुहीक्षीरं स्त्रिघं च कटुकं लघु ।

गुल्मिनां कुष्ठिनां चापि तथैवोदररोगिणाम् ॥ ७८ ॥

हितमेतद्विरेकार्थं ये चान्ये दीर्घरोगिणः ।

सेहुंडभेदशातला ।

शातला सतला सारविमला विदला च सा ॥ ७९ ॥

तथा निगदिता भूरिफेना कर्मकषेत्यपि ।

शातला कटुका पाके वातला शीतला लघुः ॥ ८० ॥

तिक्ता शोथकफानाहपित्तोदावर्तेरक्तजित् ।
कलिहारी ।

कलिहारी तु हलिनी लांगली शुक्लपुष्पयि ॥ ८१ ॥

विशल्याग्निशिखानन्ता वह्निवक्ता च गर्भनुत् ।

कलिहारी सरा कुष्ठशोफाशोव्रणशूलजित् ॥ ८२ ॥

सक्षारा श्लेष्मजित्तिका कटुका तुवरापि च ।

तीक्ष्णोष्णकृमिहृष्टघ्वी पित्तला गर्भपातिनी ॥ ८३ ॥

श्वेतरक्तकरवीरौ ।

करवीरः श्वेतपुष्पः शतकुम्भोश्वमारकः ।

द्वितीयो रक्तपुष्पश्च चंडांतो लगुडस्तथा ॥ ८४ ॥

करवीरद्वयं तिक्तं कषायं कटुकं च तत् ।

ब्रणलाघवकृत्रेत्रकोपकुष्ठव्रणापहम् ॥ ८५ ॥

वयिरोष्णं कृमिकंडुम्बं भक्षितं विषवन्मतम् ।

धत्तूरः ।

धत्तूरधूर्तधुस्तूरा उन्मत्तः कनकाह्वयः ॥ ८६ ॥

देवताकितवस्तूरी महामोही शिवाप्रियः ।

१ दे० भा० कलिहारी, कलेसर, बं० भा० विषलांगला, ईशलांगला,
प० भा० मराडी, महासती । अस्याः कंदं वत्सनामविषम् । इ० बुलक्सवेन ।

Walfsbau. (तंत्रांतरे) कलिकारी लांगलिकी दीप्ता च गर्भवातिनी ।
अग्निजिह्वा वह्निशिखा वह्निवक्ता च लांगली ॥ वृद्धयोगतरंगिण्याम्—लांगली

शुद्धिमायाति दिनं गोमूत्रसंरिथता । २ दे० भा० कनेर । बं० भा० करवी ।
फा० खरजेहरा । सफेद कनेर, लाल पीली नीली इ० स्वीटसेटे, डबौलियंडर ।

Sweet scruited oleander. ३ दे० भा० धत्तूरा । सित, नील, कृष्ण । बं०
भा० धत्तुरा । लोहित पीतपुष्पः । इ० थोर्ने आपलम्टामोनियं । Thorna

pplesmraonium. कृष्णधत्तूरकः सिद्धः कनकः सच्चिवः शिवः । कृष्णपुष्पो
विषारातिः क्रूरधूर्तश्च कीर्तितः । (वृद्धयोगतरंगिणी) धत्तूरवीजं गोमूत्रे चतुर्था-
प्रोषितं पुनः । कडितं निस्तुष्टं कृत्वा योगेषु विनियोजयेत् ।

मातुलो मद्नश्चास्य फले मातुलपुत्रकः ॥ ८७ ॥
धन्नूरो मद्वर्णाग्निवातकृज्जवरकुष्टतुत् ।
कषायो मधुरस्तिक्तो धूकालिङ्गाविनाशनः ॥ ८८ ॥
उप्पो गुरुर्व्रेणश्लेष्मकंडुकृमिविषापहः ।
वासकः ।

वासको वासिका वासा भिषङ्गमाता च सिंहिका ॥ ८९ ॥
सिंहास्यो वाजिदंतः स्यादाटरूपक इत्यपि ।
अटरूपो वृषनामा सिंहपर्णश्च स स्मृतः ॥ ९० ॥
वासको वातकृतस्वर्यः कफपित्तास्त्रनाशनः ।
तिक्तस्तुवरको हृद्यो लघुः शीतस्तृडर्तिहृत् ॥ ९१ ॥
थासकासज्जवरच्छर्दिमेहकुष्टक्षयापहः ।
पैर्षटः ।

पैर्षटो वरतिक्तश्च स्मृतः पैर्षटकश्च सः ॥ ९२ ॥
कथितः पांशुपर्यायः तथा कवचनामकः ।
पैर्षटो हंति पित्तास्त्रभ्रमतृष्णाकफज्जवरान् ॥ ९३ ॥
संप्राही शीतलास्तिक्तो दाहनुद्रातलो लघुः ।
निंबः ।

निंबः स्यात्पिच्छुमर्दश्च पिच्छुमंदश्च तिक्तकः ॥ ९४ ॥
अरिष्टः पारिभद्रश्च हिंगुनिर्यास इत्यपि ।
निंबः शीतो लघुग्राही कटुपाकोग्निवाततुत् ॥ ९५ ॥

१ दे० भा० वर्सा । प० भा० विहकड, विसूटी । इ० वाक्स । २ दे०
भा० पापड़ा, द्वन । वं० भा० खेत पापड़ा । फा० शाहतरा । इ० जस्टि-
सयाप्रोकरवेन्स । Jus:ici Procarabens. ३ दे० भा० निम, नीम, वं०
भा० निमगाढ़ । फा० नेनव । इ० निंबटी । Nunbtreac. निंबतीलं तु कुष्टवै-
तिक्तं कृमिहरं परम् । (तंत्रांतरे) कैटर्यो महानिंबो रामणो रमणस्तथा । गिरि-
निंबो महारिष्यः शुङ्गसारोऽलकाहृयः ॥ इ० सजंदकरखीकुनाह । दे० भा०
मीठानीम । वं० भा० घोडानिमविशेष ।

अहद्यः श्रमतृट्कासज्वरारुचिकूमिप्रणुत् ।
 ब्रणपित्तकफच्छर्दिकुष्ठहल्लासमेहनुत् ॥ ९६ ॥
 निंबपत्रं स्मृतं नेत्र्यं कूमिपित्तविषप्रणुत् ।
 वातलं कटुपाकं च सर्वारोचककुष्ठनुत् ॥ ९७ ॥
 नैवं फलं रसे तिक्तं पाके तु कटुभेदनम् ।
 स्त्रिघं लघूणं कुष्ठघं गुलमार्शः कूमिमेहनुत् ॥ ९८ ॥
 महानिंबः ।

महानिंबः स्मृतोद्रेको रम्यको विषमुष्टिकः ।
 केशमुष्टिर्निरकः कार्मुको क्षीव इत्येषि ॥ ९९ ॥
 महानिंबो हिमो रुक्षः तिक्तो ग्राही कषायकः ।
 कफपित्तभ्रमच्छर्दिकुष्ठहल्लासरक्तजित् ॥ १०० ॥
 प्रमेहश्वासगुलमार्शो मूषिकाविषनाशनः ।
 पारिभद्रः ।

पारिभद्रो निंबतर्समेदारः पारिजातकः ॥ १०१ ॥
 पारिभद्रो निलश्लेष्मशोथमेदः कूमिप्रणुत् ।
 तत्पुष्पं पित्तरोगघं कर्णव्याधिविनाशनम् ॥ १०२ ॥
 कांचनारः कोविदारश्च ।

कांचनारः कांचनको गंडारिः शोणपुष्पकः ।
 कोविदारश्चमरिकः कुदालो युगपत्रकः ॥ १०३ ॥
 कुण्डली ताम्रपुष्पश्वाश्यंतकः स्वल्पकेसरी ।
 कांचनारो हिमो ग्राही तुवरः श्लेष्मपित्तहृत् ॥ १०४ ॥
 कूमिकुष्ठगुदभ्रंशगंडमालाब्रणापहा ।
 कोविदारोपि तद्वत्स्यात्ययोः पुष्पं लघु स्मृतम् ॥ १०५ ॥
 रुक्षं संप्राहि पित्तास्त्रप्रदरक्षयकासनुत् ।

१ दे० भा० ध्रेक, वं० भा० बोडानिम, महानिम । फा० आजाद
 दरखत । २ दे० भा० वकायनट्रैक । वं० भा० पालते मांदार । द्रा० भा०
 पंजीर ३ दे० भा० कचनार, कुलाड । वं० भा० कांचन ।

शेयाम, शेत, रक्त शिष्यः ।

शोभांजनः शिश्रुतीक्ष्णगंधकाऽक्षीवमोचकाः ॥ १०६ ॥

तद्वीजं शेतमरिचं मधुशिश्रुतु लोहितः ।

शिष्यः सरः कटुः पाके तीक्ष्णोप्पो मधुरो लघुः ॥ १०७ ॥

दीपनो रोचनो रुक्षः क्षारस्तिक्तो विद्राहकृत् ।

संथाही शुक्रलो हयो पित्तरक्तप्रकोपनः ॥ १०८ ॥

चक्षुष्यः कफवातन्नो विद्राधिश्वयथुकूमीन् ।

मेदोपचीविषप्लीहगुलमग्डब्रणान् हरेत ॥ १०९ ॥

शेतः प्रोक्तगुणो ज्ञेयो विशेषादीपनः सरः ।

प्लीहानं विद्राधिं हांति ब्रणन्नः पित्तरक्तकृत् ॥ ११० ॥

मधुशिष्यः प्रोक्तगुणो विशेषादीपनः सरः ।

शिश्रुवल्कलपत्राणां स्वरसः परमार्तिहत् ॥ १११ ॥

चक्षुष्यं शिष्युजं बीजं तीक्ष्णोप्पं विषनाशनम् ।

अवृप्यं कफवातन्नं तन्नस्येन शिरोर्तिहत् ॥ ११२ ॥

शेतनीलपुष्पा अपराजिता ।

आस्फोता गिरिकणीं स्यात् विषुक्रांतापराजिता ।

अपराजिते कटुमेध्ये शीते कंठच्ये सुहृष्टिदे ॥ ११३ ॥

कुष्ठमूत्रविदोषामशोथब्रणविषापहे ।

कषाये कटुके पाके तिक्ते च स्मृतिबुद्धिदे ॥ ११४ ॥

सिंदुवारः ।

सिंदुवारः शेतपुष्पः सिंदुकः सिंदुवारकः ।

१ दे० भा० सुहांजना । वं० भा० सजिनेहना । इ० होर्सेडीशटी Horse

Rudishtree. पीतस्तु कांचनो ग्राही दीपनो ब्रगरोपणः । तुवरो मूत्रकृच्छ्रस्य कक्षत्राघोर्विनाशनः ॥ कांचन्युक्ता शीर्पुर्जं त्रिदोषं च विनाशयेत् ॥ स्तन्यस्य वर्जनकर्ता कथिता सूक्ष्मदर्शिभिः ॥ २ दे० भा० सुफेदनीलकोयल । वं० भा० अपराजिता ।

इ० मजीखुतराहिंदी । ३ दे० भा० संभाद्व, मेउडी, मंडूआ, माछ्डा, वं० भा० निशिंदा । फा० परंगुष्ठतुखमेपञ्चंगुष्ठ मिसवान कर्तरीवन्या । इ० फाईवलीवृद्धेष्टट्टी

Ficus leucophloea / तंचांतरे । वं० गिर्जेत्सरमा जिर्गण्डी सिंधवारकः ।

नीलपुष्पी तु निर्गुणी शेफाली सुवहा च सा ॥ ११५ ॥
 सिंदुकः स्मृतिदस्तिक्तः कषायः कटुको लघुः ।
 केश्यो नेत्रहितो हंति शूलशोथाममारुतान् ॥ ११६ ॥
 कृमिकुष्टारुचिश्लेष्मब्रणान्नीला हि तद्विधा ।
 सिंदुवारदलं जंतुवातश्लेष्महरं लघु ॥ ११७ ॥
 कुटजः ।

कुटजः कुटिजः कूटो वत्सको गिरिमल्लिका ।
 कालिंगश्वक्रशाखी च मल्लिकापुष्प इत्यपि ॥ ११८ ॥
 इंद्रयवफलः प्रोक्तो वृष्यकः पांडुरदुमः ।
 कुटजः कटुको रुक्षो दीपनस्तुवरो हिमः ॥ ११९ ॥
 अशोंतिसारपित्तास्त्रकफतृष्णामकुष्टजित् ।

करंजो हस्वकरंजः ।

करंजो नक्तमालश्च करजश्चिरविल्वकः ॥ १२० ॥
 घृतपूर्णः करंजोऽन्यः प्रकीर्यः पूतिकोऽपि च ।
 स चोक्तः पूतिकारंजः सोमवल्कश्च स स्मृतः ॥ १२१ ॥
 करंजः कटुकस्तीष्णो वीयर्योष्णो योनिदोषहत् ।
 कुष्ठोदावर्तगुलमाशोंव्रणक्रिमिकफापहा ॥ १२२ ॥
 तत्पत्रं कफवातार्शः कृमिशोथहरं परम् ।
 भेदनं कटुकं पाके वीयर्योष्णं पित्तलं लघु ॥ १२३ ॥
 तत्फलं कफवातन्नं मेहार्शः कृमिकुष्टजित् ।
 घृतपूर्णकरंजोऽपि करंजसद्शो गुणैः ॥ १२४ ॥

१ दे० भा० कुडासक, बं० भा० कुरचि । इ० ओवल्लिबूरोझवे,
 Ovalleaved rose bay. २ दे० भा० करंजुआ । बं० भा० डहरकरंज ।
 इ० स्मृथलीबृड पोन गेमिया। Smooth leaved pongamra, फा०इबलीस,
 रवाय, ई० बोडनढकट। Banducut. करंजतैलं तीक्ष्णोष्णं कृमिहृदक्तपित्तकृत्।
 नयनामयवातार्तिकुष्टकंडुब्रणप्रणुत् । वातनुत् पित्तकृत्किञ्चिल्लेपनाच्चर्मदोषघुत् ॥

त्रुतीयः करंजः ।

उद्कीर्यस्तृतीयोन्यः षड्ग्रन्थो हस्तिवारुणी ।
कर्कटी वायसी चापि करंजी करभंजिका ॥ १२५ ॥
करंजी स्तंभनी तिक्ता तुवरा कटुपाकिनी ।
वीथ्योष्णा वमिपित्तार्शः कूमिकुष्ठप्रमेहजित् ॥ १२६ ॥
श्वेतरक्तगुण्जे ।

श्वेता गुंजोच्चटा प्रोक्ता कृष्णला चापि सा स्मृता ।
रक्ता सा काकचिंची स्यात्काकणंती च रक्तिका ॥ १२७ ॥
काकादनी काकपीलुः सा स्मृतांगारवल्लरी ।
गुंजाद्वयं तु केशयं स्यात् वातपित्तज्वरापहम् ॥ १२८ ॥
मुखशोषभ्रमश्वासतृष्णामदविनाशिनी ।
नेत्रामयहरं वृद्धयं बलयं कंडुब्रणापहम् ॥ १२९ ॥
कूमीद्रिङ्गुस्तकुष्ठानि रक्तावद्वबलापि च ।
कपिकच्छुः ।

कपिकच्छुरात्मगुता रिष्यप्रोक्ता च मर्कटी ॥ १३० ॥
अजहा कंडुराध्यंडा दुःस्पर्शा प्रावृषायणी ।
लांगूली शूकशिंची च सैव प्रोक्ता महर्षिभिः ॥ १३१ ॥
कपिकच्छुर्भृशं वृष्णा मधुरा वृंहणी गुरुः ।
तिक्ता वातहरी बल्या कफपित्तास्वनाशिनी ॥ १३२ ॥
तद्रीजं वातशमनं स्मृतं वाजीकरं परम् ।

१ दे० भा० रती मुफेड, वा लाल, चिर्मटी, वृंहुची । वं० भा० कुंच ।
श्वेतगुंजा, तृणज्योतिः । फा० चश्मेखरुस । इ० वीड्टी । Beadtree.
(वृद्धयोगतरंगिणी) गुंजा च कांजिके स्तिना प्रहरं शुद्धयति धुवम् ॥
२ दे० भा० कौचवीज, कौच्छकिवांच, वृहती लच्छी । वं० भा० आलकुशी ।
इ० कौहेज् । Cowhage.

रोहिणी ।

मांसरोहिण्यतिविषा वृत्ता चर्मकषा वृशा ॥ १३३ ॥
प्रहारवल्ली विकसा वीरवत्यपि कथ्यते ।
स्यान्मांसरोहिणी वृच्छा सरा दोषव्रयापहा ॥ १३४ ॥

चिल्कः ।

चिल्को वातनिर्हारी श्लेष्मघो धातुपुष्टिकृत ।
आग्नेयो विषवद्यस्य फलं मत्स्यनिषूदनम् ॥ १३५ ॥

टंकारी ।

टंकारी वातजित्तिका श्लेष्मघी दीपनी लघुः ।
शोथोदरव्यथाहंत्री हिता पीठविसर्पिणाम् ॥ १३६ ॥

वेत्सः ।

वेतसो नम्रकः प्रोक्तो वानीरो वंजुलस्तथा ।
अध्रपुष्पश्च विद्लो रथः शीतश्च कीर्तितः ॥ १३७ ॥
वेतसः शीतलो दाहशोथार्शोयोनिरुक्तप्रणुत ।
हंति वीसर्पकुच्छास्त्रपित्ताश्मरिकफानिलान् ॥ १३८ ॥

जलवेत्सः ।

नकुंचकः परीक्याधो नादेयी जलवेत्सः ।
जलजो वेतसः शीतः संग्राही वातकोपनः ॥ १३९ ॥

इज्जलः ।

इज्जलो हिज्जलश्चापि निचुलश्चांबुजस्तथा ।
जलवेत्सवद्वेद्यो हिज्जलोऽयं विषापहा ॥ १४० ॥

१ दे० भा० रोहिणी, दो प्रकार, इ० रेडवुडट्री । Redwoodtree.
यह वृक्ष जंगल में अधिक होता है । पत्ते खिरनीके सदृश । सात सात, फल
अत्यन्त सूक्ष्म । २ दे० भा० वैत, वं० भा० वयसा, फा० वेत, इ० रोटा
कैन Cane. जलवेत्स, मजनू, पंजाबी स्थलवेत्स ।

अंकोटः ।

अंकोटो दीर्घकीलः स्यादंकोलश्च निकोचकः ।

अंकोटकः कटुस्तीक्ष्णः स्तिरधोष्णस्तुवरो लघुः ॥ १४१ ॥

रेचनः कृमिशूलामशोफग्रहविषापहा ।

विसर्पकफपित्ताम्बूषिकाहिवेषापहा ॥ १४२ ॥

तत्फलं शीतलं स्वादु श्लेष्मव्यं वृहणं गुरु ।

बल्यं विरेचनं वातपित्तदाहक्षयात्मजित् ॥ १४३ ॥

बैला, महाबला, अतिवला, नागबला ।

बला बाट्यालिका बाट्या सैव बाट्यालकापि च ।

महाबला पीतपुष्पा सहदेवी च सा स्मृता ॥ १४४ ॥

ततोऽन्यातिवला रिष्यप्रोक्ता कंकतिका सहा ।

गांगेरुकी नागबला इषा ह्रस्वा गवेशुका ॥ १४५ ॥

बलाचतुष्टयं शीतं मधुरं बलकांतिकृत् ।

स्तिरधं प्राहि समीरात्मा ताम्बक्षतनाशनम् ॥ १४६ ॥

लक्ष्मणा ।

पुत्रकाकाररक्ताल्पविंदुभिर्लाजिता सदा ।

लक्ष्मणा पुत्रजननी वस्तगंथाकृतिर्भवेत् ॥ १४७ ॥

कथिता पुत्रदा वश्या लक्ष्मणा मुनिपुंगवैः ।

१ दे० भा० ठेरा, ठेरा, वं० भा० आंकड । इ० ठोलीवडसल्युरिटीस् ।

यह वृक्ष वन में अधिक होता है । पत्ता एक अंगुल चौडा ५ वा ६ अंगुल लंबा कच्चा फल नीला, पक्का लाल । २ दे० भा० खैरटी । वं० भा० घेडेला, प० भा० द्रडिया । इ० हार्टलोवडसिडा । Heart leaved sida. मही-बला=सहदेर्ई । अतिवल=कंवी, इ० इंडयनसेलो । Indian Malow. नाग-बला=गंगेरन, वं० भा० गोरखाचाकुले । गांगेरुकीफलं रुक्षं कपायं स्वादुवातलम् । लेखनं स्तंभनं शीतं विवंगावानकुदुरु ॥ बलामूलत्वचश्चूर्णं सक्षीरं च सरकरम् । मूत्रातिसारं हरति दृष्टेतन्न संशयः ।

स्वर्णवल्ली ।

स्वर्णवल्ली रक्तफला काकायुः काकबल्लरी ॥ १४८ ॥

स्वर्णवल्ली शिरःपीडां त्रिदोषं हंति दुग्धदा ।

कार्पासी ।

कार्पासी तुंडकेशी च समुद्रांता च कथ्यते ॥ १४९ ॥

कर्पासको लघुः कोणो मधुरो वातनाशनः ।

तत्पलाशं समीरन्नं रक्तकृन्मूत्रवर्द्धनम् ॥ १५० ॥

तत्कर्णपिडकानादपूयास्नावविनाशनम् ।

तद्वीजं स्तन्यदं वृष्यं स्निग्धं कफकरं गुरु ॥ १५१ ॥

वंशैः ।

बंशस्त्वक्सारकर्मरित्वचिसारतृणधवजाः ।

शतपर्वायवफलोवेषुमस्करतेजनाः ॥ १५२ ॥

बंशः सरो हिमः स्वादुः कषायो वस्तिशोधनः ।

छेडनः कफपित्तन्नः कुष्ठाखब्रणशोथजित् ॥ १५३ ॥

तत्करीरः कटुः पाके रसे रुक्षो गुरुः सरः ।

कषायः कफकृत्स्वादुर्विदाही वातपित्तलः ॥ १५४ ॥

तच्चवास्तु सरा रुक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ।

वातपित्तकरा उष्णा बद्धमूत्राः कफापहाः ॥ १५५ ॥

नैलः ।

नैलः पौटगलः शून्यमध्यश्च धमनस्तथा ।

नैलस्तु मधुरस्तित्तः कषायः कफरक्तजित् ॥ १५६ ॥

१ स्वर्णवल्ली—सोनली जीवंती भेद । २ दे० मा० कपास, रुई, बे० मा० कार्पास । फा० कृतन, पुंबेदाना । इ० काटन् Cotton. ३ दे० मा० बांस, सरंधबांस । बे० मा० बांश । फा० कसब । इ० बैंबूकेन । Bamboo cane. ४ दे० मा० नरसल, नैल, महानैल, देवनैल, बे० मा० नैल । इ० इंडियन टोबैको ॥ Indian tobacco,

मुंजः ।

भद्रसुंजः शरो वाणस्तेजनश्चेक्षुमंडनः ।

मुंजो मुंजातको वाणः स्थूलदर्भः सुमेखलः ॥ १५७ ॥

मुंजद्वयं तु मधुरं तुवरं शिशिरं तथां ।

दाहतृष्णाविसपीच्छमूत्रकृच्छ्राक्षिरोगहत् ॥ १५८ ॥

दोषत्रयहरं वृष्णं मेखलासूपयुज्यते ।

कासः ।

कासः कासेक्षुरुद्दिष्टः स स्यादिक्षुरकस्तथा ॥ १५९ ॥

इक्ष्वालिकेक्षुगंधा च तथा पोटगलः स्मृतः ।

कासः स्यान्मधुरस्तित्तः स्वादुपाको हिमः सरः ॥ १६० ॥

मूत्रकृच्छ्राश्मदाहास्वक्षयपित्ताक्षिरोगजित् ।

गुंद्रः ।

गुंद्रः पटेरको गुत्थः शुंगवेराभमूलकः ॥ १६१ ॥

गुंद्रः कषायो मधुरः शिशिरः पित्तरक्तजित् ।

स्तन्यः शुक्ररजोमूत्रशोधनो मूत्रकृच्छ्रहत् ॥ १६२ ॥

एरका ।

एरका गुंद्रमूला च शिवगुंद्रा शरीति च ।

एरका शिशिरा वृष्णा चक्षुष्णा वातकोपिनी ॥ १६३ ॥

मूत्रकृच्छ्राश्मरीदाहपित्तशोणितनाशिनी ।

कुशः ।

कुशो दर्भस्तथा वर्हिः सूच्यग्रो यज्ञभूषणः ॥ १६४ ॥

ततोऽन्यो दीर्घपत्रः स्यात्क्षुरपत्रस्तथैव च ।

१ दे० मा० मुंज, सरकंडा, वं० भा० सरपत । २ दे० भा० काही, कास ।
वं० भा० क्रेशवास । ३ दे० भा० डिम, एरका, गोसपटेर । ४० एलिफेंटग्रास ।
Elephant grass, ४ दे० मा० दाम, दाम, कुशा । वं० भा० कुश ।

दर्भद्वयं विदोषज्ञं मधुरं तुवरं हिमम् ॥ १६५ ॥
भूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णा वस्तिरुक्तप्रदरात्मजित् ।
कैतृणं ।

कैतृणं रोहिषं देवजग्धं सौगंधिकं तथा ॥ १६६ ॥
भूतीकं ध्याम पौरं च श्यामकं धूपगंधिकम् ।
रोहिषं तुवरं तिक्तं कटुपाकं व्यपोहति ॥ १६७ ॥
हृत्कंठव्याधिपित्तास्त्रशूलकासकफज्वरान् ।
भूस्तृणम् ।

भूतीकं गुह्यबीजं च सुगंधं गोमयप्रियम् ॥ १६८ ॥
भूस्तृणं तु भवेच्छत्रा मालातृणकमित्यपि ।
भूस्तृणं कटुकं तिक्तं तीक्ष्णौष्णं रेचनं लघु ॥ १६९ ॥
विदाहि दीपनं रुक्षमनेत्र्यं मुखशोधनम् ।
अवृष्ट्यं बहुविट्कं च पित्तरक्तप्रदूषणम् ॥ १७० ॥
नीलदूर्वा ।

नीलदूर्वासुहानंता भार्गवी शतपर्विका ।
शष्या सहस्रवीर्या च शतवल्ली च कीर्तिता ॥ १७१ ॥
नीलदूर्वा हिमा तिक्ता मधुरा तुवरा हरेत ।
कफपित्तास्त्रवीसर्पतृष्णादाहत्वगामयान् ॥ १७२ ॥
श्रेतदूर्वा ।

दूर्वा शुक्का तु गोलोमी शतवीर्या च कथ्यते ।
श्रेतदूर्वा कषाया स्थात्स्वाद्वी ब्रण्या च दीपनी ॥ १७३ ॥
तिक्ता हिमा विसर्पास्त्रतटपित्तकफदाहहत् ।

१ दे० भा० खवीघास, असखर, मिरचियागंध, रोहिष, दीर्घ रोहिष ।
बं० भा० रामकर्पूर । फा० खवाल० मामून । २ दे० भा० खुंब, ढाल, सांप
की छत्री । ३ दे० भा० दूव नीलदूव, सुफैददूव । बं० भा० गेटदूर्वा ।
इ० क्रांपिंग् साईनोडन् ।

*गंडदूर्वा ।

गंडदूर्वा तु गंडीरी मत्स्याक्षी शकुलादनी ॥ १७४ ॥

गंडदूर्वा हिमा लोहद्रावणी ग्राहणी लघुः ।

तिक्ता कषाया मधुरा वातकृत्कटुपाकिनी ॥ १७५ ॥

दाहतृष्णावलासास्त्रकुष्ठपित्तज्वरापहा ।

विदारीकंद । वाराहीकंद ।

वाराहीकंदएवान्यश्चर्मकारालुको मतः ॥ १७६ ॥

अनूपे स भवेदेश वाराह इव लोमवान् ।

विदारी स्वादुकंदा च सा तु क्रोधी सिता मता ॥ १७७ ॥

इक्षुगंधा क्षीरबल्ली क्षीरशुक्का पयस्विनी ।

वाराही वरदा घृष्टिर्वदरेत्यभिधीयते ॥ १७८ ॥

विदारी मधुरा सिंगधा वृंहणी स्तन्यशुक्रदा ।

शतिता स्वर्या मूत्रला च जीवनी बलवर्णदा ॥ १७९ ॥

गुरुः पित्तास्तपवनदाहान्हंति रसायनी ।

मूँषली ।

तालमूली तु विद्वद्विर्मूषली परिकीर्तिता ॥ १८० ॥

मूषली मधुरा वृष्या वीच्योष्णा वृंहणी गुरुः ।

तिक्ता रसायनी हंति गुदजान्यनिलं तथा ॥ १८१ ॥

शतावरी ।

शतावरी वहुसुता भीरुरिंदीवरी वरी ।

नारायणी शतपदी शतवीर्यर्था च पीवरी ॥ १८२ ॥

* गंडदूर्वा=पंजाबमें प्रसिद्ध है । १ दे० मा० विलैयाकंद । प० मा० सियाली । व० मा० भूझ्कुमडा २ दे० मा० चमार, आद्व । प० मा० कित्था । पश्चिम मा० गेठी । ३ दे० मा० मूसलीसुफेद, स्याहमूसली । व० मा० तालमूली । ४ दे० मा० सहंसपाथों व० मा० शतमूली । फा० गुर्जदस्ति । इ० रामये-रेमूरेसिन्यौसम् । कोष्ठिका तु रसे स्वादी पाकेऽपि मधुरैवसा । पित्तमी शीतवीर्या च वातक्षेप्मकरी गुरुः । वाराही तु रसे स्वादी तिक्ता पाके पुनः कदुः । शुक्रायुःस्वर्वर्णमवलपित्तविवद्धिनी । कफकुप्रमरुन्मेहक्षमिहृच्च रसायनी ।

महाशतावरी चान्या शतमूलयूर्द्धकंटिका ।

सहखवीयर्या हेतुश्व रिष्यप्रोक्ता महोदरी ॥ १८३ ॥

शतावरी गुरुः शीता तिक्ता स्वाद्वी रसायनी ।

मेधाग्निपुष्टिदा स्निग्धा नेत्र्या गुलमातिसारजित् ॥ १८४ ॥

शुक्रस्तन्यकरी बल्या वातपित्ताश्वशोथजित् ।

महाशतावरी मेध्या हृद्या वृष्या रसायनी ॥ १८५ ॥

शीतवीयर्या निहंत्यशौग्रहणीनयनामयान् ।

अंकुरः ।

तदंकुरस्त्रिदोषघ्नी लघुरर्शःक्षयापहा ॥ १८६ ॥

अश्वगंधा ।

गंधांता वाजिनामादिश्वगंधा हयाहया ।

वाराहकर्णी वरदा वदरा कुष्ठगंधिनी ॥ १८७ ॥

अश्वगंधानिलश्लेष्मवित्रशोथक्षयापहा ।

बल्या रसायनी तिक्ता कषायोष्णातिशुक्रला ॥ १८८ ॥

पौठा ।

पाठांबष्टांबष्टकी च प्राचीना पापचेलिका ।

एकाष्टीला रसा प्रोक्ता पाठिका वरतिक्तिका ॥ १८९ ॥

पाठोष्णा कटुका तीक्ष्णा वातश्लेष्महरी लघुः ।

हंति शूलज्वरच्छर्दिंकुष्टातीसारहङ्गः ॥ १९० ॥

दाहकंडुविषश्वासकृमिगुलमगरवणान् ।

श्वेता निशोथा ।

श्वेता त्रिवृत् त्रिमंडी स्यात् त्रिवृत्ता त्रिपुटापि च ॥ १९१ ॥

१ दे० भा० असगंध । बं० भा० अश्वगंधा । फा० मेहेमन्वरी इं०
विंटरचेरी Winter cherry, अश्वगंधा पत्रलेपो ग्रंथिगांडापचीर्हेत् । २ दे० भा०
घोडसूंबी । प० भा० बटांडु । बं० भा० अकनादि, निमुक । इं० पुरेराखूट ।
फा० दनुजअकबरी । पलाहजडी, जलजमनीलच्चीबृहती । ३ दे० भा०
निसोत, पनिलर, त्रिवी, श्याम, श्वेत, रक्त । बं० भा० तेडडी । फा० निसोथ ।
इं० टर्बीथस्टू । Turbith root

सर्वानुभूतिः सरलो निशोथो रेचनीति च ।

श्रेता विवृद्धेचनी स्यात् स्वादुरुष्णा समीरहत ॥ १९२ ॥
रुक्षा पित्तज्वरस्त्रेष्मपित्तशोथोदरापहा ।

श्यामात्रिवृत् ।

विवृच्छयामार्द्धचंद्रा च पालिंदी च सुषेणिका ॥ १९३ ॥

श्यामा विवृत्ततो हीनगुणा तीव्रविरेचनी ।

मूर्च्छादाहमद्भ्रांतिकंठोत्कर्षणकारिणी ॥ १९४ ॥
लैध्वीदंती ।

लक्ष्मी दंती विशल्या च स्यादुदुंबरपर्यपि ।

तथैरेंडफला शीघ्रा श्येनघंटा द्वुणप्रिया ॥ १९५ ॥

वाराहांगी च कथिता निरुभश्च मुकूलकः ।
वैहृदंती ।

द्रौवंती शबरी चिवा प्रत्यक्षपर्याखुपर्यपि ॥ १९६ ॥

चिवोपचिवा न्यग्रोधी सुतश्रेणी तथा वृषा ।

दंतीद्वयं सरं पाकेरसे च कटुदीपनम् ॥ १९७ ॥

गुदांकुराशमशूलार्शःकंडुकुष्टविदाहतु ।

तीक्ष्णोष्णं हंति पित्ताल्कफशोथोदराक्रिमीन् ॥ १९८ ॥
लघुदंतीफलम् ।

क्षुद्रदंतीफलं तु स्यान्मधुरं रसपाकयोः ।

शीतलं सृष्टविष्मृतं गरशोथकफापहम् ॥ १९९ ॥

वैहृदंतीफलम् ।

जयपालो दंतिबीजं विश्यातं तिंतणीफलम् ।

जयपालो गुहः स्त्रिग्धो रेचनः पित्तकफापहा ॥ २०० ॥

१ दे० भा० दंदनदाना, तिरिफल । वं० भा० दंती छाठ । फा० दंद ।
इ० क्रोटनसीडस । Croton seeds. २ दे० भा० मुगलाई अंड । फा०
शकारहुजुव । इ० दीक्षिङ्गिकनद् The physicient. ३ दे० भा० जमाल-
गोटा, जप्पोलोटा, वं० भा० जैपाल फा० तुखमेवैदंजीरखताई । इ० पार्जिंग-
क्रोटन् । Parging Broton

ऐंद्रवारुणी ।

ऐंद्रिंद्रवारुणी चित्रा गवाक्षी च गवादनी ।

वारुणी च परा शुक्ला सा विशाला महाफला ॥ २०१ ॥

श्वेतपुष्पा मृगाक्षी च मृगैर्वारुमृगादनी ॥

गवादनीद्वयं तिक्तं पाके कटुसरं लघु ॥ २०२ ॥

वीर्योष्णं कामलापित्तकफल्लीहोदरापहम् ।

श्वासकासापहं कुष्ठगुल्मग्रंथिब्रणप्रणुत ॥ २०३ ॥

प्रभेहमूढगर्भामगंडामयविषापहम् ।

नीली ।

नीली तु नीलिनी तूणी काला दोला च नीलिका ॥ २०४ ॥

रंजनी श्रीफली तुत्था ग्रामीणा मधुपर्णिका ।

झीतिका कालकेशी च नीलपुष्पा च सा स्मृतौ ॥ २०५ ॥

नीलनी रेचनी तिक्ता केश्या मोहभ्रमापहा ।

उष्णा हंत्युदरप्लीहवातरक्तकफानिलान् ॥ २०६ ॥

आमवातमुदावर्ते मदं च विषमुद्धतम् ।

शैरपुंखा ।

शरपुंखा प्लीहशतुर्नीलबृक्षाकृतिश्च सा ॥ २०७ ॥

१ दे० भा० तुम्मा, फरफेदु, बृहती, लघ्वी, वं० भा० कुंदुरुकी, फा० खुर्या जातलख, इ० कोलोसिथ, Cologynth. (शुद्धि) स्विनं गोमयतोये वा दुन्धे वा जयपालकम् । खर्पे मृदुबृष्टं तन्निस्त्वेहं शुद्धिमृच्छति ॥ २ दे० भा० नील, नीलबुन्हा, बृहती, लघ्वी, कालादाना । वं० भा० नीलगुच्छी, इ० इंडिगो । Indigo. ३ दे० भा० ज्ञाणा, ज्ञोजस । वं० भा० बननील, इ० परपलटेप्रोक्षिया । PurPletephrosia. श्वेतशरपुंख, सितसायका, सित-पुंखा, श्वेतपुंखा, शुभ्रपुंखा, कंठपुंखा ।

शरपुंखो यकृतप्लीहगुलमवणविषापहा ।

तित्तः कषायः कासास्वधासज्वरहरो लघुः ॥ २०८ ॥
वृद्धदारकः ।

वृद्धदारक आवेगी छागांत्री रिष्यगंधिका ।

वृद्धदारकः कषायोणः कटुस्तित्तो रसायनः ॥ २०९ ॥

वृष्णो वातामवातार्थःशोथमेहकफ्रणुत् ।

शुक्रायुर्बलमेधात्रिस्वरकांतिकरः सरः ॥ २१० ॥
यवासा दुरालभा ।

यासो यवासो दुःस्पर्शः धन्वयासः कुनाशकः ।

दुरालभा दुरालभा समुद्रांता च रोदनी ॥ २११ ॥

गांधारी कच्छुरानंता कषाया दुरभा ग्रहा ।

यासः स्वादुःसरस्तिकस्त्रुवरः शीतलो लघुः ॥ २१२ ॥

कफमेदोमद्भ्रांतिपित्तास्त्रकुष्ठकासजित् ।

तृष्णाविसर्पवातास्त्रवमिज्वरहरः स्मृतः ॥ २१३ ॥

यवासस्य गुणेस्तुल्या वृधैरुक्ता दुरालभा ।

मुँडी ।

सुँडी भिक्षुरपि प्रोक्ता श्रावणी च तपोधना ॥ २१४ ॥

श्रावणाद्वा सुँडितिका तथा श्रवणशीर्षिका ।

महाश्रावणिका त्वन्या सा स्मृता भूकदंबिका ॥ २१५ ॥

कदंबपुष्पिका च स्यादव्यथालितपस्त्विनी ।

सुँडितिका कटुः पाके वीर्योणा मधुरा लघुः ॥ २१६ ॥

मेध्या गंडापचीकुष्ठमियोन्यर्तिपांडुलुत् ।

१ दे० भा० मिधरा । श्वेत कृष्ण, वं० भा० वितारक । २ दे० भा०
जवांह । जवांसा । वं० भा० यवासा । फा० फराक्तुन ३ दे० भा० धमांह ।
रक्तपुष्प होता है । वं० भा० दुरालभा । फा० वादावर्द । ४ दे० भा० मुँडी,
गोरखमुँडी । वं० भा० मुँडीरी, शुलकुडी ।

श्रीपदारुच्यपस्मारप्लीहमेदोगुदार्तिहत् ॥ २१७ ॥

महामुंडी च तुल्या हि गुणेरुक्ता महर्षिभिः ।

अपामार्गः ।

अपामार्गस्तु शिखरी ह्यधःशलयो मयूरकः ॥ २१८ ॥

मर्कटी दुर्ग्रहा चापि किणही खरमंजरी ॥ २१९ ॥

अपामार्गः सरस्तीक्ष्णः दीपनस्तिक्तकः कटुः ।

पाचनो नावनश्छर्दिकफमेदोनिलापहा ॥ २२० ॥

निहंति हृद्गजाध्मानार्शः कंडुशूलोदरापचीः ।

रक्तापामार्गः ।

रक्तोऽन्यो वरिरो वृन्तफलो धामार्गबोषि च ॥ २२१ ॥

प्रत्यक्षपणीं केशपणीं कथिता कपिपिप्पला ।

अपामार्गोरुणो वातविष्टंभी कफहङ्गिमः ॥ २२२ ॥

रुक्षः पूर्वगुणेन्यूनः कथितो गुणवेदिभिः ।

अपामार्गफलं स्वादु रसे पाके च दुर्जरम् ॥ २२३ ॥

विष्टंभि वातलं रुक्षं रक्तपित्तप्रसादनम् ।

कोकिलाक्षः ।

कोकिलाक्षस्तु काकेक्षुरिक्षुरः क्षुरिकः क्षुरः ॥ २२४ ॥

मिक्षुः कांडेक्षुरप्युक्तः इक्षगंधेक्षुवालिका ।

क्षुरिकः शीतलो वृष्यः स्वाद्वम्लः पिच्छलस्तथा ॥ २२५ ॥

तिक्तो वातामशोथाश्मतृष्णादृष्ट्यनिलास्त्रजित् ।

अस्थिसंहारी ।

अस्थिमानस्थिसंहारी वज्रांगी चास्थिशृंखला ॥ २२६ ॥

१ दे० भा० अपुठकंडा, लटजीरा औंगा । वं० भा० आपांडग । फा० खार-
वासगोता । इ० रफ्चेफ्टी । तंत्रांतरे मयूरचूलिका चेति नततंडुकश्च सः । २ दे०
भा० लालपुठकंडा । लालचिरचिटा । वं० भा० रांगआपांग ३ दे० भा० ताल-
मखाना । कैलया । वृद्ध, हस्ता । वं० भा० कुलेकांटा । इ० लांगलिवुवालैरिया ।
Longiliwowarleiria. ४ दे० भा० हाडजोड । कुही वं० भा० हाडभांगा ।

अस्थिसंहारिकः प्रोक्तो वातश्लेष्महरोस्थियुक् ।
 उष्णः सरः कृष्णेन्द्रश्च दुर्नामा चाक्षिरोगहृत ॥ २२७ ॥
 रुक्षः स्वादुर्लवुर्वृष्यः पाचनः पित्तलः स्मृतः ।
 खिषग्वरैर्यथानाम फलश्वापि प्रकीर्तितम् ॥ २२८ ॥
 कांडं त्वग्विरहितमस्थिशृंखलाया
 माषाद्र्द्विदलमकंचुकं तदद्धम् ।
 संपिण्डं तदनु ततस्तिलस्य तैले
 संपकं वटकमतीव वातहारि ॥ २२९ ॥
 महाजालनी ।

महाजालनिका चर्मरंगः स्यान्नीलपुष्पिका ।
 आवर्तकी तिंडुकिनी क्रिभांडी रक्तपुष्पिका ॥ २३० ॥
 महाजालनिका तिक्ता रेचनी कफपित्तजित् ।
 हंति दाहोद्रानाहशोफकुष्ठकफज्वरात् ॥ २३१ ॥
 कुमारी ।

कुमारी गृहकन्या च कन्या वृत्तकुमारिका ।
 कुमारी भेदनी शीता तिक्ता नेत्रया रसायनी ॥ २३२ ॥
 मधुरा वृंहणी वल्या वृष्या वातविषप्रणुत् ।
 गुलमप्तीहयकृद्वृद्धिकफज्वरहरी भवेत् ॥ २३३ ॥
 ग्रन्थग्निदग्धविस्फोटपीतरक्तत्वगामयान् ।
 श्वेतपुनर्नवा ।

पुनर्नवा श्वेतभूला शोथग्नी दीर्घपत्रिका ॥ २३४ ॥

१ दे० भा० सरना, सरनामक्ती । वं० भा० सोनामुखी । इ० टिनेब-
 लीसिना । २ दे० भा० कुआरगांदल, ग्वारपाठ । वं० भा० वृत्तकुमारी ।
 फा० दरखतेसिन । ई० वार्बेडोज् आलोज्ज । Barbadoesaloos. ३ दे० भा०
 इटसिट, विसखपरा, श्वेत, रक्त, नील । वं० भा० गादापुण्या, इ० स्प्रेडिंग-
 होगविड । Spreading Hond?

कटुः कषायानुरसा पांडुन्मी दीपनी सरा ।

शोफानिलगरश्लेष्महरी ब्रण्योदरप्रणुत ॥ २३५ ॥
रक्तपुनर्नवा ।

पुनर्नवापरा रक्ता रक्तपुष्पा शिवाटिका ।

शोथन्मी क्षुद्रवर्षा भूर्वृषकेतुः कठिल्लिका ॥ २३६ ॥

पुनर्नवारुणा तिक्ता कटुपाका हिमा लघुः ।

बातला ग्राहिणी श्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी ॥ २३७ ॥
एलायकः ।

एलायकः कृष्णबोलः कुमारी सारतोद्धवः ।
प्रसारणी ।

प्रसारणी राजबला भद्रपर्णी प्रतानिनी ॥ २३८ ॥

सरणी सारणी भद्रबला चापि कटंभरा ।

प्रसारणी गुरुवृष्या बलसंधानकृत्सरा ॥ २३९ ॥

बीय्योष्णा वातहत्तिका वातरक्तकफापहा ।

* कृष्णसारिवा ।

कृष्णा तु सारिवा श्यामा गोपी गोपवधूश्च सा ॥ २४० ॥

धवला सारिवा गोपी गोपकन्या च शारदी ।

स्फोटा श्यामा गोपवल्ली लता स्फोता च चंदना ॥ २४१ ॥

सौरिवा ।

सारिवायुगलं स्वादु स्त्रिघं शुक्रकरं गुरु ।

१ दे० भा० एलुवा । फा० मुसवीर । इ० सैकोट्नआलाश्च । secotrine aloes. २ दे० भा० खींप, पसरन, मरहटी, चांदवेल वं० गंधमादुलिया । तंत्रांतरे—कल्याणी हेमपत्री च रेचनी स्वर्णपुत्रिका । * हेमेडिसरुट जामुन खुंब । प० भा० टेरनी । ३ दे भा० साँई, करिप्याससांऊ । वं० भा० अनन्तमूल, इ० इंडिअनसारिसापरिला । Indian sarsaparilla, इसकी जटा, सालसापरेला इयमपि जंखुवत्पत्रा दुर्घगर्भाव्रततिः ।

अग्निमांद्यारुचिश्वासकासामविषनाशनम् ॥ २४२ ॥
द्वौषत्रयास्त्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम् ।

भृंगराजः ।

भृंगराजो भृंगरजो मार्कबो भृंग एव च ॥ २४३ ॥

अङ्गारकः केशराजो भृंगारः केशरंजनः ।

भृंगारः कटुकस्तिक्तो स्फक्षोषणः कफवात्लुत् ॥ २४४ ॥

केश्यस्त्वच्यः कृमिश्वासकासशोथामपांडुलुत् ।

दंत्यो रसायनो बल्यः कुष्ठनेत्रशिरोर्तिलुत् ॥ २४५ ॥

शणपुष्पी ।

शणपुष्पी स्मृता घटारवा शणसमाकृतिः ।

शणपुष्पी कटुस्तिक्ता वामनी कफपित्तजित् ॥ २४६ ॥

त्रैयमाणा ।

बलभद्रा ब्रायमाणा ब्रायंती गिरिसातुजा ।

ब्रायंती तुवरा तिक्ता सरा पित्तकफापहा ॥ २४७ ॥

ज्वरहृद्दोगगुलमाशोभ्रमशूलविषप्रणुत् ।

मूर्वा ।

मूर्वा मधुरसा देवी मोरटा तेजनी सुवा ॥ २४८ ॥

मद्यूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपण्येषि ।

मूर्वा सरा शुरुः स्वार्दुस्तिक्ता पित्तास्त्रमेहलुत् ॥ २४९ ॥

त्रिदोषतृष्णाहृद्दोगकंडुकुष्ठज्वरापहा ।

१ दे० भा० भंगरा श्वेत, पीत, कृष्ण, वं० भा० भीमराज, फा० जर्मदर, इ० ट्रैलिंग इक्लिपटा । Traling Eclipta. २ दे० भा० ज्ञनज्ञनिया, वन-शेण, छोटीशण, श्वेतण । वं० भा० ज्ञनज्ञने । फा० लादना । इ० फ्लाक्स-हेंप । Flax Hemp. ३ दे० भा० देववला, वं० भा० वहुला, फा० असु-प्रक । ४ दे० भा० चूरनहार, मोड, वं० भा० सुर्गा,

काकमाची ।

काकमाची ध्वांक्षमाची काकाहा चैव वायसी ॥ २५० ॥

काकमाची त्रिदोषघ्नी स्तिर्ग्निपणा स्वरशुक्रदा ।

तिक्ता रसायनी शोथकुष्ठार्शोज्वरमेहजित् ॥ २५१ ॥

कटुनेत्रहिता हिक्षाछर्दिहृद्गोगनाशनी ।

काकनासा ।

काकनासा तु काकांगी काकलुंडफला च सा ॥ २५२ ॥

काकनासा कषायोषणा कटुका रसपाकयोः ।

कंफघ्नी वामनी तिक्ता शोथार्शःश्वित्रकुष्ठहृत् ॥ २५३ ॥

काकजंघा ।

काकजंघा नदीकांता काकतिक्ता सुलोमशा ।

पारावतपदी दासी काका चापि मंकीर्तिता ॥ २५४ ॥

काकजंघा हिमा तिक्ता कषाया कफपित्तजित् ।

निहंति ज्वरकुष्ठास्त्रक्रिमिकंडुविषप्रणुत् ॥ २५५ ॥

नागपुष्पी ।

नागपुष्पी श्वेतपुष्पा नागरी रामदूतिका ।

नागरी रोचनी तिक्ता तीक्ष्णोषणा कफपित्तनुत् ॥ २५६ ॥

विनिहंति विषं शूलं योनिदोषवमिक्रिमीन् ।

मेषशृंगी ।

मेषशृंगी विषाणी स्थानमेषवल्लयाजशृंगिका ॥ २५७ ॥

मेषशृंगी रसे तिक्ता वातला श्वासकासहृत् ।

रुक्षा पाके कटुस्तिक्ता ब्रणश्लेषमाक्षिशूलनुत् ॥ २५८ ॥

१ दे० भा० कैचमैचे, मकोय । फा० रोवातरीखा इ० नाइट् सेड त्राय-
साण, बं० वलाडुसर । सिलहड आदिग्राम हिमालय प्रांतमें असफाकनाम इसके
झलोंसे वस्त्र रंजन किये जाते हैं । २ दे० भा० कोआडोडी । बं० भा० केड-
पाटटी । ३ दे० भा० मसी । बं० भा० कांटा गुडकाडली । ४ दे० भा०
मेढासिंही, ककडसिंगी । बं० भा० छागलबेटे । फा० किस्त, इ० स्कृदी ।

मेषशृंगीफलं तिक्तं कुष्ठमेहकफ्रणुत् ।

दीपनं स्वंसनं कासकूमिव्रणविषापहम् ॥ २५९ ॥

हंसपदी ।

हंसपादी हंसपदी कीटमाता त्रिपादिका ।

हंसपादी गुरुः शीता हांति रक्तविषब्रणान् ॥ २६० ॥

विसर्पदाहातीसारलृताभूतादिरोगनुत् ।

सोमलतौ ।

सोमवल्ली सोमलता सोमक्षीरी द्विजपिया ॥ २६१ ॥

सोमवल्ली त्रिदोषघ्नी कटुस्तिका रसायनी ।

आकाशवल्ली ।

आकाशवल्ली तु बुधैः कथितामरवल्लरी ॥ २६२ ॥

खवल्ली ग्राहणी तिक्ता पिच्छिलाक्ष्यामयापहा ।

तुवराम्बिकरी हृद्या पित्तश्लेष्मामनाशिनी ॥ २६३ ॥

पातालगरुडी ।

छिलहिंडो महामूलः पातालगरुडाहृयः ।

छिलहिंडः परं वृष्यः कफज्ञः पवनापहा ॥ २६४ ॥

वंदा ।

वंदा वृक्षादनी वृक्षभक्ष्या वृक्षरुहापि च ।

वंदाकः स्याद्विमस्तिक्तः कषायो मधुरो रसे ॥ २६५ ॥

मांगल्यः कफवातास्त्रक्षोब्रणविषापहा ।

१ दे० भा० कीटमारिका, वं० भा० गोपालेक्ता फा० परस्या उशान
इ० मेडन्हेर । २ दे० भा० सोमलता । वं० भा० सोमलता । ३ दे० भा०
निराधार, आकाशवेल । वं० भा० आलोकलता । ४ दे० भा० छिरेटा,
प० भा० तरड । वं० भा० शिलिदा । ५ दे० भा० वंदा । वं०
भा० मांदडा ।

वटपत्री ।

वटपत्री तु कथिता मोहनी रेवती लुधैः ॥ २६६ ॥
वटपत्री कषायोष्णा योनिमूत्रगदापहा ।

हिंगुपत्री ।

हिंगुपत्री तु कवरी पृथ्वीका पृथुका पृथुः ॥ २६७ ॥

हिंगुपत्री भवेद्गुच्छा तीक्ष्णोष्णा पाचनी कटुः ।

हृदस्तिरुग्विबंधार्शःश्लेष्मगुलमानिलापहा ॥ २६८ ॥

वंशपत्री ।

वंशपत्री वेणुपत्री पिंगा हिंगुशिवाटिका ।

हिंगुपत्रीगुणा विज्ञैर्वशपत्रीव कीर्तिता ॥ २६९ ॥

मत्स्याक्षी ।

मत्स्याक्षी बाहिकी मत्स्यगंधा मत्स्यादनीति च ।

मत्स्याक्षी ग्राहणी सीता कुष्ठपित्तकफालाजित् ॥ २७० ॥

लघुस्तिका कषाया च स्वाद्वी कटुविपाकिनी ।

सर्पाक्षी ।

सर्पाक्षी स्यात्तु गंडाली तथा नाडीकलायका ॥ २७१ ॥

सर्पाक्षी कटुका तिक्का सोष्णा कूमिनिकून्तनी ।

वृथिकोंदुरुसर्पाणां विषघ्नी ब्रणरोपणी ॥ २७२ ॥

शंखपुष्पी ।

शंखपुष्पी तु शंखोहा मांगल्यकुसुमापि च ।

शंखपुष्पी सरा भेद्या वृष्णा मानसरोगहत् ॥ २७३ ॥

रसायनी कषायोष्णा स्मृतिकांतिवलामिदा ।

दोषापस्मारभूतादिकुष्ठक्रिमिविषप्रणुत् ॥ २७४ ॥

१ दे० भा० वटपत्री । व० भा० वडपाथरकुचि । इ० लेकोपेडियम् ।

२ मरहटी बाफली । ३ दे० भा० मछेली, गोरखापान, गोरखतंबोल, तरकलासाग । व० भा० शालिंचवाशमठ । ४ मरहटी, गिन्नी, जैजैवंती, नेडरीबेल, सहचरी । ५ दे० भा० शंखाहुली, कौडिपाली, भोयभुडक । व० भा० डानूकुनी । दुपहरियाफ्ल, सुफैदफ्ल ।

अर्कपुष्पी ।

अर्कपुष्पी कूरकर्मा पयस्या जलकामुका ।

अर्कपुष्पी कृमिश्लेषमेहपित्तविकारजित् ॥ २७५ ॥
लंजालुः ।

लंजालुहि शमीपत्रा समंगा जलकर्णिका ।

रक्तपादी नमस्कारी नाम्ना खदिरकेत्यपि ॥ २७६ ॥

लंजालुः शीतला तिक्ता कषाया कफपित्तजित् ।

रक्तपित्तमतीसारं योनिरोगान्विनाशयेत् ॥ २७७ ॥

तद्देदः अलंबुषा ।

अलंबुषा खरत्वक् च तथा मेदो गला स्मृता ।

अलंबुषा लघुः स्त्रादुः कृमिपित्तकफापहा ॥ २७८ ॥

दुग्धिका ।

दुग्धिका स्वादुपर्णी स्यात्क्षीरावी क्षीरिवी तथा ।

दुग्धिकोष्णा गुरु रुक्षा वातला गर्भकारिणी ॥ २७९ ॥

स्वादुक्षीरा कटुस्तिका सृष्टमूत्रमलापहा ।

स्वादुर्विष्टमनी वृष्या कफकोष्ठकृमिप्रणुत ॥ २८० ॥

भूम्यामलकी ।

भूम्यामलकिका प्रोक्ता शिवा तामलकीति च ।

बहुपत्रा बहुफला बहुवीर्या जटापि च ॥ २८१ ॥

भूधात्री वातकृतिका कषाया मधुरा हिमा ।

पिपासाकासपित्तास्त्रकफपांडुक्षतापहा ॥ २८२ ॥

१ दे० भा० अंधाहुली । २ दे० भा० लाजवंती, छुईमुई । वं० भा० लाजुक । लंजालु विपरीतलंजालु अलंबुषा । ३ दे० भा० दूधी, दोधक । हंत्रांतरे । नागर्जुनी पयोवर्धा योगिनी लघुदुग्धिका । वं० भा० दुदूले । फा० इनशाशत । ४ दे० भा० पाताल आंवला । वं० भा० भूई आमला ।

ब्राह्मी ।

ब्राह्मी कपोतवंका च सोमवल्ली सरस्वती ।

* ब्रह्ममहूँकी ।

मंडूकपर्णी मांडूकी त्वाष्ट्री दिव्या महोषधी ॥ २८३ ॥

ब्राह्मी हिमा सरा तिका लघुर्भेध्या च शीतला ।

कषाया मधुरा स्वादुपाका पुष्पा रसायनी ॥ २८४ ॥

स्वर्या स्मृतिप्रदा कुष्ठपांडुमेहास्त्रकासजित् ।

विषशोथज्वरहरी तद्वन्मंडूकपर्णिका ॥ २८५ ॥

द्रोणपुष्पी ।

द्रोणा च द्रोणपुष्पी च फलपुष्पा च कीर्तिता ।

द्रोणपुष्पी गुरुः स्वादुः रुक्षोष्णा वातपित्तकृत् ॥ २८६ ॥

सतीक्ष्णा लवणा स्वादुपाका कट्टी च भेदनी ।

कफामकामलाशोथतमकधासजंतुजित् ॥ २८७ ॥

सुवर्चला ।

सुवर्चला सूर्यभक्ता वरदा वदरापि च ।

सूर्यावर्ता रविप्रीता परा ब्रह्मसुवर्चला ॥ २८८ ॥

सुवर्चला हिमा रुक्षा स्वादुपाका सरा गुरुः ।

अपित्तला कटुः क्षारा विष्ट्रभकफवातजित् ॥ २८९ ॥

अन्या तिका कषायोष्णा सरा रुक्षा लघुः कटुः ।

निहंति कफपित्तास्त्रासकासारुचिज्वरान् ॥ २९० ॥

विस्फोटकुष्ठमेहास्त्रयोनिरुक्तमिपांडुताः ।

१. दे० भा० ब्रह्मी । अस्या भेदः ब्रह्ममंडूकी । वं० भा० थुलकुडि ।
 फा० जरनव । इ० इंडियन् पेनीवर्ट । * प० भा० मीडिकी । २ दे० भा०
 गुमा, मछुडोडा । वं० भा० घञ्घसे । पत्र । द्रोणपुष्पीदलं स्वादु रुक्षा गुरु च
 पित्तकृत् । भेदनं कामलाशोथमेहज्वरहरं कटु । ३ दे० भा० हुलहुल वं०
 भा० वशनलते । फा० गुले आफताब परस्त । इ० संप्लावर । Sumplawar.

वंध्याककोटका ।

वंध्याककोटकी देवी कन्या योगेश्वरीति च ॥ २९१ ॥

नागारिनांगदमनी विषकंटकिनी तथा ।

वंध्या ककोटकी लश्वी कफनुद्व्रणशोधनी ॥ २९२ ॥

सर्पदर्पहरी तीक्ष्णा विसर्पविषहारिणी ।

मार्कंडिका ।

मार्कंडिका भूमिकरी मार्कंडी मुदुरेचनी ॥ २९३ ॥

मार्कंडिका कुष्ठहरी ऊर्ध्वाधःकायशोधनी ।

विषदुर्गंधकासन्नी गुल्मोदरविनाशनी ॥ २९४ ॥

देवदाली ।

देवदाली तु वेणी स्पात्ककोटी च गरागरी ।

देवताडोबृत्तकोषस्तथा जीमृत इत्यपि ॥ २९५ ॥

पीतापरा खरस्पर्शा विषघ्नी गर्नाशनी ।

देवदाली रसे तिक्ता कफार्शःशोफपांडुताः ॥ २९६ ॥

नाशयेद्वामनी तिक्ता क्षयहिक्काकूमिज्वरान् ।

देवदालीफलं तिक्तं कूमिश्लेष्मविनाशनम् ॥ २९७ ॥

खंसनं गुल्मशूलज्ञमशोन्नं वातजित्परम् ।

जलपिपली ।

जलपिपल्यमिहिता शारदी शकुलादनी ॥ २९८ ॥

मत्स्यादनी मत्स्यगंधा लांगलीत्यपि कीर्तिता ।

१ दे० भा० वांझखाखसा । अकलकौडा । व० भा० तिक्तांकडी ।

(कंद) वंध्याककोटकीकंदो हंति श्लेष्मविपद्यम् । २ दे० भा० बहुरुणी,
भूईखाखसा । व० भा० कांकरोलभेद । ३० आलेकृञ्जांडियन् । ३ दे० भा०
सौनैया । घवरवेठ, वंदालडोडा । ३ भेदव० भा० देयाताडा । ५० त्रिस्टा-
लल्युफा । देवदालीकपायेन शौचमाचरतां नृणाम् । किंवा तद्रूमसेकाद्विः कुतः
सुर्गुदजांकुराः । ४ दे० भा० जलपीपल, बुकन । व० भा० पनसिगा । फा०
पनसिगा । इ० परपललिष्णा ।

जलपिपलिका हृद्या चक्षुष्या शुक्रला लघुः ॥ २९९ ॥
संग्राहणी हिमा स्त्रक्षा रक्तदाहव्रणापहा ।
कटुपाकरसा रुच्या कषाया वहिंवर्द्धनी ॥ ३०० ॥

गोजिहा ।

गोजिहा गोजिका गोजी दार्विका खरपर्णिनी ।
गोजिहा वातला शीता ग्राहणी कफपित्तनुत् ॥ ३०१ ॥
हृद्या प्रमेहकासाख्यव्रणज्वरहरी लघुः ।
कोमला तुवरा तिक्ता स्वादुपाकरसा स्मृता ॥ ३०२ ॥

नागदमनी ।

विज्ञेया नागदमनी बला मोटा विषापहा ।
नागपुष्पी नागपत्री महायोगेश्वरीति च ॥ ३०३ ॥
बला मोटा कटुस्तका लघुः पित्तकफापहा ।
मूत्रकृच्छ्रवणान् रक्षो नाशयेज्जालगर्दभम् ॥ ३०४ ॥
सर्वग्रहश्रमनी विशेषविषनाशनी ।
जयं सर्वत्र कुरुते धनदा सुमतिप्रदा ॥ ३०५ ॥

वेलंतरी ।

वेलंतरो जगति वीरतरः प्रसिद्धः
श्वेतासितारुण विलोहितनीलपुष्पः ।
स्याज्ञातितुल्यकुसुमः शमिसूक्ष्मपत्रः
स्यात्कंटकी सजलदेशज एष वृक्षः ॥ ३०६ ॥
वेलंतरो रसे पाके तिक्तस्तृष्णाकफापहा ।
मूत्रावाताश्मजिद्युग्राही योनिमूत्रानिलार्तिजित् ॥ ३०७ ॥

छिक्कनी ।

छिक्कनी क्षवकृत्तिक्षणा च्छिक्किका ग्राणदुखदा ।

१ दे० मा० गाजुबान, गोभी, वं० मा० दाडियाशाक । फा० कमलमस्तु
२ दे० मा० नागदौन । वं० मा० नागदना । विजलदेशज इत्यपि पाठः ।
३ दे० मा० नक्किक्कनी । वं० मा० हांचुटी । फा० वेरगाउजवाँ ।

छिक्नी कटुका रुच्या तीक्ष्णोष्णा वह्निपित्तकृत् ॥ ३०८ ॥
वातरक्तहरीकुष्ठकूमिवातकफापहा ॥ ३०९ ॥
वर्वरी ।

वर्वरी कवरी तुंगी खरपुष्पाजगंधिका ।
वर्वरी तु लघू रुच्या हद्या च कफवातहत् ॥ ३१० ॥
कुंदरः ।

ककुंदरस्ताम्बचूडः सूक्ष्मपत्रो मृदुच्छदः ।
ककुंदरः कटुस्तित्तो ज्वररक्तकफापहा ॥ ३११ ॥
तन्मूलमाद्रे निक्षितं वदने मुखशोषहत् ।
सुदर्शना ।

सुदर्शना सोमवल्ली चक्राह्वा मधुपर्णिका ॥ ३१२ ॥
सुदर्शना स्वादुरुष्णा कफशोफाम्बवातजित् ।
आखुकर्णी ।

आखुकर्णी त्वाखुकर्णपर्णिका भूदरीभवा ॥ ३१३ ॥
आखुकर्णी कटुस्तित्ता कषाया शीतला लघुः ।
विपाके कटुका मूत्रकफामयकूमिप्रणुत् ॥ ३१४ ॥
मयूरशिखा ।

मयूराह्वशिखा प्रोक्ता सहस्रांग्रिर्मधुच्छदा ।
नीलकंठशिखा लघ्वी पित्तश्लेष्मातिसारजित् ॥ ३१५ ॥
इति गुडूच्यादिर्वर्गः ।

१ वर्वूई—तुलसी । देशांतरभाषा । निंगंधवावरी । कान फोडी । इसका बीज तुखमरेहा । २ दे० भा० कुकुरोदा । व० भा० कुकुरशीका । फा० कमाकिसस । कुकुडछिर्डी । कूकरभंगरा । ३ सुदर्शन दे० भा० व० भा० सुदर्शनगुलंच । पद्मगुलंच । ४ दे० भा० मूसाकनी । वृहती, लघ्वी च । व० भा० इंदुरकानी । फा० गोरोमुखसतर । ५ दे० भा० मोरबेल । लालमुर्गा, मोरशिखा । व० भा० मयूरशिखा । फा० ससनाने, असलान ।

पुष्पवर्गः ।

तत्रादौ कमलस्य नामानि गुणाश्च ।
 वा पुंसि पद्मं नलिनमरविंदं महोत्पलम् ।
 सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ॥ १ ॥
 पंकोरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ।
 विसप्रसूनराजीवपुष्करांभोरुहाणि च ॥ २ ॥
 कमलं शीतलं वर्णं मधुरं कफपित्तजित् ।
 तृष्णादाहास्त्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ॥ ३ ॥
 विशेषतः सितं पद्मं पुंडरीकमिति स्मृतम् ।
 रक्तं कोकनदं ज्येयं नीलमिंदीवरं स्मृतम् ॥ ४ ॥
 धबलं कमलं शीतं मधुरं कफपित्तजित् ।
 तस्मादल्पगुणं किंचिदन्यद्रक्तोत्पलादिकम् ॥ ५—६ ॥
 पद्मिनी ।

मूलनालदलोत्फुल्लफलैः समुदिता पुनः ।
 पद्मिनी प्रोच्यते प्राज्ञैर्बिसिन्यादिश्च सा स्मृता ॥ ७ ॥
 आदिशब्दात् नलिनीकमलिनीत्यादिः ।
 पद्मिनी शीतला गुर्वीं मधुरा लवणा च सा ।
 पित्तसुखफनुदूक्षा वातविष्टंभकारिणी ॥ ८ ॥
 नवपत्रादि ।

संवर्तिका नवदलं बीजकोशोञ्जकर्णिका ।
 किञ्जलकः केसरः प्रोक्तः मङ्करंदो रसः स्मृतः ॥ ९ ॥

१ वं० भा० नीलशुंदि । फा० नीलोफर । इ० लोटस । Lotus. (कमलगदा) पद्मबीजं तु पद्माक्षं कलोपं पद्मरक्कटी । २ अरविंदहतः शीतो मकरंदो-
 तिवृंहणः । त्रिदोषशमनः सर्वनेत्रामयनिष्पूदनः ॥ १ ॥ (पद्मकंदः) पद्मादिकंदः
 शाल्कं करहाटश्च कथ्यते । मृणालमूलं भिस्साडं लाजल्कं च कथ्यते ॥ २ ॥
 दे० भा० भसीडा । बं० भा० पद्मरंडे ।

यद्यनालं मृणालं स्यात् तथा विसमिति स्मृतम् ।
 संवर्तिका हिमा तिक्ता कषाया दाहतद्विष्णुत् ॥ १० ॥
 मूत्रकृच्छ्रगदव्याधिरक्तपित्तविनाशिनी ।
 पद्मस्य कर्णिका तिक्ता कषाया मधुरा हिमा ॥ ११ ॥
 सुखवैशव्यकृलघ्वी तृष्णास्त्रकफपित्तनुत् ।
 रिंजलकः शीतलो वृष्यः कषायो ग्राहकोऽपि सः ॥ १२ ॥
 कफपित्तदाहरक्ताशोविषशोथजित् ।
 मृणालं शीतलं वृष्यं पित्तदाहास्त्रजिद्गुरुः ॥ १३ ॥
 दुर्जरं स्वादुपाकं च स्तन्यानिलकफप्रदम् ।
 संग्राहि मधुरं रुक्षं शाळकमपि तद्गुणम् ॥ १४ ॥

स्थलकमलिनी ।

एञ्चारिष्यतिचराऽव्यथा पञ्चा च शारदी ।
 एञ्चालुणा कटुस्तिक्ता कषाया कफवातजित् ॥ १५ ॥
 मूत्रकृच्छ्राश्मशूलघ्नी श्वासकासविषापहा ।

कुमुदम् ।

श्वेतं कुवलयं प्रोक्तं कुमुदं कैरवन्तथा ॥ १६ ॥
 कुमुदं पिञ्चिलं स्त्रिघं मधुरं हादि शीतलम् ।
 कुमुदिनी ।

कुमुदती कैरविका तथा कुमुदिनीति च ॥ १७ ॥
 सा तु मूलादिसर्वांगैरुदिता समुदिता द्वयैः ।
 यद्यन्याये गुणाः प्रोक्ताः कुमुदिन्यामपि ते स्मृताः ॥ १८ ॥

१ दे० भा० कमलकी डंडी । सूक्ष्म, मृणाल । वं० भा० स्थूलाविस ।
 (राजनिष्ठु) शाळकं कटु विष्टमि रुक्षं रुच्यं कफापहम् । कषायं कासपित्तमं
 तृष्णादाहनिवारणम् ॥ १ ॥ २ दे० भा० सुफेदकमल । ३ दे० भा० भूल ।
 कोईवाववूला । भवेत्कुमुदतीवीजं स्वादु रुक्षं हिमं गुरु । वं० भा० श्वेतशुंदी ।

जलकुंभी सेवालम् ।

बारिपणी कुंभिका स्याच्छेवालं शैवलं च तत् ।

बारिपणी हिमा तिक्ता लघ्वी स्वाद्वी सरा कटुः ॥ १९॥

दोषत्रयहरी रुक्षा शोणितज्वरशोषकृत् ।

शैवालं तुवरं तिक्तं मधुरं शीतलं लघु ॥ २० ॥

स्त्रिघं दाहतृषापित्तरक्तज्वरहरं परम् ।

शतपत्री ।

शतपत्री तरुण्युक्ता कर्णिका चारुकेसरा ॥ २१ ॥

सहाकुमारी गंधाठचा लाक्षापुष्पातिमञ्जुला ।

शतपत्री हिमा हृद्या ग्राहिणी शुक्रला लघुः ॥ २२ ॥

दोषत्रयास्त्रजिद्वर्ण्या तिक्ता कट्टी च पाचनी ।

वासंती ।

नैपाली कथिता तज्ज्ञैः सप्तला नवमालिका ॥ २३ ॥

वासंती शीतला लघ्वी तिक्ता दोषत्रयास्त्रजित् ।

वार्षिकी ।

श्रीपदी षट्पदा नंदा वार्षिकी मुख्यांधना ॥ २४ ॥

वार्षिकी शीतला लघ्वी तिक्ता दोषत्रयापहा ।

कर्णाक्षिसुखरोगद्वी तत्तेलं तदुणं स्मृतम् ॥ २५ ॥

स्वर्णजातिका ।

जातिर्जाती च लुमना भोलती राजपुत्रिका ।

चेतकी हृद्यगंधा च सा पीता स्वर्णजातिका ॥ २६ ॥

जातीयुगं तिक्तमुण्णं तुवरं लघु दोषजित् ।

शिरोक्षिसुखदंतार्तिविषकुष्ठवणास्त्रजित् ॥ २७ ॥

१ दे० भा० गुलाब । मौसमी गुलाब । बं० भा० सेवती । फा० गुले
खुर्ख । इं० केवेजरोज । २ दे० भा० नेवारी । बं० भा० नेओयार । ३ दे०
भा० मोतिया । खेल । बं० भा० बेलफुलगाढ । ४ दे० भा० जाई, पीली
जाई । चंवेली । बं० भा० चामिनी । इं० स्पेनिश आस्सीन् ।

यूथिका ।

यूथिका गणकांवष्टा सा पीता हेमपुष्पिका ।

यूथीयुगं हिमं तिक्तं कटुपाकरसं लघु ॥ २८ ॥

मधुरं लुवरं हृदयं पित्तद्वं कफवातलम् ।

ब्रणास्त्रमुखदंताक्षिशिरोरोगविषापहम् ॥ २९ ॥

चांपेयः ।

चांपेयश्वंपकः प्रोक्तो हेमपुष्पश्च स स्मृतः ।

एतस्य कलिका गंधफलीति कथिता बुधैः ॥ ३० ॥

चंपकः कटुकस्तिक्तः कषायो मधुरो हिमः ।

विषक्रिमिहरः कृच्छ्रकफवातास्त्रपित्तजित् ॥ ३१ ॥

वैकुलः ।

वकुलो मधुगंधश्च सिंहकेसरकस्तथा ।

वकुलस्तुवरोनुष्णः कटुपाकरसो गुरुः ॥ ३२ ॥

कफपित्तविषाश्वित्रकृमिदंतगदापहा ।

वैकः ।

शिवमल्ली पाशुपतराकाष्ठाली वको वसुः ॥ ३३ ॥

वकोऽनुष्णः कटुकस्तिक्तः कफपित्तविषापहा ।

योनिदोषत्प्रादाहकुष्ठशोथास्त्रनाशनः ॥ ३४ ॥

कैदंवः ।

कदंवः प्रियको नीयो वृत्तपुष्पो हलिप्रियः ।

१ वं० भा० ज्ञाही, स्वर्णज्ञुही । २ दे० भा० चम्बा । वं० भा० चांपा ।

सुर्फेद चंपा, नीली चंपा सुलतानचंपा । इस के फूलके वीज को नागकेशर कहते हैं । भूमिचंपा । ३ दे० भा० मौलसरी । वं० भा० वकुलगाढ़ । इ०

सुरीनाममेड्लर ४ दे० भा० बड़ी मौलसरी । इ० सुरीनाममेड्लर । ५ दे० भा० कदम्ब । वं० कदमगाढ़ । कदंव । धाराकदंव । भूमिकदंव । राजकदंव ।

(पुष्पगुण) पुष्पं कपायं मधुरं शीतं पित्तकफास्त्रजित् । (फल) तत्फलं मधुरं
विश्रावं कपायं विशदं हिमम् । कफपित्तहरं दंत्यं विवंधाव्यातकृत् ॥

कदंबो मधुरः शीतः कषायो लवणो गुरुः ॥ ३५ ॥

सरोऽवष्टमकृद्गक्षः कफस्तन्यानिलप्रदः ।

कुञ्जकः ।

कुञ्जको भद्रतरुणी बृहत्पुष्पोऽतिकेसरः ॥ ३६ ॥

महासहा कंटकाढ्या नीलाऽलिकुलसंकुला ।

कुञ्जकः सुरभिः स्वादुः कषायानुरसः सरः ॥ ३७ ॥

विदेषशमनो वृष्यः शीतहर्ता च स स्मृतः ।

मैलिका ।

मैलिका मदयंती च शीतभीरुश्च भूपदी ॥ ३८ ॥

मैलिकोष्णा लघुर्वृष्या तिक्ता च कटुका हरेत् ।

वातपित्तास्यदग्व्याधिकुष्ठारुचिविषब्रणान् ॥ ३९ ॥

माधवी ।

माधवी स्यात्तु वासंती पुंडिको मंडकोऽपि च ।

अतिमुक्तश्चाविमुक्तः कामुको भ्रमरोत्सवः ॥ ४० ॥

माधवी मधुरा शीता लघ्वी दोषब्रयापहा ।

केतकी । स्वर्णकेतकी ।

केतकः सूचिकापुष्पो जंबूकः ऋकच्छदः ॥ ४१ ॥

सुवर्णकेतकी त्वन्या लघुपुष्पा सुगंधिनी ।

केतकः कटुकः स्वादुर्लघुस्तक्तः कफापहः ॥ ४२ ॥

उष्णस्तक्तरसो ज्येयः चक्षुष्या हेमकेतकी ।

किंकिरातः ।

किंकिरातो हेमगौरः पीतकः पीतभद्रकः ॥ ४३ ॥

१ दे० भा० सेवतीगुलाब । सदा गुलाब । २ दे० भा० मोतियामेद

मृष्णिकासंभवं पुष्पं तिक्तं जयति मारुतम् । ३ दे० भा० माधवी । बं० भा०

माधवीलता । इं० क्षिसृद्धहिपटेज । ४ दे० भा० केटडा । बं० भा० केयागां

फा० करज । केतकी वातला वृष्या तंद्रानिद्राकरी मता । ५ दे० भा० किंकर

मेद बं० भा० देवबाबूला । फा० मधिलान ।

किंकिरातो हिमस्तिक्तः कषायश्च हरेदसौ ।

कफद्वित्पिपासास्वदाहशोषवमिक्रिमीन् ॥ ४४ ॥

कंणिकारः ।

कर्णिकारः कटुस्तिक्तस्तुवरः शोधनो लघुः ॥ ४५ ॥

रंजनः सुखदः शोथश्लेष्मास्ववणकुष्ठजित् ।

अशोकः ।

अशोको हेमपुष्पश्च वंजुलस्ताम्रपल्लवः ॥ ४६ ॥

कंकेलिः पिंडपुष्पश्च गंधपुष्पो नटस्तथा ।

अशोकः शीतलस्तिक्तो ग्राही वर्णः कषायकः ॥ ४७ ॥

दोषापचीत्रषादाहकृमिशोथविषास्वजित् ।

बाणपुष्पः ।

अम्लातो म्लादनः प्रोक्तस्तथाम्लातक इत्यपि ॥ ४८ ॥

कुरंटको बाणपुष्पः सरावोक्ता महासहा ।

अम्लादनः कषायोप्णः स्त्रिग्धः स्वादुश्च तिक्तकः ॥ ४९ ॥

सैरेयकः ।

सैरेयकः श्वेतपुष्पः सैरेया कटिसारिका ।

सहाचरः सहचरः स च भिंद्यपि कथ्यते ॥ ५० ॥

कुरंटकोऽत्र पीतः स्याद्रक्तः कुरबकः स्मृतः ।

नीलो वाणो छ्योरुक्तो दासी चार्तगलश्च सः ॥ ५१ ॥

सैरेयः कुष्ठवातास्वकफकं हूविषाप्हः ।

तिक्तोप्णो मधुरो दत्यः सुस्त्रिग्धः केशरंजनः ॥ ५२ ॥

कुंद्रक ।

कुंदं तु कथितं माध्यं सदापुष्पं च तत्स्मृतम् ।

कुंदं शीतं लघु श्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तहृत ॥ ५३ ॥

१ दे० भा० अमलतास । २ रक्ताम्लानो रक्तपुणो रामालिङ्गनकामुकः ।

रागप्रसवकथ्वं सुभगः शोणज्ञिटिका ॥ ३ दे० भा० पीला वांसा । वं० भा०

ज्ञांटि । कुलज्ञांटि । पीतज्ञांटि । नीछज्ञांटि । चालज्ञांटि ।

मुचुकुंदः ।

मुचुकुंदः क्षत्रवृक्षश्चित्रकः प्रतिविष्णुकः ।

मुचुकुंदः शिरःपीडापित्तास्थविषनाशनः ॥ ५४ ॥

तिलकः ।

तिलकः क्षुरकः श्रीमान् पुरुषश्छत्रपुष्पकः ।

तिलकः कटुकः पाके रसे चोणो रसायनः ॥ ५५ ॥

कफकुष्टकृमीन् वस्तिमुखदन्तगदान् हरेत् ।

बंधूकः ।

बंधूको बंधुजीवश्च रक्तो माध्याह्निको मतः ॥ ५६ ॥

बंधूकः कफकृद् प्राही वातपित्तहरो लघुः ।

ओण्डपुष्पम् ।

ओण्डपुष्पं जपा चार्थ त्रिसंध्या सारुणा मता ॥ ५७ ॥

जपा संग्राहिणी केश्या त्रिसंध्या कफवातहत् ।

सिंदूरी ।

सिंदूरी रक्तबीजा च रक्तपुष्पा सुकोमला ॥ ५८ ॥

सिंदूरी विषपित्तास्त्रतृष्णावांतिहरी हिमा ।

अगस्त्यः ।

अगस्त्याह्वो वंगसेनो मुनिपुष्पो मुनिद्रुमः ॥ ५९ ॥

अगस्त्यः पित्तकफजिङ्वातुर्थिकहरो हिमः ।

रुक्षो वातकरस्तिक्तः प्रतिश्यायनिवारणः ॥ ६० ॥

१ तिलक वृक्षका फूल तिलोंके समान होता है उसमें गंध आती है फूल पीपल के समान मधुर होता है । २ दे० भा० गुलदुपहरिया । गेजुनिआ । मंचनिआ । वं० भा० वांधुलि फुलेर गाँछ । ३ दे० भा० गुडहल, गुलतुररा, ओडहुल । वं० भा० जवाफुलेर गाँछ । इ० शुफलावर । ४ दे० भा० लट्कण, जाफर इ० आरनाटो । Arnato ५ दे० भा० हथिंपा, हदगा । वं० भा० वक । इ० लार्जफलावर्डएगेटी ॥

तुलसी शुक्ला कृष्णा च ।

तुलसी सुरसा ग्राम्या सुलभा बहुमंजरी ।

अमेतराक्षसी गौरी शूलग्री देवदुंडामिः ॥ ६१ ॥

तुलसी कटुका तिक्ता हृद्योष्णा दाहपित्तकृत् ।

दीपनी कुष्ठकृच्छास्थार्थस्तककवातजित् ॥ ६२ ॥

शुक्ला कृष्णा च तुलसी गुणेस्तुल्या प्रकीर्तिता ।

मैरुवकः ।

मारुतको मरुवको मरुन्मरुरपि स्मृतः ॥ ६३ ॥

फणी फणिज्जकश्चापि प्रस्थपुष्पः समीरणः ।

मरुदामिप्रदो हृद्यस्तीक्ष्णोष्णः पित्तलो लघुः ॥ ६४ ॥

वृथिकादिविषक्षेष्मवातकुष्ठकृमिप्रणुत् ।

कटुपाकरसो रुच्यास्तिक्तो रुक्षः सुगंधिकः ॥ ६५ ॥

दमनकः ।

उत्तको दमनको दांतो सुनिपुत्रस्तपोधनः ।

गंधोत्कटो ब्रह्मजटो विनीतः कुलपुत्रकः ॥ ६६ ॥

दमनस्तुवरस्तिक्तो हृद्यो वृथ्यः सुगंधिकः ।

ग्रहणीविषकुष्ठास्थकेदकंडुविदोषजित् ॥ ६७ ॥

वर्वरी ।

वर्वरी कवरी लुंगी खरपुष्पाजगंधिका ।

पर्णासस्तत्र कृष्णे तु कठिल्लककुठेरकौ ॥ ६८ ॥

तत्र शुक्लोऽर्जकः प्रोक्तो वटपत्रस्ततोऽपरः ।

वर्वरीवितयं रुक्षं शीतं कटु विदाहि च ॥ ६९ ॥

१ दे०भा०तुलसी । फा०रोहान् । इ०हाईट वेक्षिल । २ दे०भा०मरुजा ।

वं० भा० मरुपा । फा० मर्जगुम् । इ० स्वीट मार्जोरन् । Sweet marjoram.

३ दे० भा० दौना । वं० भा० दवना । वनदमनक, अग्निदमनक इ० वर्मवुड ॥

१ दे० भा० वनतुलसी । इसके वीजको तुखमरेह कहते हैं । वं० भा०

वारुईतुलसी । फा० पलंगमुष्क । * अर्जकः क्षुद्रतुलसी, वेतः कृष्णः ।

तीक्ष्णं रुचिकरं हृदयं दीपनं लघुपाकि च ।
पित्तलं कफवाताखकं दुक्रिमिविषापहम् ॥ ७० ॥

इति पुष्पवर्गः ।

फलवर्गः ।

तीव्रादावास्रस्य नाम गुणाः ।

आम्रशबूतो रसालोऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ।
कामांगो मधुदूतश्च माकंदः पिकवल्लभः ॥ १ ॥
आम्रपुष्पमतीसारकफपित्तप्रमेहनुत् ।
असूगदरहरं शीतं रुचिकृद् प्राहि वातलम् ॥ २ ॥
आम्रं बालं कषायाम्ले रुच्यं मारुतपित्तकृत् ।
तरुणं तु तदत्यम्लं रुक्षं दोषवयाम्रकृत् ॥ ३ ॥
आम्रमामं त्वचाहीनमातपेऽतिविशोषितम् ।
अम्लं स्वादु कषायं स्याद्देदनं कफवातजित् ॥ ४ ॥
पक्कं तु मधुरं वृष्यं स्निग्धं बलसुखप्रदम् ।
गुरुवातहरं हृदयं वर्णं शीतमपित्तलम् ॥ ५ ॥
कषायानुरसं वह्निश्लेष्मशुक्रविवर्द्धनम् ।
तदेव वृक्षसंपक्कं गुरुवातहरं परम् ॥ ६ ॥
मधुराम्लरसं किञ्चिद्द्वेत्तिपित्तनाशनम् ।
आम्रं कृत्रिमपक्कं चेत्तद्वेत्तिपित्तनाशनम् ॥ ७ ॥
रसस्याम्लस्य हानेस्तु माधुर्यर्याच्च विशेषतः ।
चूषितं तत्परं रुच्यं बलयं वीर्यकरं लघु ॥ ८ ॥

१ दे० भा० आम । फा० आंबा, इ० मैंगोटी । Mango tree. २ दे०
भा० अमचूर ।

शीतलं शीघ्रपाकि स्याद्वातपित्तहर्र सरम् ।

तेद्रसो गालितो बल्यो गुरुवात्तहरः सरः ॥ ९ ॥

अहृद्यस्तर्पणोऽतीव बृहणः कफवर्द्धनः ।

* तस्य खंडं गुरुपरं रोचनं चिरपाकि च ॥ १० ॥

मधुरं बृहणं बल्यं शीतलं वातनाशनम् ।

वातपित्तहरं रुच्यं बृहणं बलवर्द्धनम् ॥ ११ ॥

बृष्यं वर्णकरं स्वादु दुग्धाम्रं गुरुशीतलम् ॥ १२ ॥

मंदानलत्वं विषमज्वरं च रक्तामयं बद्धगुदोदरं च ।

आम्रातियोगो नयनामयं च ।

करोति तस्मादति तानि नाद्यात् ॥ १३ ॥

एतदम्लाम्रविषयं मधुराम्रपरं नतु ।

मधुरस्य परं नेत्रहितत्वाद्या गुणा यतः ॥ १४ ॥

शुद्ध्यं भसोऽनुपानं स्यादाम्राणामतिभक्षणे ।

जीरकं वा प्रयोक्तव्यं सह सौवर्चलेन च ॥ १५ ॥

अथाम्रावर्तस्य लक्षणं गुणात् ।

पक्षस्य सहकारस्य पटे विस्तारितो रसः ।

घर्मशुष्को मुहुर्दत्त आम्रावर्त इति स्मृतः ॥ १६ ॥

आम्रावर्तस्तृष्णाछर्दिवात्तपित्तहरः सरः ।

रुच्यः सूर्यांशुभिः पाकाल्यद्युश्र स हि कीर्तिः ॥ १७ ॥

१ दे० भा० अम्बरस । स वै दुग्धेन संयुक्तः कांतिदः स्वादुदः स्मृतः ।
वृष्यथान्ये गुणाश्चोक्ता रसेन सदृशः स्मृतः ॥ (उत्तमानि फलानि) दाढि
मामलकं द्राक्षा खर्जरं सपरुपकम् । राजादनं मातुलुंगं फलवर्गं प्रशस्यते ॥
* मुरच्चा । १ दे० भा० आंवट । आम्रतैल । आम्रतैलं तु तुवरं स्वादु
रुक्तं च तिक्तकम् । सुगंधि मुखरोगस्य नाशनं कफवातनुत् ।

आम्रबीजम् ।

आम्रबीजं कषायं स्याच्छर्द्यतीसारनाशनम् ।
ईषदम्लं च मधुरं तथा हृदयदाहनुत् ॥ १८ ॥

नवपलुवम् ।

आम्रस्य पलुवं रुच्यं कफपित्तविनाशनम् ।
आम्रातम् ।

आम्रातकः पीतनश्च मर्कटाम्रः कपीतनः ॥ १९ ॥

आम्रातम्लं वातघ्नं गुरुणं हृचिकृत्सरम् ।

पक्वं तु तुवरं स्वादु रसे पाके हिमं स्मृतम् ॥ २० ॥

तर्पणं श्लेषम्लं स्त्रिगधं वृष्यं विष्टंभि वृंहणम् ।

गुरु बलयं मरुत्पित्तक्षतदाहक्षयास्त्रजित् ॥ २१ ॥

राजाम्रम् ।

राजाम्रष्टुंग आम्रातः कामादो राजपुत्रकः ।

राजाम्रं तुवरं स्वादु विशदं शीतलं गुरु ॥ २२ ॥

ग्राहि रुक्षं विवंधाध्मानवातकृतकफपित्तनुत् ॥

कोशाम्रम् ।

कोशाम्र उक्तः क्षुद्राम्रः कूमिवृक्षः सुकोशकः ॥ २३ ॥

कोशाम्रः कुष्ठशोथाल्पित्तव्रणकफापहः ।

तत्फलं ग्राहि वातघ्नम्लोणं गुरु पित्तलम् ॥ २४ ॥

पक्वं तु दीपनं रुच्यं लघूणं कफवातनुत् ।

पनसः ।

पनसः कंटकिफलः पनसोऽतिवृहत्फलः ॥ २५ ॥

१ दे० भा० अमरा, अंबडा । वं० भा० आमडा इ० स्योन्डि। ओसमिनटू ।
(मज्जा) स्वादुपाकोऽयिवलकृत्स्नग्धः पित्तानिलापहः । २ दे० भा० कोशाम्र ।
वं० भा० केओडा । जलपाई । ३ दे० भा० कटहल, कटहड । वं० भा० कां-
ठाला । (पनसवीज) पनसोद्दूतवीजानि वृष्याणि मधुराणि च । गुरुणि-

पनसं शीतलं पकं स्तिर्गधं पित्तानिलापहम् ।
 तर्पणं वृंहणं स्वादु मांसलं क्षेष्मलं भृशम् ॥ २६ ॥
 बल्यं शुक्रप्रदं हंति रक्तपित्तक्षतव्रणान् ।
 आमं तदेव विष्टुभि वातलं तुवरं गुरु ॥ २७ ॥
 दाहहन्मधुरं बल्यं कफमेदोविवर्द्धनम् ।
 लंकुचम् ।

लंकुचः क्षुद्रपनसो लिकुचोडहुरित्यपि ॥ २८ ॥
 आमं लंकुचमुष्णं च गुरु विष्टुभकृत्यथा ।
 मधुरं च तथाम्लं च दोषत्रयरक्तकृत् ॥ २९ ॥
 शुक्राग्निनाशनं वापि नेत्रयोरहितं स्मृतम् ।
 सुपक्वं ततु मधुरमम्लं चानिलपित्तहत् ॥ ३० ॥
 कफवहिकरं रुच्यं वृष्णं विष्टुभकं च तत् ।
 मोचाफलम् ।

कदली वारणबुसा रंभा मोचांशुमत्फलाः ॥ ३१ ॥
 मोचाफलं स्वादु शीतं विष्टुभि कफतुद गुरु ।
 स्तिर्गधं पित्तास्त्रतृददाहक्षतक्षयसमीरजित् ॥ ३२ ॥
 पकं स्वादु हिमं पाकं स्वादु वृष्णं च वृंहणम् ।
 शुक्लप्णानेत्रगदहरंभेहन्नं रुचिमांसकृत् ॥ ३३ ॥
 माणिक्यमत्यासृतचंपकाद्या
 भेदाः कदल्या वहवोपि संति ॥
 उक्ता गुणास्तेष्वधिका भवन्ति ।
 निर्दोषता स्याल्लघुता च तेषाम् ॥ ३४ ॥

—तद्विट्कानि सृष्टमूत्राणि संवदेत् ॥ मज्जा पनसजा वृष्णा वातपित्तकफापहा ।
 विशेषपनसं वर्ज्ञं गुलिमिर्मदवहिभिः

१ दे० मा० बडहल । बं० मा० डेओ, मादार । पं० मा० ढऊ । २ दे०
 मा० केला । बं० मा० कला । फा० मावज् बोझ । इ० ष्टेन् । Plaquin.

चिर्भट्टम् ।

चिर्भट्टं धेनुदुग्धं च तथा गोरक्षकर्कटी ।
चिर्भट्टं मधुरं सूक्ष्मं गुरु पित्तकफापहम् ॥ ३५ ॥
अनुष्णं ग्राहि विष्टंभि बालं चानिलकोपनम् ।
कफापित्तकरं स्थंदि पकवं तूष्णं च पित्तलम् ॥ ३६ ॥
नारिकेलम् ।

नारिकेलो दृढफलो लांगली कूर्चशीर्षकः ।
तुंगः स्कंधफलश्चोच्चस्तृणराजः सदाफलः ॥ ३७ ॥
नारिकेलफलं शीतं दुर्जरं वस्तिशोधनम् ।
विष्टंभि बृहणं बलयं वातपित्तास्रदाहनुत् ॥ ३८ ॥
विशेषतः कोमलनारिकेलं निहांति पित्तज्वरपित्तदोषान् ।
तदेव जीर्णं गुरु पित्तकारि विदाहि विष्टंभि मतं भिषाग्निः ॥
तस्यांभः शीतलं हृदयं दीपनं शुक्रलं लघु ।
पिपासापित्तजित्स्वादु वस्तिशुद्धिकरं परम् ॥ ४० ॥
नारिकेलस्य तालस्य खर्जूरस्य शिरांसि च ।
कषायस्तिनग्धमधुरबृंहणानि गुरुणि च ॥ ४१ ॥
कालिन्दम् ।

कालिन्दं कृष्णबीजं स्यात्कालिङ्गञ्च सुवर्तुलम् ।

१ दे० भा० चिर्भट्ट, कचरी, सेंध, फूट, गोरखककडी । ब० भा० काकुड़, गोमुक, फुटी । इ० पुविसेंठक्योकंवर । (चिर्भट्टपुष्प) पुष्पं च चिर्भट्टं चैव दोषत्रयकरं सृतम् । अपक्वं जीर्णकफकृत्पक्वं किंचिद्दिशिष्यते ॥ २ दे० भा० नारियल, नरेल । ब० भा० नारकोल । फा० जोज । हिंदी नारीयल । इ० कोको-नट पाम । Cocoa nut palm. मुगाक्षीगुणाः—मुगाक्षी कटुका तिक्ता पाके इम्ला वातनाशिनी । वित्तकृत्पीनसहरा दीपनी रुचिकृत्परा ॥ ३ शिरांसि=वृन्तानि । ४ दे० भा० तरबूज । ब० भा० तरबूजा । चैलना । फा० हदवा-ना । इ० वाटरमेलन् । Water malin.

कलिन्दं ग्राहि दृक्पित्तशुक्रहच्छीतलं गुरु ॥ ४२ ॥
पक्न्तु सोष्णं सक्षारं पित्तलं कफवातजित् ॥

दशांगुलम् ।

दशांगुलं तु खर्वौजं कश्यंते तद्गुणा अथ ॥ ४३ ॥

खर्वौजं भूत्रलं वल्यं कोष्ठशुद्धिकरं गुरु ।

स्तिर्गधं स्वादुतरं शीतं वृष्णं पित्तानिलापहम् ॥ ४४ ॥

तेषु यच्चाम्लमधुरं सक्षारं च रसाद्धिवेत् ।

रक्तपित्तकरं तत्तु सूत्रकृच्छ्रहरं परम् ॥ ४५ ॥

त्रैपुसम् ।

त्रपुसं कंटकिफलं सुधावासः सुशीतलम् ।

त्रपुसं लघु शीतं च नवं तट्टक्कमदाहजित् ॥ ४६ ॥

स्वादुपित्तापहं शीतं तिक्तं कृच्छ्रहरं परम् ।

तत्पक्मम्लमुष्णं स्थातिपित्तलं कफवातनुत् ॥ ४७ ॥

तद्वीजं भूत्रलं शीतं स्तक्षं पित्तास्त्रकृच्छ्रजित् ।

क्रमुकम् ।

बोंटा पूरी च पूगश्च गुवाकः क्रमुकस्य तु ॥ ४८ ॥

फलं पूरीफलं प्रोत्तमुद्ग्रेगं च तदीरितम् ।

पूरं गुरु हिमं स्तक्षं कषायं कफपित्तजित् ॥ ४९ ॥

१ दे० भा० खरबूजा । व० भा० खरमुजा खरबूजा । फा० खरबूजा ।
इ० मेलन् । Malon । (नारकेलपुष्प) नारिकेलस्य पुष्पं तु शीतं रक्तांति—
सारहृत् । रक्तपित्तप्रमेहं च सोमरोगं च नाशयेत् । मलस्तंभकरं चापि प्रोक्तं
पूर्वमनीपिमिः । २ दे० भा० खीरा । व० भा० शंशा । फा० शियारखुर्द ।
इ० कुकंवर । kukamber, ३ दे० भा० शुपारी । व० भा० शुपारी । फा०
पोपिल इ० विटल नट्पाम । Bitelnut palm, पूगवृक्षस्य निर्यासो मोहनः
शीतलो गुरुः । पाके चोष्णः पित्तलश्च पटुश्चाम्लः प्रकीर्तिः । वातनाशकरश्चैव
मुनिमिः परिकीर्तिः ।

मोहने दीपनं रुच्यमास्यवैरस्यताशनम् ।
आर्द्रं तद्गुर्वाभिष्यंदि बहिद्विष्टिहरं स्मृतम् ॥ ५० ॥
स्थिवन्नं दोषव्रयच्छेदि दृढमध्यं तदुत्तमम् ।

तालम् ।

तालस्तु लेखपत्रः स्यात्तृणराजो महोन्नतः ॥ ५१ ॥

पक्कन्तालफलं पित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ।

दुर्जरं बहुमूत्रं च तंद्राभिष्यंदशुक्रदम् ॥ ५२ ॥

तालमज्जा तु तरुणा किञ्चिन्मदकरो लयुः ।

श्लेष्मलो वातपित्तव्यः सस्नेहो मधुरः सरः ॥ ५३ ॥
ताडी ।

तालजं तरुणं तोयमतीव मदकून्धतम् ।

अम्लीभूतं यदा तु स्पातिपित्तकृद्रातदोषहत् ॥ ५४ ॥
शालफलम् ।

शालं फलं रुक्षशीतं मधुरं स्तंभनं गुरु ।

कषायं लेखनं स्तन्यवाताद्मानविवर्धकृत् ॥ ५५ ॥

पित्तदाहतृषाकासक्षतक्षयविषास्त्रनुत् ।

बिल्वः ।

बिल्वः शांडिल्यशैलवौ मालूरश्रीफलावपि ॥ ५६ ॥

बालं बिल्वफलं बिल्वकर्कटी बिल्वपेशिका ।

आहणी कफवातामशूलश्री बिल्वपेशिका ॥ ५७ ॥

बालं बिल्वफलं आहि दीपनं पाचनं कठु ।

कषायोष्णं लघु स्त्रिघं तिक्तं वातकफापहम् ॥ ५८ ॥

१ दे० भा० ताड, तद्देद हिंताळ । बं० भा० श्रीताल । हिंताळ । फा० ताल । इ० पालमार्ईपाम । palmy palm. २ दे० भा० साल, सखया । बं० भा० शालगाढ्छ । लताशाल । इ० सालटी । Saltree. ३ दे० भा० बिल, (Bill) बं० भा० बेल, बिल्व । इ० बेगालंकिन्स । Begalam kinc. तत्पत्रं कफवातामशूलघ्नं प्राहि रोचनम् । निहन्याद्विल्वजं पुष्पमतिसारं तृष्णा वमिम् ।

पकं गुरु विदोषं स्यादुर्जरं पूतिमारुतम् ।
विदाहि विष्टुभकरं मधुरं वह्निमांद्यकृत् ॥ ५९ ॥

कैपित्थम् ।

कपित्थस्तु दधित्थः स्यात्तथा पुष्पफलः स्मृतः ।
कपिप्रियो दधिफलः तथा दंतशठोऽपि च ॥ ६० ॥
कपित्थमामं संग्राहि कषायं लेखनं लघु ।
पकं गुरु तृष्णाहिक्काशमनं वातपित्ताजित् ॥ ६१ ॥
स्वाद्वम्लं तुवरं कंठशोधनं ग्राहि दुर्जरम् ।
नारंगम् ।

नारंगो नागरंगः स्यात्त्वक्सुगंधो मुखप्रियः ॥ ६२ ॥
नारंगं मधुराम्लं स्याद्रोचनं वातनाशनम् ।
अपरं त्वम्लमत्युष्णं दुर्जरं वातहृत्सरम् ॥ ६३ ॥

तिंदुकम् ।

तिंदुकः स्फूर्जकः कालस्कंधश्च शितिसारकः ।
स्यादामं तिंदुकं ग्राहि वातलं शीतलं लघु ॥ ६४ ॥
पकं पित्तप्रमेहाद्यक्षेष्मद्वं मधुरं गुरु ।
कुपीलुः ।

तिंदुकः कथितो यस्तु जलजो दीर्घपत्रकः ॥ ६५ ॥
कुपीलुः कुलकः काकतिंदुकः कालपीलुकः ।
काकेंदुर्विषषतिंदुश्च तथा मर्कटतिंदुकः ॥ ६६ ॥

१ दे० भा० कैथ । वं० भा० कपेद्वाछ । इ० बुडण्यल । एंडिफंटण्यल ।
२ दे० भा० नारंगी । वं० भा० नारंगालेबु । फा० नारज । इ० औरेंज ।
Orange. । ३ तेंदु । वं० भा० गाव्रतेंद । फा० अनुवस इ० एवनी Elbowy.
४ दे० भा० काकतेंदु । अस्य फलं कुचला इति लोके । वं० भा० माकड-
गाछ । दे० भा० कुचले । वं० भा० कुंचले । फा० इफाराकी । इ० पाईचन-
नट ॥ कुचला शुद्धि (रसरत्नप्रदीपे) ॥ त्रिदिनं कांजिके क्षितः शुद्धः स्या-
दिष्टतिंदुकः (वृद्धयोगतरंगिष्याम्) किंचिदाज्ञेन भृष्टो वै विषमुष्टिर्विशुद्धति ।

कुपीलु शीतलं तिक्तं वातलं मदकृष्णु ।
पादव्यथाहरं ग्राहि कफपित्तविनाशनम् ॥ ६७ ॥
फेलेंद्रः ।

फलेंद्रः कथिता नंदी राजजंबूर्महाफला ।
तथा सुरभिपत्रा च महाजंबूरपि स्मृता ॥ ६८ ॥
राजजंबूफलं स्वादु विष्टुभि गुरु रोचनम् ।
क्षुद्रजंबूः सूक्ष्मपत्रो नादेयी जलजंबुकः ॥ ६९ ॥
जंबूः संग्राहणी रक्षा कफपित्तास्त्रदाहजित ।
बैदरम् ।

पुंसि ख्रियां च कर्कधूर्वदरी कोलमित्यपि ॥ ७० ॥
फेनिलं कुवलं घोटा सौवीरं बदरं महत् ।
अजाप्रियः कुहाकोलिर्विषमो भयकंटकः ॥ ७१ ॥

बदरविशेषाणां लक्षणगुणाश्च ।
पच्यमानन्तु मधुरं सौवीरं बदरं महत् ।
सौवीरं बदरं शीतं भेदनं गुरु शुक्रलम् ॥ ७२ ॥

बृंहणं पित्तदाहास्त्रक्षयतृष्णानिवारणम् ।
सौवीरं लघु संपकं मधुरं कोलमुच्यते ॥ ७३ ॥
कोलं तु बदरं ग्राहि रुच्यमुष्णं च वातलम् ।
कफपित्तकरं चापि गुरु सारकमीरितम् ॥ ७४ ॥

कर्कधुः क्षुद्रबदरं कथितं पूर्वसूरिभिः ।
अम्लं स्यात्क्षुद्रबदरं कषायं मधुरं मनाक् ॥ ७५ ॥
स्त्रिगंधं गुरु च तिक्तं च वातपित्तापहं स्मृतम् ।
शुष्कं भेदयिकृत्सर्वं लघुतृष्णाकृमास्त्रजित् ॥ ७६ ॥

१ दे० भा० बडी जामुन, छोटी जामुन, बं० भा० जामगाछ, इं० जांबडालटी । Jambdal tree: २ दे० भा० बेर बडा, बेर छोटा । कर्कधु कोकनबैर, झाडी बेर । बं० भा० क्षुलगाछ । फा० कुनार, सौवीरं=उनाब इं० जुजब, Jojab,

प्राचीनामलकम् ।

प्राचीनामलकं लोके पानीयामलकं स्मृतम् ।
प्राचीनामलकं दोषत्रयजिज्जवरधाति च ॥ ७७ ॥
लंबली ।

सुगंधमूला लंबली पांडुकोमलवल्कला ।
लंबलीफलमस्मार्शः कफपित्तहरं गुरु ॥ ७८ ॥
विशदं रोचनं स्फक्षं स्वाद्मलं तुवरं रसे ।

करमर्दः करमर्दिका ।

करमर्दः कुषेणः स्यात्कृष्णपाकफलस्तथा ॥ ७९ ॥
तस्माल्लुफला या तु सा ज्ञेया करमर्दिका ।
करमर्दद्वयं त्वामममलं गुरुतृष्णापहम् ॥ ८० ॥
उष्णं रुचिकरं त्रोत्तं रक्तपित्तकफप्रदम् ।
तत्पकं मधुरं रुच्यं लघुपित्तसमीरजित् ॥ ८१ ॥
प्रियालम् ।

प्रियालस्तु खरस्कंधश्चारो बहुलवल्कलः ।
राजादनं तापसेष्टः सन्नकदुर्धनुःपटः ॥ ८२ ॥
चारस्तु पित्तकासन्नः तत्फलं मधुरं गुरु ।
स्निग्धं सरं भृत्पित्तदाहज्जवरतृष्णापहम् ॥ ८३ ॥

१ दे० भा० पानी आमला । बं० भा० पानी आमला । इ० फला कुर्द्याकाठा प्राकटा । २ दे० भा० हरफारेवडी । बं० भा० नोपाड, नोपाल । वदरी-फलमज्जा-वदरीफलमज्जा तु तुवरा मधुरा मता। शुकदा बलदा वृष्णा कासधास-तृष्णापहा । वातमी छर्दिदाहमी पित्तहा मुनिभिर्मता । पत्रगुणाः-दरस्य पत्रलेपो-डयं ज्वरदाहविनाशनः । त्वचा विस्फोटशमनी वीजं नेत्रामयापहम् । ३ दे० भा० करोंदा, करोंदी । बं० भा० करमुचा । पं० भा० गरना गरनी, इ० जास्मिन् फलार्वडकेरिसा । ४ दे० भा० चिराँजी चिरोली । बं० भा० पियाला-फा० बुकलेखाजा.

प्रियालमज्जा मधुरा वृष्णा पित्तानलापहा ।
हृद्योऽतिदुर्जरः स्त्रिग्धो विष्टंभी चामवर्द्धनः ॥ ८४ ॥
राजादनम् ।

राजादनः फलाध्यक्षो राजन्या क्षीरिकापि च ।
क्षीरिकायाः फलं वृष्णं बल्यं स्त्रिग्धं हिमं गुरु ॥ ८५ ॥
तृष्णामूर्च्छामदभ्रांतिक्षयदोषत्रयास्त्रजित् ।
विकंकतम् ।

विकंकतः खुवावृक्षो अंथिलः स्वादुकंटकः ॥ ८६ ॥
सरावयजवृक्षश्च कंटकी व्याघ्रपादपि ।
विकंकतफलं पक्वं मधुरं सर्वदोषजित् ॥ ८७ ॥
पैद्वबीजम् ।

पद्मबीजं तु पद्माक्षं गालोढर्यं पद्मकर्कटी ।
पद्मबीजं हिमं स्वादु कषायं तिक्तकं गुरु ॥ ८८ ॥
विष्टंभि वृष्णं रुक्षं च गर्भस्थापनकं परम् ।
कफवातहरं बल्यं ग्राहि पित्तास्त्रदाहनुत् ॥ ८९ ॥
मखाणम् ।

मखाणं पद्मबीजाभं पानीयफलमित्यपि ।
मखाणं पद्मबीजस्य गुणैस्तुल्यं विनिर्दिशेत् ॥ ९० ॥
शृंगाटकम् ।

शृंगाटकं जलफलं त्रिकोणफलमित्यपि ।
शृंगाटकं हिमं स्वादु गुरु वृष्णं कषायकम् ॥ ९१ ॥

१ दे० भा० खिरनी, खिन्नी । वं० भा० रंजणी । इ० औवट्युस्
लागुमाईमुसोप्स । २ दे० भा० कुकोया कंटाई बंज । किकणी । वं० भा०
वइचगाछ । ३ दे० भा० क्रमलगठा । पद्मबीजं । वं० भा० पद्मबीचि । ४ दे०
भा० मखाना । फूल मखाना । वं० भा० मखान । ५ दे० भा० सिंघाडा ।
वं० भा० पाणिफल । फा० सुरंजान । इ० वाटर कैलिअम । Water Kaliam.

आहि शुक्रानिलशेषमप्रदं दाहास्त्रपित्तनुत् ।
उक्तं कुमुदवीजं तु बुधैः कैरविणीफलम् ॥ ९२ ॥

कुमुदवीजम् ।

भवेत्कमुद्रतीवीजं स्वादु रक्षं हिमं गुरु ।
मैथूकं, जलमधूकम् ।

मधूको गुडपुष्पः स्यान्मधुपुष्पो मधुस्त्रवः ॥ ९३ ॥

वानप्रस्थो मधुष्ठीलो जलजोऽत्र मधूलकः ।

मधूकपुष्पं मधुरं शीतलं गुरु वृंहणम् ॥ ९४ ॥

बलशुक्रकरं प्रोक्तं वातपित्तविनाशनम् ।

फलं शीतं गुरु स्वादु शुक्रलं वातपित्तनुत् ॥ ९५ ॥

अहव्यं हंति तृष्णास्त्रदाहश्चासक्षतक्षयान् ।

पालेवतम् ।

पालेवतांसतं पुष्पैस्तिदुकाभं फलं मतम् ॥ ९६ ॥

अन्यन्माणवकं ज्ञेयं महापालेवतं तथा ।

स्वाद्वम्लं शीतमुण्णं च द्विधा पालेवतं गुरु ॥ ९७ ॥

यत् स्वादु मधुरं तच्छीतं यदम्लं तदुण्णकम् ।

उभयमपि गुरु इति हेमाद्रिः ।

परुषकम् ।

परुषकं परुषकमलपास्थं च परापरम् ॥ ९८ ॥

परुषकं कषायाम्लमामं पित्तकरं लघु ।

१ नीलोफर । २ दे० भा० महुआ, जलमहुआ । वं० मा० मौल मौया ।
फा० चकां । इ० इल्या ट्री Eloya tree. ३ दे० भा० फालसा । वं० भा०
फलसा । फा० पालसा । इ० एश्याटिक ग्रेविया (मधूकस्य तैलम्) मधूकतैलं
मधुरं पिच्छिलं तुवरं मतम् । कफपित्तज्वरं चैव दाहपित्तं च नाशयेत् ।
(अस्य त्वचा) परुषकल्पकं प्रमेहनी योनिमेहप्रदाहनुत् । मूत्रदोषप्रशमनी
शीतपित्तानिलादहा ॥ १ ॥

तत्पकं मधुरं पाके शीतं विष्टंभि वृंहणम् ॥ ९९ ॥
हृद्यं तु पित्तदाहास्त्रज्वरक्षयसमीरजित् ।
तूतम् ।

तदस्तूतं च यूपश्च क्रमुको ब्रह्मदारु च ॥ १०० ॥
तूतं पकं गुरु स्वादु हिमं पित्तानिलापहम् ।
तदेवामं गुरु सरमम्लोष्णं रक्तपित्तकृत् ॥ १०१ ॥
दाढिमम् ।

दाढिमः करको दंतबीजो लोहितपुण्पकः ।
तत्फलं त्रिविधं स्वादु स्वाद्वम्लं केवलाम्लकम् ॥ १०२ ॥
तत्तु स्वादु त्रिदोषग्नं तटदाहज्वरनाशनम् ।
हत्कंठमुखरोगग्नं तर्पणं शुक्रलं लघु ॥ १०३ ॥
कषायानुरसं ग्राहि स्थिर्धं मेधाबलावहम् ।
स्वाद्वम्लं दीपनं रुच्यं किंचित्पित्तकरं लघु ॥ १०४ ॥
अम्लं तु पित्तजनकमामवातकफापहम् ।
बहुवारः ।

बहुवारस्तु शीतः स्यादुद्वालो बहुवारकः ॥ १०५ ॥
शेलुः श्लेष्मातकश्चापि पिच्छिलो भूतवृक्षकः ।
बहुवारो विषस्फोटव्रणवीसर्पेक्षुष्टुत् ॥ १०६ ॥
मधुरस्तुवरस्तिक्तः केश्यश्च कफपित्तहत् ।
फलमामं तु विष्टंभि रुक्षं पित्तकफास्त्रजित् ॥ १०७ ॥

१ दे० भा० शहतूत । तत । ब० भा० तूत । पलाशपिपुल । फा० शहतूत
तुर्श । इ० मलबेरिज । Mulberries. २ दे० भा० अनार ब० भा०
लिम । फा० अनार तुरिश, अनारशीरी । इ० पौंग्रानट । Pomgra nut.
अस्य पुष्णं) तत्पुष्णं च पुनर्ज्येयं नासासृगतिनावनात् । दाढिमत्वक् क्रमिन्ना
ग्राहिरक्तातिसारहा । ३ दे० भा० लिसूडा । लिसोडा । ब० भा० बहुपार,
लतागाढ़ । फा० सिपिस्तान । इ० नेरोलिङ्डसेपिस्टन । Narrow leaved
pistun.

तत्पकं मधुरं स्त्रियं श्लेष्मलं शीतलं गुरु ।

कंतकम् ।

पयःप्रसादि कतकं कतकं तत्फलं च तत् ॥ १०८ ॥

कतकस्य फलं नेत्रयं जलनिर्मलताकरम् ।

वातश्लेष्महरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ॥ १०९ ॥

द्राक्षा ।

द्राक्षा स्वादुफला प्रोक्ता तथा मधुरसापि च ।

मृद्धीका हारहूरा च गोस्तनी चापि कीर्तिता ॥ ११० ॥

द्राक्षा पक्वा सरा शीता चक्षुष्या बृंहणी गुरुः ।

स्वादुपाकरसा स्वयर्या तुवरा सृष्टमूत्रविड ॥ १११ ॥

कोष्ठमारुतहड्ड वृष्या कफपुष्टिरुचिप्रदा ।

हंति तृष्णाज्वरश्वासबातवाताम्लाः ॥ ११२ ॥

कृच्छ्रास्त्रपित्तसम्भोहदाहशोषमदात्ययान् ।

आमा स्वल्पगुरुर्गुवीं सैवाम्ला रक्तपित्तकृत् ॥ ११३ ॥

वृष्या स्याद्गोस्तनी द्राक्षा गुवीं च कफपित्तनुत् ।

अबीजाऽन्या स्वल्पतरा गोस्तनी सदशा गुणैः ॥ ११४ ॥

द्राक्षा पर्वतजा लघ्वी साम्ला श्लेष्माम्लपित्तकृत् ।

द्राक्षा पर्वतजा याद्वक् तादृशी करमर्दिका ॥ ११५ ॥

क्षुद्रखर्जूरं पिंडखर्जूरं च ।

भूमिखर्जूरिका स्वाद्वी दुरारोहा मृदुच्छदा ।

तथा स्कंधफला क्वाक्कर्कटी स्वादुमस्तका ॥ ११६ ॥

१ दे० भा० निर्मली । वं० भा० निर्मलफल । इ० आनट् विच क्रिअर्स
वाटर । Ant which clears water. २ दे० भा० दाख, किसमिस,
सुनका । वं० भा० किसमिस, मनेका । फा० अंगर, सुनका । इ० प्रेप, रोजिंस
Grape raisins. ३ दे० भा० खजूर, पिंडखजूर, छुहरे । वं० भा०
खेजूर, पिंडखेजूर छोहरे । फा० तमररतक । इ० डेट पाम । Date palm.
(खजूरी । ताडी) खजूरी तोयमित्यादि ॥

पिंडखर्जूरिका त्वन्या सा देशे पश्चिमे भवेत् ।

खर्जूरी गोस्तनाकारा परद्वीपादिहागता ॥ ११७ ॥

जायते पश्चिमे देशे सा छोहरेति कीर्तिता ।

खर्जूरीवितयं शीतं मधुरं रसपाकयोः ॥ ११८ ॥

स्निग्धं रुचिकरं हृदयं क्षतक्षयहरं गुह ।

तर्पणं रक्तपित्तम्ब्रं पुष्टिविष्टभशुक्रदम् ॥ ११९ ॥

कोष्ठमारुतहृदलयं वांतिवातकफापहम् ।

ज्वरातिसारक्षुक्तृष्णाकासथासनिवारकम् ॥ १२० ॥

मदमूर्च्छामरुतित्तमद्योद्भूतगदांत्यकृत् ।

महतीभ्यां गुणेरल्पा स्वल्पा खर्जूरिका स्मृता ॥ १२१ ॥

खर्जूरितरुतोयं तु मदपित्तकरं भवेत् ।

वातश्लेष्महरं रुच्यं दीपनं चलशुक्रकृत् ॥ १२२ ॥

पिंडखजूरभेदः । सुलेमानी ।

सुनेपाली तु मृदुला दलहीनफला च सा ।

सुनेपाली श्रमभ्रांतिदाहमूर्च्छालिपित्तहृत् ॥ १२३ ॥

वातादः ।

वातादो वातवैरी स्यान्नेत्रोपमफलस्तथा ।

वाताद उष्णः सुस्निग्धो वातद्वः शुक्रकृदगुहः ॥ १२४ ॥

वातादमज्जा मधुरो वृष्यः पित्तानिलापहः ।

स्निग्धोष्णः कफकृन्नेष्टो रक्तपित्तविकारिणाम् ॥ १२५ ॥

सेवम् ।

मुष्टिप्रमाणं बंदरं सेवं शिवितिकाफलम् ।

१ दे० भा० बादाम कडवे । बादाम मीठे । बं० भा० बादाम । फा० बादाम शीरीं बादाम तलख । इ० स्वीट अलमंड । Sweet almond. वाताद-तैलं मृदु रेचनं स्याद्वाजीकरं मूर्द्धगदं प्रहन्यात् । पित्तानिलम्बं लघु दाहनाशि लावण्यदं मेहकरं सुशीतम् ॥ २ इति आत्रेयसंहिता । ३ दे० भा० सेव बं० सेउ फा० सेव इ० एपल Apple.

सेवं समीरपित्तद्वं वृंहणं कफकूद् गुरु ॥ १२६ ॥

रसे पाके च मधुरं शिशिरं रुचिशुक्रकृत् ।

अमृतफलम् ।

अमृतफलं लघु वृष्णं सुखादु त्रीन् हरेदोषाद् ॥ १२७ ॥

देशेषु मृदगलानां बहुलं तल्लभ्यते लोकैः ।

पीलः ।

पीलुर्गुडफलः स्वंसी तथा शीतफलोऽपि च ॥ १२८ ॥

पीलु श्लेष्मसमीरष्टनं पित्तलं भेदि गुलमनुत् ।

स्वादु तिक्तं च यत्पीलु तन्नात्युष्णं त्रिदोषहृत् ॥ १२९ ॥

बैक्षोटः ।

बीजः शैलभवोऽक्षोटः कंदरालश्च कीर्तितः ।

अक्षोटकोऽपि वातादसदृशः कफपित्तकृत् ॥ १३० ॥

बीजपूरम् ।

बीजपूरो मातुलुंगो रुचकः फलपूरकः ।

बीजपूरफलं स्वादु रसेऽम्लं दीपनं लघु ॥ १३१ ॥

रक्तपित्तहरं कंठाजिह्वाहृदयशोधनम् ।

श्वासकासारुचिहरं हृदयं तृष्णाहरं स्मृतम् ॥ १३२ ॥

बीजपूरभेदः ।

बीजपूरोऽपरः प्रोक्तो मधुरो मधुकर्कटी ।

मधुकर्कटिका स्वाद्वी रोचनी शीतला गुरुः ॥ १३३ ॥

रक्तपित्तक्षयश्वासकासहिक्षाभ्रमापहा ।

१ दे० भा० नासपाती नाख । गर्भदोषहरं स्वीणां मृतवत्सत्वनाशनम् ।

गर्भस्त्रावं गर्भपातं नाशयेन्नियतं त्विदम् ॥ १ ॥ २ दे० भा० पीलु वडी पीलु वं०

पीलुगाछ । फा० दर्खिते मिस्वाक इं० मस्टर्डटी आफ स्क्रीपचर । Mustard

tree of scripture. ३ दे० भा० अखरोट । वं० भा० आक्रोट । फा०

चार्तगज । ई० वालनट् Walnut. ४ दे० भा० किंव । विजौरानीवृ । वं०

भा० टावालेवृ । फा० तुरंज । इं० साईट्रूस Sitres. ५ दे० भा० चकोतरा ।

जंबीरद्रुयम् ।

स्याज्जंबोरो दंतशठो जंभंजंभीरजंभलाः ॥ १३४ ॥

जंबीरमुष्णं गुर्वम्लं वातश्लेष्मविषधनुत् ।

शूलकासकफोत्केशच्छर्दितृष्णामदोषजित् ॥ १३५ ॥

आस्यवैरस्यहृत्पीडावहिमांघृमीन्हरेत् ।

स्वल्पजंबीरिका तद्वचृष्णाछर्दिनिवारणी ॥ १३६ ॥

निंबूकम् ।

निंबूः स्त्री निंबुकं क्रीवि निपाकमपि कीर्तितम् ।

निंबूकमम्लं वातन्नं दीपनं पाचनं लघु ॥ १३७ ॥

मिष्ठानिंबूकम् ।

मिष्ठानिंबूफलं स्वादु गुह मारुतपित्तनुत् ।

गलरोगविषधनं सि कफोत्केशि च रक्तहृत् ॥ १३८ ॥

शोषारुचितृषाच्छर्दिहरं बल्यं च वृंहणम् ।

कर्मरंगम् ।

कर्मरंगं हिमं त्राहि स्वादम्लं कफवातहृत् ॥ १३९ ॥

अम्लिका ।

अम्लिका चुक्रिकाऽम्ली च चुक्रा दंतशठापि च ।

अम्ला च चिंचिका चिंचा तिंतिडीका च तिंतिडी ॥ १४० ॥

अम्लिकाम्ला गुरुवर्तिहरी पित्तकफारुकृत् ।

पक्का तु दीपनी रुक्षा सरोष्णा कफवातनुत् ॥ १४१ ॥

१ दे० भा० खड्डा खड्डी जंभीरी । बं० भा० कागजी लेबु । जामीरी लेबु । फा० लिमुने तुर्श लिमुने शीरी । इ० लेमस । Lemons. निंबुकं क्रिमिसमूहनाशनं तीक्ष्णमम्लमुदरप्रहापहां वातपित्तकफशूलिने हितं कष्टनष्टहृचिरो-चनं परम् ॥ १ ॥ त्रिदोषवहिक्षयवायुरोगनिपीडितानां विषविहलानाम् । मलग्रहे बद्धगुदे प्रदेयं विसूचिकायां मुनयो वदति ॥ २ ॥ २ दे० भा० कमरख । बं० भा० कामरांगा इ० करमबोला Carmbola. ३ दे० भा० इम्बली । बं० भा० तेंतुल । इ० टेमेरिंडी Tamerined tree.

अम्लवेतसम् ।

स्यादम्लवेतसं चुक्रं शतवेधि सहस्रभित् ।

अम्लवेतसमत्यम्लं भेदनं लघु दीपनम् ॥ १४२ ॥

हद्रोगशूलगुलमन्नं पित्तलं लोमहर्षणम् ।

रुक्षं विष्मूत्रदोषन्नं प्लीहोदावर्तनाशनम् ॥ १४३ ॥

हिक्कानाहारुचिथासकासाजीर्णवमिप्रणुत् ।

कफवातामयध्वंसि छागमांसद्रवत्वकृत् ॥ १४४ ॥

चणकाम्लगुणं ज्ञेयं लोहसूचीद्रवत्वकृत् ।

वृक्षाम्लम् ।

वृक्षाम्लं तिंतिडीकं च चुक्रं स्यादम्लवृक्षकम् ॥ १४५ ॥

वृक्षाम्लमाममम्लोणं वातन्नं कफपित्तलम् ।

पक्कं तु गुरु संग्राहि कटुकं तुवरं लघु ॥ १४६ ॥

अम्लोणं रोचनं रुक्षं दीपनं कफवातहत् ।

चतुरम्लं पंचाम्लम् ।

अम्लवेतसवृक्षाम्लबृहजंबीरनिंबुकैः ॥ १४७ ॥

चतुरम्लं हि पंचाम्लं वीजपूरयुतैर्भवेत् ।

परिभाषा ।

फलेषु परिपक्कं यद्गुणवत्तदुहाहतम् ॥ १४८ ॥

बिल्वादन्त्यव्र विज्ञेयमामं तद्विगुणाधिकम् ।

फलेषु सरसं यत्स्याद्गुणवत्तदुदाहतम् ॥ १४९ ॥

द्राक्षाबिल्वशिवादीनां फलं शुष्कं गुणाधिकम् ।

फलतुल्यगुणं सर्वं मज्जानामपि निर्दिशेत् ॥ १५० ॥

१ दे० भा० अम्लवेद । बं०भा०थैकड় । प० भा० गलगल फा०तुर्पक ।
इঁ० कামন্সৌরেল । Coman sorail. চিংচাপুষ্পং তু তুবরং স্বাদম্লং চ রুচি-
প্রদম্ । চিশদং চাম্রিজনকং লঘুবাতকফাপহস্ম ॥ ১ ॥ প্রমেহন্নং সমুদ্বিষ্টং পর্ণ শোথহরং
মতম্ । চিংচাক্ষারশ্বামিমাংবশূলনাশকরোমতঃ ॥ ২ । দে०ভা०সমাকদানা।ডাঁসরা ।
বং०ভা०মহাদা । অম্লকুটা ইঁ০ কোকবটর দ্বী । Cocambatar tree,

फलं हिमाग्निदुर्वातव्यालकीटादिदूषितम् ।
अकालजं कुभूमीजं पाकातीतं न भक्षयेत् ॥ १५१ ॥
इति फलवर्गः ।

वटादिवर्गः ।

तेत्रादौ वटस्य नामानि गुणाश्च ।

वटो रक्तफलः शुंगी न्यग्रोधः स्कन्धजो शुबः ।
क्षीरी वैश्रवणावासो बहुपादो वनस्पतिः ॥ १ ॥
वटः शीतो गुरुर्माही कफपित्तव्रणापहः ।
वण्यो विसर्पदाहन्नः कषायो योनिदोषहत् ॥ २ ॥
अश्वत्थः ।

बोधिद्रुः पिप्पलोऽश्वत्थः चलपत्रो गजाशनः ।
पिप्पलो दुर्जरः शीतः पित्तश्लेष्मव्रणाघजित् ॥ ३ ॥
गुरुस्तुवरको रुक्षो वण्यो योनिविशोधनः ।
पिंपलभेदः ।

पारिशोन्यः पलाशश्च फलीशश्च कमण्डलुः ॥ ४ ॥
गर्दभांडः कन्दरालकपीतनस्तुपार्थिकाः ॥
पारिषो दुर्जरः सिंधः कूमिशुक्रकफप्रदः ॥ ५ ॥
फलेऽम्लो मधुरो मूले कषायः स्वादुमज्जकः ।

१ देश भाषा बोहड । बड । वं० भा० बट । फारसी बडवाई । इ० वन-
नदी Banian tree । २ दे० भा० पीपल । पिपल । वं० भा०
श्वत्थ । फा० दरखतलरजी । इ० प्लोलीबड़ फिग्टी । Poleaved phigt-
ee । ३ दे० भा० पारिस पिपल । वं० भा० गजशुण्डी । फा० यलासबेल्य ।
० हिस्कम् ।

अश्वत्थमेदः *

नन्दावृक्षोऽश्वत्थभेदः प्ररोही गजपादपः ॥ ६ ॥
 स्थालीवृक्षः क्षीरितरुः क्षीरी च स्याद्वनस्पतिः ।
 नन्दीवृक्षो लघुः स्वादुस्तिक्तस्तुवर उष्णकः ॥ ७ ॥
 कटुपाकरसो त्राही विषपित्तकफास्वजित्
 उदुम्बरः ।

उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञांगो हेमदुग्धकः ॥ ८ ॥
 उदुम्बरो हिमो रुक्षो गुरुः पित्तकफास्वजित् ।
 मधुरस्तुवरो वर्णयो व्रणशोधनरोपणः ॥ ९ ॥
 मैलघृः ।

काकोदुम्बरिका फलगुरुमलयूर्जवनेफला ।
 मलयूस्तम्भकृत्तिका शीतला तुवरा जयेत् ॥ १० ॥
 कफपित्तव्रणवित्रपांडवर्शःकुष्ठकामलाः ।
 शुक्षः ।

शुक्षो जटी पर्षटी च कर्षटी च ख्यामपि ॥ ११ ॥
 शुक्षः कषायः शिरिरो व्रणयोनिगदापहः ।
 दाहपित्तकफास्वन्नः शोथहा रक्तपित्तहत् ॥ १२ ॥
 शिरीषः ।

शिरीषो भंडिलो भंडी भंडीरश्च कपीतनः ।
 शुकपुष्पः शुकतरुमृदुपुष्पः शुकप्रियः ॥ १३ ॥
 शिरीषो मधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्च तुवरो लघुः ।
 दोषशोथविसर्पनः कासव्रणविषापहः ॥ १४ ॥

* वेलिया पिप्पल । दे० भा० गूलर । वं० भा० यज्ञदुमुर । फा० अंजीरे आदम । नद्युदुंबरिकागुणैः किञ्चिन्न्यूता । इ० किंगटी Kigtree, ॥ २ दे० भा० फगवाडा | कठूमर । वं० भा० काकदूमर । फा० अंजीरे दस्ती । इ० किंगटी । Kigtree । ३ दे० भा० पिलखन । वं० भा० पाकुडगाछ । ४ दे० भा० शिरीह । सिरस । वं० भा० शिरीषगाछ । फा० दरखतेजकरिया ।

क्षीरिवृक्षाः पंचवल्कलाः ।

न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थपारिषफ्लक्षपादपाः ।

दंचेते क्षीरिणो वृक्षास्तेषां त्वक् पंचवल्कलम् ॥ १५ ॥

केचित्तु पारिषस्थाने शिरीषं वेतसं परे ।

क्षीरिवृक्षा हिमा वर्ण्या योनिरोगब्रणापहाः ॥ १६ ॥

रुक्षाः कषाया मेदोद्वाविसर्पमयनाशनाः ।

शोथपित्तकफास्थन्नाः स्तन्या भग्नास्थियोजकाः ॥ १७ ॥

त्वक्पंचकं हिमं ग्राहि ब्रणशोथविसर्पजित् ।

तेषां पत्रं हिमं ग्राहि कफवातास्थनुल्लघु ॥ १८ ॥

विष्टभाव्यानजित्तिं कषायं लघुलेखनम् ।

शालः ।

शालस्तु सर्जकार्ष्याश्वकर्णकाः सस्यसंबरः ॥ १९ ॥

अश्वकर्णः कषायः स्याद्ब्रणस्वेदकफक्रिमीन् ।

ब्रन्धविद्विवाधिर्ययोनिकर्णगदान्हरेत् ॥ २० ॥

शालभेदः ।

सर्जकोऽन्योजकर्णः स्याच्छालो मरिचपत्रकः ।

अजकर्णः कटुस्तक्तः कषायोणो व्यपोहति ॥ २१ ॥

कफपांडुश्रुतिगदान्मेहकुष्ठविषब्रणान् ।

शैलकी ।

शैलकी गजभक्षा च सुवहा सुरभी रसा ।

महेरुणा कुंडरुकी वल्ककी च बहुस्ववा ॥ २२ ॥

शैलकी तुवरा शीता पित्तश्लेष्मातिसारजित् ॥

रक्तपित्तब्रणहरी पुष्टिकृत्समुदीरिता ॥ २३ ॥

१ दे० भा० शाल । सखुया । सांखु । ब० भा० शालगाछ । लताशील ।

इ० सालटी । Sal tree. २ दे० भा० सलइ, सक्की, सिलहक, सालै ।

ब० भा० शल्डी । प० भा० मैदासक ।

शिंशिपा ।

शिंशिपा पिच्छिला श्यामा कृष्णसारा च सा गुहः ।

कपिला सैव मुनि भिर्भस्मगमेति कीर्तिता ॥ २४ ॥

शिंशिपा कटुका तिका कषाया शोथहारिणी ।

उष्णवीर्यर्था हरेन्मेदः कुष्ठाधिवासिक्रिमीन् ॥ २५ ॥

वस्तिरुग्रणदाहस्वलासान् गर्भपातिनी ।

कंकुभः ।

ककुभोऽर्जुननामा स्यान्नदीसर्जश्च कीर्तितः ॥ २६ ॥

इंद्रद्विरवृक्षश्च वीरश्च धवलः स्मृतः ।

ककुभो शीतलो हृदयः क्षतक्षयविषास्तजित् ॥ २७ ॥

मेदोमेहव्रणान् हंति तुवरं कफपित्तहत् ।

अैसनः ।

बीजकः पीतसारश्च पीतशालक इत्यपि ॥ २८ ॥

बंधूकपुष्पः प्रियकः सर्जकश्चासनः स्मृतः ।

बीजकः कुष्ठबीसर्पीधिवेहगदक्रिमीन् ॥ २९ ॥

हंति श्लेष्मास्तपित्तं च त्वच्यः केश्यो रसायनः ।

खदिरः ।

खदिरो रक्तसारश्च गायत्री द्रुतधावनः ॥ ३० ॥

केटकी वालपत्रश्च बहुशल्यश्च यज्ञियः ।

खदिरः शीतलो दन्त्यः कंडुकासारुचिप्रणुत् ॥ ३१ ॥

१ दे० मा० टाहली । सीसम । श्वेता, कपिला । कृष्णा । वं० मा० शिशुगाढ़े । इ० व्लाकुडस ट्री । Black woodes tree. दे० २ मा० कौ । कौह । वं० मा० अर्जुन गाढ़ । ३ दे० मा० विजयसार । वं० मा० पियाशाल । प० मा० अलसन । फा० कमरकस् । इ० इंडयन्किन्सट्री Indian kinstree, असनस्य तु पुष्पाणि विपाके मधुराणि च । तिक्तानि पाचनीयानि वातलानि भवति हि ॥ ४ दे० मा० खैर । श्वेत, रक्त, वं० मा० खैर गाढ़ ।

तिक्तः कषायो भेदोन्नः कृष्णमेहञ्चरव्रणात् ।

श्वितशोथाभपित्तास्त्रपांडुकुष्ठकफान् हरेत् ॥ ३२ ॥

श्वेतखदिरः ।

खदिरः श्वेतसारोऽन्यः कदरः सोमवल्कलः ।

खदिरो विशदो वण्यो मुखरोगकफास्त्रजित् ॥ ३३ ॥

इरिमेदः ।

इरिमेदो विट्खदिरः कालस्कंधोऽरिमेदकः ।

इरिमेदः कषायोण्णो मुखदंतगदास्त्रजित् ॥ ३४ ॥

हंति कंडूविषक्षेष्मकृमिकुष्ठविषव्रणात् ।

रोहीतकः ।

रोहीतको रोहितको रोही दाढिमपुष्पकः ॥ ३५ ॥

रोहीतकः प्लीहघाती रुच्यो रक्तप्रसादनः ।

किंकिरातः ।

बबूलः किंकिरातः स्यात्किकराटः सपीतकः ॥ ३६ ॥

स एव कथितस्तज्ज्ञेराभाषट्पद्मोदनी ।

बबूलः कफनुद्ग्राही कुष्ठकृमिविषापहः ॥ ३७ ॥

अरिष्टकः ।

अरिष्टकस्तु मांगल्यः कृष्णवर्णोऽर्थसाधनः ।

१ दे० भा० कत्था । बं० भा० खैर । फा० कात । इ० केटेच्य Catechu

२ दे० भा० दुर्गंधि खैर । बं० भा० विग् खैर । इ० स्पंज ट्री । Sapanj tree.

(खैरगोंद) निर्यासस्तस्य मधुरो वत्यः शुक्रविर्घ्नः । (खदिरसार) ख-

दिरः खदिरोद्भूतस्तस्तारो रंगदः सृतः ॥ सारस्तु विशदो वण्यो मुखरोगक-

फास्त्रजित् ॥ १ ॥ ३ दे० भा० रुहेडा । श्वेत, रक्त । बं० भा० रोडा । कडार

४ दे० भा० किकर । बं० भा० बबूल गाछ । फा० मुगिलां । इ० एकसिया ट्री

Ecasia tree. ५ दे० भा० रेठा । बं० भा० रिठे गाछ । फा० फिंदक् हिन्दी ।

इ० सोमबेरी सोपन ट्री । Sombari sopan tree. (अस्य निर्यासः)-

रक्तबीजः पीतफेनः फेनिलो गर्भपातनः ॥ ३८ ॥

अरिष्टकस्त्रिदोषन्नो ग्रहजिह्वर्भपातनः ।

ऐत्रजविः ।

पुत्रजीवो गर्भकरो यष्टि पुष्टोर्थसाधकः ॥ ३९ ॥

पुत्रजीवो गुरुर्वृष्यो गर्भदः श्लेष्मवातहृत् ।

सृष्टमूत्रमलो रुक्षो हिमः स्वादुः पटुः कटुः ॥ ४० ॥

इंगुंदः ।

इंगुदोंगरवृक्षश्च तिक्तकस्तापसदुमः ।

इंगुदः कुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषक्रिमीन् ॥ ४१ ॥

हंत्युष्णः वित्रशूलम्भस्तिक्तकः कटुपाकवान् ।

जिंगिनी ।

जिंगिनी द्विंगिणी द्विंशी सनिर्यासा प्रमोदिनी ॥ ४२ ॥

जिंगिनी मधुरा सोष्णा कषाया योनिशोधनी ।

कटुका ब्रणहृद्रोगवातातीसारहृत्पटुः ॥ ४३ ॥

तमालः ।

तमालः शालवद्वेद्यो दाहविस्फोटहृत्पुनः ।

तुणी ।

तुणी तुन्नक आपीत्तः तुणिकः कच्छपस्तथा ॥ ४४ ॥

कुठेरकः कांतलको नंदीवृक्षश्च नंदकः ।

—ववूलस्य तु निर्यासो ग्राही पित्तानिलापहा । रक्तातिसारपित्तास्मेहप्रदरनाशनः
भग्नसंघानकः शीतः शोणितसुतिवारणः ॥ १ ॥ १ दे० भा० जियोपोता ।
२ दे० भा० इंगोट । ३० डेलील Daleil । ३ दे० भा० काली सिंवल ।
निर्यासवती । मोदनी जातनिर्यासो नस्याद्वातव्यथापहः । तत्पुष्पं वातलं ग्राहि
पित्तासृक्प्रदरापहम् ॥ १ ॥ फलं रसायनं केशं वृंहणं शुक्रलं गुरु । मूत्रक्षयहर्व
चृष्णारक्तमूत्रविवंधकृत् ॥ २ ॥ इंगुदाः फलमजको जलयुतो लेपान्मुखे कां
तिदः । ४ दे० भा० तमाल ।

तुणीरुक्तः कटुः पाके कषायो मधुरो लघुः ॥ ४५ ॥
तिक्तो ग्राही हिमो वृष्यो ब्रणकुष्ठास्वपित्तजित् ।

भूर्जपत्रः ।

भूर्जपत्रः स्मृतो भूर्जश्चमीं बहुलवल्कलः ॥ ४६ ॥

भूजों भूतग्रहश्चेष्टमकर्णस्त्रिपत्तरक्तजित् ।

कषायो राक्षसघन्न मेदोविषहरः परः ॥ ४७ ॥

पलाशः ।

पलाशः किंशुकः पर्णो याज्ञिको रक्तपुष्पकः ।

क्षारश्रेष्ठो वातहरो ब्रह्मवृक्षः समिद्वरः ॥ ४८ ॥

पलाशो दीपनो वृष्यः सरोषो ब्रणगुल्मजित् ।

कषायः कटुकस्तिक्तः स्त्रिग्धो गुदजरोगजित् ॥ ४९ ॥

भग्रसंधानकृदोषग्रहण्यर्थः कृमीन् हरेत् ।

शालमली ।

शालमलिस्तु भवेन्मोचा पिच्छिला पूरणीति च ॥ ५० ॥

रक्तपुष्पा स्थिरायुश्च कंटकाढया च तूलिनी ।

शालमलिः शीतला स्वाद्वी रसे पाके रसायनी ॥ ५१ ॥

श्लेष्मला पित्तवातास्त्रहारिणी रक्तपित्तजित् ।

मोचरसः ।

निर्यासः शालमलेः पिच्छाशालमलिवैष्टकोऽपि च ॥ ५२ ॥

मोचास्वावो मोचरसो मोचनिर्यास इत्यपि ।

१ दे० भा० भोजपत्र, भूर्जपत्र । बं० भा० भूजि पत्र । इ० जकेमोटी Jakimoti. २ दे० भा० छिँरा । ढाक । टेसू । केसू । बं० भा० प्रला-

शगाछ । इ० डोडनीब्रांचब्युटिपा । पलाशमूलस्वरसो नेत्रच्छायोधपुष्पजित् ।

तद्वीजं कृमिविध्वसि कांडो रसायने हितः ॥ १ ॥ पलाशभवनिर्यासो ग्राही

च क्षपयेहुवम् । ग्रहणी मुखजान् कासान् जयेत्स्वेदातिर्निर्गमम् ॥ २ ॥

इ० दे० भा० सेमरका गूद । बं० भा० शिमुलेर आटा । इ० सिल्ककाटन टी० Silk cotton tree.

मोचास्त्रावो हिमो ग्राही स्त्रियो वृष्यः कषायकः ॥५३॥
प्रवाहिकातीसारामकफपित्तास्त्रदाहतुत् ।

कूटशालमलिः ।

कुत्सिता शालमलिः प्रोक्ता रोचना कूटशालमलिः ॥५४॥

कूटशालमलिका तिक्ता कटुका कफवातनुत् ।

भेद्युष्णा प्लीहजठरयकृद्वलमविषापहा ॥ ५५ ॥

भूतानाहविबन्धास्त्रमेदःशूलकफापह् ।

धैवः ।

धवो धटो नंदितस्तः स्थिरो गौरो धुरंधरः ॥ ५६ ॥

धवः शीतः प्रभेहार्शः पांडुपित्तकफापहः ।

मधुरस्तुवरस्तस्य फलं च मधुरं मनाक ॥ ५७ ॥

धन्वंगः ।

धन्वंगस्तु धतुर्वृक्षो गोत्रवृक्षस्तु तेजनः ।

धन्वंगः कफपित्तास्त्रकासहत्तुवरो लघुः ॥ ५८ ॥

वृंहणो बलकृद्वक्षः संधिकृद्वणरोपणः ।

करीरः ।

करीरः क्रकरो पत्रो ग्रंथिलो मरुभूरुहः ॥ ५९ ॥

करीरः कटुकस्तिक्तः स्वेद्युष्णो भेदनः स्मृतः ।

दुर्नामकफवातामगरशोथब्रणप्रणुत ॥ ६० ॥

शाखोटः ।

शाखोटः पीतफलको भूतावासः खरच्छदः ।

शाखोटो रक्तपित्ताशोवातश्लेष्मातिसारजित ॥ ६१ ॥

१ दे० भा० कौडी सिवल । २ दे० भा० धौं । कहुआ । व० भा० धाऊयागाछ । ३ धामन । ४ दे० भा० करीर । कचडा । टीट । व० भा० करील ।
फा० कवार । इ० कैपर kaper. 'मूलं कटुकप्रायच्च पित्तकृद्वीपनं परम् ।' इसके
फलको डेले कहते हैं । ५ दे० भा० दैद्या । सहोडा । व० भा० शेओडा ।

वैरुणः ।

वैरुणो वरणः सेतुस्तिक्षशाकः कुमारकः ।
कषायो मधुरस्तिक्षः कटुको रुक्षको लघुः ॥ ६२ ॥
कटभी ।

कटभी स्वादुपुष्पा च मधुरेणुः कटभरा ।
कटभी तु प्रमेहाशोनाडीविषविषक्रिमीन् ॥ ६३ ॥
अत्युष्णा कफकुष्टव्यां कटु रुक्षा च कीर्तिता ।
तत्फलं तुवरं ज्येष्ठ विशेषात्कफशुक्रहत् ॥ ६४ ॥
गोलीढः ।

मोक्षस्तु मोक्षकोऽपि स्याद्गोलीढो गोलिहस्तथा ।
क्षारश्रेष्ठः क्षारवृक्षो द्विविधः श्वेतकृष्णकः ॥ ६५ ॥
मोक्षकः कटुकस्तिक्षो ग्राहुणः कफवातहत् ।
विषमेदोगुलमंडवस्तिरुक्रिमिशुक्रनुत् ॥ ६६ ॥
अंबुशिरीषिका ।

शिरीषिका ठिठिणिका हुर्वलांबुशिरीषिका ।
त्रिदोषविषकुष्टाशोहरी वारिशिरीषिका ॥ ६७ ॥
शमी ।

शमी सकुफला तुंगा केशहंतफला शिवा ।
मंगल्या च तथा लक्ष्मीः शमीं रासालिपका स्मृता ॥ ६८ ॥
शमी तिक्ता कटुः शीता कषाया रेचनी लघुः ।
कफकासभ्रमधासकुष्टाशोक्रिमिजित्स्मृता ॥ ६९ ॥

संसर्पणः ।

सतपर्णो विशालत्वक् शारदो विषमच्छदः ।

१ दे० भा० वरना । बं भा० वैरुणा गाढ़ । २ दे० भा० कांटीवाला
सिरस । श्वेत । श्याम । इ० केरिस ट्री cares tree । ३ दे० भा० घंटापा-
टलि । बं० भा० घंटा पारुल । प०० भा० पाडल । ४ दे० भा० डिढाना ।
डिढेन । ५ दे० भा० जंडी । जंडि । बं० भा० शाँई । इ० स्पंज ट्री ।
panjtree. ६ दे० भा० सतोना । सोतपुडा । बं० भा० छाँतिम गाढ़ ।

सतपणो ब्रणश्लेष्मवात्कुष्ठास्त्रजंतुजित् ॥ ७० ॥
दीपनः श्वासगुलमन्नः स्थिग्धोष्णस्तुवरः सरः ।
तिनिशः ।

तिनिशः स्यंदनो नेमी रथद्वुर्वेजुलस्तथा ॥ ७१ ॥
तिनिशः श्लेष्मपित्तास्त्रमेदः कुष्ठप्रमेहजित् ।
तुवरः श्वित्रदाहन्नो ब्रणपांडुक्रिमिप्रणुत् ॥ ७२ ॥
भूमिसहा ।

भूमिसहो द्वारदा तु शरद्वानुः खरच्छदः ।
भूमिसहस्तु शिशिरो रक्तपित्तप्रसादनः ॥ ७३ ॥
इति वटादिवर्गः ।

धातुवर्गः ।

तत्र धातूनां लक्षणानि गुणात्थ ।
स्वर्णं रूप्यं च ताम्रं च वंगं यसदमेव च ।
सीसं लोहं च सतैते धातवो गिरिसंभवाः ॥ १ ॥
बलीपलितखालित्यं काश्याऽवल्यजरामयान् ।
निवार्यं देहं दधाति नृणां तद्वातवो मताः ॥ २ ॥
सुवर्णोत्पत्तिनामलक्षणगुणाः ।

पुरा निजाश्रमस्थानां संसर्षीणां जितात्मनाम् ।
पत्नीर्विलोक्य लावण्यलक्ष्मीसंपन्नयौवनाः ॥ ३ ॥

१ दे० भा० तिनासवा । तिरिछा । वं० भा० तिनाश । सासना ।
२ दे० भा० भूई सहदेई । उलखउ । औखड । ३ दे० भा० सोना । वं०
भा० सोना । फा० तिला । इ० गोल्ड । gold. कनकं सेवयेन्नित्यं जरामृत्यु-
विनाशनम् । कायाञ्चिपुष्टिजननं वाजीकरणमुत्तमम् ॥ आयुष्यं बलमारोग्यं वज्रे
स्वर्णं रसे स्थितम् ॥ १ ॥ २ मरीचिरंगिरा अत्रिः पुलस्यः पुलहः क्रतुः ।
बसिष्ठश्वेति सतैते कीर्तिताः सप्तर्षयः ॥ २ ॥

कंदर्पदर्पविध्वस्तचेतसो जातवेदसः ।
 पतितं यद्धरापृष्ठे रेतस्तद्वेमतामगात् ॥ ४ ॥
 स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।
 तपनीयं च गांगेयं कलधौतं भर्मकांचनम् ॥ ५ ॥
 चामीकरं शातकुंभं तथा कार्तस्वरं च तद् ।
 जांबूनदं जातरूपं महारजतमित्यपि ॥ ६ ॥
 रुक्मं लोहवरं चाग्निबीजं चांपेयकर्वुरे ।
 अष्टापदं च रसजं तैजसं चापि कीर्तितम् ॥ ७ ॥
 प्राकृतं सहजं वह्निसंभूतं खनिसंभवम् ।
 रसेंद्रवेदसं जातं स्वर्णं पंचविधं स्मृतम् ॥ ८ ॥
 दाहे रक्तं सितं छेदे निकषे कुंकुमप्रभम् ।
 तारशुल्बोज्जितं स्त्रिगंधं कोमलं गुरु हेमसत् ॥ ९ ॥
 तच्छेतं कठिनं रुक्षं विवर्णं समलं दैलम् ।
 दाहे छेदे सितं श्वेतं कषे त्याज्यं लैघु सफुटम् ॥ १० ॥
 सुवर्णं शीतलं वृष्यं बल्यं गुरु रसायनम् ।
 स्वाङ्गं तिक्तं च तुवरं पाके तु स्वाङ्गं पिञ्चिलम् ॥ ११ ॥
 पावित्रं वृंहणं नेत्रं मेधास्मृतिमतिप्रदम् ।
 हृदयमायुष्करं कांतिवाग्निवशुद्धिस्थिरत्वकृत् ॥ १२ ॥
 विषद्वयं क्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषजित् ॥ १३ ॥
 बलं सवीर्यं हरते नराणां रोगव्रजान् पोषयतीह काये ।
 असौख्यकार्येव सदा सुवर्णमशुद्धमेतन्मरणं च कुर्यात् ॥ १४ ॥
 असम्यडमारितं स्वर्णं बलं वीर्यं च नाशयेत् ।
 करोति रोगान् मृत्युं च तद्वन्याद्यतत्स्वतः ॥ १५ ॥
 रैजतम् ।

त्रिपुरस्य वधार्थाय निर्निमेषैर्विलोचनैः ।

१ दलं, जोरत इति । २ यद्वनाहतं स्फुटति । सितया हंति दाहादं वात-
 पितं फलत्रिकात् । त्रिसुगंध्या प्रमेहादित्रिजं तं हंत्यसंशयम् ॥ १ ॥ ३ दै० भा०
 चांदी । व० भा० रूप फा० तुकरा इ०सिल्वर silver,

निरीक्षयामास शिवः क्रोधेन परिपूरितः ।
 अग्निस्तत्कालमपतत्स्यैकस्माद्विलोचनात् ॥ १६ ॥
 ततो रुद्रः समभवद्वैश्वानर इव ज्वलन् ।
 द्वितीयादपतन्नेत्रादश्चुर्बिंदुस्तु वामकात् ॥ १७ ॥
 तस्माद्रजत्सुत्पन्नमुक्तकर्मसु योजयेत् ।
 रजतं त्रिविधं प्रोक्तं सहजं खनिजकृत्रिमे ॥ १८ ॥
 कृत्रिमं च भवेत्तद्वि वंगादिरसयोगतः ।
 रूप्यं तु रजतं तारं चंद्रकांतिसितप्रभम् ॥ १९ ॥
 वसूत्तमं च कुप्यं च खर्जूरं रंगबीजकम् ।
 मुहु स्त्रिगर्धं मृदु श्वेतं दाहे छेदे वनक्षमम् ॥ २० ॥
 वर्णाठ्यं चंद्रवत्स्वच्छं रूप्यं नवगुणं शुभम् ।
 कठिनं कृत्रिमं रूक्षं रक्तं पीतदलं लघु ॥ २१ ॥
 दाहच्छेदघनैर्नष्टं रूप्यं दुष्टं प्रकीर्तितम् ।
 रूप्यं तिक्तं कषायाम्लं स्वादु पाकरसं सरम् ॥ २२ ॥
 वयसः स्थापनं स्त्रिगर्धं लेखनं बातपित्तजित् ।
 प्रमेहादिकरोगांश्च नाशयत्यच्चिराद्व्युवम् ॥ २३ ॥
 तारं शरीरस्य करोति तापं विडवंधनं यच्छति शुक्रनाशम् ।
 वीर्यं वलं हंति तनोस्तु पुष्टिं महागदान्पोषयति ह्यशुद्धम् ॥ २४
 ताम्रम् ।
 शुक्रं यत्कार्तिकेयस्य पतितं धरणीतले ।
 तस्मात्ताम्रं समुत्पन्नमिदमाहुः पुराविदः ॥ २५ ॥
 ताम्रमौदुंवरं शुल्वमुदुंवरमयि स्मृतम् ।
 रविप्रियं म्लेच्छमुखं सूर्यपर्यायनामकम् ॥ २६ ॥
 जपाकुसुमसंकाशं स्त्रिगर्धं मृदु वनक्षमम् ।
 लोहं नागोज्ञितं ताम्रं मारणाय प्रशस्यते ॥ २७ ॥

कृष्णं रुक्षमतिस्तब्धं श्वेतं चापि घनासहम् ।
 लोहनागयुतं चेति शुल्बं दुष्टं प्रकीर्तिम् ॥ २८ ॥
 ताम्रं कषायं मधुरं च तिक्तमम्लं च पाके कटु सारकं च ।
 पित्तापहं श्लेष्महरं च शीतं तद्रोपणं स्थाळघु लेखनं च ॥ २९ ॥
 पांडूदराशोज्वरकुष्ठकासंश्वासक्षयान्पीनसम्मलपित्तम् ।
 शोथं कृमिं शूलमपाकरोति प्राहुः परे बृंहणमल्पमेतत् ॥ ३० ॥
 न विषं विषमित्याहुस्तावं तु विषमुच्यते ।
 एको दोषो विषे ताम्रे तवष्टौ दोषाः प्रकीर्तिताः ॥ ३१ ॥
 दाहः स्वेदोऽहुचिर्मूर्च्छा क्लेदो रेको वभिर्भ्रमः ।
 वंगम् ।

रंगं वंगं त्रपु प्रोक्तं तथा पिच्छटमित्यापि ॥ ३२ ॥
 खुरकं मिश्रकं चापि द्विविधं वंगमुच्यते ।
 उत्तमं खुरकं तव्र मिश्रकं त्वबरं मतम् ॥ ३३ ॥
 रंगं लघुं सरं रुक्षमुष्णं मेहकफक्रिमीन् ।
 निहंति पांडुं सश्वासं चक्षुष्यं पित्तलं मनाक् ॥ ३४ ॥
 सिंहो यथा हस्तिगणं निहंति तथैव वंगोऽखिलमेहवर्गम् ।
 देहस्य सौरुष्यं प्रबलेऽद्वियत्वं नरस्य पुष्टिं विदधाति नूनम् ॥ ३५
 यसदं ।

यसदं रंगसदशं रीतिहेतुश्च तन्मतम् ।
 यसदं तुवरं तिक्तं शीतलं कफपित्तहत् ॥ ३६ ॥
 चक्षुष्यं परमं मेहान्पांडुं श्वासं च नाशयेत् ।
 सीसैकम् ।

दृष्टा भोगिसुतां रम्यां वासुकिस्तु मुमोच यत् ॥ ३७ ॥

१ दे० भा० कली । कलई । रांग । बं० भा० रांग वंग । फा० अर-
 जीज । इ० टीन् । tin. २ दे० भा० जिस्त, जसद । बं० भा० दस्ता । फा०
 श्रातूतिया । इ० जिक् । zinc. २ दे० भा० सिका सीसा । बं० भा० सीसे ।
 फा० सुवे । इ० लेड् Lead

वीर्यं जातस्ततो नागः सर्वरोगापहो नृणाम् ।
 सीसं वर्धं च वप्रं च योगेष्टं नागेनामकम् ।
 सीसं वंगगुणं ज्ञेयं विशेषान्मेहनाशनम् ॥ ३८ ॥
 नागस्तु नागशततुल्यबलं ददाति
 व्याधि विनाशयति जीवनमातनोति ॥
 वह्नि प्रदीपयति कामबलं करोति
 मृत्युं च नाशयति सन्ततसेवितस्सः ॥ ३९ ॥
 पाकेन हीनौ किल वंगनागौ
 कुष्ठानि गुल्मांश्च तथातिकष्ठान् ।
 पांडुप्रमेहानलसादशोथ—
 भगंद्रादीन् कुरुतः प्रभुत्तौ ॥ ४० ॥
 लोहम् ।

पुरा लोमिनदैत्यानां निहतानां सुरेयुधि ।
 उत्पन्नानि शरीरेभ्यो लोहानि विविधानि च ॥ ४१ ॥
 लोहोऽख्या शस्त्रकं तीक्ष्णं पिंडं कालायसायसी ।
 शुरुता दृढतोऽहेदकश्मलं दाहकारिता ॥ ४२ ॥
 अ॒मदोषः सुदुर्गंधो दोषाः सतायसस्य तु ।
 लोहं तिक्तं सरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ॥ ४३ ॥
 स्तक्षं वयस्यं चक्षुप्यं लेखनं वातलं जयेत् ।
 कफपित्तं गरं शूलं शोथार्शः प्लीहपांडुताः ।
 मेदोमेहकूमीन्कुष्टं तत्किट्टं तद्वदेव हि ॥ ४४ ॥
 खडत्वकुष्ठामयमृत्युदं भवेद्वहद्रोगशूलौ कुरुतेऽशरीं च ।
 नानारुजानांच तथाप्रकोपं करोति हल्लासमशुद्धलोहम् ॥ ४५ ॥

१ नागः भुजंगः इत्यादि । १ दे० भा० लोहा, फोलाद, इस्पात । वं०
 मा० लौह, तिगा, इसपात काल लोह । फा० आहन्, फोलाद, संगे आहन् ।
 इ० आयरन् Iron गुंजामेकां समारम्भ यावत्सुर्व रक्तिकाः । ताथलोहं सम-
 स्तीयाद्यथादोपवलं नरः ॥ १ ॥

जीवहारि मदकारि चायसं चेदशुद्धिमदसंस्कृतं ध्रुवम् ।
पाटवं न तनुते शरीरके दाहणं हृदि रुजां च यच्छतिष्ठ ॥
कृष्णांडं तिलतैलं च माषान्नं राजिकां तथा ।
मध्यमम्लरसं चापि त्यजेल्लोहस्य सेवकः ॥ ४७ ॥
लोहसारम् ।

क्षमाभृच्छिखराकाराण्यगान्यम्लेन लेपिते ।
लोहे स्युर्यत्र सूक्ष्माणि तत्सारमभिधीयते ॥ ४८ ॥
लोहं साराह्वयं हन्यात् ग्रहणीमतिसारकम् ।
अद्वै सर्वांगजं वातं शूलं च परिणामजम् ॥ ४९ ॥
छाद्वं च पीनसं पित्तं श्वासं कासं व्यपोहति ॥ ५० ॥
कांतलोहम् ।

पात्रे यस्मिन् प्रसराति जले तैलबिंदुर्निषिक्तो ।
विद्धं गंधं त्यजति च निजं रूषितं निंबकल्कैः ।
ततं दुग्धं भवति शिखराकारकं नैति भूमिं
कृष्णांगः स्थात्सजलचणकः कांतलोहं तदुक्तम् ॥ ५१ ॥
गुल्मोदरार्शः शूलामभामवातं भगंदरम् ॥
कामलाशोथकुष्ठानि क्षयं कांतमयो हरेत् ॥ ५२ ॥
झीहानमम्लपित्तं च यकृच्चापि शिरोरुजम् ।
सर्वान् रोगान्विजयते कांतलोहं न संशयः ॥ ५३ ॥
बलं वीर्यं वपुः पुष्टिं कुरुतेऽग्निं विवर्द्धयेत् ॥ ५४ ॥
मंडूरम् ।

ध्मायमानस्य लोहस्य मलं मंडूरमुच्यते ।
लोहसिंहानिका किञ्ची सिंहानं च निगद्यते ॥ ५५ ॥
यछोहं यद्गुणं प्रोक्तं तत्कट्टमापि तद्गुणम् ।

१ शतोर्द्धसुत्तमं किञ्चं मध्यं चाशीतिवार्षिकम् । अधसं पष्टिशर्षीयं ततो हीनं विषोपमम् ॥

संसोपधातवः ।

सतोपधातवः स्वर्णमाक्षिकं तारमाक्षिकम् ॥ ५६ ॥

तुत्थं कांस्यं च रीतिश्च सिद्धूरश्च शिलाजतु ।

उपधातुषु सर्वेषु तत्तद्वातुगुणा अपि ॥ ५७ ॥

संति किं तेषु ते गौणाः तत्तदंशाल्पभावतः ।

स्वर्णमाक्षिकम् ।

स्वच्छं माक्षिकमाख्यातं तापीजं मधुमाक्षिकम् ॥ ५८ ॥

ताप्यं माक्षिकधातुश्च मधुधातुश्च स स्मृतः ।

किंचित्सुवर्णं साहित्यात् स्वर्णमाक्षिकमीरितम् ॥ ५९ ॥

उपधातुः सुवर्णस्य किंचित्स्वर्णगुणान्वितः ।

तथा च कांचनाभावे दीयते स्वर्णमाक्षिकम् ॥ ६० ॥

किंतु तस्यानुकल्पत्वात् किंचिद्वृन्दगुणं ततः ।

न केवलं स्वर्णगुणो वर्तते स्वर्णमाक्षिके ॥ ६१ ॥

द्रव्यांतरस्य संसर्गात्संत्यन्येऽपि गुणा यतः ।

सुवर्णमाक्षिकं स्वादु तिक्तं वृष्यं रसायनम् ॥ ६२ ॥

चक्षुष्यं वस्तिरुक्तुष्टपांडुमेहविषोदरान् ।

अर्शः शोथं विषं कंडुं त्रिदोषमपि नाशयेत् ॥ ६३ ॥

मंदानलत्वं बलहानिमुग्रां विष्टुभतां नेत्रगदान्सकुष्ठान् ।

तथैव मालां व्रणपूर्विकां च करोति तापीजमशुद्धमेतत् ॥ ६४ ॥

तारमाक्षिकम् ।

तारमाक्षिकमन्यतु तद्वेद्जजतोपमम् ।

किंचिद्वेजजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितम् ॥ ६५ ॥

अनुकल्पतया तस्य ततो हीनगुणं स्मृतम् ।

न केवलं रूप्यगुणा वर्तते तारमाक्षिके ॥ ६६ ॥

द्रव्यांतरस्य संसर्गात्संत्यन्येऽपि गुणा यतः ॥ ६७ ॥ पूर्ववत् ॥

१ गौणधातवः । २ दे० भा० सोनामखी । वं० भा० स्वर्णमाक्षिक ३०
आयनपार्श्वार्ष्टोस । ३ दे० भा० रूपामखी ।

तुत्थम् ।

तुत्थं वितुन्नकं चापि शिखिग्रीवं भयरकम् ॥ ६७ ॥

तुत्थं ताम्रोपधातुर्हि किंच ताम्रेण तद्वेद ।

किंचित्ताम्रगुणं तस्माद्वृश्यमाणगुणं च तद् ॥ ६८ ॥

तुत्थकं कटुकं क्षारं कषायं वामकं लघु ।

लेखनं भेदनं शीतं चक्षुष्यं कफपित्तहृत् ॥ ६९ ॥

विषाशमकुष्ठकंडून्नं खर्परं चापि तद्गुणम् ।

कांस्यम् ।

ताम्रस्त्रपुजमाख्यातं कांस्यं घोषं च कांसकम् ॥ ७० ॥

उपधातुर्भवेत्कांस्यं द्वयोस्तरणिरंगयोः ।

कांस्यस्य तु गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिसद्वशा जनैः ॥ ७१ ॥

संयोगजप्रभावेण तस्यान्येऽपि गुणाः स्मृताः ।

गुरु नेत्रहितं रुक्षं कफपित्तहरं परम् ॥ ७२ ॥

पित्तलम् ।

पित्तलं त्वारकूटं स्यादारो रीतिश्च कथ्यते ॥ ७३ ॥

राजरीतिर्ब्रह्मरीतिः कपिला पिंगलापि च ।

रीतिरप्युपधातुः स्यात्ताम्रस्य यसद्वस्य च ॥ ७४ ॥

पित्तलस्य गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिसद्वशा जनैः ।

संयोगजप्रभावेण तस्यान्येऽपि गुणाः स्मृताः ॥ ७५ ॥

रीतिकायुगलं रुक्षं तिक्तं च लवणं रसे ।

शोधनं पांडुरोगन्नं कुमिन्नं नातिलेखनम् ॥ ७६ ॥

१ दे० भा० नीलाथोथा तूतिया ब० भा० तुतिया । फा० द्वूदिया । इ० आलपोढ आंककांपर । वमने मंडले दद्रौ विषे चैव प्रशस्यते । २ दे० भा० कांसी ब० भा० कांसा । फा० रोइन । इ० बेलमेटल Bial matal । ३ दे० भा० पित्तल । ब० भा० कांचापित्तल । फा० विरंज । इ० त्रास Brass

सिंदूरम् ।

सिंदूरं रत्तरेणुश्च नागगर्भं च सीसकम् ।

सीसोपधातुः सिंदूरं गुणेस्तत्सीसवन्मतम् ॥ ७७ ॥

सिंदूरमुष्णवीसर्पकुष्ठकंडूविषापहम् ।

भग्नसंधानजननं ब्रणशोधनरोपणम् ॥ ७८ ॥

शिलाजतु ।

निदावे वर्मसंतता धातुसारं धराधराः ।

निर्यासवत्प्रसुंचंति तच्छिलाजतु कीर्तितम् ॥ ७९ ॥

सौवर्णं राजतं ताम्रमायसं तच्चतुर्विधम् ।

शिलाजत्वद्रिजतु च शैलनिर्यास इत्यपि ॥ ८० ॥

गरेयमश्मजं चापि गिरिजं शैलधातुजम् ।

शिलाजं कटुतिलोणं कटुपाकं रसायनम् ॥ ८१ ॥

छेदि योगवहं हांति कफमेदोश्मशर्कराः ।

मूत्रकृच्छ्रं क्षयं शासं वाताशासि च पांडुताम् ॥ ८२ ॥

अपस्मारं तथोन्मादं शोथकुष्ठोदरक्रिमीन् ।

सौवर्णं तु जपापुष्पवर्णं भवति तद्रसात् ॥ ८३ ॥

मधुरं कटु तिकं च शीतलं कटुपाकि च ।

ताम्रं मयूरकंठाभं तीक्ष्णमुष्णं च जायते ॥ ८४ ॥

लोहं जटायुः पक्षाभं तिकंकं लवणं भवेत् ।

विपाके कटुकं शीतं सर्वश्रेष्ठमुदाहतम् ॥ ८५ ॥

रसः ।

रसायनार्थिभिलोंके पारदो रस्यते यतः ।

ततो रस इति प्रोक्तः स च धातुरपि स्मृतः ॥ ८६ ॥

१ दे० भा० सिंदूर । वं० भा० सिंदुर । फा० सिरिनज् । २ दे० भा० शिलाजीत वं० भा० शिलाजतु । इ० आसफेलट जुझपिच । Assfailt Jojh-pich (परीक्षा) गोमूत्रगंधवत्कृष्णं लिखं मृदु तथा गुरु । तिकं कपायं शीतं च सर्वश्रेष्ठं तदायसम् ॥ १ ॥ विंध्याद्रौ वहुलं ततु तत्र लोहं यतोऽधिकम् तच्छोधनमृते व्यर्थमनेकमलमेलनात् ॥ २ ॥

पारदम् ।

शिवांगात्मच्युतं रेतः पतितं धरणीतले ॥

तदेहसारजातत्वाच्छुक्लमच्छमभूच्चं तत् ॥ ८७ ॥

क्षेत्रभेदेन विज्ञेयं शिववीर्यं चतुर्विधम् ।

श्वेतं रक्तं तथा पीतं कृष्णं ततु भवेत् क्रमात् ॥ ८८ ॥

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्च खलु जातितः ।

श्वेतं शस्तं रुजां नाशे रक्तं किल रसायने ॥ ८९ ॥

धातुवेद्ये तु तत्पीतं खे गतौ कृष्णभेव च ।

पारदो रसधातुश्च रसेंद्रश्च महारसः ॥ ९० ॥

चपलः शिववीर्यश्च रसः सूतः शिवाहयः ।

पारदः षड्सः स्त्रिग्धस्त्रिदोषघो रसायनः ॥ ९१ ॥

योगवाही महावृष्यः सदा दृष्टिबलप्रदः ।

सर्वाभ्यहरः प्रोक्तो विशेषात्सर्वकुष्ठनुत् ॥ ९२ ॥

स्वस्थो रसो भवेद्व्यावद्व्यो जनार्दनः ।

रंजितः क्रामितश्चापि साक्षादेवो महेश्वरः ॥ ९३ ॥

मूर्च्छितो हरति रुजं बंधनमनुभूय खेगतिं कुरुते ।

अजरीकरोति हि मृतः कोऽन्यः करुणाकरः सूतात् ॥ ९४ ॥

असाध्यो यो भवेद्रोगो यस्य नास्ति चिकित्सतम् ।

रसेंद्रो हंति तं रोगं नरकुंजरवाजिनाम् ॥ ९५ ॥

मलं विषं वह्निगिरित्वचापलं नैसर्गिकं दोषमुशंति पारदो

उपाधिजौ द्वौ त्रपुनागयोगजौ दोषौ रसेंद्रेकथितौ मुनीश्वरैः

मलेन मूर्च्छा मरणं विषेण दाहोग्निना कष्टतरः शरीरे ।

१ दे०भा० पारा । व०भा०पारा । फा० सीमाव । इ०मर्क्युर marqure.

(पारदपथ्यानि) हिं सुद्गात्मदुव्याज्यशाल्यन्नानि सदा ततः । शाके पुनर्नवा देवि मेघनादं सवास्तुकम् ॥ १ ॥ सैंधवं नागरं मुस्ता मूलकानि च मक्षयेत् । आत्मज्ञानं कथा पूजा शिवस्य च विशेषतः ॥ २ ॥ एतांस्तु समयान्भद्रे त लंघेद्रसमक्षकः ॥

देहस्य जाडयं गिरिणा सदा स्या--

चांचल्यतो वीर्यहतिश्च पुंसाम् ॥ ९७ ॥

वंगेन कुष्ठं भुजगेन गंडो भवेत्ततोऽसौ परिशोधनीयः ॥ ९८ ॥

वह्निर्विषं मलं वेति सुख्या दोषाख्ययो रसे ।

एते कुर्वति संतापं सृतिं मूर्च्छां नृणां ऋषात् ॥ ९९ ॥

अन्येऽपि कथिता दोषा भिषग्भिः पारदे यदि ।

तथाप्येते त्रयो दोषा हरणीया विशेषतः ॥ १०० ॥

संस्कारहीनं खलु सूतराजं यस्सेवते तस्य करोति बाधाम्
देहस्य नाशं विद्धाति नूनं कुष्ठांश्च रोगाङ्गजनयेन्नराणाम् ।

उपरसाः ।

गंधो हिंगुलमभ्रतालकशिलाः ओतोंजनं टकणं

राजावर्तकचुंबकौ रुक्षुटिकया शंखः खटीगैरिकम् ।

कासीसं रसकं कपर्दसिकतावोलाश्च कंकुष्ठकं

सौराष्ट्री च मता अमी उपरसाः सूतस्य किंचहुणेः ॥ १०२ ॥
गंधकम् ।

श्वेतद्वीपे पुरा देव्याः क्रीडत्या रजसाप्लुतम् ।

दुकूलं तेन वस्त्रेण स्नातायाः क्षीरनीरधौ ॥ १०३ ॥

प्रसृतं यद्रजस्तस्माद्धकः समभृतदा ।

गंधको गंधिकश्चापि गंधपाषाण इत्यपि ॥ १०४ ॥

सौंगंधिकश्च कथितो वलिर्बलवसापि च ।

चतुर्धा गंधकः प्रोक्तो रक्तः पीतः सितोऽसितः ॥ १०५ ॥

रक्तो हेमक्रियासूक्तः पीतश्वैव रसायने ।

त्रणादिलेपने श्वेतः कृष्णः श्रेष्ठः सुदुर्लभेः ॥ १०६ ॥

गंधकः कटुकस्तिक्तो वीर्योष्णस्तुवरः सरः ।

मित्तलः कटुकः पाके कंडुवीर्पञ्जंतुजित ॥ १०७ ॥

इन्ति कुष्ठक्षयसूरीहकफवातान् रसायनः ॥ १०८ ॥

अशोवितो गंधक एष कुष्ठं करोति तापं विषमं शरीरे ।
सौख्यचर्ष्णचलंतथौजःशुक्रं निहंत्येवकरोतिवामम् १०९

हिंगुलम् ।

हिंगुलं दरदं म्लेच्छमिंगुलं पूर्णपारदम् ।

मक्षिरंगं सुरंगं च नान्ना कर्मारबंधनम् ॥

दरदाद्याविधः प्रोक्तश्चर्मारः शुकतुंडकः ॥ ११० ॥

हंसपादस्तृतीयः स्यादगुणवालुत्तरोत्तरम् ।

चर्मारः शुक्लवर्णः स्यात्सपीतः शुकतुंडकः ॥ १११ ॥

जपाकुषुभसंकाशो हंसपादो महोत्तमः ।

तिक्तं कषायं कटु हिंगुलं स्यान्नेत्रामयद्वं कफपित्तहारि ।

हल्लासकुष्ठज्वरकामलाश्च छीहामवातौ च गरं निहंति ११२

उर्द्धपातनयुक्तया तु डमस्तुत्रपाचितम् ।

हिंगुलं तस्य सूतं तु शुद्धमेव न शोधयेत् ॥ ११३ ॥

अंभ्रकम् ।

पुरा वधाय वृत्रस्य वज्रिणा वज्रमुद्भृतम् ।

विस्फुलिंगास्ततस्तस्माहगने परिसर्पिताः ॥ ११४ ॥

ते निपेतुर्धनध्वानाः शिखरेषु महीभृताम् ।

१ दे० भा० शिगरफ । ब० भा० हिंगुल । फा० सिंप्रफ । ई० सल्फेरेट
ओफर्कर्युरी । (हिंगुलनिर्माणम्) अशुद्धपारदं भागं चतुर्भागं तु गंधकम् ।
उभौ क्षिप्त्वा लोहपत्रे क्षणं मृद्घमिना पचेत् ॥ १ ॥ क्षिप्त्वाथ खंडशस्तन्त्र
काचकूप्यां निरुद्ध्य च । वस्त्रमृत्तिकया सम्यक्काचकूपीं प्रलेपयेत् ॥ २ ॥ सर्वतों
गुलमानेन छायाशुक्रं तु कारयेत् । वालुकायंत्रगर्भं तु दिनं मृद्घमिना
पचेत् ॥ ३ ॥ क्रमवृद्धयामिना पश्चात्पचेदिवसंचकम् । सप्ताहे तु समुद्धत्य
हिंगुलः स्यात्सनोहरः ॥ ४ ॥ २ दे० भा० अभ्रक । अभ्रख । ब० भा०
अभ्र । फा० सिंतारा जमीन । इ० टाल्क ग्लिमर Talk Glimmer.

तेभ्य एव समुत्पन्नं तत्ताद्विरिषु चाभ्रकम् ॥ ११५ ॥
 तद्वज्ञं वज्रपातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात् ।
 गगनात्स्वलितं यस्माद्गगनं च ततो मतम् ॥ ११६ ॥
 विप्रक्षत्रियविद्शूद्भेदात्तस्माच्चतुर्विधः ।
 क्रमेणैव सितं रक्तं पीतं कृष्णं च वर्णतः ॥ ११७ ॥
 प्रशस्यते सितं तारे रक्तं तत्तु रसायते ।
 पीतं हेमनि कृष्णं तु गदेषु द्रुतयेऽपि च ॥ ११८ ॥
 पिनाकं दर्ढुरं नागं वज्रं चेति चतुर्विधम् ।
 सुचत्यन्नौ विनिक्षितं पिनाकं दलसंचयम् ॥ ११९ ॥
 अज्ञानाद्भक्षणं तस्य महाकुष्ठप्रदायकम् ।
 दर्ढुरं त्वग्निनिक्षितं कुरुते दर्ढुरध्वनिम् ॥ १२० ॥
 गोलकान् वहुशः कृत्वा स स्यान्मृत्युप्रदायकः ।
 नागं तु नागवद्वह्नौ फूत्कारं परिसुचति ॥ १२१ ॥
 तद्विक्षितमवश्यं तु विद्धाति भगंदरम् ।
 वज्रन्तु वज्रवत्तिष्ठेत्तत्रान्नौ विकृतिं ब्रजेत् ॥ १२२ ॥
 सर्वाभ्रेषु वरं वज्रं व्याधिवार्द्धक्यमृत्युहत ।
 अभ्रमुत्तरशेलोत्थं वहुसत्त्वं गुणाधिकम् ॥ १२३ ॥
 दक्षिणाद्विभवं स्वल्पसत्त्वमल्पगुणप्रदम् ॥ १२४ ॥
 अभ्रं कषायं मधुरं सुर्थातसायुःकरं धातुविवर्द्धनं च ।
 हन्याद्विदोषं ब्रणमेहकुष्ठं ष्ठीहोद्दरं ग्रंथिविषक्रिर्भींश्च ॥ १२५ ॥
 रोगान् हांति दृढयाति वपुर्बीर्यवृद्धिं विधत्ते
 तारुण्याद्यं रमयति शतं योगितां नित्यमेव ।
 दीर्घायुष्काञ्जनयाति सुतान् विक्रमेः सिंहतुल्या-
 मृत्योर्भींतिं हराति सततं सेव्यमानं मृताभ्रम् ॥ १२६ ॥
 पीडां विधत्ते विविधां नराणां कुष्ठं क्षयं पांडुगदं च शोथम् ।
 हृष्पार्वपीडां च करोत्यग्नुद्भ्रमत्रं त्वासिद्धं गुरुतापदं स्यात् ॥

हैरितालम् ।

हरितालं तु तालं स्यादालं तालकमित्यपि ।
हरितालं द्विधा प्रोक्तं पत्राख्यं पिंडसंज्ञकम् ॥ १२८ ॥
तयोराद्यं गुणेः श्रेष्ठं ततो हीनगुणं परम् ॥
स्वर्णवर्णं गुरुं स्त्रिघं सपत्रं चाभ्रपत्रवत् ॥ १२९ ॥
पत्राख्यं तालकं विद्याद्वाणाद्यं तद्रसायनम् ।
निष्पत्रं पिंडसदृशं स्वल्पसत्त्वं तथा गुरु ॥ १३० ॥
स्त्रीपुष्पहारकं स्वल्पगुणं तत्पिण्डतालकम् ।
हरितालं कटु स्त्रिघं कषायोषणं हरेद्विषम् ॥
कंडुकुष्टास्यरोगास्त्रकफपित्तकचब्रणान् ॥ १३१ ॥
हरति च हरितालं चारुतां देहजातां
सृजति च बहुतापानं गसंकोचपीडाम् ।
वितरति कफवातौ कुष्टरोगं विदध्या-
दिदभशितमशुद्धं मारितं चाप्यसम्यक् ॥ १३२ ॥
मनःशिला ।

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्रा नागजिह्विका ।
नैपाली कुनटी गोला शिला दिव्योषधिः स्मृता ॥ १३३ ॥

१ दे० भा० हरताल । व० भा० हरिताल । हतेल ॥ शोधितं हरितालं तु
कांतिवीर्यविवर्द्धनम् । कुष्टादिकफरोगमन्तं जरा मृत्युहरं परम ॥ १ ॥ अशीतिवा-
तान्कफपित्तरोगान् कुष्टानि मेहांश्च गुदामयांश्च । निहंति गुञ्जार्द्धमितं तु तालं
षड्बुद्धखंडेन समं प्रयुक्तम् ॥ २ ॥ पिंजरं पित्तलं तालं मनोज्ञं हरितालकम् ।
छत्रांगकांचनरसं गोदंतं नटमंडनम् ॥ ३ ॥ तालकस्यैव भेदोस्ति मनागेव
तदंतरम् । तालकं चातिपीतं स्याद्वेदक्ता मनःशिला ॥ ४ ॥ हरितालोऽष्टधा
प्रोक्तो गोदंतः सर्वतोषिकः । तदभावे तु पत्राख्यौ वयसः स्थापनः परः ॥ ५ ॥
हरितालं हरेवोर्यं लक्ष्मीवीर्यं मनःशिला । पारदं शिववीर्यं स्यादुंधकं पार्वती-
रजः ॥ ६ ॥ २ दे० भा० मनशिल । मैनशिल । व० भा० मनछाल ।

मनःशिला गुरुर्वर्ण्या सरोष्णा लेखना कटुः ।
 तिक्ता स्निग्धा विषश्वासकासभूतकफास्थलुत् ॥ १३४ ॥
 मनःशिला भंडवलं करोति जंतुं ध्रुवं शोधनमंतरेण ।
 मलानुवंधं किल मूत्ररोधं सशर्करं कृच्छ्रगदं च कुर्यात् ॥ १३५
 अंजनं, सौबीरम् ।

अंजनं यामुनं चापि कापोतांजनमित्यपि ।
 ततु स्रोतोंजनं कृष्णं सौबीरं श्वेतमीरितम् ॥ १३६ ॥
 वल्मीकशिखराकारं भिन्नमंजनसन्निभम् ।
 द्वष्टुं तु गैरिकाकारमेतत्स्रोतोंजनं स्मृतम् ॥ १३७ ॥
 स्रोतोंजनसमं ज्ञेयं सौबीरं ततु पांडुरम् ।
 स्रोतोंजनं स्मृतं स्वादु चक्षुप्यं कफपित्तनुत् ॥ १३८ ॥
 कषायं लेखनं स्निग्धं ग्राहिच्छर्दिविषापहम् ।
 सिधमक्षयास्थहच्छीतं सेवनीयं सदा बुधैः ॥ १३९ ॥
 स्रोतोंजनगुणाः सर्वे सौबीरेऽपि मता बुधैः ।
 किंतु द्वयोरंजनयोः श्रेष्ठं स्रोतोंजनं स्मृतम् ॥ १४० ॥
 टंकणोऽग्निकरो रुक्षः कफध्नो वातपित्तकृत् ।

स्फुटिका ।

स्फुटी च स्फुटिका प्रोक्ता श्वेता च शुभं रंगदा ॥ १४१ ॥
 दृढरंगा रंगदृढा दृढा रंगापि कथ्यते ।
 स्फुटिका तु कषायोष्णा वातपित्तकफवणान् ॥ १४२ ॥
 निहंति शिवत्रवीसर्पान् योनिसंकोचकारिणी ।

१ दे० भा० सुरमा, सुफेदसुरमा । वं० भा० श्वेतसुरमा, नीला सुरमा ।
 फा० सुरमा अस्फहानी । इ० सल्फूरेट आफ आंटीमनी । (Salfurat of
 antimony) २ दे० भा० सुहागा अयमुपरसत्वात्पुनरुक्तः ३ दे० भा०
 टकढी । लाल, सर्फिद । वं० भा० फटकिरी ।

राजावर्तः ।

राजावर्तः कटुस्तकः शिशिरः पित्तनाशनः ॥ १४३ ॥

राजावर्तः प्रमेहदृश्छर्दिहिक्कानिवारणः ।

चुंबकः ।

चुंबकः कांतपाषाणोऽयस्कांतो लोहकर्षकः ॥ १४४ ॥

चुंबको लेखनः शीतो मेदोविषगरापहः ।

गैरिकम् ।

गैरिकं रक्तधातुश्च गौरेयं गिरिजं तथा ॥ १४५ ॥

स्वर्णगैरिकमन्यतु ततो रक्ततरं हि तत् ।

गैरिकद्वितयं स्त्रिघं मधुरं तुवरं हिमम् ॥ १४६ ॥

चक्षुष्यं दाहपित्तास्यकफहिक्काविषापहम् ।

खटी गौरखटी ।

खटिका कठिनी चापि लेखनी च निगद्यते ॥ १४७ ॥

खटिका दाहजिञ्चीता मधुरा विषशोथजित् ।

लेपादेते गुणाः प्रोक्ता भक्षिता मृत्तिकासमा ॥ १४८ ॥

खटी गौरखटी द्वे च गुणेस्तुल्ये प्रकीर्तिते ।

वालुका ।

वालुका सिकता प्रोक्ता शर्करा रेतजापि च ॥ १४९ ॥

वालुका लेखनी शीता ब्रणोरःक्षतनाशिनी ।

१ दे० भा० लाजवर्द । पाषाण । २ दे० भा० चुंबक प्रथर । ३ दे०
भा० गेरी, स्वर्णगेरी । वं भा० गिरी माटो । फा० गिलेसुखमश्री । इ०
ओकररेलंबरस्टोन । O carrai lamber stone. ४ दे० भा० खडाकटी,
खडी, गौरखडी । बं० भा० खडिमाटी, चाखडी । फा० गिलेसुफेद गिले
खरिया । इ० पाइप क्ले । Piap clay. ५ दे० भा० रेत, बं० भा० वाली ।
फा० रेग । इ० सैंड, Sand.

खर्परम् ।

खर्परं त्रुत्थकं त्रुत्थादन्यत्तद्रसकं स्मृतम् ॥ १५० ॥
ये गुणास्तुत्थके प्रोक्तास्ते गुणा रसके स्मृताः ॥

कासीसम् ।

कासीसं धातुकासीसं पांशुकासीसमित्यपि ॥ १५१ ॥

तदेव किञ्चित्पीतं तु पुष्पकासीसमुच्यते ।

कासीसमम्लमुण्डं च तिक्तं च तुवरं तथा ॥ १५२ ॥

वातश्लेष्महरं केश्यं नेत्रकंडूविषप्रणुत् ।

मूत्रकृच्छाश्मरीश्विवनाशनं परिकीर्तितम् ॥ १५३ ॥

सौराष्ट्री ।

सौराष्ट्री तुवरी काली मृत्तालकसुराष्ट्रजे ।

आठकी चापि सा ख्याता मृत्स्ना च सुरमृत्तिका ॥ १५४ ॥

सफुटिकाया गुणाः सर्वे सौराष्ट्रचा अपि कीर्तिताः ।

कृष्णमृत्तिका ।

कृष्णमृत्क्षतदाहास्त्रप्रदरश्लेष्मदाहनुत् ॥ १५५ ॥

कपर्दिकम् ।

कपर्दिको वराटश्च कयदीं च वराटिका ।

कपर्दिका हिमा नेत्रहिता स्फोटक्षयापहा ॥ १५६ ॥

कर्णस्त्रावाग्निमांद्यधनी पित्तास्त्रकफनाशिनी ।

१ दे० भा० खपरिला । वं० भा० खापर । फा० संगवसरी, इं० च्लाक
जाक Black sook. २ दे० भा० कसीस, पुष्पकसीस वं० भा० धातुकासीस
मुण्डकासीस फा० जाकेसुब्ज । इं० सल्फेट औफ आर्यनै । Salfet offl iron
भस्मवन्मृतिकाम्लं च कासीसधातुरिल्यपि । तदेव किञ्चित्पीतं तु पुष्पकासीसमु-
च्यते ॥ ३ दे० भा० सोरटामटी । वं० मा० सौराष्ट्रदेशीय सुगंधिमृत्तिका । ४ दे०
मा० कौडी । वं० भा० कडी । इं० कवरीज्ज Coverijh. सार्वनिष्कप्रमाणासौ
श्रेष्ठा योगेषु योजयेत् । निष्कप्रमाणा मध्या सा हीना पादोननिष्कका ॥ १ ॥

शंखम् ।

शंखः समुद्रजः कंबुः मुनादः पावनध्वनिः ॥ १५७ ॥
शंखो नेत्र्यो हिमः शीतो लघुः पित्तकफास्त्रजित् ।
बोलम् ।

बोलं गंधरसं प्राणपिंडगोपरसाः स्मृताः ॥ १५८ ॥
बोलं रक्तहरं शीतं मेध्यं दीपनपाचनम् ।
मधुरं कटुतिकं च दाहस्वेदनिदोषजित् ॥ १५९ ॥
ज्वरापस्मारकुष्ठष्टनं गभीशयविशुद्धिकृत् ।
कंकुष्ठम् ।

तत्रैकं नलकाख्यं स्यात्तदन्यद्वेषुकं स्मृतम् ॥ १६० ॥
हिम्बवत्पादशिखरे कंकुष्ठमुपजायते ।
तत्रैकं रक्तकालं स्यादन्यद्वेषमप्रभं स्मृतम् ॥ १६१ ॥
पीतप्रभं गुरु स्निग्धं श्रेष्ठं कंकुष्ठमादिशेत् ।
श्यामं रक्तं लघु त्यक्तसत्त्वं नेष्टुं हरेणुकम् ॥ १६२ ॥
कंकुष्ठं काककुष्ठं च वरांगं रंगदायकम् ।
कंकुष्ठं रेचनं तिक्तं कदुण्णं वर्णकारकम् ॥ १६३ ॥
कृमिशोंथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ।
रत्ननिरुक्तिः ।

धनार्थिनो जनाः सर्वे रमंतेऽस्मिन्नतीव यत् ॥ १६४ ॥
ततो रत्नमिति प्रोत्तं शब्दशास्त्रविशारदैः ।

रत्नाम् ।

रत्नं क्लीबे मणिः पुंसि स्त्रियामपि निगद्यते ॥ १६५ ॥
ततु पाषाणभेदोऽस्ति मुक्तादि च तदुच्यते । अमरः ।
रत्नं मणिर्द्योरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च ॥ १६६ ॥

१ दे० भा० शंख । बं० भा० शंख शाक । इ० कौच Konch. २ दे०
भा० हीराबोल । वीजाबोल । बं० भा० मधुरस । इ० मिही । Mihi. ३ दे०
भा० मुरदासंग पा० भा० मुरदासंग । ४ हिमवतः प्रत्यंतपर्वतानां शिखरे ।

रत्नं गारुदतं पुष्परागो माणिक्यमेव च ।

इंद्रनीलश्च गोमेदं तथा वैदूर्यमित्यपि ॥ १६७ ॥
मौक्किकं विद्वमश्चेति रत्नान्युक्तानि वै नव ।

विष्णुधर्मोत्तरेऽपि ।

मुक्ताफलं हीरकश्च वैदूर्यं पद्मरागकम् ॥ १६८ ॥

पुष्पराजं च गोमेदं नीलं गारुदतं तथा ।

प्रवालयुक्तान्येतानि महारत्नानि वै नव ॥ १६९ ॥

हीरकम् ।

हीरकः पुंसि वज्रोऽस्त्री चन्द्रो मणिवरश्च सः ।

स तु श्वेतः स्मृतो विप्रो लोहितः क्षत्रियः स्मृतः ॥ १७० ॥

पीतो वैश्योऽसितः शूद्रः चतुर्वर्णात्मकश्च सः ।

रसायने मतो विप्रः सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ १७१ ॥

क्षत्रियो व्याधिविधवंसी जरामृत्युहरः स्मृतः ।

वैश्यो धनप्रदः प्रोक्तस्तथा देहस्य दाढर्यकृत् ॥ १७२ ॥

शूद्रो नाशयति व्याधीन् वयःस्तंभं करोति च ।

पुंस्त्रीनपुंसकानीह लक्षणीयानि लक्षणेः ॥ १७३ ॥

सुबृत्ताः फलसंपूर्णस्तेजोयुक्ता वृहत्तराः ।

पुरुषास्ते समाख्याता रेखाविन्दुविविजिताः ॥ १७४ ॥

रेखाविन्दुसमायुक्ताः षडस्त्रास्ते स्त्रियः स्मृताः ।

त्रिकोणाश्च सुदीर्घास्ते विज्ञेयाश्च नपुंसकाः ॥ १७५ ॥

१ दे० भा० रत्नं--वज्रं--हीरा । गारुदतं--पत्ना, हरिन्मणि--पद्मरागः--लाल ।
पुष्परागः--पुखराज । माणिक्यं--चूनी । इंद्रनीलं--नीलम् । गोमेदः--पीतरत्न ।
वैदूर्य--केतुग्रहबृहम् । रेणुकं नलकाख्यं च पाठांतरम् । २ दे० भा० हीरा ॥
बं० भा० हिरे । फा० इलमाश । इ० डाएमण्ड ॥ Diamond. वज्रं समीर-
कफपित्तगदांश्च हन्याद्वज्रोपमं च कुरुते वपुरुत्तमश्रि । शोथक्षयप्रमभगांदरमेहमेदः-
प्रांदूद रथयथुहारि च पट्टरसाख्यम् ॥

तैषु स्युः पुरुषा श्रेष्ठाः रसवंधनकारिणः ।

ख्वियः कुर्वति कायस्य कांति खीणां सुखप्रदाः ॥ १७६ ॥

न पुंसकास्त्वविर्याः स्युरकामाः सत्त्ववर्जिताः ।

ख्वियः खीभ्यः प्रदातव्याः कलीबं क्लीबे प्रयोजयेत् ॥ १७७ ॥

सर्वेभ्यः सर्वदा देया पुरुषा वीर्यवर्द्धनाः ।

अशुद्धं कुरुते वज्रं कुष्ठं पार्श्वव्यथां तथा ॥ १७८ ॥

पांडुतां पंगुरत्वं च तस्मात्संशोध्य मारयेत् ।

आयुः पुष्टि बलं वीर्यं वर्णं सौख्यं करोति च ॥ १७९ ॥

सेवितं सर्वरोगज्ञं मृतं वज्रं न संशयः ।

हैरितम् ।

गारुत्मतं मरकतमश्मगभ्यो हरिन्मणिः ॥ १८० ॥

माणिक्यम् ।

माणिक्यं पञ्चरागः स्यात् शोणरत्नं च लोहितम् ।

पुष्परागः ।

पुष्परागो मंजुमाणिः स्याद्वाचस्पतिवल्लभः ॥ १८१ ॥

इंद्रनीलं गोमेदः ।

नीलं तथेंद्रनीलं च गोमेदः पीतरत्नकम् ।

वैदूर्यम् ।

वैदूर्यं दूरजं रत्नं स्यात्केतुग्रहवल्लभम् ॥ १८२ ॥

मौक्तिकम् ।

मौक्तिकं शौक्तिकं मुक्ता तथा मुक्ताफलं च तत् ।

१ दे० भा० पन्ना । वं० भा० पान्ना । फा० जुमुर्द इ० इमरांलूड । २ दे० भा० लाल । वं० भा० माणिक । इ० रुवी Roobi, ३ दे० भा० पुखराज । वं० भा० पुष्पराग । इ० टोयाज Toials, ४ दे० भा० नीलम । वं० भा० नीलमणि । इ० सेफायर Safiar, ५ दे० भा० गोमेद । वं० भा० औनिक्स । ६ दे० भा० लहसुनिया । वं० भा० वैदूर्य । इ० फेटसआई । ७ दे० भा० मोती । वं० भा० मुक्ता । फा० मखारिद । इ० पर्ल Pearl, विद्वम् सर्वदोषन्त्रिपत्नं रुचिपुष्टिदम् ।

शुक्तिः शंखो गजः क्रोडः फणिर्भृतस्यश्च दर्ढुरः ॥ १८३ ॥
 वेणुरेते समाख्याताः तज्जैयौक्तिकयोनयः ।
 मौक्तिकं शीतलं वृष्यं चक्षुष्यं बलपुष्टिदम् ॥ १८४ ॥
 प्रवालः ।

पुंसि क्लीबे प्रवालः स्यात्पुमानेव तु विद्रुमः ।
 रत्नानि भक्षितानि स्युर्मधुराणि सराणि च ॥ १८५ ॥
 चक्षुष्याणि च शीतानि विषघ्नानि धृतानि च ।
 अंगल्यानि मनोज्ञानि ग्रहदोषहराणि च ॥ १८६ ॥
 किंरत्नं कस्य ग्रहस्य प्रीतिकरमित्युत्तरं रत्नमालायाम् ।
 माणिक्यं तरणेः सुजातमयलं मुक्ताफलं शीतगो—
 र्भाहियस्य तु विद्रुमो निगदितः सौम्यस्य गारुत्मतम् ।
 देवैज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्यस्य वज्रं शने—
 नीलं निर्भलमन्यथोनिगदिते गोमेदवैदूर्यके ॥ १८७ ॥
 उपरत्नानि ।

उपरत्नानि काचैश्च कैर्पूराश्मा कपर्दिका ।
 मुक्ताशुक्तिस्तथा शंख इत्यादीनि बहून्यपि ॥ १८८ ॥

—क्षयपांडुज्वरध्वासकासमेदोगदाळयेत् ॥ १ ॥ थेतं स्तिरधमतीव वंशुरतरं स्यात्पारसीकोद्भवं रुक्षं कांचनवर्णसंकरयुतं स्याद्वार्वरं मौक्तिकम् ॥ शौणं तूर्मजसंभवं विदुरतिस्तिर्घं तथा देशं चातुर्वर्णयुतं सुलक्षणमिति श्लक्षणं कविश्रीकरम् ॥ २ ॥ १ दे० भा० मूंगा, गुलियां । वं० भा० मुंगा।फा० मिरजान्, इ० रेडको-रुल Red coral. २ उपरत्नानि, गौणरत्नानि । ३ दे० भा० कच । वं० भा० काच । फा० आवगीना । इ० ग्लास Glass. काचा तु सारका लच्छी न्नणनेत्रहितावहा । लेखनी शूलहृतप्रोक्ता वैद्यशास्त्रविशारदैः ॥ १ ॥ ४ दे० भा० रत्नकम्बर । कपूरनिभा । ५ दे० भा० मोतीवाली सीपी । वं० भा० शामुक । द्वितुक । इ० ओर्ड्सुटरशेल, भेदजलसीपी । मुक्ताशुक्तिः कटुः स्तिरधा ध्वास-हृद्दोगनाशिनी । शूलप्रशमनी रुच्या मधुरा दीपनी परा ॥ २ ॥

उपरत्नत्वादिमौ कपर्दशंखौ पुनरुक्तौ ।

गुणा यथैव रत्नानामुपरत्नेषु तें तथा ।

किंतु किंचित्ततो हीना विशेषोयमुदाहृतः ॥ १८९ ॥
विषम् ।

विषं तु गरलं इवेडस्तस्य भेदानुदाहरे ।

वत्सनाभः सहारिद्रः शक्तुकश्च प्रदीपनः ॥ १९० ॥

सौराष्ट्रिकः शृंगिकश्च कालकूटस्तथैव च ।

हालाहलो ब्रह्मपुत्रो विषभेदा अमी नव ॥ १९१ ॥

वत्सनाभः ।

सिंधुवारसदकृपत्रो वत्सनाभ्याकृतिस्तथा ।

यत्पार्थे न तरोर्वृद्धिर्वर्तसनाभः स भाषितः ॥ १९२ ॥

(हारिद्रः)-हरिद्रातुल्यमूलो यो हारिद्रः स उदाहृतः ।

(शक्तुकः)-यदुप्रत्यिः शक्तुकेनेव पूर्णप्रध्यः स शक्तुकः ॥ १९३ ॥

प्रदीपनः ।

बर्णतो लोहितो यः स्यादीस्तिमान् दहनप्रभः ।

महादाहकरः पूर्वैः कथितः स प्रदीपनः ॥ १९४ ॥

(सौराष्ट्रिकः) सुराष्ट्रविषये यः स्यात्स सौराष्ट्रिक उच्यते ।

शृंगिकः ।

अस्मिन् गोशृंगके बद्धे दुर्घं भवति लोहितम् ॥ १९५ ॥

सः शृंगिक इति प्रोक्तो द्रव्यतत्वविशारदैः ।

१ दे० भा० वचनाग, मीठा तेलिया । वं० भा० काटविष । फा० जहर । इ०
एको नाईट । aconight. २ दे० भा० सिंगियाविष । (शुद्धिः) विषं तु खंडशः
छत्वा वस्त्रखंडेन वंधयेत् । गोमूत्रमध्ये निक्षिप्य स्थापयेदातपे त्र्यहम् ॥ १ ॥ गोमूत्रं
च प्रदातव्यं नूतनं प्रल्यहं बुधिः । त्र्यहेऽतीते समुद्भूत्य शोषयेन्मृदुपे पयेत् ॥ २ ॥
शुभ्रत्येवं विषं तच्च योग्यं भवति चार्तिजित् । एकाष्टकं भवेद्यावदभ्यस्तं तिलमा-
न्नया ॥ ३ ॥ सर्वरोगहरं नृणां जायते शोधितं विषम् । अतिमात्रं यदा मुक्तं
तदाज्यं टंकणं पिवेत् ॥ ४ ॥ विषं सवेगतो नाशमाशु प्राप्नोति निश्चितम् ।

कालकूटः ।

देवासुररणे देवैर्हतस्य पृथुमालिनः ॥ १९६ ॥

देत्यस्य रुधिराजातस्तस्तरथत्थसन्निभः ।

निर्यासः कालकूटोस्य मुनिभिः परिकीर्तितः ॥ १९७ ॥

सोऽहिक्षेत्रे शृंगवेरे कोङ्कणे मलये भवेत् ॥ १९८ ॥

हालाहलः ।

गोस्तनाभफलो गुच्छस्तालपत्रच्छदस्तथा ॥ १९९ ॥

तेजसा यस्य द्व्यंते समीपस्था द्रुमादयः ।

असौ हालाहलो ज्ञेयः किञ्चिधायां हिमालये ॥ २०० ॥

दक्षिणाविधितटे देशे कोंकणेषि च जायते ।

ब्रह्मपुत्रः ।

वर्णतः कपिलो यः स्यात्तथा भवति सारतः ॥ २०१ ॥

ब्रह्मपुत्रः स विजेयो जायते मलयाच्चले ।

ब्राह्मणः पांडुरस्तेषु क्षत्रियो लोहितप्रभः ॥ २०२ ॥

वैश्यः पीतोऽसितः शूद्रः विष उक्तश्चतुर्विधः ।

रसायने विषं विप्रं क्षत्रियं देहपुष्टये ॥ २०३ ॥

वैश्यं कुष्ठविनाशाय शूद्रं दद्याद्वधाय हि ।

विषं प्राणहरं प्रोक्तं दृश्यवायि च विकाशि च ॥ २०४ ॥

आँगनेयं वातकफहवोगवाहि मैदावहम् ।

तदेव युक्तियुक्तं तु प्राणदायि रसायनम् ॥ २०५ ॥

योगवाहि त्रिदोषमनं वृंहणं वीर्यवर्द्धनम् ।

१ देव मार्त्र सिंमलखार । संखिया । फा० सिर्गवमूप । इ० ओफेसंड थोफ आर्सेनिक (ocasiad of arsenik) २ सकलकायव्यापनपूर्वकं पाक-गमनशीलम् । ३ विकाशि ओजःशोपणपूर्वकं संविवंधनशिथिलीकरणम् । ४ आप्नेयं, अविकागन्यशम् । ५ योगवाहि । संगिणुणप्राहकम् । ६ मदावहं तमोगुणाधिक्षेत्रे वुद्धिविवंसकम् ॥

ये हुर्गुणा विषेऽशुद्धे ते स्युहीना विशोधनात् ॥ २०६ ॥
तस्माद्विषं प्रयोगेषु शोधयित्वा प्रयोजयेत् ।

उपविषाणि ।

अर्कक्षीरं स्तुहीक्षीरं लांगलीकरवीरको ॥ २०७ ॥

गुंजाहिफेनो धन्त्रः सतोपविषजातयः ॥ २०८ ॥

एषां गुणास्तत्र द्रष्टव्याः ॥

इति धातुवर्गः ।

धातुवर्गः ।

—○○—

शालिधान्यं ब्रीहिधान्यं शूकधान्यं तृतीयकम् ।
शिंबीधान्यं क्षुद्रधान्यमित्युक्तं धान्यपञ्चकम् ॥ १ ॥
शालयो रक्तशालयाद्या ब्रीहयः पष्ठिकादयः ।
यवादिकं शूकधान्यं मुहूराद्यं शिंबीधान्यकम् ॥ २ ॥
कंगवादिकं क्षुद्रधान्यं तृणधान्यं च तत्स्मृतम् ।
कंडनेन विना शुक्ळा हैमंताः शालयः स्मृताः ॥ ३ ॥

शालिः ।

रक्तशालिः सकलमः पांडुकः शकुनाहतः ।

सुगंधकः कर्दमको महाशालिश्च दूषकः ॥ ४ ॥

पुष्पांडकः पुंडरीकस्तथा महिषमस्तकः ।

दीर्घशूकः कांचनको हायनो लोध्रपुष्पकः ॥ ५ ॥

१ उपविषाणि गौणविषाणि । दोलोयन्नेण पयसि स्थापयित्वा पचेदिनम् ।
एतेनैव विशुद्ध्यन्ति सर्वाण्युपविषाणि च ॥ १ ॥ चिङ्गापत्ररसे कर्षे वस्त्रपूते
पलद्वयम् । स्तुहीक्षीरं रौद्रयन्ने भावयेद्यत्नतः सुधीः ॥ २ ॥ द्रवे शुष्के समुत्तार्ये
सर्वरोगेषु योजयेत् ॥ शेषणामुपविषाणां शुद्धिस्तत्र तत्र द्रष्टव्या । १ दे० भा०
चावल । वं० भा० शालिधान्य । फा० विरज । ई० Rice,

इत्याद्याः शालयस्संति वहवो बहुदेशजाः ।
 ग्रंथाविस्तारभीतेस्ते समस्ता नात्र भाषिताः ॥ ६ ॥
 शालयो मधुराः स्तिंगधा वल्या बद्धाल्पवर्चसः ।
 कषाया लघवो रुच्याः स्वर्ण्या वृष्याश्च वृंहणाः ॥ ७ ॥
 अलपानिलकफाः शीताः पित्तद्वा मूत्रलास्तथा ।
 शालयो दग्धमृज्जाताः कषाया लघुपाकिनः ॥ ८ ॥
 सृष्टमूत्रपुरीषाश्च रुक्षाः श्लेष्मापकर्षणाः ।
 केंद्रारा वातपित्तद्वा गुरवः कफशुक्रलाः ॥ ९ ॥
 कषाया अल्पवर्चस्का सध्याश्चैव वलावहाः ।
 स्थैर्लजाः स्वादवः पित्तकफद्वा वातवद्विदाः ॥ १० ॥
 किंचित्तिक्ताः कषायाश्च विपाके कटुका आपि ।
 वापिता मधुरा वृष्या वल्याः पित्तप्रणाशनाः ॥ ११ ॥
 श्लेष्मलाश्चाल्पवर्चस्काः कषाया गुरवो हिमाः ।
 वापितेभ्यो गुणैः किंचिद्वीनाः पोक्ता अवापिताः ॥ १२ ॥
 रोपितास्तु नवा वृष्याः पुराणा लघवः स्मृताः ।
 तेभ्यस्तु रोपिता भूयः शीघ्रपाका गुणाधिकाः ॥ १३ ॥
 छिन्नरुद्धा हिमा रुक्षाः वल्याः पित्तकफापहाः ।
 बद्धविट्काः कषायाश्च लघवश्चाल्पतिक्तकाः ॥ १४ ॥
 रैक्तशालिः ।

रैक्तशालिर्वरस्तेषु वल्यो वण्योऽस्त्रदोषजित् ।
 चक्षुप्यो मूत्रलः स्वर्ण्यः शुक्रलस्तृद्विवरापहः ॥ १५ ॥
 विषव्रणश्वासकासदाहलुद्विपुष्टिदः ।
 तस्माद्लपांतरगुणाः शालयो महदादयः ॥ १६ ॥
 त्रीहिथान्यम् ।

वार्षिकाः कंडिताः शुक्रा त्रीहयाश्चिरपाकिनः ।

१ छट्टक्षेत्रजाः । २ अकृष्टमूसिजाः स्वयंजाताः । ३ दे० मा० खुभा
 मुंजी झोणा । मगव भार्या दाऊदखानी ।

कृष्णब्रीहिः पाटलश्च कुकुटांडक इत्यपि ॥ १७ ॥

शालामुखी जतुमुख इत्याद्या ब्रीहयः स्मृताः ।

कुकुटांडाकृतिब्रीहिः कुकुटांडक उच्यते ॥ १८ ॥

कृष्णब्रीहिः स विजेयो यः कृष्णतुष्टतंडुलः ।

पाटलः पाटलापुष्पवर्णको ब्रीहिरुच्यते ॥ १९ ॥

शालामुखः कृष्णशूकः कृष्णतंडुल उच्यते ।

लाक्षावर्ण मुखं यस्य ज्ञेयो जतुमुखस्तु सः ॥ २० ॥

ब्रीहयः कथिताः पाके मधुरा वीर्यर्थतो हिताः ।

अल्पाभिष्यन्दिनो बद्धवर्चस्काः षष्ठिकैः समाः ॥ २१ ॥

कृष्णब्रीहिर्वरस्तेषां तस्मादल्पगुणाः परे ।

षष्ठिकम् ।

गर्भस्था एव ये पाकं यांति ते षष्ठिका मताः ॥ २२ ॥

षष्ठिकः शतपुष्पश्च प्रमोदकमुकुन्दकौ ।

महाषष्ठिक इत्याद्याः षष्ठिकाः समुदाहृताः ॥ २३ ॥

एतेऽपि ब्रीहयः प्रोक्ता ब्रीहिलक्षणदर्शनात् ।

षष्ठिका मधुराः शीता लघवो बद्धवर्चसः ॥ २४ ॥

वातपित्तप्रशमनाः शालिभिः सदृशा गुणैः ।

षष्ठिका प्रवरातेषां लघवी स्तिर्घा त्रिदोषजित् ॥ २५ ॥

स्वाद्वी मृद्वी ग्राहणी च बलदा ज्वरहारिणी ।

रक्तशालिगुणैस्तुल्यास्ततः स्वल्पगुणाः परे ॥ २६ ॥

यैवः ।

अनुयवो निःशूकः स्यात्कृष्णारुणवर्णोयवः ।

निःशूकोऽपि यवः प्रोक्तो धवलाकृतिको महान् ॥ २७ ॥

१ दें० भा० धाई चाखल । सठी चाखल । २ यो ब्रीहिः षष्ठिरात्रेण पच्यते सतु षष्ठिकः । स्तिर्घो ग्राही गुरुः स्वादुत्तिदोषप्तः स्थिरो हिमः ॥ ३ षष्ठिको ब्रीहिषु श्रेष्ठो गौरश्चासितगौरतः । ३ दें० भा० जौ । निशूक--मुडे । बं० भा० यव तोकम--हरित शूक । फा० जव इ० विटरवालि, पेरलवालि ।

यवस्तु शितशूकः स्यान्निःशूकोऽनुयवः स्मृतः ।
 तोक्मस्तद्वत्सहरितस्ततः स्वल्पश्च कीर्तिः ॥ २८ ॥
 यवः कषायो मधुरः शीतलो लेखनो मृदुः ।
 ब्रणेषु तिलवत्पथ्यो रुक्षो मेधान्निवर्द्धनः ॥ २९ ॥
 कटुपाकोऽनभिष्यंदी स्वयर्यो बलकरो गुरुः ।
 बहुवातमलो वर्णस्थैर्यकारी च पिच्छिलः ॥ ३० ॥
 कंठत्वगामयश्लेष्मपित्तमेदः प्रणाशनः ।
 पीनसञ्चासकासोरुस्तंभलोहितवृद्धप्रणुद् ॥ ३१ ॥
 अस्मादनुयवो न्यूनस्तोकमो न्यूनतरस्ततः ।

गोधूमः-

गोधूमः सुमनोऽपि स्यान्निविधः स च कीर्तिः ॥ ३२ ॥
 महागोधूम इत्याख्यः पश्चादेशात्समागतः ।
 मधुली तु ततः किञ्चिदल्पा सा मध्यदेशजा ॥ ३३ ॥
 निःशूको दीर्घगोधूमः क्वचिन्नंदीसुखाभिधः ।
 गोधूमो मधुरः शीतो वातपित्तहरो गुरुः ॥ ३४ ॥
 कफशुक्रप्रदो वल्यः स्त्रिगः संधानकृत्सरः ।
 जीवनो वृंहणो वण्णो व्रण्णो रुच्यः स्थिरत्वकृत् ॥ ३५ ॥
 कफप्रदो नवीनो न तु पुराणः । पुराणा यवगोधूमक्षोद्रजांगल-
 शुल्यमुग्निं वाग्भटेन वसंते गृहीतत्वात् ।
 मधुली शीतला स्त्रिगः पित्तघ्नी मधुरा लघुः ॥ ३६ ॥
 शुक्रला वृंहिणी पथ्या तद्वन्नंदीसुखः स्मृतः ।
 शमीजाः शिंविजाः शिंविभवाः सूपाश्च वैदलाः ॥ ३७ ॥
 वैदला मधुरा रुक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ।
 वातलाः कफपित्तव्वा वद्धमूत्रमला हिमाः ॥ ३८ ॥
 क्रतौ मुद्दमस्तराभ्यामन्ये त्वाध्मानकारिणः ।

१-२ महागोधूमः वातलगोधूमः देवा० भा० वडानक इति लोके ।

मुद्रम् ।

मुद्रो रुक्षो लघुर्गाही कफपितहरो हिमः ॥ ३९ ॥

स्वादुरल्पानिलो नेत्र्यो ज्वरग्नो वनजस्तथा ।

मुद्रो बहुविधः श्यामो हरितः पीतकस्तथा ॥ ४० ॥

श्वेतो रक्तश्च तेषां तु पूर्वः पूर्वो लघुः स्मृतः ।

सुश्रुतेन पुनः प्रोक्तो हरितः प्रवरो गुणः ॥ ४१ ॥

चरकादिभिरप्युक्तः एष ह्येव गुणाधिकः ।

माषः ।

माषो गुरुः स्वादुपाकः स्त्रिग्धो रुच्योनिलापहः ॥ ४२ ॥

रुंसनस्तर्पणो बल्यः शुक्रलो वृंहणः परः ।

भिन्नमूत्रमलः स्तन्यो मेदः पित्तकफप्रदः ॥ ४३ ॥

गुदकीलादितधासपत्तिशूलानि नाशयेत् ।

कफपित्तकरो माषः कफपित्तकरं दधि ॥ ४४ ॥

कफपित्तकरा मत्स्या वृंताकं कफपित्तकृत् ।

राजमाषः ।

राजमाषो महामाषः चपलश्च बलः स्मृतः ॥ ४५ ॥

राजमाषो गुरुः स्वादुस्तुवरस्तर्पणः सरः ।

रुक्षो वातकरो रुच्यः स्तन्यो भूरिमलप्रदः ॥ ४६ ॥

श्वेतो रक्तस्तथा कृष्णत्रिविधः स प्रकीर्तितः ।

यो महास्तेषु भवति स एवोक्तो गुणाधिकः ॥ ४७ ॥

१ दे० भा० मुंगी सब्ज । मुंगी काली । ब० भा० मुंग । फ० भुनु-
माष । इ० ग्रीन ग्रेन । Green Grpin. हरित पश्चमें, श्वेत, पुनैनि आग्रा-
मादौ रक्त पीत--पुरमंडल प्रांतप्रदेशें । श्याम उड्डी । २ दे० भा० मांह ।
ब० भा० माषकलाय । फ० माष । इ० किडनीबीन kidni been माषस्तु
कुर्खिंदः स्याद्वान्यवीरो वृषांकुरः । मांसलश्च बलाट्यश्च वित्त्यश्च पितृभोजनः ।
३ दे० भा० खांह चौला । ब० भा० बोरा । फ० लोमिया । इ० चाईनिज्जडोलिकोस्
Chinigh dolikas.

निष्पावः ।

निष्पावो राजशिंबी स्याद्वेल्कः श्वेतशिंबकः ।
 निष्पावो मधुरो रुक्षो विपाकेऽम्लो गुह्यः सरः ॥ ४८ ॥
 कषायः स्तन्यपित्तास्त्रमूत्रवातविवंधकृत् ।
 विदाह्युणो विषश्लेष्मशोथहच्छक्रनाशनः ॥ ४९ ॥

मैकुष्ठम् ।

मकुष्ठो वनसुद्धः स्यान्मुकुष्ठकमैपुष्टकौ ।
 मकुष्ठो वातलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः ॥ ५० ॥
 वांतिजिन्मधुरः पाके कृमिकृज्जवरनाशनः ।
 मैसूरः ।

मांगल्यको मसूरः स्यान्मांगल्या च मसूरिका ॥ ५१ ॥
 मसूरो मधुरः पाके संग्राही शीतलो लघुः ।
 कफपित्तास्त्रजिद्रुक्षो वातलो ज्वरनाशनः ॥ ५२ ॥

आढकी । -

आढकी तुवरी चापि सा प्रोक्ताशनपुण्यिका ।
 आढकी तुवरा रुक्षा मधुरा शीतला लघुः ॥ ५३ ॥
 ग्राहणी वातजननी वर्ण्यो पित्तकफास्त्रजित् ।

चणकः ।

चणको हरिमंथः स्यात्सकलप्रिय इत्यपि ॥ ५४ ॥

१ दे० भा० बडे मटर । राजशिंबीवीज । वं० भा० भेटरासु । २ दे०
 भा० मोठ । वं० भा० वनसुद्ध । फा० मापहिंदी । ई० एकलिनोडे
 अड किडनीविन । ३ दे० भा० मसर । वं० भा० मसूरिकदाय । फा०
 अनोसुर्ख । इ० लेंटल Lantil तत्पर्णशाकं तुवरं लघुतिक्तं च कीर्तितम् ।
 ४ दे० भा० हरहर अड अड श्वेत रक्त कृष्ण । वं० भा० आइरि फा०
 गाखुळ । इ० पीजीअनपी Pigianpi. ५ दे० भा० छोले श्वेत कृष्ण । फा०
 दूद । इ०--ग्राम Gram पत्रशाक । रुच्यं चणं कपायं स्याहुर्जरं कफवात्
 त् । अम्ले विषमजनकं पित्तनुद्रितयोथहृत् ॥

चणकः शीतलो रुक्षः पित्तरक्तकफापहः ।

लघुः कषायो विष्ट्रभी वातलो ज्वरनाशनः ॥ ५५ ॥

स चांगारेण संभृष्टस्तैलभृष्टश्च तद्गुणः ।

आद्रभृष्टो बलकरो रोचनश्च प्रकीर्तिः ॥ ५६ ॥

शुष्कभृष्टोऽतिरुक्षः स्याद्वातपित्तप्रकोपनः ।

स्विन्नः पित्तकर्फ हन्यात्सूपः क्षोभकरो मतः ॥ ५७ ॥

आद्रोऽतिकोमलो रुच्यः पित्तशुक्रहरो हितः ।

कषायो वातलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः ॥ ५८ ॥

कैलायः ।

कलायो वर्तुलः प्रोक्तः सतीनश्च हरेणुकः ।

कलायो मधुरः स्वादुः पाके रुक्षश्च शीतलः ॥ ५९ ॥

त्रिपुटः ।

विपुटः कंटकोऽपि स्यात्कथयंते तद्गुणा अमी ।

विपुटो मधुरस्तिक्कस्तुवरो रुक्षणो भृशम् ॥ ६० ॥

कफपित्तहरो रुच्यो ग्राहको शीतलस्तथा ।

किंतु खंजत्वपुंगत्वकारी वातातिकोपनः ॥ ६१ ॥

कुलत्थः ।

कुलत्थिका कुलत्थश्च कथयंते तद्गुणा अथ ।

कुलत्थः कटुकः पाके कषायः पित्तरक्तकृत् ॥ ६२ ॥

लघुर्विदाही वीर्योणः श्वासकासकफानिलान् ।

हांति हिक्काशमरीशुक्रदाहानाहान्सपीनसान् ॥ ६३ ॥

स्वेदसंग्राहको मेदोज्वरक्रिमिहरः परः ।

१ दे० मा० मटरछोटा । बं० मा० वाटुला मटर । इ० फील्डपी field. pea २ दे० मा० दडौ । बं० मा० खेरसारिकलाय । फा० मांसंग जलठान । इ० चिकिलिंगवेच Chikilingwich. ३ दे० मा० कुलयी । बं० मा० कुलथीकलाय । फा० कल्खित मुंखहिंदी । इ० दुफलावर्डडोलीकीस ।

तिलैः ।

तिलः कृष्णः सितो रक्तः स वन्योऽल्पतिलः स्मृतः॥६४॥

तिलो रसे कटुस्तिक्तो मधुरस्तुवरो गुरुः ।

त्रिपाके कटुकः स्वादुः स्तिर्ग्न्धोष्णः कफपित्तनुत् ॥ ६५ ॥

बल्यः केश्यो हिमस्पर्शस्त्वच्यः स्तन्यो व्रणे हितः ।

दंत्योऽल्पमूवकृद्याही वातश्नाऽग्निमतिप्रदः ॥ ६६ ॥

कृष्णः श्रेष्ठतमस्तेषु शुक्रो वै मध्यमः स्मृतः ।

अन्यो हीनतरः प्रोक्तस्तज्ज्ञे रक्तादिकस्तिलः ॥ ६७ ॥

अतसी ।

अतसी नीलपुष्पी च पार्वती स्यादुमा क्षुमा ।

अतसी मधुरा तिक्ता स्तिर्ग्न्धा पाके कटुर्गुरुः ॥ ६८ ॥

अतसी शुक्रवातश्नी कफपित्तविनाशिनी ।

तुवरी ।

तुवरी आहिणी प्रोक्ता लङ्घी कफविषास्त्रजित् ॥ ६९ ॥

तीक्ष्णोष्णा वहिदा कंडूकुष्ठकोष्ठक्रिमिप्रणुत् ।

गौरसर्वपूर्णः ।

सर्षपः कटुकः स्नेहस्तंतुभव्य कदम्बकः ॥ ७० ॥

गौरस्तु सर्षपः प्राज्ञैः सिद्धार्थ इति कथ्यते ।

सर्षपस्तु रसे पाके कटुस्तिर्ग्न्धः सतिक्तकः ॥ ७१ ॥

तीक्ष्णोष्णः कफवातश्नो रक्तपित्ताग्निवर्द्धनः ।

१ दे० भा० तिल तिली । वं० भा० तिलगाढ़ । फा० कुंजद । इ० सेसीमनीजरसीडस् Sisimanigar seeds. तिलस्तु होमधान्यं स्यात्प्रवित्रः पेतृतर्पणः । पापद्वं पूतधान्यं च जटिलस्तु वनोद्धवः ॥ १ ॥ २ दे० भा० अठसी । वं० भा० मसिनी तिसी । फा० तुखमे कतात । इ० कामन फ्लै-झसीड । common flax seed. ३ दे० भा० तारामीरा, तरावा । ४ दे० भा० सरों, रक्तसरों पीली सरों । वं० भा० सरिपा श्वेत सर्वे । ग० सर्पक । इ० सिनापिस आल्वा । sinapisalwa

रक्षोहरो जयेत्कंडुकुष्ठकोष्ठक्रिमिग्रहान् ॥ ७२ ॥
यथा रक्तस्तथा गौरः किंतु गौरो वरो मतः ।
राजिका ।

राजी तु राजिका तीक्ष्णगंधा क्षुज्जनकासुरी ॥ ७३ ॥
क्षवः क्षुधाभिजनकः कृष्णिका कृष्णसर्पः ।
राजिका कफपित्तघ्नी तीक्ष्णोष्णा रक्तपित्तकृत् ॥ ७४ ॥
किंचिद्रक्षाग्निदा कंडुकुष्ठकोष्ठक्रिमीन् हरेत् ।
अतितीक्ष्णा विशेषेण तद्वत्कृष्णापि राजिका ॥ ७५ ॥
सरा हिमा गुरुर्ग्राही तत्पुष्पं प्रदरास्त्रजित् ।
क्षुद्रधान्यम् ।

क्षुद्रधान्यं क्षुधान्यं च तृणधान्यमिति स्मृतम् ॥ ७६ ॥
क्षुद्रधान्यमलुष्णं स्यात्कषायं लघुलेखनम् ।
मधुरं कटुकं पाके रुक्षं च क्षेत्रशोषकम् ॥ ७७ ॥
वातकृद्धच्छविटकं च पित्तरक्तकफापहम् ।
कंगुः ।

खियां कंगुप्रियंगू द्वे कृष्णा रक्ता सिता तथा ॥ ७८ ॥
पीता चतुर्विधा कंगुस्तासां पीता वरा स्मृता ।
कंगुस्तु भग्नसंधानवातकृद्धबृंहणी गुरुः ॥ ७९ ॥
रुक्षा क्षेत्रमहरात्तीव वाजिनां गुणकृद् भृशम् ।
चीनकः ।

चीनकः कंगुभेदोस्ति स ज्ञेयः कंगुवद् गुणैः ॥ ८० ॥
इयामाकः ।

श्यामाकः शोषणो रुक्षो वातलः कफपित्तहत ।

१ दे० भा० राई । बं० भा० राई सर्पै । इ० मसर्टडसीडस् । mustard seeds.
२ दे० भा० कंगनी । बं० भा० कानिधान । फा० गल । ३ दे० भा०
चीना । बं० भा० चिने । फा० उरजान । इ० मीलेट mitcat चीनकः
ताककंगुश्र स क्षश्गः क्षश्णकः स्मृतः । ४ दे० भा० सुवांक । फा० श्या-
माक । बं० भा० शामाधान ।

कोद्रवः ।

कोद्रवः कोरदूषः स्यादुदालो वनकोद्रवः ॥ ८१ ॥
 कोद्रवो वातलो ग्राही हिमः पित्तकफापहः ।
 उदालस्तु भवेदुष्णो ग्राही वातकरो भृशम् ॥ ८२ ॥
 शर्वीजम् ।

चारुकः शर्वीजं स्यात्कथ्यंते तद्गुणा अथ ।
 चारुको मधुरो रुक्षो रक्तपित्तकफापहः ॥ ८३ ॥
 शीतो लद्वरवृष्यश्च कषायो वातकोपनः ।
 वंशर्वीजम् ।

यवा वंशभवा रुक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ॥ ८४ ॥
 वद्धमूत्राः कफश्नाश्च वातपित्तकराः सराः ।
 कुसुंभवीजम् ।
 कुसुंभवीजं वरटा सैव प्रोक्ता वराटिका ॥ ८५ ॥
 वरटा मधुरा स्त्रिग्धा रक्तपित्तकफापहा ।
 कषाया शीतला गुर्वीं स्यादवृष्यानिलापहा ॥ ८६ ॥
 गैवेद्युः ।

गवेद्युका तु विद्वद्विर्गवेद्युः कथिता स्त्रियाम् ।
 गवेद्युः कट्का स्वाद्वी कार्यकृतकफलाशीनी ॥ ८७ ॥
 नीर्वीरः ।

प्रसाधिका तु नीवारस्तृणान्वयिति च स्पृतम् ।
 नीवारः शीतलो ग्राही पित्तश्नः कफवातकृत ॥ ८८ ॥

१ दे० भा० कोदों । व० भा० कोदों धान्यम् । इ० पकचर्डपासमेले । श्यामाकः
 श्यामकः श्यामस्त्रीजः स्यादविप्रियः । सुकुमारो राजधान्यं तृणवीजोत्तमश्च
 सः ॥ २ दे० भा० कुसुम्भेके वीज । व० भा० कुसुमफल । फा० तुखमकाशाय ।
 ४ दे० भा० देवान । गरहेडभा । गड् गड् । ३ दे० भा० तिनी लंभ
 रक्तकंगु । व० भा० उडी धान्य ।

यवनालः ।

यवनालो हिमः स्वादुलोहितः श्लेष्मपित्तजित् ।
अवृष्ट्यस्तुवरो रुक्षः क्लेदकृत्कथितो लघुः ॥ ८९ ॥

शणः ।

शणः प्रोक्तो मातुलानी जंतुतंतुर्महाशना ।
शणो हिमो लघुर्गाही तत्पुष्पं प्रदराघजित् ॥ ९० ॥

नवधान्यादिः ।

धान्यं सर्वं नवं स्वादु गुरु श्लेष्मकरं स्मृतम् ।
तत्तु वर्षोषितं पथ्यं यतो लघुवरं हितम् ॥ ९१ ॥
वर्षोषितं सर्वधान्यं गौरवं परिसुंचति ।
न तु त्यजति वीर्यं स्वं क्रमान्मुचत्यतः परम् ॥ ९२ ॥
एतेषु यवगोधूमतिलभाषा नवा हिताः ।
पुराणा विरसा रुक्षाः न तथाः गुणकारिणः ॥ ९३ ॥

इति धान्यवर्गः ।

शाकवर्गः ।

पत्रं पुष्पं फलं नालं कंदं संस्वेदजं तथा ।
शाकं षड्बिधमुद्दिष्टं गुरु विद्याद्यथोत्तरम् ॥ १ ॥
प्रायः शाकानि सर्वाणि विष्ट्रभीनि गुरुणि च ।
रुक्षाणि बहुवर्चासि सृष्टविष्मारुतानि च ॥ २ ॥
शाकं भिनति वपुरास्थि निहंति नेत्रं
वर्णं विनाशयति रक्तमथापि शुक्रम् ॥
प्रज्ञाक्षयं च कुरुते पलितं च तूनं
हंति स्मृतिं गतिमिति प्रवदंति तज्ज्ञाः ॥ ३ ॥
शाकेषु सर्वेषु वसंति रोगास्ते हेतवो देहविनाशनाय ।
तस्माद् बुधः शाकविवर्जनं तु कुर्यात्तथाम्लेषु स एव दो

एतानि शाकनिंदकवचनानि सामान्यानि ।
पत्रशाकं वास्तुकद्यम् ।

वास्तूकं वास्तुकं च स्यात्क्षारपत्रं च शाकराट् ।
तदेव तु वृहत्पत्रं रक्तं स्याहौडवास्तुकम् ॥ ५ ॥
श्रायशो यवमध्ये स्याद्यवशाकमतः स्मृतम् ।
वास्तूकद्वितयं स्वादु क्षारं पाके कटूदितम् ॥ ६ ॥
दीपनं पाचनं रुच्यं लयु शुक्रबलप्रदम् ।
सरं छीहास्त्रपित्तार्थः कृमिदोषव्यापहम् ॥ ७ ॥
पोतकी ।

पोतकथुपोदिका सा तु मालवे मृतवल्लरी ।
पोतकी शीतला स्त्रिया श्लेष्मला वातपित्तनुत् ॥ ८ ॥
अकंठया पिच्छला निद्रा शुक्रदा रक्तपित्तजित् ।
बलदा रुचिकृतपथ्या वृंहणी त्रितिकारिणी ॥ ९ ॥
श्वेतरक्तमारिपः ।

मारिपो वाष्पिको भर्षः श्वेतो रक्तश्च स स्मृतः ।
मारिपो मधुरः शीतो विष्टंभी पित्तनुद् गुरुः ॥ १० ॥
वातश्लेष्मकरो रक्तपित्तनुद्विषमाग्निजित् ।
रक्तभर्षो गुरुर्नाति स क्षारो मधुरः सरः ॥ ११ ॥
श्लेष्मलः कटुकः पाके स्वल्पदोष उदीरितः ।

१ दे० भा० वाथू । वथुआ । भेद चिह्नी रक्त वथुआ । वं० भा० वेतुया ।
का० मुसेलेसा सरमक । इ० हाइट गुजफूट । शाकं सर्वमचक्षुष्यं चक्षुष्यं
शोकरंचकम् । जीवंती वास्तुपत्त्याक्षी मेवनादः पुर्ननवा ॥ १ ॥ २ दे० भा०
पोईसाग । वं० भा० पोईशाक । इ० रेडमल्वार नाइटज्ञोड । Redmalbar n
ight jhore. ३ दे० भा० सील । नवडा । वं० भा० श्वेतकाटनटेरशाक ।
रक्त छुण । श्वेत । रक्त कांटानटेरशाक ।

तंडुलीयः ।

तंडुलीयो मेघनादः कांडिरस्तंडुलेरकः ॥ १२ ॥

भंडीरस्तंडुलीबीजो विषघश्चाल्पमारिषः ।

तंडुलीयो लघुः शीतो रुक्षः पित्तकफास्यजित् ॥ १३ ॥

सृष्टमूवमलो रुच्यो दीपिनो विषहारकः ।

पानीयतंडुलीयो यस्तत्कंचटमुदाहृतम् ॥ १४ ॥

कंचटं तित्तकं रक्तपित्तानिलहरं लघु ।

पालिंक्या ।

पालिंक्या वास्तुकाकारा छादिका चीरितच्छदा ॥ १५ ॥

पालिंक्या वातला शीता श्लेष्मला भेदनी गुरुः ।

विष्टभनी मदक्षासपित्तरक्तकफापहा ॥ १६ ॥

कालशाकम् ।

नाडीकं कालशाकं च श्राद्धशाकं च कालकम् ।

कालशाकं सरं रुच्यं वातकृत्कफशोथहृत् ॥ १७ ॥

बल्यं रुचिकरं भेद्यं रक्तपित्तहरं हिमम् ।

पटुशाकः ।

पटुशाकस्तु नाडीको नाडीशाकश्च स स्मृतः ॥ १८ ॥

नाडीको रक्तपित्तग्नो विष्टभी वातकोपनः ।

केलंवी ।

कलंबीशतपर्वा च कथयते तद्गुणा अथ ॥ १९ ॥

कलंबी शुक्रदा प्रोत्का मधुरा स्तन्यकारिणी ।

दे० भा० १ चोलाई । जलचौलाई । वं० भा० क्षुदेनटे । चारा नटे ।
गोपालकांचडादाम । फा० सुपेजमर्ज । इ० हर्में फ्रोडाईट, रामेरथ । Hear-
rmifrodigit amarunth. तंडुलीयकमूलं स्यादुष्णं श्लेष्मविनाशनम् । रजो-
रोधकरं रक्तपित्तप्रदरसंहरम् । ३ दे० भा० पालक । वं० भा० पालं शाक ।
फा० इस्पनाखं । इ० स्पाईनेज । sapienais. दे० भा० खाब । नरिखां ।
नलिका । नरच । ४ दे० भा० पटुशाक । वं० भा० कोंसटार । लालते ।
५ दे० भा० कर्मशाक, वं० भा० कलमी ।

लोणी (णी) बृहलोणी च ।

लोणा लोणी च कथिता बृहलोणी तु घोटिका ॥ २० ॥
 लोणी रुक्षा स्मृता गुर्वी वातश्लेष्महरी पटुः ।
 अशोष्णी दीपनी चाम्ला मन्दाग्निविषनाशिनी ॥ २१ ॥
 घोटिकाम्ला सरा चोणा वातकृत्कफपित्तहृत ।
 वाग्दोषव्रणगुलमध्नी श्वासकासप्रमेहनुत ॥ २२ ॥
 शोथे लोचनरोगे च हिता तज्ज्ञैरुदाहता ।

चंगेरी ।

चंगेरी चुक्रिका दंतशठांबष्टाम्ललोणिका ॥ २६ ॥
 अमंतकस्तु शफरी कुशला चाम्लपत्रिका ।
 चंगेरी दीपनी रुच्या रुक्षोणा कफवातनुत ॥ २४ ॥
 पित्तलाम्ला ग्रहण्यर्थः कुष्टातीसारनाशिनी ।

चुक्रा ।

चुक्रिका स्यानु पत्राम्ला रोचनी शतवेधनी ॥ २५ ॥
 चुक्रा त्वम्लतरा स्वाद्वी वातश्नी कफपित्तकृत ।
 रुच्या लघुतरा पाके वृत्ताकेनातिरोचनी ॥ २६ ॥

चिंचुः ।

चिंचुश्चुचुचुचुकी च दीर्घपत्रा सतिक्कका ।
 चुचूः शीता सरा रुच्या स्वाद्वी दोषव्रयापहा ॥ २७ ॥
 धातुपुष्टकरी बल्या मेघ्या पिच्छिलिका स्मृता ।

१ दे० भा० कुलफा, द्रनक । वं० भा० बडणुनी, क्षुदेणुनी । फा० खुरफा । २०० पर्सेलेन Paraslain. २ दे० भा० खटकल, खट्टीमीठी अविलोना । ३ दे० भा० चूक । वं० भा० चूकापाल्डू । फा० तुरशक् बडा तुरेखु रासानी छोटी । ४० ब्लेडब्यूक । bladder dock. ४ दे० भा० ब्लेडुना, लघु बृहत् । वं० भा० चैचको ।

हिंलमोचका ।

ब्रह्मी शंखदराचारी ब्राह्मी च हिलमोचिका ॥ २८ ॥
शोथं कुष्ठं कफं पित्तं हरते हिलमोचिका ।

शितिवारः ।

शितिवारः शितिवरः स्वस्तिकः सुनिष्ठणकः ॥ २९ ॥
श्रीवीरकः सूचीपत्रः पर्णकः कुकुटः शिखी ।
चांगेरीसहशः पत्रेश्चतुर्दल इतीरितः ॥ ३० ॥
शाकी जलान्विते देशे चतुष्पत्रीति चोच्यते ।
सुनिष्ठणो हिमो ग्राही मोहदोषत्रयापहारा ॥ ३१ ॥
अविदाही लघुः स्वादुः कषायो रुक्षदीपनः ॥ ३२ ॥
वृष्यो रुच्यो ज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत् ।

मूलकम् ।

पाचनं लघु रुच्योष्णं पत्रं मूलकजं नवम् ।
रुनेहसिङ्घं त्रिदोषधनमसिङ्घं कफपित्तकृत् ॥ ३३ ॥

द्रोणपुष्पी ।

द्रोणपुष्पीदलं स्वादु रुक्षं गुरु च पित्तकृत् ।
भेदनं कामलाशोथमेहज्वरहरं कटु ॥ ३४ ॥

यवानी ।

यवानी शाकभाशेयं रुच्यं वातकफप्रणुत् ।
उष्णं कटु च तिक्तं च पित्तलं लघु शूलहत् ॥ ३५ ॥

दद्धम् ।

दद्धुष्टनपत्रं दोषधनमम्लं वातकफापहम् ।
कंडूकासकृमिश्वासदद्धकुष्ठप्रणुलघु ॥ ३६ ॥

१ दे० भा० हुलहुल । बं० भा० हिंचेशोक । २ दे० भा० चौपति ।
बं० भा० सुषणी शाक । शुशुनी शाक । फा० अंजरा तुखमें अंजरा । इसके
बीजको उठंकन बीज कहते हैं ॥

सेहुंडम् ।

सेहुंडस्य दलं तीक्ष्णं दीपनं रेचनं हरेत् ।

आध्मानाष्टीलिकागुलमशूलशोथोदराणि च ॥ ३७ ॥

पर्षटम् ।

पर्षटो हंति पित्तास्वज्वरतृष्णाकफभ्रमान् ।

संग्राही शीतलस्तिक्तो दाहनुद्रातलो लघुः ॥ ३८ ॥
गोजिह्वा ।

गोजिह्वा कुष्ठमेहास्वकृच्छ्रज्वरहरी लघुः ।

पटोलम् ।

पटोलपत्रं पित्तश्च दीपनं पाचनं लघु ॥ ३९ ॥

स्तिनग्धं वृष्यं तथोष्णं च ज्वरकासकृमिप्रपुत् ।

गुद्धची ।

गुद्धचीपत्रमास्त्रेयं सर्वज्वरहरं लघु ॥ ४० ॥

कषायं कटुतिक्तं च स्वादु पाके रसायनम् ।

बल्यमुष्णं च संग्राहिः हन्यादोषत्रयं तृष्णाम् ॥ ४१ ॥

दाहप्रमेहवातास्तक्कामलाकुष्ठपांडुताः ।

कासमर्दम् ।

कासमदोरिमर्दश्च कासारिः कर्कशस्तथा ॥ ४२ ॥

कासमर्ददलं रुच्यं वृष्यं कासविषास्वनुत् ।

मधुरं कफवातश्च वाचनं कंठशोधनम् ॥ ४३ ॥

विशेषतः कासहरं पित्तश्च ग्राहकं लघु ।

चणकम् ।

रुच्यं चणकशाकं स्यादुर्जरं कफवातकृत् ॥ ४४ ॥

अम्लं विष्टुभजनकं पित्तनुदंतशोथहत् ।

कलायः ।

कलायशाकं भेदि स्याल्लघु तिक्तं त्रिदोषजित् ॥ ४५ ॥
सार्षपम् ।

कटुकं सार्षपं शाकं बहुमूत्रमलं गुरु ।

अम्लपाकं विदाहि स्यादुषणं रुक्षं त्रिदोषकृत् ॥ ४६ ॥
सक्षारं लवणं तीक्ष्णं स्वादु शाकेषु निंदितम् ।

पुष्पशाकम् अगस्तिकम् ।

अगस्तिकुसुमं शीतं चातुर्थिकनिवारणम् ॥ ४७ ॥
नक्तांध्यनाशनं तिक्तं कषायं कटुपाकि च ।
पीनसश्लेष्मपित्तन्नं वातन्नं मुनिभिर्मितम् ॥ ४८ ॥

कदली ।

कदल्याः कुसुमं स्त्रिग्धं मधुरं तुवरं गुरु ।
वातपित्तहरं शीतं रक्तपित्तक्षयप्रणुत् ॥ ४९ ॥

शियु ।

शियुपुष्पं तु कटुकं तीक्ष्णोषणं स्नायुशोथकृत् ।
कृमिहत्कफवातन्नं विद्रधिस्त्रीहगुलमजित् ॥ ५० ॥
मधुशिग्रोस्त्वक्षिहितं रक्तपित्तप्रसादनम् ।

शालमली ।

शालमली पुष्पशाकं तु घृतसैंधवसाधितम् ॥ ५१ ॥
प्रदरं नाशयत्येव हुःसाध्यं च न संशयः ।

रसे पाके च मधुरं कषायं शीतलं गुरु ॥ ५२ ॥

कफपित्तास्त्रजिद् ग्राहि वातलं च प्रकीर्तितम् ।

फलशाकं कूष्मांडम् ।

कूष्मांडं स्यात्पुष्पफलं पीतपुष्पं बृहत्कलम् ॥ ५३ ॥

१ (वरुणपुष्पं) पुष्पं वरुणसंग्राहि पित्तन्नं चामवातजित् । कोविदारक-
वैदारशणशालमलिपुष्पकं ग्राहिशाकं प्रशस्तं च रक्तपित्ते विशेषतः । २ दें
भा० पेठा, कुक्कडा । बं० भा० कुमडा गाच्छ । फा० भूराकदू । इ० पंप-
कीन । Pumpkeen.

कूष्मांडं वृंहणं वृथ्यं गुरु पित्ताल्पवातनुत् ।
 वालं पित्तापहं शीतं मध्यमं कफकारकम् ॥ ५४ ॥
 वृद्धं नातिहिमं स्वादु सक्षारं दीपनं लघु ।
 वस्तिशुद्धिकरं चेतोरोगहत्सर्वदोषजित् ॥ ५५ ॥
 कूष्मांडी ।

कूष्मांडी तु भृशं लघ्वी कर्कारुरपि कीर्तिता ।
 कर्कारुर्ग्राहणी शीता रक्तपित्तहरी गुरुः ॥ ५६ ॥
 पक्वा तिक्ताग्निजननी सक्षारा कफवातनुत् ।
 मिष्ठुम्बी ।

अलाबुः कथिता तुंबी द्विधा दीर्घा च वर्तुला ॥ ५७ ॥
 मिष्ठुंबीफलं हृद्यं पित्तश्लेष्मापहं गुरु ।
 वृथ्यं रुचिकरं प्रोक्तं धातुपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ ५८ ॥
 केटुंबी ।

इक्षवाकुः कटुंबी स्यात्सा तुंबी च वृहत्फला ।
 कटुंबी हिमा हृद्या पित्तकासविषापहा ॥ ५९ ॥
 तिक्ता कटुर्विपाके च वातपित्तज्वरांतकृत् ।
 कर्कटी ।

एर्वासुः कर्कटी प्रोक्ता कथयन्ते तद्दुणा अथ ॥ ६० ॥
 कर्कटी शीतला रुक्षा ग्राहणी मधुरा गुरुः ।
 रुच्या पित्तहरा सामा पक्वा तृष्णाग्निपित्तकृत् ॥ ६१ ॥

१ दे० भा० काशीफल सीताफल । गोलकटू । वं० भा० विलायती कुमडा ।
 रु० बादरंग । इ० दि० गोर्ड ॥ The gord. २ दे० भा० मीठी तोंबी ।
 वं० भा० लाडल । फा० कुदुरादरोज । इ० हाइट् गुर्डः ॥ White gord.
 ३ दे० भा० कडवी तूम्बी । वं० भा० तितलाऊ । फा० कुदुतलख ।
 इ० बोटल्गुर्ड ॥ Botal gord. ४ दे० भा० तर । कक्छटी । वं० भा०
 काकुड । फा० ख्याट जाव, दरंज । इ० कक्म्बर । Kakumber

चिचिंडां ।

चिचिंडा शेतराजिः स्यात्सुदीर्घा गृहकूलकैः ॥

चिचिंडो वातपित्तन्नो बल्यः पथ्यो रुचिप्रदः ॥ ६२ ॥

शोषणोतिहितः किंचिद्गुणेर्न्यनः पटोलतः ।

कारवेलम् ।

कारवेलं कठिलं स्यात्कारवेली ततो लघुः ॥ ६३ ॥

कारवेलं हिमं भेदि लघु तिळामवातलम् ।

ज्वरपित्तकफास्त्रन्नं पांडुमेहकृमीन् हरेत् ॥ ६४ ॥

तद्गुणा कारवेली स्याद्विशेषादीपनी लघुः ।

महाकोशातकी ।

महाकोशातकी ज्योत्स्ना हस्तिधोषा महाफला ॥ ६५ ॥

धामार्गवो धोषकश्च हस्तिपर्णश्च स स्मृतः ।

महाकोशातकी स्त्रिग्धा रक्तपित्तानिलापहा ॥ ६६ ॥

राजकोशातकी ।

धामार्गवः पीतपुष्पो जालनी कृतवेधनः ।

राजकोशातकी चेति तथोक्ता राजिमत्फला ॥ ६७ ॥

राजकोशातकी शीता मधुरा कफवातला ।

पित्तन्नी दीपनी श्वासज्वरकासकृभिप्रणुत ॥ ६८ ॥

पटोलः ।

पटोलः कूलकस्तकः पांडुकः कर्कशच्छदः ।

१ दे० भा० चिचिंडा । वं० भा० चिचिंगा । इ० स्नेकगर्ड
Sunkgord. २ दे० भा० करेला, करेली । वं० भा० बडाकरेला छोटा
करेला । फा० करेलाह । इ० हेरीमोर्दिका Harimardika, ३ दे० भा० धीया
तोरी । वं० भा० धुंदुल । फा० खियार । ४ दे० भा० कडवी तोरी । सुंगी-
तोरी । वं० भा० दिंगा । फा० तुरीयेतलख । इ० विटरल्युफा (Witerlieufa)
५ दे० भा० कडवे परखल । वं० भा० पलतालता । फा० मोरहडी ।

राजीफलः पांडुफलो राजेयश्चामृताफलः ॥ ६९ ॥
 बीजगर्भः प्रतीकश्च कुष्ठहा कासभंजनः ।
 पटोलं पाचनं हृदयं वृष्यं लघ्वग्रिदीपनम् ॥ ७० ॥
 स्त्रिगधोपणं हंति कासास्नज्वरदोषव्यक्तमीन् ।
 पटोलस्य भवेन्मूलं विरेचनकरं सुखात् ॥ ७१ ॥
 नालं श्लेष्महरं पत्रं पित्तहारि फलं पुनः ।
 दोषव्यहरं प्रोक्तं तद्विक्तपटोलकम् ॥ ७२ ॥
 विंवी ।

विंवी रक्तफला तुंडी तुंडकेरी च विंविका ।
 ओष्ठोपमफला प्रोक्ता पीलुपर्णी च कथ्यते ॥ ७३ ॥
 विंवीफिलं स्वादु शीतं गुरुपित्तास्तवातजित् ।
 स्तंभनं लेखनं रुच्यं विंवधाध्मानकारकम् ॥ ७४ ॥
 शिंवीद्वयम् ।

शिंवी शिंविः पुस्तशिंवी तथा पुस्तकशिंविका ।
 शिंवीद्वयं च मधुरं रसे पाके हिमं गुरु ॥ ७५ ॥
 वल्यं दाहकरं प्रोक्तं श्लेष्मलं वातपित्तजित् ।
 कोलशिंवी कृष्णफला तथा पर्यंकपादिका ॥ ७६ ॥
 कोलशिंवी समीरनी गुरुव्युष्णा कफपित्तकृत् ।
 शुक्राग्रिसादकृद्वृप्या रुचिकृद्विद् गुरुः ॥ ७७ ॥
 सौभांजनम् ।

सौभांजनं फलं स्वादु कषायं कफपित्तनुत् ।
 शूलकुम्पक्षस्थासगुलमहदीपनं परम् ॥ ७८ ॥
 वृत्ताकम् ।

वृत्ताकं स्त्री तु वार्ताकुः भंटाकी भंटकापि च ।

१ दे० भा० कंदूरी । तिक्क, मधुर । वं० भा० तेलाकुच । २ दे० भा० महाशिंवी ॥ सुआरसेम, सेम ॥ वं० भा० शोभगाढ्छ । ३ दे० भा० वैंगन, वताङ्ग । वं० भा० ब्रेहुनगाढ्छ । फा० वादंगान् इ० ब्रिंजल । Brinjal.

ततका स्वादु तीक्ष्णोष्णं कटुपाकमपित्तलम् ॥ ७९ ॥

वरवा तवलासद्वं दीपतं शुक्रलं लघु ।

तद्वालं कफपित्तद्वं वृद्धं पित्तकरं लघु ॥ ८० ॥

बृंताकं पित्तलं किंचिदंगारपरिपाचितम् ।

कफमेदोनिलामन्नमत्यर्थं लघु दीपनम् ॥ ८१ ॥

तदेव हि गुरु स्तिंधं सतैललवणान्वितम् ।

अपरं श्वेतबृंताकं कुकुटांडसमं भवेत् ॥ ८२ ॥

तदर्शस्तु विशेषेण हितं हीनं च पूर्वतः ।

तिंडिशः ।

तिंडिशो रोमशफलो मुनिनिर्मित इत्यपि ॥ ८३ ॥

तिंडिशो रुचिकृद्धेदी पित्तश्लेष्मापहः स्मृतः ।

सशीतो वातलो रुक्षो मूत्रलश्वाश्मरीहरः ॥ ८४ ॥

पिंडारम् ।

पिंडारं शीतलं बल्यं पित्तद्वं रुचिकारकम् ।

पाके लघु विशेषेण विषशांतिकरं स्मृतम् ॥ ८५ ॥

कैकोटकी ।

कैकोटकी पीतपुष्पा महाजालीति चोच्यते ।

कैकोटक्याः फलं कुष्ठहल्लासारुचिनाशनम् ॥ ८६ ॥

श्वासकासञ्चरान् हंति कटुपाकं च दीपनम् ।

डोंडिका ।

डोंडिका विषमुष्टिश्च डोंडीत्यपि सुमुष्टिका ॥ ८७ ॥

डोंडिका पुष्टिदा वृष्णा रुच्या विनिप्रदा लघुः ।

वातपित्तकफाशासि कृमिगुलमविषामयान् ॥ ८८ ॥

१ टेंडा २ टंडे का भेदा अग्निप्रदा मास्तनाशिनी च शुक्रप्रदा शोणितवर्द्धनी च । हल्लासकासारुचिनाशिनी च। वार्ताकुरेषा गुणसुप्रयुक्ता ॥ ३ दे०भा०ककौडा, खेखसा । बं०भा०काकरोल । ४ दे०भा०जीवंतीभेद । तिक्त जीवंती ॥

कंटकारी ।

कंटकारीफंलं तिक्तं कटुकं दीपिनं लेखु ।

स्त्रक्षोष्णं श्वासकासघ्नं ज्वरानिलकफापहम् ॥ ८९ ॥

नालंशाकम् ।

तीक्ष्णोच्चं सार्षपं नालं बातश्लेष्मव्रणापहम् ।

कंडूबमिहरं द्वक्कुष्टघ्नं रुचिकारकम् ॥ ९० ॥

मूलकम् ।

भेवन्मूलकनालं तु विष्टंभि कफकारकम् ।

बातपित्तहरं रुच्यं सुशुष्कं तदगुणाधिकम् ॥ ९१ ॥

कंदशाकम् । सूरणम् ।

सूरणः कंद औलश्च कंडूलोर्शोधन इत्यायि ।

सूरणो दीपनो स्त्रक्षः कषायः कंडुकृतकटुः ॥ ९२ ॥

विषुभी विशदो रुच्यः कफार्शः कुंतनो लघुः ।

विशेषादर्शसां पर्ययः प्लीहगुलमविनाशनः ॥ ९३ ॥

सर्वेषां कंदशाकानां सूरणः श्रेष्ठ उच्यते ।

ददूणां रक्तपित्तानां छुष्टिनां न हितो हि सः ॥ ९४ ॥

संधानयोगं संप्रातः सूरणो गुणकृतपरः ।

अङ्गुकम् ।

आरुकं वीरसेनं च वीरं वीरारुकं तथा ॥ ९५ ॥

आलुकं शीतलं सर्वं विष्टंभि मधुरं गुरु ।

सुष्टमूत्रमलं स्त्रक्षं हुर्जरं रक्तपित्तनुत् ॥ ९६ ॥

कफानिलकरं वल्यं वृप्यं स्वल्पाभिवर्धनम् ।

१ दे०भा०जिमीकन्द । वं० भा० ओल, फा० ओल । २ दे०भा०आलु,
गण्ठालु, काठिन्ययुक्त, शंखालु, श्वेततायुक्त हस्त्यालु, दीर्घतायुक्त पिंडालु ।
हुर्ज, मुयनी, मव्वालु, मधुरतायुक्त, पिंडालु, कचालु । फा० जरसक् लहौरी ।
० स्वीटपोटाटो, Sweet potatoe रक्तालु, रोमान्वित, रतालु रतंडा ।

रक्तालुभेदः

रक्तालुभेदो या दीर्घा तन्वी च प्रथितालुकी ॥ ९७ ॥

आलुकी बलकृत्स्निग्धा गुर्वी हृत्कफनाशिनी ।

विष्टुभकारिणी तैले तालतोऽतिरुचिप्रदा ॥ ९८ ॥

मूलकम् ।

मूलकं द्विविधं प्रोक्तं तत्रैकं लघुमूलकम् ।

शालामर्कटकं विश्वशालेयं मरुसंभवम् ॥ ९९ ॥

चाणक्यमूलकं तीक्ष्णं तथा मूलिकपोतिका ।

नेपालमूलकं चान्यत्तद्वेदजदंतवत् ॥ १०० ॥

लघुमूलं कटूष्णं स्थाद्वच्यं लघु च पाचनम् ।

दोषत्रयहरं स्वयर्थं ज्वरश्वासविनाशनम् ॥ १०१ ॥

नासिकाकंठरोगद्वं नयनामयनाशनम् ।

महत्तदेव रुक्षोष्णं शुरुदोषत्रयप्रदम् ॥ १०२ ॥

स्लेहसिङ्गं तदेव स्थादोषत्रयविनाशनम् ।

गैजरम् ।

गैजरं गर्जरी प्रोक्ता तथा नारंगवर्णकम् ॥ १०३ ॥

गैजरं मधुरं तीक्ष्णं तिक्तोष्णं दीपनं लघु ।

संग्राहि रक्तपित्ताशोग्रहणीकफवातजित् ॥ १०४ ॥

कदली ।

शीतलः कदलीकंदो बल्यः केश्योऽम्लपित्तजित् ।

वह्निकृदाहहारी च मधुरो रुचिकारकः ॥ १०५ ॥

मानकः ।

मानकः स्थान्महापत्रः कथ्यते तदगुणा अथ ।

मानकः शोथहच्छीतः पित्तरक्तहरो लघुः ॥ १०६ ॥

१ दे० भा० अरबी । २ दे० ग्रेट लीव्हड केलेडिभन । Great leave० caladian. २ दे० भा० मूली, बड़ी मूली । वं० भा० मूली, चणक मूली ।

फा० तुखम तुख । ३ दे० रेडीश Radeesh, ३ दे० भा० गैजर । वं० भा०

गैजर फा० जर्दक । ४ दे० कैरट Ceyret Hinduism Discord Server <https://discord.gg/dharma> | MADE WITH LOVE

वाराही ।

वाराही पित्तला बल्या कटुतिक्ता रसायना ।
आयुः शुक्राभिकृन्मेहकफुष्टानिलापहा ॥ १०७ ॥

हस्तिकर्णी ।

गजकर्णी तु तिक्तोष्णा तथा वातकफौ जयेत् ।
शीतज्वरहरी स्वादुः पाके तस्यास्तु कंदकः ॥ १०८ ॥

पांडुशोथकृमिष्ठीहगुल्मानाहोदरापहा ।

अहण्यशोविकारम्बो वनस्पूरणकंदवत् ॥ १०९ ॥

केंदुकम् ।

केंदुकं कटुकं पाके तिक्तं ग्राहि हिमं लघु ।
दीपनं पाचनं हृदयं कफपित्तज्वरापहम् ॥ ११० ॥

कुष्टकासप्रमेहास्वनाशनं वातलं कटु ।

कसेरुकम् ।

कसेरु द्विविधं ततु महद्राजकसेरुकम् ॥ १११ ॥

सुस्ताकृति लघुः स्याद्या तच्चिदोषभिति स्फृतम् ।

कसेरुकद्वयं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ॥ ११२ ॥

पित्तशोणितदाहव्यं नयनामयनाशनम् ।

ग्राहिशुक्रानिलक्ष्मेष्मरुचिस्तन्यकरं स्फृतम् ॥ ११३ ॥

शालूकम् ।

पझादिकंदः शालूकं करहाटश्च कथ्यते ।

मृणालमूलं भिस्साङ्गं लाजलूकं च कथ्यते ॥ ११४ ॥

शालूकं शीतलं वृष्णं पित्तास्वदाहतुदगुरु ।

१ दे० मा० गेठी । वं० भा० चामुल चुविडआল । प० भा० कित्यी ।

२ दे० मा० केवरे । केउआ । वं० भा० केउंगाठ । फा० कलाम । इ०

केवेज । ३ दे० मा० कसेरु । वं० भा० केशुर । केबुका केमुकः कैबुः

नुपत्रा दलमालिनी । केद्धटः स्वत्पविटपः स्वादुकंदश्च पौलिनी ॥ ४ दे० मा०

भत्तीडा । कमलकी ढंडी । वं० भा० पद्मेर ढांटा ।

दुर्जरं स्वादुपाकं च स्तन्यानिलंकफ्रदम् ॥ ११५ ॥
संप्राहि मधुरं रुक्षं भिस्साढमपि तद्गुणम् ।

वर्जनीयम् ।

बालं ह्यनार्तवं जीर्णं व्याधितं कृमिभक्षितम् ॥ ११६ ॥
कंदं विवर्जयेत्सर्वं यद्वाग्न्यादिविदूषितम् ।

अतिजीर्णमकालोत्थं रुक्षसिद्धमदेशजम् ॥ ११७ ॥
कर्कशं कोमलं वातिशीतं व्यालादिदूषितम् ।

संशुष्कं सकलं शाकं नाश्वीयान्मूलकं विना ॥ ११८ ॥
संस्वेदजम् ।

उक्तं संस्वेदजं शाकं भूमिच्छत्रं शिलींद्रजम् ।

क्षितिगोमयकाषेषु वृक्षादिषु च तद्वेत् ॥ १३९ ॥

सर्वे संस्वेदजाः शीता दोषलाः पिञ्छिलाश्व ते ।

गुरवश्छर्वतीसारज्वरलेष्मामयप्रदाः ॥ १२० ॥

श्वेताः श्वभ्रस्थलीकाषुवंशगोव्रजसंभवाः ।

नातिदोषकरास्ते स्युः शेषास्तेष्यो विगर्हिताः ॥ १२१ ॥
संस्वेदजाः छाता इति लोके ।

इति शाकर्वा: ।

वारिवर्गः ।



पानीयं सलिलं नीरं कीलालं जलमंबु च ।

आपो वार्वारिकं तोर्यं पयः पाथस्तथोदकम् ॥ १ ॥

जीवनं वनमंभोर्णोमृतं वनरसोऽपि च ॥ २ ॥

१ दें० भा० खुंब सांपकी छन्नी । वं० भा० भूईछाती । इं० मशखम् ।
Mushroom. २ दें० भा० पानी । वं० भा० जल । फा० आबा । इं०
चाटर Water.

पानीयं श्रमनाशनं क्लमहरं मूर्च्छापिपासापहं
 तंद्राञ्छिदिविबंधहृदलकरं निद्राहरं तर्पणम् ।
 हृद्यं गुतरसं ह्यजीर्णशमकं नित्यं हितं शीतलं
 लघवच्छं रसकारणात्मिगादितं पीयूषवज्जाविना ॥ ३ ॥
 भेद-पानीयं सुनिभिः प्रोक्तं दिव्यं भौममिति द्विधा ॥ ४ ॥
 दिव्यं चतुर्विधं प्रोक्तं धाराजं करकाभवम् ।
 तौषारं च तथा हैमं तेषु धारं गुणाधिकम् ॥ ५ ॥

धाराजलम् ।

धाराभिः पतितं तोयं गृहीतं स्फीतवाससा ।
 शिलायां वसुधायां वा धौतायां पतितं च तत् ॥ ६ ॥
 सौबर्णे राजते ताङ्गे स्फाटिके काचनिर्मिते ।
 भाजने मृणमये वापि स्थापितं धारसुच्यते ॥ ७ ॥
 धारानीरं विदोषव्यमनिदेश्यरसं लब्धु ।
 सौम्यं रसायनं बल्यं तर्पणं ह्लादिजीवनम् ॥ ८ ॥
 पाचनं मतिकृन्मूर्च्छातन्द्रादाहथयक्षमान् ।
 तुष्णां हरति तत्पर्यं विशेषात्प्रावृषि स्वृतम् ॥ ९ ॥

तद्देवौ ।

धाराजलं च द्विविधं गंगासामुद्भेदतः ।
 आकाशं गंगासंबंधि जलमादाय दिग्गजाः ॥ १० ॥
 मेघरंतरिता वृष्टिं कुर्वतीति वचः सताम् ।

१ तत्र दिव्यमुत्तमं दिव्यस्य कालापेक्षत्वात् । तथाहि दिव्यस्य पात्रकालयोन्
 रेवापेक्षा तद्यथा हि सुपात्रस्थम् । आर्तवं हितमनार्तवमहितम् । भौमस्याएव
 स्त्रपेक्षा । तद्यथा--जांगले हितमहितमानपे ॥ १ ॥ २ तत्रापि शुच्यादौ हितम-
 हितमशुच्यादौ ॥ २ । कूपादौ हितमहितं पल्वलादौ ॥ ३ सुपात्रे हितमहितं
 दुष्पात्रे ॥ ४ कच्चिदेहे हितं कच्चिदहितम् ॥ ५ शरद्ग्रीष्मयोहितमहितम-
 न्यदा । ६ दिवा हितमहितं रात्रौ । ७ दिवाद्यंतयोरेवम् ॥ ८ दिव्यं तु सर्वत्र
 सर्वदा सर्वेषां हितम् ।

गांगमाशयुजे मासि प्रायो वर्षति वारिदः ॥ ११ ॥
 सर्वथा तज्जलं देयं तथैव चरके वचः ।
 स्थापितं हेमजे पात्रे राजते सृष्टमयेऽपि वा ॥ १२ ॥
 शाल्यन्नं येन संसिक्तं भवेद्छेदिवर्णवत् ।
 तद्वांगं सर्वदोषव्यं क्षेयं सामुद्रमन्यथा ॥ १३ ॥
 तत्तु सक्षारलवणं शुक्रदृष्टिवलापहस्य ।
 विष्णं च दोषलं तीक्ष्णं सर्वकर्मसु गर्हितम् ॥ १४ ॥
 सामुद्रं त्वाश्विने मासि गुणोर्गणवदादिशेत् ।
 अगस्त्यस्य तु देवर्षेशुद्यात्सकलं जलम् ॥ १५ ॥
 निर्मलं निर्विषं स्वादु शुक्रलं स्थाददोषलम् ।
 अतएवाह-फूत्कारविषबातेन नामानां व्योमचारिणाम् ॥ १६
 वर्षासु सविषं तोयं दिव्यमथाश्विनं विना ।

अनार्तवम् ।

अनार्तवं प्रसुंचंति वारि वारिवरास्तु यत् ॥ १७ ॥
 तत्रिदोषाय सर्वेषां देहिनां परिकीर्तितम् ।
 करकाजलम्-दिव्यवायवग्निसंयोगात्संहताःखातपतंत्रियाः
 पाषाणखंडवच्चापस्ताः कारक्योऽमृतोपभाः ।
 करकाजं जलं रुक्षं विशदं गुह्यं चास्थिरम् ॥ १९ ॥
 दारणं शीतलं सांद्रं पित्तहत्कफवात्कृत ।

तौषारम् ।

अपि नद्याः समुद्रांते वहिरापश्च तद्वाः ॥ २० ॥

१ अनार्तवं पौषादिमासचतुष्यविषयम् । वर्षतुभिन्नकाले वृष्टिमिति यावत् ।
 ज्योतिःशास्त्रेष्वपि--अनुराधर्क्षमारम्भ्य षोडशर्क्षेषु भास्करः । यावत् प्रवर्त्तते तावद्कालः परिकीर्तितः । २ देवभाषोले गले । ३ अपि नद्याः समुद्रांते वहिरिति किं स्यादयम्भावः--नदीमारम्भ्य समुद्रपर्यंतं वहिरास्ते तद्वावहिभवा । धूमावयवनिर्मुक्ता धूमांशरहिता आपस्तुषाराख्याः, तुष, ओस, तुस । इस इति लोके ।
 पंजाबीमें तरेल कहते हैं ॥

धूमावयवनिर्मुक्तास्तुषाराख्यास्तु ताः स्मृताः ।
 अपथ्याः प्राणिनां प्रायो भूरुहाणां तु ता हिताः ॥ २१ ॥
 तुषारां तु हिमं रुक्षं स्याद्वातलमपित्तलम् ।
 कफोरुस्तंभकंठाग्निमेदोगंडादिरोगकृत् ॥ २२ ॥

हैमंजलम् ।

हिमवच्छ्वरादिभ्यो द्रवीभूयाभविष्टि ।

यत्तदेव हिमं हैमं जलमाहुर्मनीषिणः ॥ २३ ॥

हिमां तु शीतं पित्तघं गुरु वातविवर्द्धनम् ।

हिमं तु शीतलं रुक्षं दारणं सूक्ष्ममित्यपि ॥ २४ ॥

न तद्दूषयते वातं न च पित्तं न वा कफम् ।

भामम् ।

भौममं तु निगदितं प्रथमं त्रिविधं बुधैः ॥ २५ ॥

जांगलं च तथानूपं ततः साधारणं क्रमात् ।

अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्च पित्तरक्ताभ्यान्वितः ॥ २६ ॥

ज्ञातव्यो जांगलो देशस्तत्रत्यं जांगलं जलम् ।

वहं बुर्वहुवृक्षश्च वातश्लेष्माभ्यान्वितः ॥ २७ ॥

देशोऽनुप इति ख्यात आनूपं तद्वं जलम् ।

मिश्रचिह्नस्तु यो देशः स हि साधारणः स्मृतः ॥ २८ ॥

तस्मिन्देशे यदुदकं ततु साधारणं स्मृतम् ।

जांगलं सलिलं रुक्षं लवणं लघु पित्तलुत् ॥ २९ ॥

बहिरुक्तकफकृत्पथ्यं विकारान् कुरुते वहन् ।

आनूपं वार्यभिष्यंदि स्वादु स्तिर्गंधं घनं गुरु ॥ ३० ॥

बहिरुक्तकफकृत्प्रित्यं विकारान्कुरुते वहन् ।

साधारणं तु मधुरं दीपनं शीतलं लघु ॥ ३१ ॥

तर्पणं दोचनं तृप्णादाहदोषवयप्रणुत ।

१ और्वानलवृमेगितमं तु समुद्रस्य यदनीभूतम् । पवनानीतमुदीच्यां तद्विमिति कथ्यते मुनिभिः ॥ कुहेस वर्फ इति लोके ।

भौमनादेयम् ।

नद्या नदस्य वा नीरं नादेयमिति कीर्तितम् ॥ ३२ ॥

नादेयमुदकं रुक्षं वातलं लघु दीपनम् ।

अनभिष्यन्दि विशदं कटुकं कफपित्तनुत् ॥ ३३ ॥

नद्याः शीघ्रवहा लघव्यः सर्वा याश्चामलोदकाः ।

गुर्व्यः शैवलसंछन्नाः मंदगाः कलुषाश्च याः ॥ ३४ ॥

हिमवत्प्रभवाः पथ्या नद्योश्माहतपाप्यसः ।

गंगाशतद्वसरयुयमुनाद्या गुणोत्तमाः ॥ ३५ ॥

सह्यशैलभवा नद्यो वेणीगोदावरीसुखाः ।

कुर्वति प्रायशः कुष्ठमीषद्वातकफावहाः ॥ ३६ ॥

नदीसरस्तडागस्थे कूपप्रस्त्रवणादिजे ।

उद्दके देशभेदेन गुणान्दोषांश्च लक्षयेत् ॥ ३७ ॥

औद्धिदम् ।

विदार्य भूमिं निम्नां यन्महत्या धारया स्नावेत् ।

तत्तोयमौद्धिदं नाम वदंतीति महर्षयः ॥ ३८ ॥

औद्धिदं वारि पित्तघमविदाद्यतिथीतिलम् ।

प्रीणनं मधुरं बल्यमीषद्वातकरं लघु ॥ ३९ ॥

नैर्झरम् ।

शैलसातुस्तवद्वारिप्रवाहो निर्झरो झरः ।

सतु प्रस्त्रवणश्चापि तत्रत्यं नैर्झरं जलम् ॥ ४० ॥

नैर्झरं रुचिकृत्वीरं कफव्यं दीपनं लघु ।

मधुरं कटुपाकं च वातलं स्यादपित्तलम् ॥ ४१ ॥

सारसम् ।

नद्या शैलादिस्तवद्वाया यत्र संश्रुत्य तिष्ठति ।

तत्सरोजदलच्छन्नं तदंभः सारसं स्मृतम् ॥ ४२ ॥

सारसं सलिलं बल्यं तृष्णाद्यनं मधुरं लघु ।

रोचनं तुवरं रुक्षं बद्धमूत्रमलं स्मृतम् ॥ ४३ ॥

तडागम् ।

प्रशस्तभूमिभागस्थो बहुसंवत्सरोषितः ।

जलाशयस्तडागः स्यात्ताडागं तज्जलं स्मृतम् ॥ ४४ ॥

ताडागमुदकं स्वादु कषायं कटुपाकि च ।

वातलं बद्धविषमूत्रमस्तुक्पित्कफायहम् ॥ ४५ ॥

वापी ।

पाषाणेरिष्टकाभिर्वा बद्धः कूपो वृहत्तरः ।

ससोपाना भवेद्वापी तज्जलं वाप्यमुच्यते ॥ ४६ ॥

वाप्यं वारि यदि क्षारं पित्तकृत्कफवातहत् ।

तदेव मिष्टुं कफकृद्वातपित्तहरं भवेत् ॥ ४७ ॥

कौपम् ।

भूमौ खातोल्पविस्तारो गंभीरो मंडलाकृतिः ।

बद्धोऽबद्धः स कूपः स्यात्तदंभः कौपमुच्यते ॥ ४८ ॥

कौपं पयो यदि स्वादु त्रिदोषग्रन्थं हितं लघु ।

तत्क्षारं कफवातग्रन्थं दीपनं पित्तकृत्परम् ॥ ४९ ॥

चौंडचम् ।

शिलाकीर्णं स्वयं श्वसं नीलांजनसमोदकम् ।

लतावितानसंछन्नं चौंडचमित्यभिधीयते ॥ ५० ॥

अश्मादिभिरबद्धं यत्तच्चौंडचमिति वापरे ।

तत्पत्यमुदकं चौंडचं मुनिभिस्तदुदाहतम् ॥ ५१ ॥

चौंडचं वाहिकरं नीरं स्फक्षं कफहरं लघु ।

मधुरं पित्तलुदुच्यं पाचनं विशदं स्मृतम् ॥ ५२ ॥

पाल्वलम् ।

अल्पसरः पल्वलं स्याद्यत्र चंद्रकर्षगे रवौ ।

१ चंद्रकं—मृगदिरोनक्षत्रम् ।

तत्तिष्ठति जलं किंचित्तत्रत्यं वारि पाल्वलम् ॥ ५३ ॥
पाल्वलं वार्य्यभिष्यन्दि गुरु स्वादु त्रिदोषकृत् ।
विकरम् ।

नद्यादिनिकटे भूमिर्या भवेद्वालुकामयी ॥ ५४ ॥

उद्धाव्यते यत्तोयं तु तज्जलं विकरं विदुः ।

विकरं शीतलं स्वच्छं निर्दोषं लघु च स्मृतम् ॥ ५५ ॥
तुवरं स्वादु पित्तन्नं क्षारं तत्पित्तलं मनाकृ ।

केदारम् ।

केदारं क्षेत्रसुदिष्टं केदारं तज्जलं स्मृतम् ॥ ५६ ॥

केदारं वार्य्यभिष्यन्दि मधुरं गुरु दोषकृत् ।

वृष्टिजलम् ।

वार्षिकं तदहर्वृष्टं भूमिस्थमाहितं जलम् ॥ ५७ ॥

त्रिरात्रसुषितं तत्तु प्रसन्नमसृतोपमम् ।

विहितजलम् ।

हैमते सारसं तोयं ताडागं वा हितं स्मृतम् ॥ ५८ ॥

हैमते विहितं तोयं शिशिरेऽपि प्रशस्यते ।

वसंतग्रीष्मयोः कौपं वाप्यं वा नैर्वरं जलम् ॥ ५९ ॥

नादेयं वारि नादेयं वसंतग्रीष्मयोर्बुधैः ।

विषवद्रनवृक्षाणां पत्राद्यैर्द्विषितं यतः ॥ ६० ॥

ओद्दिदं चांतरिक्षं वा कौपं वा प्रावृषि स्मृतम् ।

शस्तं शरादि नादेयं नीरमंशूदकं परम् ॥ ६१ ॥

दिवा राविकरैर्जुष्टं निशि शीतकरांशुभिः ।

१ रविकरैर्जुष्टमित्युक्ते दिवापदं समस्तदिवसप्राप्त्यर्थम् । शीतकरांशुभिर्जुष्टमित्युक्ते निशीतिपदमद्वारात्रप्राप्त्यर्थम् । तंडुलजलम् । तंडुलानष्टगुणिते कंडितान् क्षालयेजले । तत्तु डुलजलं ग्राह्यं योज्यं निखिलकर्मसु ॥ १ ॥ नारिकेलजलम् । नारिकेलोद्धवं स्निग्धं स्वादु वृश्यं हिमं लघु । तृष्णापित्तानिलहरं दीपनं वस्तिशोधनम् ॥ २ ॥

ज्ञेयमंशूदकं नाम स्त्रिग्यं दोषत्रयापहम् ॥ ६२ ॥

अनभिष्यदि निर्दोषमांतरिक्षजलोपमम् ।

बल्यं रसायनं मेध्यं शीतं लघु सुधासमम् ॥ ६३ ॥

सुश्रुतः ।

पौषे वारि सरोजातं माघे तत्तु तडागजम् ।

फालगुने कूपसंभूतं चैत्रे चौंडचा हिमं मतम् ॥ ६४ ॥

वैशाखे नैर्झरं नीरं ज्येष्ठे शस्तं तथोद्दिदम् ।

आषाढे शस्यते कौपं श्रावणे दिव्यमेव च ॥ ६५ ॥

भाद्रे कौपं पयः शस्तमाधिने चौंडचमेव च ।

कार्तिके मार्गशीर्षे च जलमात्रं प्रशस्यते ॥ ६६ ॥

जलग्रहणकालः ।

भौमानामंभसां प्रायो ग्रहणं प्रातरिष्यते ।

शीतत्वं निर्मलत्वं च यतस्तेषां मता गुणाः ॥ ६७ ॥

जलपानम् ।

अत्यंदुपानान्न विपच्यतेऽन्नं निरंदुपानाच्च स एव दोषः ।

तस्मान्नरो वह्निविवर्धनाय मुहुर्मुहुर्वारि पिवेदभूरि ॥ ६८ ॥

शीतलजलम् ।

मृच्छादिपित्तदाहेषु विषे रक्ते मदात्यये ।

अमे भ्रमे विदग्धेऽन्ने तमके क्षवथौ तथा ॥ ६९ ॥

उर्ध्वंगे रक्तपित्ते च शीतमंबु प्रशस्यते ।

तन्निषेधः ।

पार्वशूले प्रतिश्याये वातरोगे गलग्रहे ॥ ७० ॥

आध्मानोस्तमिते कोष्ठे सद्यः शुद्धौ नवज्वरे ।

अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषु विद्रधौ ॥ ७१ ॥

हिक्कायां स्नेहपाने च शीतांबु परिवर्जयेत् ।

उष्णोदकम् । अर्द्धविशिष्टं यत्तोयं तदुष्णोदकमुच्यते । उष्णोदकं सदा पथ्यं श्वासकासञ्चरातिंजित् ॥ १ ॥ आरोग्यांबु । पादशेषं तु यत्तोयमारोग्यांबु तदुच्यते । आरोग्यांबु सदा पथ्यं श्वासकासकफापहम् ।

अलपजलम् ।

अरोचके प्रतिश्याये मंदेऽग्नौ श्वयथौ क्षये ॥ ७२ ॥

मुखप्रसे के जठरे छुष्टे नेत्रामये ज्वरे ।

ब्रणे च मधुमेहे च पिबेत्पानीयमल्पकम् ॥ ७३ ॥

आवश्यकता ।

जीवनं जीविना जीवो जगत्सर्वं तु तन्मयम् ।

अतोऽत्यंतनिषेधेऽपि न क्वचिद्वारि वार्यते ॥ ७४ ॥

हारीतः ।

तृष्णागरीयसी घोरा सद्वः प्राणविनाशिनी ।

तस्मादेयं तृष्णार्ताय पानीयं प्राणधारणम् ॥ ७५ ॥

कृषितो भोहमायाति भोहात्प्राणान्विमुंचति ।

अतः सर्वास्ववस्थासु न क्वचिद्वारि वर्जयेत् ॥ ७६ ॥

प्रशस्तजलम् ।

अगंधमव्यक्तरसं सुशीतं तर्षनाशनम् ।

स्वच्छं लघुं च हृदं च तोयं गुणवदुच्यते ॥ ७७ ॥

निदित्सम् ।

पिच्छलं कृमिलं क्लिन्नं पर्णशोवालकदीमैः ।

विवर्णं विरसं सांद्रं दुर्गाधं न हितं जलम् ॥ ७८ ॥

कलुषं छन्नमंभोजपर्णनीलीतणादिभिः ।

दुःस्पर्शनमसंस्पृष्टं सौरचांद्रमरीचिभिः ॥ ७९ ॥

अनार्तवं वार्षिकं तु प्रथमं तच्च भूमिगम् ।

व्यापनं परिहर्तव्यं सर्वदोषप्रकोपनम् ॥ ८० ॥

तत्कुर्यात्स्यानपानाभ्यां तृष्णाध्माननिरज्वरान् ।

कासाभ्रिमांद्याभिष्यंदकंडुगंडादिकं तथा ॥ ८१ ॥

दिवाश्रुतं पयो रात्रौ गुरुतामधिगच्छति । रात्रौ शृतं दिवा पीतं गुरु त्वमधि-
गच्छति । शृतं शीतं पुनस्ततं तोयं विषसमं भवेत् ।

शोधनम् ।

निंदितं चापि पानीयं कथितं सूर्यतापितम् ।
 सुवर्णं रजतं लोहं पाषाणं सिकतामपि ॥ ८२ ॥
 भृशं संताप्य निर्बाप्य सतधा साधितं तथा ।
 कर्पूरजातिपुन्नागपाटलादिसुवासितम् ॥ ८३ ॥
 शुचि सांद्रपटस्त्रावि क्षुद्रजंतुविवर्जितम् ।
 स्वच्छं कनकसुक्ताद्यैः शुद्धं स्यादोषवर्जितम् ॥ ८४ ॥
 पर्णमूलविसंग्रथमुक्ताकतकर्णैवलैः ।
 गोमेदेन च वज्रेण कुर्यादंबुप्रसादनम् ॥ ८५ ॥
 पीतं जलं जीर्यति यामयुग्मा—
 आमैकमात्राच्छृतशीतलं च ।
 तद्वर्धमात्रेण शृतं कदुण्ण
 पयःप्रपाके त्रय एव कालाः ॥ ८६ ॥

इति वारिवर्गः ।

दुग्धवर्गः ।

—००—

दुग्धम् ।

दुग्धं क्षीरं पयः स्तन्यं वालजीवनमित्यपि ।
 दुग्धं समधुरं स्त्रिग्धं वातपित्तहरं परम् ॥ १ ॥
 सद्यः शुक्रकरं पीतं सात्म्यं सर्वशरीरिणाम् ।
 जीवनं बृंहणं बल्यं मेध्यं वाजिकरं परम् ॥ २ ॥
 वयःस्थापनमायुष्यं संधिकारि रसायनम् ।
 विरेकवांतिवस्तीनां तुल्यमोजोविवर्द्धनम् ॥ ३ ॥
 जीर्णज्वरे मनोरोगे शोषमूर्च्छाभ्रमेषु च ।

१ दे० भा० दूध । व० भा० दूध । फा० शीरे । इ० मिल्क milk क्षीर-
 मष्टविवम्-गव्यं, महिपम्, लाज, कारमं ख्वणम्, आविकम् । ऐभम् । ऐकशफम् ॥

अहम्यां पांडुरौगे च दाहे तृष्णि हृदामये ॥ ४ ॥
 गर्भस्त्रावे च सततं हितं मुनिवरेः स्मृतम् ।
 बालवृद्धक्षतक्षीणक्षुद्रव्यवायकृशाश्रये ॥ ५ ॥
 तेभ्यः सदातिशयितं हितमेतदुदाहृतम् ।
 गोदुग्धम् ।

गव्यं दुग्धं विशेषेण मधुरं रसपाकयोः ॥ ६ ॥
 शीतलं स्तन्यकृत स्त्रिग्धं वातपिताखनाशनम् ।
 दोषधातुमलस्त्रोतः किंचित्क्लेदकरं गुरु ॥ ७ ॥
 जरासमस्तरोगाणां शांतिकृतसेविनां सदा ।
 कृष्णाया गोभर्वं दुग्धं वातहारि गुणाधिकम् ॥ ८ ॥
 पीताया हरते पित्तं तथा वातहरं भवेत् ।
 श्लेष्मलं गुरु शुक्राया रक्ताचिवातिवातहृत् ॥ ९ ॥
 बालवत्सविवत्सानां गवां दुग्धं विदोषकृत् ।
 बैष्णविष्ण्यास्त्रिदोषग्नं तर्पणं बलकृत्पयः ॥ १० ॥

देशविशेषेण श्रैष्टुचम् ।

जांगलानूपशैलेषु चरंतीनां यथोत्तरम् ।
 षयो गुरुतरं स्त्रेहं यथाहारं प्रवर्तते ॥ ११ ॥

आहारविशेषम् ।

स्वलपान्नभक्षणाज्ञातं क्षीरं गुरु कफप्रदम् ।
 ततु बल्यं परं वृष्यं स्वस्थानां गुणदायकम् ॥ १२ ॥
 पलालतृणकार्पासबीजज्ञातं गुणैर्हितम् ।

माहिषम् ।

माहिषं मधुरं गव्यात्स्त्रिग्धं शुक्रकरं गुरु ॥ १३ ॥
 निद्राकरमभिष्यन्दि क्षुधाधिककरं हिमम् ।

छागम् ।

छागं कषायं मधुरं शीतं ग्राहि तथा लघु ॥ १४ ॥

१ दै० भा० देरकी सुई हुई गौ । खांगड़ । बाखड़ी ।

रक्तपित्तातिसारग्नं क्षयकासज्वरापहम् ।

अजानामल्पकायत्वात्कट्टुतिक्तनिषेवणात् ॥ १५ ॥

स्तोकांवृपानाद्वचायामात्सर्वरोगापहं पयः ।

सृगीदुग्धम् ।

मृगीणां जांगलोत्थानामजाक्षीरगुणं पयः ॥ १६ ॥

मेषीणाम् ।

आविकं लवणं स्वादु स्निग्धोषणं चाश्मरिप्रणुत् ।

अहृद्यं तर्पणं वृष्णं शुक्रपित्तकफ्रदम् ॥ १७ ॥

गुरु कासेऽनिलोद्धूते केवले चानिले वरम् ।

अश्वीदुग्धम् ।

स्तक्षोषणं वडवाक्षीरं बल्यं शोषानिलापहम् ॥ १८ ॥

अम्लं पट्टु लघु स्वादु सर्वमैकशफं तथा ।

उष्ट्रीदुग्धम् ।

उष्ट्रीदुग्धं लघु स्वादु लवणं दीपनं तथा ॥ १९ ॥

कृत्स्निकुष्ठकफानाहशोथोदरहरं सरम् ।

हस्तनीदुग्धम् ।

वृहणं हस्तनीदुग्धं मधुरं तुवरं गुरु ॥ २० ॥

वृष्णं बल्यं हिमं स्निग्धं चक्षुष्णं स्थिरताकरम् ।

नौरीदुग्धम् ।

नार्या लघु पयः शीतं दीपनं वातपित्तजित् ॥ २१ ॥

चक्षुःशूलाभिवातग्नं नस्याश्वोतनयोर्हितम् ।

धारोषणम् ।

धारोषणं गोः पयो बल्यं लघु शीतं सुधासमम् ॥ २२ ॥

दीपनं च त्रिदोषग्नं तद्वारा शिशिरं त्यजेत् ।

धारोषणं शस्यते गव्यं धाराशीतं तु माहिषम् ॥ २३ ॥

१ वृहणं जीवनं सात्म्यं स्नेहनं मानुपं पयः । नावनं रक्तपित्तस्य तर्पणं
चाक्षिरोगिणाम् ॥ १ ॥ इति चरकः ॥

श्रूतोष्णमाविकं पथ्यं श्रृतशीतमजापयः ।
 आमं क्षीरमभिष्यन्दि गुरु श्लेष्मामवर्द्धनम् ॥ २४ ॥
 ज्ञेयं सर्वमपथ्यं तु गव्यमाहिषवर्जितम् ।
 नारीक्षीरं त्वामसेव हितं न तु श्रृतं हितम् ॥ २५ ॥
 श्रृतोष्णं कफवातद्वं श्रृतशीतं तु पित्तनुत् ।
 अद्वैदकं क्षीरशिष्टमाल्लघुतरं पयः ॥ २६ ॥
 जलेन रहितं दुग्धमतिपकं यथायथा ।
 तथातथा गुरु स्निग्धं वृष्णं बलविवर्द्धनम् ॥ २७ ॥

पीयूषकिलाटक्षीरशाकतकपिंडमोरटाः ।

क्षीरं तत्कालसूताया घनं पीयूषमुच्यते ।
 नष्टदुग्धस्य पक्स्य पिंडः प्रोक्तः किलाटकः ॥ २८ ॥

अपक्षमेव यन्नष्टं क्षीरशाकं हि तद् पयः ।

दधा तक्रेण वा नष्टं दुग्धं बद्धं सुवाससा ॥ २९ ॥

द्रवभागेन रहितं यत्क्रपिंडः स उच्यते ।

नष्टदुग्धमवं नीरं मोरटं जय्यटोऽब्रवीत् ॥ ३० ॥

पीयूषश्च किलाटं च क्षीरशाकं तथैव च ।

तक्रपिंड इमे वृष्णा वृंहणा बलवर्द्धनाः ॥ ३१ ॥

गुरवः श्लेष्मला हृद्या वातपित्तविनाशनाः ।

दीतामीनां विनिद्राणां विद्रधौ चाभिषूजिताः ॥ ३२ ॥

मुखशोषतृष्णादाहरक्तपित्तज्वरप्रणुत् ।

लघुर्बलकरो रुच्यो मोरटः स्यात्सितायुतः ॥ ३३ ॥

संतानिका गुरुः शीता वृष्णा पित्तास्ववातनुत् ।

तर्पणी वृंहणी स्निग्धा बलासबलशुक्ला ॥ ३४ ॥

खंडेन सहितं दुग्धं कफकृत्पवनापहम् ।

सितासितोपलायुक्तं शुक्रलं त्रिमलापहम् ॥ ३५ ॥

रात्रौ चन्द्रगुणाधिक्याद्वच्यायामाकरणात्था ।

प्राभातिकं तदा प्रायः प्रादोषाद्गुरु शीतलम् ॥ ३६ ॥

दिवाकरकराधाताद्वयायामानिलसेवनात् ।

प्राभातिका तु प्रादोषं लघुवातकफापहम् ॥ ३७ ॥

वृष्यं वृंहणमग्निदीपनकरं पूर्वाह्नीतं पयो

मध्याह्ने बलदायकं कफहरं पित्तापहं दीपनम् ।

बालये वह्निकरं ततो बलकरं वृद्धेषु रेतोवहं

रात्रौ पथ्यमनेकदोषशमनं क्षीरं सदा सेव्यते ॥ ३८ ॥

वदंति पेयं निशि केवलं पयो

भोज्यं न तेनेह सहौदनादिकम् ।

भवेदजीर्णं यदि न स्वपेत्विशि

क्षीरस्य पीतस्य न शेषमुत्सृजेत् ॥ ३९ ॥

विदाहीन्यन्नपानानि दिवा भुक्ते हि यन्नरः ।

तद्विदाहप्रशांत्यर्थं रात्रौ क्षीरं सदा पिवेत् ॥ ४० ॥

दीपानले कृशे पुंसि बाले वृद्धे पयःप्रिये ।

मतं हिततमं दुर्गं सद्यः शुक्रकरं यतः ॥ ४१ ॥

क्षीरं गव्यमथाजं वा कोष्णं दंडाहतं पिवेत् ।

लघु वृष्यं ज्वरहरं वातपित्तकफापहम् ॥ ४२ ॥

गोदुग्धप्रभवं किं वा छागीदुग्धसमुद्धवम् ।

भवेदत्तिव्रिदोषघ्नं रोचनं बलवर्द्धनम् ॥ ४३ ॥

वह्निवृद्धिकरं वृष्यं सद्यस्त्रितिकरं लघु ।

अतिसारेऽग्निमांद्ये च ज्वरेऽजीर्णे प्रशस्यते ॥ ४४ ॥

निंदितम् ।

विवर्णं विरसं चाम्लं दुर्गंधं प्रथितं पयः ।

दर्जयेदम्ललवणयुक्तं दुद्धचादिहृद्यतः ॥ ४५ ॥

इति दुग्धवर्गः ।

अम्लेष्वामलकं पथ्यं शर्करा मधुरेषु च । पटोलं तिक्कर्वर्गेषु त्रिकटुकेषु मही-
पवम् ॥ १ ॥ कपायेष्वभया प्रोक्ता लवणेषु च सैन्यवम् । वैदलानां तथा मापाः
शाकेषु चुनिपञ्चम् ॥ २ ॥ तांवूलं नैव सेवेत क्षीरं पीत्वा तु मानवः । याव-
तःस्वदते क्षीरं मुहूर्ताद्वा प्रशस्यते ॥ ३ ॥

दधिवर्गः ।

दधि ।

दध्युष्णं दीपनं स्निग्धं कषायानुरसं गुरु ।
पाकेऽम्लं श्वासपित्तान्तशोथमेदःकफेप्रदम् ॥ १ ॥
मूवकृच्छे प्रतिश्याये शीतगे विषमज्वरे ।
अतिसारेऽरुचौ काश्यें शस्यते बलशुक्रकृत् ॥ २ ॥

तद्देदः ।

आदौ मंदं ततः स्वादु स्वाद्वम्लं च ततः परम् ।
अम्लं चतुर्थमत्यम्लं पंचमं दधि पंचधा ॥ ३ ॥
मंदं दुग्धवदव्यक्तरसं किञ्चिद्विधनं भवेत् ।
मंदं स्यात्सृष्टविष्मूत्रदोषत्रयविदाहकृत् ॥ ४ ॥
यत्सम्यग्वनतां यातं व्यक्तस्वादुरसं भवेत् ।
अव्यक्ताम्लरसं ततु स्वादु विज्ञेस्वदाहतम् ॥ ५ ॥
स्वादु स्यादत्यभिष्यांदि वृष्यं मेदःकफावहम् ।
वातघ्नं मधुरं पाके रक्तपित्रसादनम् ॥ ६ ॥
स्वाद्वम्लं सांद्रं मधुरं कषायानुरसं भवेत् ।
स्वाद्वम्लस्य गुणा ज्ञेया सामान्यदधिवज्जनैः ॥ ७ ॥
यत्तिरोहितमाधुर्यर्यं व्यक्ताम्लत्वं तदम्लकम् ।
अम्लं तु दीपनं पित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥ ८ ॥
तदत्यम्लं दंतरोमहर्षकंठादिदाहकृत् ।
अत्यम्लं दीपनं रक्तवातपित्तकरं परम् ॥ ९ ॥
गव्यं दधि विशेषण स्वाद्वम्लं च रुचिप्रदम् ।
पवित्रं दीपनं हृद्यं पुण्डिकृत्पवनापहम् ॥ १० ॥

उक्तं दश्मामशेषाणां मध्ये गव्यं गुणाधिकम् ।
 माहिषं दधि सुस्थिरं श्लेष्मलं वातपित्तनुत् ॥ ११ ॥
 स्वादु पाकमभिप्यांदि वृष्यं गुर्वस्वदूषकम् ।
 आजं दध्युप्णकं ग्राहि लघु दोषवयापहम् ॥ १२ ॥
 शस्यते श्वासकासर्शःक्षयकाश्येषु दीपनम् ।
 पक्कद्वुग्धभवं रुच्यं दधि स्थिरं गुणोत्तमम् ॥ १३ ॥
 पित्तानिलापहं सर्वधात्वग्रिबलवर्ज्ञनम् ।
 असारं दधि संग्राहि शीतलं वातलं लघु ॥ १४ ॥
 विष्टुभि दीपनं रुच्यं ग्रहणीरोगनाशनम् ।
 गालितं दधि सुस्थिरं व्यातघं कफकृद्धुरु ॥ १५ ॥
 वलपुष्टिकरं रुच्यं मधुरं नातिपित्तकृत् ।
 सशर्करं दधि श्रेष्ठं तृष्णायित्तास्वजित परम् ॥ १६ ॥
 सगुडं वातलुद् वृष्यं वृंहणं तर्पणं गुरु ।
 नै नक्तं दधि भुंजीत नचाप्यवृतशर्करम् ॥ १७ ॥
 नासुहसूपं नाक्षीद्रं नोप्णैर्नामिलकैर्विना ।
 शस्यते दधि नो रात्रौ शस्तं चांबुवृतान्विम् ॥ १८ ॥
 रक्तपित्तकफोत्थेषु विकारेषु च नैव तत् ।
 हेमंते शिशरे चापि वर्षासु दधि शस्यते ॥ १९ ॥
 शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु प्रायशस्तद्विगर्हितम् ।
 ज्वरास्त्रक्षपित्तवीसर्पकुष्ठपांडवामयभ्रमान् ॥ २० ॥
 प्राप्नुयात्कामलां चोग्रां विधिं हित्वा दधिप्रियः ।
 दग्धस्तपारि यो भागो धनः स्त्रेहसमन्वितः ॥ २१ ॥
 स लोके सर इत्युक्तो दग्धो मंडस्तु मस्त्वाति ।

१ रात्रौ दधि न भुंजीत, भुंजीत चेत्तदा अवृतशर्करमसुद्धसूपमक्षीद्रमुण्डं विनामलकं च दधि न भुंजीत । तेन वृतशर्करादियुक्तं रात्रावपि दधि भुंजीतव्यर्थः ॥ २ अंबुवृतान्वितमपि ॥

सरः स्वादुर्गुर्हर्वप्यो वातवह्निप्रणाशनः ॥ २२ ॥

साम्लो वस्तिप्रशमनः पित्तश्लेष्मविवर्द्धनः ।

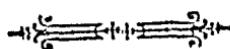
मस्तु कूमहरं बल्यं लघुभक्ताभिलाषकृत् ॥ २३ ॥

स्नोतोविशोधनं ह्लादि कफतृष्णानिलापहम् ।

अवृष्टं प्रीणनं शीघ्रं भिनति मलसंचयम् ॥ २४ ॥

इति दधिर्वर्गः ।

तक्रवर्गः ।



घोलं तु मथितं तक्रमुदश्विच्छच्छिकापि च ।

ससरं निर्जलं घोलं मथितं त्वसरोदकम् ॥ १ ॥

तक्रं पादजलं प्रोक्लमुदश्विच्छवर्द्धवारिकम् ।

छच्छिका सारहीना स्थात्स्वच्छा प्रचुरवारिका ॥ २ ॥

घोलं तु शर्करायुक्तं गुणेज्ञैर्यं रसालवत् ।

वातपित्तहरं ह्लादि मथितं कफपित्तनुत् ॥ ३ ॥

तक्रं ग्राहिकषायाम्लं स्वादुपाकरसं लघु ।

बीययोष्णं दीपनं वृष्टं प्रीणनं वातनाशनम् ॥ ४ ॥

ग्रहण्यादिमतां पथ्यं भवेत्संग्राहि लाघवात् ।

किंचित्स्वादुविपाकित्वान्नं च पित्तप्रकोपनम् ॥ ५ ॥

कषायोष्णं दीपनं वृष्टं प्रीणनं वातनाशनम् ।

कषायोष्णं विकाशित्वाद्रौक्ष्याच्चापि कफापहम् ॥ ६ ॥

न तक्रसेवी व्यथते कदाचिन्न तक्रदग्धाः प्रभवन्ति रोगाः ।

यथा सुराणाममृतं सुखाय तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः ॥ ७ ॥

अम्लेन वातं मधुरेण पित्तं कफं कषायेण निहंति सद्याः ।

उद्धवित्कफकूद्धलयं आमद्वं परमं मतम् ॥ ८ ॥

१ दै० भा० छाह, मठा, लस्सी । बं० भा० घोल । फा० मस्त, मठा ।

२ बटरमिल्क, Butter milk.

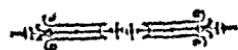
छच्छिका शीतला लघ्वी पित्तश्रमतृषा हरी ।
वातनुत्कफकृत्सा तु दीपनी लवृणान्विता ॥ ९ ॥

उद्धृतधृतस्तोकोद्धृतधृतानुद्धृतधृतानि ।

समुद्धृतं धृतं तत्रं पथ्यं लघु विशेषतः ।
स्तोकोद्धृतधृतं तस्माद् गुरु वृष्यं कफावहम् ॥ १० ॥
अनुद्धृतधृतं सांद्रं गुरु पुष्टिकफप्रदम् ।
घातेम्लं शस्यते तत्रं शुंठीसेंधवसंयुतम् ॥ ११ ॥
पित्ते स्वादुसितायुक्तं सव्योषमधिकं कफे ।
हिंगु जीरयुतं घोलं सैंधवेन च संयुतम् ॥ १२ ॥
भवेदतीव वातन्नमशेंतीसारहतपरम् ।
सुरुच्यं पुष्टिदं वल्यं वस्तिशूलविनाशनम् ॥ १३ ॥
मृतकृच्छे तु सगुडं पांडुरोगे सचित्रकम् ।
तत्रमामं कफं कोष्ठे हंति कंठे करोति च ॥ १४ ॥
पीनसवासकासादौ पक्वमेव प्रयुज्यते ।
शीतकालेऽग्निमांद्ये च तथा वातामयेषु च ॥ १५ ॥
अरुचौ स्नोतसां रोधे तत्रं स्यादमृतोपमम् ।
ततु हंति गरच्छर्दिप्रसेकविषमञ्चरान् ॥ १६ ॥
षांडुमेदोग्रहणशेंमृतग्रहभगंदरान् ।
मेहं गुलममतीसारं शूलझीहोद्रारुचीः ॥ १७ ॥
श्वित्रकोष्ठगतव्याधीन् छुष्टशोथतृष्णाकृमीन् ।
नैव तत्रं क्षते दद्यान्नोष्णकाले न दुर्बले ॥ १८ ॥
न मृच्छीन्नमदाहेषु न रोगे रक्तपित्तजे ।
यान्युक्तानि दधीन्यष्टौ तद्गुणं तत्रमादिशेत् ॥ १९ ॥

इति तत्रवर्गः ।

नवनीतवर्गः ।



भ्रेक्षणं सर्जे हैयंगवीनं नवनीतिकम् ।

नवनीतं हितं गव्यं वृष्यं वर्णवलाग्निकृत् ।

संप्राहि वातपित्तासृक्षयाशार्दितकासहत् ॥ १ ॥

तद्वित बालके वृद्धे विशेषादमृतं शिशोः ।

नवनीतं महिष्यास्तु वातश्लेष्मकरं गुरु ॥ २ ॥

दाहपित्तश्रमहरं मेदःशुक्रविवर्द्धनम् ।

दुग्धोत्थं नवनीतं तु चक्षुष्यं रक्तपित्तनुत् ॥ ३ ॥

वृष्यं बल्यमतिस्त्रिग्धं मधुरं ग्राहि शीतलम् ।

नवनीतं तु सद्यस्कं स्वादु ग्राहि हिमं लघु ॥ ४ ॥

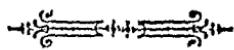
मेध्यं किंचित्कषायाम्लमीषतक्रांशसंक्रमात् ।

सक्षारकटुकाम्लत्वाच्छर्वर्षःकुष्ठकारकम् ॥ ५ ॥

श्लेष्मलं गुरु मेदस्यं नवनीतं चिरंतनम् ॥ ६ ॥

इति नवनीतवर्गः ।

घृतवर्गः ।



घृतमाज्यं हविः सर्पिः कथ्यते तद्गुणा अथ ।

घृतं रसायनं स्वादु चक्षुष्यं वह्निदीपनम् ॥ १ ॥

शीतबीर्यं विषालक्ष्मीपापपित्तानिलापहम् ।

अल्पाभिष्यंदि कांत्योजस्तेजोलावण्यघुडिकृत् ॥ २ ॥

१ दे० भा० मक्खन । ब० भा० माखन ननी । फा० मस्का । इ० बटर । Butter, आजं त्रिदोपशमनं नवतीतं तयोर्वरम् ॥ २ दे० भा० धी । धि । ब्रं० भा० घृत । धी । फा० रोगनजरद । इ० लोरीफाईड । बटर । Lorified Butter.

स्वरसमृतिकरं मेध्यमायुष्यं बलकृद्गुरु ।
 उदावर्तज्ज्वरोन्मादशूलानाहव्रणान् हरेत् ॥ ३ ॥
 स्निग्धं कफकरं वृष्यं क्षयवीसर्परक्लनुत् ।
 गव्यं वृतं विशेषेण चक्षुष्यं वृष्यमन्निकृत् ॥ ४ ॥
 स्वादुपाकरसं शीतं वातपित्तकफापहम् ।
 मेधालावण्यकांत्योजस्तेजोवृद्धिकरं परम् ॥ ५ ॥
 अलक्ष्मीपापरक्षोद्धं वयसः स्थापनं गुरु ।
 बल्यं पवित्रमायुष्यं सुमंगल्यं रसायनम् ॥ ६ ॥
 सुगंधं रोचकं चाहु सर्वाञ्येषु गुणाधिकम् ।
 माहिषं तु वृतं स्वादु पित्तरक्तानिलापहम् ॥ ७ ॥
 शीतलं श्लेष्मलं वृष्यं गुरु स्वादु विपच्यते ।
 आजमाज्यं करोत्यग्निं चक्षुष्यं बलवर्द्धनम् ॥ ८ ॥
 कासे श्वासे क्षये चापि हितं पाके भवेत्कटु ।
 ओष्ठं कटु वृतं पाके शोषक्रिमिविषापहम् ॥ ९ ॥
 दीपनं कफबातद्वं कुष्ठगुल्मोदरापहम् ।
 पाके लघ्वाविकं सर्पिः सर्वरोगविनाशनम् ॥ १० ॥
 वृद्धिं करोति चास्थीनामश्मरीशकरापहम् ।
 चक्षुष्यमन्निसंधुक्ष्यं वातदोषनिवारणम् ॥ ११ ॥
 कफेऽनिले योनिदोषे पित्ते रक्ते च तद्वितम् ।
 चक्षुष्यमाज्यं स्त्रीणां वा सर्पिः स्यादमृतोपमम् ॥ १२ ॥
 वृद्धिं करोति देहाग्रेल्वु पाके विषापहम् ।
 तर्पणं नेत्ररोगवनं दाहलुद्वडवावृतम् ॥ १३ ॥
 वृतं दुग्धभवं ग्राहि शीतलं नेत्ररोगहत् ।
 निहांति पित्तदाहास्वमदमृद्धाभ्रमानिलान् ॥ १४ ॥
 हविर्द्विस्तनदुग्धोत्थं तत्स्याद्यंगवीनकम् ।
 हेयंगवीनं चक्षुष्यं दीपनं रुद्विकृत्परम् ॥ १५ ॥

बलकृद्वृंहणं वृष्णं विशेषाज्ज्वरनाशनम् ।
 वर्षादूर्ध्वं भवेदाज्यं पुराणं तत्रिदोषनुत् ॥ १६ ॥
 मूर्छाकुष्ठविषोन्मादापस्मारतिमिरापहम् ।
 यथायथाखिलं सर्पिः पुराणमधिकं भवेत् ॥ १७ ॥
 तथातथा गुणैः स्वैः स्वैराधिकं तदुदाहतम् ।
 योजयेन्नवभेवाज्यं भोजने तर्पणे श्रमे ॥ १८ ॥
 बलक्षये पांडुरोगे कामलानेन्नरोगयोः ।
 राजयक्षमाणि बाले च वृष्टे श्लेष्मकृते गदे ॥ १९ ॥
 रोगे सामे विषूच्यां च विवर्धे च मदात्यये ।
 ज्वरे च द्रवने यंदे न सर्पिर्बहु भन्यते ॥ २० ॥

इति धृतवर्गः ।

सूत्रवर्गः ।

गोमूत्रस् ।

गोमूत्रं कहु तीक्ष्णोष्णं क्षारं तित्तकफापहम् ।
 लघ्वमिदीपनं मेधर्यं दित्तकृत्यकवातहत् ॥ १ ॥
 शूलशुल्मोदरानाहकंडवाक्षिशुखरोगजित् ।
 किलासगदवातामवस्तिरुकुष्ठनाशनम् ॥ २ ॥
 कासश्वासापहं शोथकामलापांडुरोगहत् ॥ ३ ॥
 कंडूकिलासयुदशूलशुखाक्षिरोगान् ।
 शुल्मातिसारमहदामयमूत्ररोधान् ।
 कासं सकुष्ठजठरक्रिमिपांडुरोगान् ।
 गोमूत्रमेकमपि पीतमपाकरोति ॥ ४ ॥

१ दे० भा० मूत्र, पेशाव । वं० भा० मुत, चैता, प्रशाव । फा० वौल
 इ० युरीन् । urine.

सर्वेष्वपि च सूत्रेषु गोमूत्रं गुणतोधिकम् ॥ ५ ॥
 अतो विशेषात्कथितं सूत्रं गोमूत्रमुच्यते ।
 क्षीहोदरश्वासकासशोथवर्चोग्रहापहम् ॥ ६ ॥
 शूलयुलमरुजानाहकामलापांडुरोगहत् ।
 कपायं तिक्ततीक्ष्णं च पूरणात्कर्णशूलनुत् ॥ ७ ॥
 नरमूत्रं गरं हंति सेवितं तद्रसायनम् ।
 रक्तपामाहरं तीक्ष्णं सक्षारं लवणं स्मृतम् ॥ ८ ॥
 गोजाविमहिषीणां तु छीणां मूत्रं प्रशस्यते ।
 खरोष्ट्रेभनराश्वानां पुंसां सूत्रं हितं स्मृतम् ॥ ९ ॥

इति मूत्रवर्गः ।

तैलवर्गः ।

तिलादिस्त्रिग्धवस्तूनां स्तेहस्तैलसुदाहतम् ।
 तत्तु वातहरं सर्वं विशेषात्तिलसंभवम् ॥ १ ॥
 तिलतैलं गुरु स्थैर्यर्यवलवर्णकरं सरम् ।
 वृप्त्यं चिकाशि विशदं मधुरं रसपाकयोः ॥ २ ॥
 सूक्ष्मं कषायालुरसं तिक्तं वातकफापहम् ।
 वीर्येणोप्पणं हिमं स्पर्शे वृंहणं रक्तपित्तकृत् ॥ ३ ॥
 लेखनं वद्धविणमूत्रं गर्भाशयविशेषधनम् ।
 दीपनं दुद्धिदं मेध्यं व्यवायि व्रणमेहनुत् ॥ ४ ॥
 श्रोत्रयोनिशिरःशूलनाशनं लद्युताकरम् ।
 त्वच्यं केश्यं च चक्षुष्यमभ्यंगे भोजनेन्यथा ॥ ५ ॥
 छिन्नमिन्नच्युतोत्पिष्टमयितक्षतपिच्चिते ।
 भग्रस्फुटितविद्धायिदग्धविश्लिष्टदारिते ॥ ६ ॥

१ दे० भा० तेल । वं० भा० तल, तैल । फा० रोगनकुंजद । इ०
 आइङ ०।।

तथाभिहतनिर्भुम्भूगव्याघ्रादिविक्षते ।
 वस्तौ पानेऽन्नसंस्कारे नस्ये कर्णाक्षिपूरणे ॥ ७ ॥
 सेकाभ्यंगावगाहेषु तिलतैलं प्रशस्यते ।
 वृत्तमब्दात्परं पक्वं हीनवीयर्थं प्रजायते ॥ ८ ॥
 तैलं पक्वमपक्वं वा चिरस्थायि गुणाधिकम् ।
 दीपनं सार्षपं तैलं कटुपाकरसं लघु ॥ ९ ॥
 लेखनं स्पर्शवीयर्थोष्णं तीक्ष्णं पित्तास्वदूषकम् ।
 कफमेदोनिलाशोऽग्नं शिरःकर्णामयापहम् ॥ १० ॥
 कंडुकुष्ठकृमिश्वित्रकोठदुष्टक्रिमिप्रणुत् ।
 तद्वद्राजिकयोस्तैलं विशेषान्मूत्रकृच्छ्रकृत् ॥ ११ ॥
 तीक्ष्णोष्णं तुवरीतैलं लघु ग्राहि कफास्वजित् ।
 वहिकृद्विषहत्कंडुकुष्ठकोठक्रिमिप्रणुत् ॥ १२ ॥
 मेदोदोषापहं चापि ब्रणशोथहरं परम् ।
 अतसीतैलमाग्नेयं स्त्रिग्धोष्णं कफपित्तकृत् ॥ १३ ॥
 कटुपाकमचक्षुष्यं बल्यं वातहरं गरु ।
 मलकृद्रसतः स्वादु ग्राहि त्वग्दोषहद्वनम् ॥ १४ ॥
 वस्तौ पाने तथाभ्यंगे नस्ये कर्णस्यपूरणे ।
 अदुपानविधौ चापि प्रयोज्यं वातशांतये ॥ १५ ॥
 कुसुंभतैलमम्लं स्यादुष्णं गुरु विदाहि च ।
 चक्षुभ्यामहितं वृष्यं रक्तपित्तकफप्रदम् ॥ १६ ॥

१ दे० भा० राई, कृष्ण राई, रक्तराई । ननु वृंहणलेखनयोः कथं सामानाधिकरण्यमित्याह । रुक्षादिदुष्टपवनः स्रोतः संकोचयेद्यतः । रसोऽसम्यवहन् काशर्यं कुर्याद्रक्ताद्यवर्द्धयन् ॥ १ ॥ तेषु प्रवेष्टुं सरतासौक्ष्यस्त्रिग्धत्वमार्दवैः । तैलक्षमं रसं नेतु कृशानां तेन वृंहणम् ॥ २ ॥ व्यवायसूक्ष्मतीक्ष्णेष्णसरत्वैर्मेदसः क्षयम् । शनैः प्रकुरुते तैलं तेन लेखनमीरितम् ॥ ३ ॥ द्रुतं पुरीषं बन्धाति सखलितं तत्प्रतर्वयेत् । ग्राहकं सारकं चापि तेन तैलमुदीरितम् ॥ ४ ॥

तैलं तु खसवीजानां वल्यं वृष्यं गुरु स्मृतम् ।
वातहृत्कफहच्छीतं स्वादुपाकरसं च तत् ॥ १७ ॥
एरंडतैलं तीक्ष्णोण्णं दीपनं पिच्छिलं गुरु ।
वृष्यं त्वच्यं वयःस्थायि मेदःकांतिबलप्रदम् ॥ १८ ॥
कषायानुरसं सूक्ष्मं योनिशुक्रविशोधनम् ।
विस्तं स्वादु रसे पाके सतिक्तं कटुकं सरम् ॥ १९ ॥
विषमज्वरहद्वोगपृष्ठगुह्यादिश्वलतुत् ।
हंति वातोद्रानाहगुलमाष्टिलाकटिप्रहान् ॥ २० ॥
वातशोणितविड्वंधवधमशोथामविद्रधीन् ।
आमवातगजेद्वस्य शरीरवनचारिणः ॥ २१ ॥
एक एव निहंतायमेरंडस्तेहकेसरी ।
तैलं सर्जरसोद्भूतं विस्फोटव्रणनाशनम् ॥ २२ ॥
कुष्ठपामाकृमिहरं वातछेष्मामयापहम् ।
तैलं स्वयोनिगुणकृद्वाग्भेटनाखिलं स्मृतम् ॥ २३ ॥
अतः शेषस्य तैलस्य गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिवत् ।

मृदुवर्गः ।

३८

मधु माक्षिकमाध्वीकक्षोद्रसारस्वमीरितम् ।
 मक्षिकावरटीभूंगवांतं पुष्परसोद्भवम् ॥ ३ ॥
 मधु शीतं लघु स्वादु स्फङ्गं प्राहि विलेखनम् ।
 चक्षुप्यं दीपनं स्वर्यं ब्रणशोधनरोपणम् ॥ २ ॥
 सौकुमार्यकरं सूक्ष्मं परं स्रोतोविशोधनम् ।
 कपायानुरसं हादि प्रसादजनकं परम् ॥ ३ ॥

੧ ਦੇਂਮਾਂਵਹਤ, ਸਥਿ | ਵੰਮਾਂਸਥਿ, ਸੌ | ਫਾਂਸ਼ਾਹਦ, ਅਗਵੀਨ | ਝੁਂਹਨੀ |

वर्ण्यं भेदाकरं वृष्यं विशद् रोचनं हरेत् ।
 कुष्टार्थः कासपित्तास्त्रकफमेहक्षमक्रिमीत् ॥ ४ ॥
 मेदस्तृष्णावसिध्वासाहिक्षातीसारविडग्रहान् ।
 दाहक्षतक्षयास्तं तु योगवाह्यल्पवातलम् ॥ ५ ॥
 माक्षिकं भ्रामरं क्षौद्रं पौत्रिकं छात्रमित्यपि ।
 आर्च्यमौदालकं दालमित्यष्टौ मधुजातयः ॥ ६ ॥
 मक्षिकाः पिंगवर्णस्तु महत्यो मधुमक्षिकाः ।
 ताभिः कृतं तैलवर्णं माक्षिकं परिकीर्तितम् ॥ ७ ॥
 माक्षिकं मधुषु श्रेष्ठं नेत्रामर्यहरं लघु ।
 कामलार्थः क्षतश्वासकासक्षयविनाशनम् ॥ ८ ॥
 किंचित्सूक्ष्मैः प्रसिद्धेभ्यः षट्पदेभ्योऽलिभिश्चित्तम् ।
 निर्मलं स्फटिकाभं यत्तन्मधु भ्रामरं स्मृतम् ॥ ९ ॥
 भ्रामरं रक्तपित्तघ्नं सूत्रजाडचकरं गुरु ।
 स्वादुपाकमभिष्यन्दि विशेषात्पिच्छिलं हिमम् ॥ १० ॥
 मक्षिकाः कपिलाः सूक्ष्माः क्षुद्राख्यास्तत्कृतं मधु ।
 मुनिभिः क्षौद्रमित्युक्तं तद्वर्णात्कपिलं भवेत् ॥ ११ ॥
 गुणैर्माक्षिकवत् क्षौद्रं विशेषान्मेहनाशनम् ॥ १२ ॥
 कृष्णा या मशकोपमा लघुतराः प्रायो महापिंडका
 वधनानास्तहकोटरांतरगताः पुष्पासवं कुर्वते ।
 तास्तज्ज्ञैरिह पुत्रिका निगदिताः ताभिः कृतं सर्पिषा
 तुल्यं यन्मधु तद्वनेचरजनैः संकीर्तितं पौत्रिकम् ॥ १३ ॥
 पौत्रिकं मधु रुक्षोणं पित्तदाहास्त्रवातकृत् ॥ १४ ॥
 विदाहि मैहहच्छस्तं ग्रन्थ्यादिक्षतशोथिषु ।
 वरटाः कपिलाः पीताः प्रायो हिमवतो वने ॥ १५ ॥
 कुर्वति छत्रकाकारं तज्जं छात्रं मधु स्मृतम् ।
 छात्रं कपिलपीतं स्यात् पिच्छिलं शीतलं गुरु ॥ १६ ॥
 स्वादुपाकं कृमिश्वित्ररक्तपित्तप्रमेहजित् ।

भ्रमतृण्मोहविषहर्तर्पणं च गुणाधिकम् ॥ १७ ॥

मधूकवृक्षान्निर्यासं जरत्कार्बश्रिमोद्भवाः ।

स्ववंत्यार्थं तदाख्यातं श्वैतकं मालवे पुनः ॥ १८ ॥

तीक्ष्णतुंडास्तु याः पीता मक्षिकाः षट्पदोपमाः ।

अर्धास्तात्तत्कृतं यत्तु तदार्थमितरे जगुः ॥ १९ ॥

आर्थं मध्वतिचक्षुष्यं कफपित्तहरं परम् ।

कषायं कटुकं पाके तिक्तं च बलपुष्टिकृत ॥ २० ॥

प्रायो वंलमीकमध्यस्थाः कपिलाः स्वल्पकीटकाः ।

कुर्वति कपिलं स्वलं तत्स्यादौदालकं मधु ॥ २१ ॥

ओदालकं रुचिकरं स्वर्थ्यं कुष्ठविषापहम् ।

कषायमुण्णमम्लं च कटुपाकं च पित्तकृत ॥ २२ ॥

संश्रुत्य पतितं पुष्पाद्यत्तु पत्रोपरि स्थितम् ।

मधुराम्लकषायं च तदालं मधु कीर्तिम् ॥ २३ ॥

दालं मधु लघु प्रोक्तं दीपनीयं कफापहम् ।

कषायालुरसं रुक्षं रुच्यं प्रच्छर्दिं मेहजित् ॥ २४ ॥

अधिकं मधुरं स्त्रिगंधं वृंहणं गुंह भारिकम् ।

नवं मधु भवेत्पुष्टये नातिश्लेष्महरं सरम् ॥ २५ ॥

पुराणं ग्राहकं रुक्षं मेदोन्नतिलेखनम् ।

मधुनः शर्करायाश्च गुडस्यापि विशेषता ॥ २६ ॥

एकसंवत्सरेऽतीते पुराणत्वं स्मृतं वृथैः ।

विषपुष्पादपि रसं सविषा भ्रमरादयः ॥ २७ ॥

गृहीत्वा मधु कुर्वति तच्छीते गुणवन्मधु ।

विषान्वयात्तदुप्पणं तु इत्येणोप्पणेन वा सह ॥ २८ ॥

उप्पार्तस्योप्पणकाले च स्मृतं विषसमं मधु ।

मैयनं तु मधूच्छिष्टं मधुशेषं च सिक्षयकम् ॥ २९ ॥

१ लघु पाके, गुह भारिक तुलितम् । २ द० मा० मोम । व० मा० मोम ।
का० मोमे जर्द । इ० एलोवेक्स ।

मध्वाधारो मदनकं मधूषितमपि स्मृतम् ।
मदनं तु मृदु स्त्रिगर्थं भूतव्यं ब्रंणरोपणम् ॥ ३० ॥
भग्नसंधानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् ।

इति मधुवर्गः ।

इक्षुवर्गः ।

इक्षुः ।

इक्षुर्दीर्घच्छदः प्रोक्तस्तथा भूमिरसोऽपि च ।
गुडमूलोऽसिपत्रश्च तथा मधुतृणः स्मृतः ॥ १ ॥
इक्षवो रक्तपित्तव्या बल्या वृद्ध्याः कफप्रदाः ।
स्वादुपाकरसाः स्त्रिग्धा गुरवो मूत्रला हिमाः ॥ २ ॥
पौँडुको भीरुकव्यापि वंशकः शतपोरकः ।
कांतारस्तापसेक्षुश्च काष्टेक्षुः सूचिपत्रकः ॥ ३ ॥
नैपालो दीर्घपत्रश्च नीलपोरोऽप्यकोशकृत् ।
इत्येता जातयस्तेषां कथयामि गुणानपि ॥ ४ ॥
वातपित्तप्रशमनो मधुरो रसपाकयोः ।
सुशीतो वृंहणो बल्यः पौँडुको भीरुकस्तथा ॥ ५ ॥
कोशकारो गुरुः शीतो रक्तपित्तक्षयापहः ।
कांतरेक्षुर्गुरुवृद्ध्यः श्लेष्मलो वृंहणः सरः ॥ ६ ॥
दीर्घपोरः सुकठिनः सक्षारो वंशकः स्मृतः ।
शतपोरो भवेत्किञ्चित्कोशकारगुणान्वितः ॥ ७ ॥
विशेषात्किञ्चिद्वृष्णश्च सक्षारः पवनापहः ।
तापसेक्षुर्भवेन्मृद्वी मधुरा श्लेष्मकारिणी ॥ ८ ॥

१ दे० भा० गन्ना । गंडा । वं० भा० आक । कुशिर । फा० नेशकर

ई० शुगरके न sugar cane.

काषेक्षुः ।

एवंगुणेस्तु काषेक्षुः स तु वातप्रकोपनः ॥ ९ ॥

सूचीपत्रो नीलपोरो नैपालो दीर्घपत्रकः ।

वातलाः कफपित्तन्नाः सकषाया विदाहिनः ॥ १० ॥

मैनोगुप्ता वातहरी तृष्णामयविनाशिनी ।

सुशीता मधुरातीव रक्तपित्तप्रणाशिनी ॥ ११ ॥

बाल इक्षुः कफं कुर्यान्मेदोमेहकरश्च सः ।

युवा तु वातहत्स्वादुरीषतीक्षणश्च पित्तनुत् ॥ १२ ॥

रक्तपित्तहरो वृद्धः क्षयहृदलवीर्यकृत् ।

मूले तु मधुरोऽत्यर्थं मध्येऽपि मधुरः स्मृतः ॥ १३ ॥

अथ्रे ग्रंथिषु विक्षेय इक्षुः पटुरसो जैनः ।

देतनिष्पीडितस्येक्षो रसः पित्तास्त्रनाशनः ॥ १४ ॥

शक्तरासमवीर्यः स्यादविदाही कफप्रदः ।

मूलाग्रजं तु ग्रंथादिपीडनान्मलसंकरात् ॥ १५ ॥

किञ्चित्कालविधृत्या च विकृतिं याति ग्रांत्रिकः ।

तस्माद्विदाही विष्टुभी गुरुः स्याद्यांत्रिको रसः ॥ १६ ॥

रसः पर्युषितो नेष्टो ह्यम्लो वातापहो गुरुः ।

कफपित्तकरः शोषी भैदनश्चातिमूत्रलः ॥ १७ ॥

पक्षो रसो गुरुः स्तिर्गधः सतीक्षणः कफवातनुत् ।

गुलमानाहप्रशमनः किञ्चित्पित्तकरः स्मृतः ॥ १८ ॥

इक्षोर्विकारारास्त्वद्वाहसूच्छीपित्तास्त्रनाशनाः ।

गुरवो मधुरा बल्याः स्तिर्गधा वातहराः सराः ॥ १९ ॥

वृप्या मोहहराः शीता वृंहणा विषहारिणः ।

फाणितम् ।

इक्षो रसस्तु यः पक्षः किञ्चिद्वाढो वहुद्रवः ॥ २० ॥

१ दे० भा० काठागना २ दे० भा० कालापोडा । ३ दे० भा० मुसारी मुद्दारी ।

४ इनुविकाराः । इक्षो रसस्य समलं ग्रंथाद्वयंविमलामलाः । विकाराः फाणित-
गुडमस्यांडीखडशर्कराः ॥ ५ दे० भा० राव । डरका । छोवा ॥

स एवेक्षुविकारेषु ख्यातः फाणितसंज्ञया ।

फाणितं गुर्वभिष्यन्दि वृंहणं कफशुक्रकृत् ॥ २१ ॥

वातपित्तश्रमान्हंति मूत्रवस्तिविशोधनम् ।

इक्षो रसो यः संपक्तो वनः किंचिद्वान्वितः ॥ २२ ॥

मंदं यत्स्यंदते तस्मान्सत्स्यंडीति निगद्यते ।

मत्स्यंडी भेदनी बल्या लघ्वी पित्तानिलापहा ॥ २३ ॥

मधुरा वृंहणी वृष्णा रक्तदोषापहा स्मृता ।

गुडम् ।

इक्षो रसो यः संपक्तो जायते लोष्टवृद्धम् ॥ २४ ॥

स गुडो गौडदेशो तु मत्स्यंडचेव गुडो मतः ।

गुडो वृष्णो गुरुः स्त्रिग्धो वातग्नो मूत्रशोधनः ॥ २५ ॥

नातिपित्तहरो मेदः कफक्रिमिवलप्रदः ।

गुडो जीर्णो लघुः पथ्योऽनभिष्यन्दिपुष्टिकृत् ॥ २६ ॥

पित्तग्नो मधुरो वृष्णो वातग्नोऽसूक्प्रसादनः ।

गुडो नवः कफश्वासकासकृमिकरोऽग्निकृत् ॥ २७ ॥

श्लेष्माणमाशु विनिहंति सदार्द्रकेण

पित्तं निहंति च तदेव हरीतकीभिः ।

शुठ्या समं हरति वातमणेषमित्यं

दोषत्रयक्षयकराय नमो गुडाय ॥ २८ ॥

खंडम् ।

खंडं तु मधुरं वृष्णं चक्षुष्यं वृंहणं हिमम् ।

वातपित्तहरं स्त्रिग्धं बल्यं वांतिहंरं परम् ॥ २९ ॥

१ दे० भा० गुड । वं० भा० गुड । फा० कंदेस्याह । इ० दीक्षलमौला-
सीस । नामानि—गुडः स्यादिक्षुसारस्तु मधुरो रसपाकजः । शिशुप्रियः सितादि:
स्यादरुणो रसजः स्मृतः ॥ १ ॥ २ दे० भा० खंड । वं० भा० खंड । फा०
सक्रर । इ० शुगार । (तुरंजबीन) यवासर्करा शीता रसे स्वाद्वी कषायका ।
वृष्णा तिक्ता च मधुरा अमं पित्तं तृष्णं जयेत् ॥ २ ॥

सिता ।

खंडं तु सिकतास्तपं सुशेता शर्करा सिता ।

सिता सुमधुरा रुच्या वातपित्तास्तदाहन्तु ॥ ३० ॥

मृच्छार्थीद्वज्वरान् हंति सुशीता शुक्रकारिणी ॥ ३१ ॥

पुष्पसिताः ।

शीता पुष्पसिता वृष्या रक्तपित्तहरी लघुः ॥ ३२ ॥

सितोपला ।

सितोपला सरा लक्ष्मी वातपित्तहरी हिमा ।

मंधुजा शर्करा स्तक्षा कफपित्तहरी गुरुः ॥ ३३ ॥

द्वयतीसारतृट्टदाहरक्तहन्तुवरा हिमा ।

यथायथा स्यान्नैर्मल्यं मधुरत्वं यथायथा ॥ ३४ ॥

स्नेहलाघवशेत्यानि सरत्वं च तथातथा ।

इति इक्षुवर्गः ।

संधानवर्गः ।

—○○—

संधितं धान्यमंडादि कांजिकं कथ्यते जनैः ।

कांजिकं भेदि तीक्ष्णोप्पणं रोचनं पाचनं लघुः ॥ १ ॥

दाहज्वरहरं स्पर्शात्पानाद्वातकफापहम् ।

मापादिवटकैर्युक्तं क्रियते तद्गुणाधिकम् ॥ २ ॥

लघुवातहरं तत्त्वं रोचनं पाचनं परम् ।

शूलाजीर्णविवंधामनाशनं वस्तिशोधनम् ॥ ३ ॥

शोपमृच्छान्नमार्तानां मद्कंडुविशोषिणाम् ।

कुषिनां रक्तपित्तानां कांजिकं न प्रशस्यते ॥ ४ ॥

१ दै० भा० बूरा मिश्री वं० भा० चिनी । मिश्री ॥ फा० खरी सकर
नवात । ई० शुरिपाईद्वयुगरकेडी । २ फूल की मिठाई हुई । गुलखंड गुल-
कन्द । ३ कूजेकी मिसरी । ४ मधुकी बनाई हुई । शर्करा मीनिडी शुक्ला सिता
च चाटुकामजा । अहिच्छत्रा तु सिकता शुद्धा शुभ्रा सितोपला ॥

पांडुरोगे यक्षमरोगे तथा शोषातुरेषु च ।
 क्षतक्षीणे तथा श्रांते मंदज्वरनिपीडिते ॥ ५ ॥
 एतेषां त्वहितं प्रोक्तं कांजिकं दोषकारकम् ।
 तुषोदकं यवैरामैः सतुषैः शकलीकृतैः ॥ ६ ॥
 तुषांलु दीपनं हृदयं पांडुक्रिमिगदापहम् ।
 तीक्ष्णोष्णं पाचनं पित्तरक्तकृद्दस्तशूलनुत् ॥ ७ ॥
 सौवीरं तु यवैरामैः पक्वैर्वा निस्तुषैः कृतम् ।
 गोधूमैरपि सौवीरमाचार्य्याः केचिद्वाचिरे ॥ ८ ॥
 सौवीरं तु ग्रहण्यर्थः कफन्नं भेदि दीपनम् ।
 उदावतांगमर्दास्थशूलानाहेषु शस्यते ॥ ९ ॥
 आरनालं तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषीकृतैः ।
 पक्वैर्वा संधितैस्तत्तु सौवीरसदृशं गुणैः ॥ १० ॥
 धान्याम्लं शालिचूर्णच्च कोद्रवादिकृतं भवेत् ।
 धान्याम्लं धान्ययोनित्वात्प्रीणनं लघु दीपनम् ॥ ११ ॥
 अरुचौ वातरोगेषु सर्वेषां स्थापने हितम् ।
 शंडाकीराजिकायुक्तैः स्यान्मूलकदलद्रवैः ॥ १२ ॥
 सर्षपस्वरसैर्वापि शालिपिष्टकसंयुतैः ।
 शंडाकी रोचनी गुर्वीं पित्तश्लेष्मकरी समृता ॥ १३ ॥
 कंदमूलफलादीनि सस्तेहलवणानि च ।
 यत्र द्रवेऽभिषूयते तच्छुक्तमभिधीयते ॥ १४ ॥
 शुक्तं कफन्नं तीक्ष्णोष्णं रोचनं पाचनं लघु ।
 पांडुक्रिमिहरं रुक्षं भेदनं रक्तपित्तकृत् ॥ १५ ॥
 कंदमूलफलाठयं यत्तत्तु विज्ञेयमासुतम् ।
 शदुच्यं प्राचनं वातहरं लघु विशेषतः ॥ १६ ॥
 मद्यं तु सीधुमैरैयमिरा च मंदिरा मुरा ।
 कादेवरी वार्णी च हालापि बलवल्लभा ॥ १७ ॥

१ यवैः उदकसंहितैः संधानवर्गोक्त्वात् ।

पेयं यन्मादकं लोके तन्मद्यमभिधीयते ।
 यथारिष्टं सुरासीधुरासवाद्यमनेकधा ॥ १८ ॥
 मद्यं सर्वं भवेदुप्पं पित्तकृद्वातनाशनम् ।
 भेदनं शीघ्रपाकं च रुक्षं कफहरं परम् ॥ १९ ॥
 अम्लं च दीपनं हृच्यं पाचनं चाशुकारि च ।
 तीक्ष्णं सूक्ष्मं च विशदं व्यवायि च विकाशि च ॥ २० ॥
 अरिष्टम् ।

पक्वोषधां दुसिद्धं यन्मद्यं तत्स्यादरिष्टकम् ।
 अरिष्टं लघुपाकेन सर्वतश्च गुणाधिकम् ॥ २१ ॥
 अरिष्टस्य गुणा ज्ञेया वीजद्रव्यगुणैः समाः ।
 शालिषष्टिकपिष्ठाद्यैः कृतं मद्यं सुरा स्मृता ॥ २२ ॥
 सुरा गुर्वी वलस्तन्यपुष्टिमेदः कफप्रदा ।
 ग्राहिणी शोथगुल्माशोग्रहणीमूवकृच्छनुत् ॥ २३ ॥
 पुनर्नवाशालिषष्टिविहिता वारुणी स्मृता ।
 संहितैस्तालखर्जूरसैर्या सापि वारुणी ॥ २४ ॥
 सुरावद्वारुणी लघवी पीनसाधमानशूलनुत् ।
 इक्षोः पक्वे रसैः सिद्धैः सीधुः पक्वरसश्च सः ॥ २५ ॥
 आमैस्तरेव यः सीधुः स च शीतरसः स्मृतः ।
 सीधुः पक्वरसः श्रेष्ठः स्वराग्निबलवर्णकृत् ॥ २६ ॥
 वातपित्तकरः सद्यः स्नेहनो रोचनो हरेत् ।
 विवृद्धमेदः शोफार्शः शोषोदरकफामयान् ॥ २७ ॥
 तस्मादलपगुणः शीतरसः संलेखनः स्मृतः ।
 यदपक्वोषधां दुभ्यां सिद्धं मद्यं स आैसवः ॥ २८ ॥

१ अरिष्टं मद्यमिते लोके । यथा द्राक्षारिष्टं, दशमूलारिष्टं, वबूअरिष्टम् ।
 २ सुरातो भेदार्थं लव्चीति । ३ यथा लोहासत्रादिः । आसवस्य गुणा ज्ञेया
 वीजद्रव्यगुणैः समाः ।

मद्यं नवमभिव्यंदि त्रिदोषजनकं सरम् ।

अहूद्यं बृहंणं दाहि दुर्गंधं विशदं गुरु ॥ २९ ॥

जीर्णं तदेव रोचिषु कृमिश्लेष्मानिलापहम् ।

हृद्यं सुगंधि गुणवल्लद्धु स्त्रीतोविशोधनम् ॥ ३० ॥

सात्त्विके गीतहास्यादि राजसे साहसादिकम् ।

तामसे निंद्रकर्मणि निद्रां च मदिरी चरेत् ॥ ३१ ॥

विधिना मात्रया काले हितैरन्नैर्यथावलम् ।

प्रहृष्टो यः पितैन्मद्यं तस्य स्याद्मृतोपमम् ॥ ३२ ॥

गंधनाशः ।

मुस्तैलवालगुडजीरकधान्यकैला

यश्वर्वयन् सदासि वाचमभिव्यनात्ति ।

स्वाभाविकं मुखजमुज्ज्ञाति पूतिगंधं

गंधं च मद्यलशुनादिभवं च नूनम् ॥ ३३ ॥

इति संधानवर्गः ।

द्रव्यपरीक्षा ।

सूक्ष्मास्थिमांसला पश्या सर्वकर्मणि पूजिता ।

क्षितांभसि निमज्जेत्या भल्लातक्यस्तथोत्तमाः ॥ १ ॥

वाराहमूर्ढवत्कंदो वाराहीकंदसंज्ञकः ।

सौवर्चलं तु काचाभं सेंधवं स्फटिकप्रभम् ॥ २ ॥

सुवर्णच्छविकं ज्ञेयं स्वर्णमाक्षिकसुत्तमम् ।

ईङ्गोपप्रतीकाशं मनोहा चोत्तमा मता ॥ ३ ॥

श्रेष्ठं शिलाजतु ज्ञेयं प्रक्षिप्तं न विशीर्यते ।

तोयपूर्णे कांस्यपात्रे प्रतानेन विवर्द्धते ॥ ४ ॥

कर्पूरस्तुवरः स्त्रिगः एला सूक्ष्मफला वरा ।

श्वेतचन्दनमत्यंतं सुगन्धिगुरु पूजितम् ॥ ५ ॥

१ गुडतज्जीमोथा । वा गुडत्वक् । दालचीनी ।

रक्तचन्दनमत्यंतं लोहितं प्रवरं मतम् ।
 काकतुंडनिभः स्त्रिग्धो गुरुः श्रेष्ठोऽगुरुर्मतः ॥ ६ ॥
 सुगंधि लघु स्तक्षं च सुरदारु वरं मतम् ।
 सरलं स्त्रिग्धमत्यर्थं सुगंधि च गुणावहम् ॥ ७ ॥
 आतिपीता प्रशस्ता तु ज्ञेया दारुनिशा वुधैः ।
 जातीफलं गुरु स्त्रिग्धं समं शुभ्रांतरं वरम् ॥ ८ ॥
 मृद्रीका सोत्तमा ज्ञेया या स्याह्नोस्तनसन्निभा ।
 केरमर्दफलाकारा मध्यमा सा प्रकीर्तिता ॥ ९ ॥
 खंडं तु विमलं श्रेष्ठं चन्द्रकान्तिसमप्रभम् ।
 गव्याज्यसदृशं गंधं रुच्यं मधु वरं स्मृतम् ॥ १० ॥
 स्वभावतो हितानि ।

शालीनां लोहिता शाली षष्ठिकेषु च षष्ठिका ।
 शूकधान्येष्वपि यवो गोधूमः प्रवरो मतः ॥ ११ ॥
 शिंविधान्ये वरो मुद्दो मस्त्रश्वादकी तथा ।
 रसेषु मधुरः श्रेष्ठो लवणेषु च सैंधवम् ॥ १२ ॥
 दाढिमामलकं द्राक्षा खर्जुरं च पैसूषकम् ।
 राजादनं मातुलुंगं फलवर्गं प्रशस्यते ॥ १३ ॥
 पत्रशाकेषु वास्तकं जीवंती पोत्तिका वरा ।
 पटोलं फलशाकेषु कंदशाकेषु सूरणम् ॥ १४ ॥
 एणः कुरंगो हँरिणो जांगलेषु प्रशस्यते ।
 पक्षिणां तित्तिरी लावो वरो मत्स्येषु रोहितः ॥ १५ ॥
 जलेषु दिव्यं दुर्घेषु गव्यमाज्येषु गोभवम् ।
 तेलेषु तिलजं तेलमेक्षवेषु सिता हिता ॥ १६ ॥

१ दे० भा० मुनका । २ दे० भा० करौंदी दाख किसमिस । ३ दे०
 भा० फालसा खिरणी । ४ दे० भा० विजौरा । ९ हरिणस्ताम्रवर्णः स्यात्
 एगः कुण्डलया मतः । कुरंगस्ताम्र उद्धितो हरिणाकृतिको महान् ।

स्वभावादहितानि ।

शिंच्रीषु माषान् ग्रीष्मतौ लवणेष्वौषरं त्यजेत् ।

फलेषु लकुचं शाके सार्षपं न हितं मतम् ॥ १७ ॥

गोमांसं ग्राम्यमांसेषु न हिता महिषीव सा ।

मेषीपियः कुसुंभस्य तैलं त्याज्यं च फाणितम् ॥ १८ ॥

संयोगविरुद्धानि ।

मत्स्यमानूपमांसं च दुग्धयुक्तं विवर्जयेत् ॥ १ ॥

कपोतं सर्षपस्त्रेहभर्जितं परिवर्जयेत् ॥ १९ ॥

मत्स्यानीक्षुविकारेणः तथा क्षोद्रेण वर्जयेत् ।

सकून्तमांसपयोयुक्तानुष्णेदर्थिविवर्जयेत् ॥ २० ॥

उष्णीर्नभोंडुना क्षोद्रं पायसं कृशरान्वितम् ॥ २१ ॥

दशाहमुषितं सर्पिः कांस्ये मधुघृतं समम् ।

कृताक्रं च कषायं च पुनरुष्णीकृतं त्यजेत् ॥ २२ ॥

एकत्र बहुमांसानि विरुद्धयते परस्परम् ।

मधु सर्पिर्वसा तैलं पानीयं वा पयस्तथा ॥ २३ ॥

भेषजसंकेतः ।

लवणं सैंधवं प्रोक्तं चन्दनं रक्तचन्दनम् ।

चूर्णलेहासवस्त्रेहाः साध्या धवलचन्दने ॥ २४ ॥

कषायलेपयोः प्रायो युज्यते रक्तचन्दनम् ।

अंतःसम्मार्जने ज्ञेया ह्यजमोदा यवानिका ॥ २५ ॥

बहिःसंमार्जने सैंव विज्ञातव्याऽजमोदिका ।

पंयःसर्पिःप्रयोगेषु गठ्यमेव हि गृह्यते ॥ २६ ॥

शकुद्रसो गोमयकं भूत्रं गोभूत्रसुच्यते ।

प्रतिनिधिः ।

चित्रकाभावतो दंती क्षारः शिखरिजोऽथवा ॥ २७ ॥

१. फाणितं, छोया, राव । २. शिखरि, अपामार्गः ।

अभावे धन्वयासस्य प्रक्षेप्या तु दुरालभा ।
 तगरस्याप्यभावे तु कुष्ठं दद्याद् भिषग्वरः ॥ २८ ॥
 मूर्वाभावे त्वचो ग्राह्या जिंगनीप्रभवा बुधैः ।
 अहिंस्याया अभावे तु मानकन्दः प्रकीर्तिः ॥ २९ ॥
 लङ्घमणाया अभावे तु नीलकंठशिखा मता ।
 वकुलाभावतो देयं कहारोत्पलं क्षजम् ॥ ३० ॥
 नीलोत्पलस्याभावे तु कुमुदं देयमिष्यते ।
 जातीपुष्पं न यत्रास्ति लवंगं तत्र दीयते ॥ ३१ ॥
 अर्कपर्णादि पयसो ह्यभावे तद्रसो मतः ।
 पौष्कराभावतः कुष्ठं तथा लांगल्यभावतः ॥ ३२ ॥
 स्थेणेयकस्याभावे तु भिषग्विर्भद्रायते गदः ।
 चविकागजपिष्यल्यो पिष्पलीमूलवत् स्मृतौ ॥ ३३ ॥
 अभावे सोमराज्यास्तु प्रेपुन्नाटफलं मतम् ।
 यदि न स्यादाहूँनिशा तदा देया निंशा बुधैः ॥ ३४ ॥
 रसांजनस्याभावे तु सम्यग् दार्वी प्रयुज्यते ।
 सोमराप्त्रचभावतो देया स्फुटिका तद्वणा जनैः ॥ ३५ ॥
 तालीसपत्रकाभावे स्वर्णताली प्रशस्यते ।
 भागर्यभावे तु तालीसं कंटकारी जटाथवा ॥ ३६ ॥
 रुचिकाभावतो दद्यात् लवणं पांसुपूर्वकम् ।
 अभावे मधुयष्ट्रांस्तु धातकीं च प्रयोजयेत् ॥ ३७ ॥
 अम्लवेतसकाभावे चुक्रं दातव्यमिष्यते ।
 द्राक्षा यदि न लभ्येत् प्रदेयं काश्मरीफलम् ॥ ३८ ॥
 तयोरभावे कुसुमं वन्धूकस्य मतं बुधैः ।
 लवंगकुसुमं देयं नखस्याभावतः पुनः ॥ ३९ ॥

१ सोमराजी, वाकुची । २ चक्रमर्दफलम् । ३ दारुहल्दी । ४ हरिद्रा ।
 ५ तेजवा मटी, स्फुटिका, फटकरी । ६ रुचकं, चौहार ।

कस्तूर्यभावे कक्षोलं क्षेपणीयं विदुर्बुधाः ।
 कक्षोलस्याप्यभावे तु जातीपुष्पं प्रदीपते ॥ ४० ॥
 सुगन्धिमुस्तकं देयं कर्पूराभावतो बुधैः ।
 कर्पूराभावतो देयं ग्रन्थिपर्णं विशेषतः ॥ ४१ ॥
 कुंकुमाभावतो दद्यात्कुसुंभुक्तुसुम् नवम् ।
 श्रीखंडचन्दनाभावे कर्पूरं देयमिष्यते ॥ ४२ ॥
 अभावे त्वेतयोर्वैद्यः प्रक्षिपेद्रक्तचन्दनम् ।
 रक्तचन्दनकाभावे नवोशीरं विदुर्बुधाः ॥ ४३ ॥
 मुस्ता चातिविषाभावे शिवाभावे शिवा मता ।
 अभावे नागपुष्पस्य पद्मकेसरमिष्यते ॥ ४४ ॥
 मेदाजीवकक्षकोली कङ्गिद्विद्वेऽपि चासीति ।
 वरीविदार्यश्वगंधावाराहीश्व क्रमात् क्षिपेत् ॥ ४५ ॥
 वाराह्याश्व तथाभावे चर्मकारालुको मतः ।
 वाराहीकंदसंज्ञस्तु पश्चिमे गृष्टिसंज्ञकः ॥ ४६ ॥
 वाराहीकंद एवान्यश्वर्मकारालुको मतः ।
 अनूपे स भवेदेशे वाराह इव लोमवान् ॥ ४७ ॥
 भल्लातकासहत्वे तु रक्तचन्दनमिष्यते ।
 भल्लाताभावतश्चित्रं नलश्चेक्षोरभावतः ॥ ४८ ॥
 सुवर्णाभावतः स्वर्णमाक्षिकं प्रक्षिपेदबुधः ।
 श्वेतं तु माक्षिकं ज्येयं बुधैराजतवद्युवम् ॥ ४९ ॥
 माक्षिकस्याप्यभावे तु प्रदद्यात् स्वर्णगौरिकम् ।
 सुवर्णमथवा रौप्यं मृतं यत्र न लभ्यते ॥ ५० ॥
 तत्र कांतेन कर्माणि भिषक्कुर्याद्विचक्षणः ।
 कांताभावे तीक्ष्णलोहं योजयेद्वैद्यसत्तमः ॥ ५१ ॥
 अभावे मौक्तिकस्यापि सुक्ताशुक्तिं प्रयोजयेत् ।
 मधु यत्र न लभ्येत तत्र जीर्णगुडो मतः ॥ ५२ ॥

मत्स्यं डवभावतो दद्युर्भिषजः सितशर्कराम् ।

असंभवे सितायास्तु बुधः खंडं प्रयोजयेत् ॥ ५३ ॥

क्षीराभावे रसो मौद्रो मासूरो वा प्रदीयते ।

अत्र प्रोक्तानि वस्तूनि यानि तेषु च तेषु च ॥ ५४ ॥

योज्यमेकतराभावे परं वैद्येन जानता ।

रसवीर्यविपाकाद्यैः समं द्रव्यं विचित्य च ॥ ५५ ॥

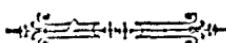
युञ्ज्याद्विविधमन्यद्वा द्रव्याणां तु रसादिवित् ।

योगे यदप्रधानं स्यात्स्य प्रतिनिधिर्मतः ॥ ५६ ॥

यत्तु प्रधानं तस्यापि सदृशं नैव गृह्णते ॥

इति द्रव्यपरीक्षादिवर्गः ।

अनेकार्थवर्गः ।



अथमंतकः । अम्लाणिका । कोविदारश्च ॥ कुलकः ।
 पटोलः । कुपीलुः । कोशातकी । महाकोशातकी । राज-
 कोशातकी च ॥ चुक्रिका । अम्लिका । चांगेरी च ॥ तिंति-
 डीकम् । वृक्षाम्लाम्लिका च ॥ दीप्यका । यवान्यजमोदा-
 च ॥ मस्तकः । फणिजकः । पिंडीतकश्च ॥ रुचकम् ।
 सौवर्चलम् । वीजपूरकं च ॥ लोणिका । लोणीशाकं-
 चांगेरीशाकं च ॥ वाहीकम् । कुंकुमम् । हिंगं च ॥ स्वादु-
 कंटकः । गोक्षुरोविकंकितश्च ॥ अग्निमुखी । भल्लातकी-
 लांगली च ॥ अग्निशिखम् । कुंकुमम् । कुसुंभश्च ॥ अजशृंगी ।
 मेषशृंगी । कर्कटशृंगी च ॥ प्रियंगुः । फलिनी । कंगुश्च ॥
 भृंगः । भृंगराजस्तवक् च ॥ समंगा । मंजिष्ठा । लज्जालुश्च ॥
 अमोदा । विडंगम् । पाटली च ॥ मोचा । कद्ली । शालम-
 लिश्च ॥ कुटन्नटः । स्योनाकः । केवरी । मुस्तं च ॥ कनटी ।

धनिका । मनःशिला च ॥ घोंटा । पूरा । बद्री च ॥ विपुडा ।
 विवृत् । वृहदेला च ॥ शटी । कर्चूरः । गंधपलाशी च ॥
 दंतशठः । जंबीरः । कपित्थश्च ॥ दंतशठा । आम्लिका । चां-
 गेरी चः ॥ अरुणा । मंजिष्ठा । अतिविषा च ॥ कर्णा पि-
 प्पली । जीरकं च ॥ तालपर्णी । मुसली । मुरा च ॥ पीङ्गु-
 पर्णी । मूर्वा । विंबी च । ब्राह्मी । भार्गी । स्पृक्का च ॥
 अपराजिता । विषुक्रांता । शालपर्णी च ॥ आस्फोता ।
 अपराजिता । शारिवा च ॥ पारावतपदी । ज्योतिप्मती ।
 काकजंघा च ॥ शारदी । शारिवा । जलपिप्पली च । उग्रगंधा ।
 वचा । यवानी च ॥ परिव्याधः । कर्णिकारः । जलवेतसश्च ॥
 अंजनम् । स्त्रोतोंजनम् । सौंवीरं च ॥ अश्रिः । चित्रकः । भ-
 ल्लातकश्च ॥ क्रिमिन्नः । विडंगः । हारिद्रा च ॥ तेजनः शरः ।
 वैषुश्च । तेजनी । तेजोवती । मूर्वा च ॥ रोचना । गोरोचना ।
 रक्तोत्पलं च ॥ राजादनम् । क्षीरिका । प्रियालश्च ॥
 शकुलादनी । कटुका । जलपिप्पली च ॥ गोलोभी श्वेतदूर्वा ।
 वचा । पझा । पञ्चारिणी । भार्गी च ॥ श्यामा । सारिवा ।
 प्रियंगुश्च ॥ उत्तमा । त्रिफला । सर्वतोभद्रा च ॥ धान्यं धान्याकं
 शाल्यादि च ॥ सहस्रवीर्या । नीलदूर्वा । महाशतावरी च ॥
 सेव्यम् । उशीरम् । लामज्जकं च ॥ उदुंबरः । जंतुफलः ।
 ताम्रं च ॥ ऐंद्री । इंद्रवारुणी । इंद्राणी च ॥ कटंभरा ।
 कटुका । स्योनाकं च । क्षारः । यवक्षारः । स्वर्णिका च ॥
 गांधारी । दुरालभा । गंधपलाशी च ॥ चित्रा । इंद्रवारुणी
 वृहदंती च ॥ तुंडकेशी । कर्पासी । विंबा च ॥ धारा । गुडूची ।
 क्षीरकाकोली च ॥ बालपत्रः । खदिरः । यवासश्च ॥ वारी । बालकम् ।
 उदकं च ॥ अंगारवल्ली । भार्गी । गुंजा च ॥ अमृणालम् । उशीरम् ।
 लामज्जकं च ॥ कुंडली । गुडूची । क्षेत्रिहारश्च ॥ गांधकल्पी ॥

प्रिग्रंगुः । चंपककलिका च ॥ दीर्घमूलः । यवासः । शालपर्णी च ॥
 पुष्पफलः । कपित्थः । कूप्पांडश्च ॥ पोटगलः । नलः । कासश्च ॥
 यवफलः । कुटजो । वंशश्च ॥ विशा । शुंठयातीविषा च ॥
 शीताशिवम् । सेंधवम् । मिश्रेया च ॥ कर्कशः । कंपिलः ।
 कासमर्दश्च ॥ चर्मकपा । शातला । मांसरोहिणी च ॥ नंदिवृक्षः ।
 अंथत्यभेदः । तुणिश्च । पयः । क्षीरमुदकं च ॥ स्पृहा । दूर्वा । मां-
 सरोहिणी च ॥ सिंही । वृहती वासा च ॥ कतकम् । विडलवणम्
 निर्मलीफलं च ॥ कंटकाढचः । कुञ्जकः । शालमली च ॥ यक्ष-
 धूपः । सरलानिर्यासः । रालश्च ॥ द्राविडी । शटी । सूक्ष्मैला च ॥
 हट्टविलासिनी । हरिद्रा । नखी च ॥ तिलपर्ण । रक्तचंदनम् ।
 ग्रंथिपर्ण च ॥ मधुरः । जीवकः । जीवनीयगणश्च ॥ लोह
 द्रावणी । गंडदूर्वा । अम्लवेतसश्च ॥ नागिनी । तांबूली ।
 नागपुष्पी च ॥ मृदुरेचनी । त्रिवृत् । मार्किङ्का च ॥ नटः ।
 श्योनाकः । अशोकश्च ॥ वनस्पतिः । वटः । नंदिवृक्षश्च ॥
 मंदारः । श्वेतार्कः । महानिंवश्च ॥ अंबुजः । कमलम् । इज्जलश्च ॥
 कवरी । वर्वरी । हिंगुपत्री च ॥ कुमारी । वृत्तकुमारिका ।
 शतपत्री च ॥ वरतिक्तकः । पाठा । पर्यटश्च ॥ चित्रकः । पाठा ।
 उनलनामा च ॥ यज्ञियः । खादिरः । पलाशश्च ॥ रक्तबीजः ।
 अरिषुकः । कंदूरी च ॥ श्वारश्रेष्ठः । पलाशः । मोक्षकश्च ॥ श्वेत-
 पुष्पः । श्वेतार्कः । इंद्रवारुणी च ॥ तुवरी । सौराष्ट्री । आढकी
 च ॥ कुंभिका । पूगफला । वारिपर्णी च ॥ राजपुत्रिका । रेणुका ।
 जाती च ॥ रक्तपुष्पः । रक्तार्कः । कंदूरी च ॥ सतला शातला ।
 वासंती च ॥ विषमुष्टिकः । महानिंवः । विषतिंदुकश्च ॥ रक्त-
 फला । स्वर्णवल्ली । वचश्च ॥ चंद्रहासा । गुडूची । लक्ष्मणा च ॥

त्र्यर्थकम् ।

क्रमुकः । पूगः । तूदः । पट्टिकालोब्रथ ॥ क्षुरकः । कोकिलाक्षः । गोक्षुरः । तिलकपुष्पं च ॥ प्रियकः । प्रियंगुः । कदंबोऽसनश्च ॥ पृथ्वीका । कालाजाजी ॥ बृहदेला । हिंगुपत्री च ॥ भतीकम् । भूनिंवः । कत्तृणम् । भूस्तृणाश्च ॥ सोमवल्कः । कट्टफलः । खदिरः ॥ धृतपूर्णकरंजश्च ॥ सौगंधिकम् । कहारम् । कत्तृणम् । गंधकं च ॥ भृंगः । भृंगराजः । त्वक्भ्रमरश्च ॥ अरिष्टः । निंवः । रसोनम् । मद्यं च ॥ मर्कटी । कपिकच्छूः । अपामार्गः । करंजी च ॥ कृष्णा । पिष्पली । कालाजाजी । नीली च ॥ क्षीरिणी । दुमिथिका काकोली । श्वेतसारिवा च ॥ मधुपर्णी । गुडूची । गंभारी नीली च ॥ मंडूकपर्णः । स्योनाकः । मंजिष्ठा । ब्रह्ममंडूकी च ॥ श्रीपर्णी । गंभारी । गणकारिका । कट्टफलश्च ॥ अमृता । गुडूची । हरीतकी । धात्री च ॥ अनंता । दुरालभा । नीलदूर्वा । लांगली च ॥ रिष्यप्रोक्ता । अतिवला महाशतावरी । कपिकच्छूश्च ॥ कृष्णवृत्ता । पाटला । गंभारी । माषपर्णी च ॥ जीवंती । गुडूची । शाकभेदः । वंदा च ॥ लता । सारिवा । प्रियंगुः । ज्योतिष्मती च ॥ ससुद्रान्ता । दुरालभा । कर्पासी । स्पृक्का च ॥ हैमवती । हरीतकी । श्वेतवचा । पीतदुग्धसेहुङ्डः ॥ अव्यथा । हरीतकी । महाश्रावणी । पद्मचारिणी च ॥ षट्टयंथा । वचा । गंधपला । शीकरंजी च ॥ ताम्रपुष्पी । धातकी । पाटला । वरदा च ॥ वरदा । अश्वगंधा । सुवर्चलाँ । वाराही च ॥ इक्षुगंधा । काशः । कोकिलाक्षः । क्षीरविदारी च ॥ कालस्कंदः ।

१ छरहुल । २ गेठी ।

तमालः। तिंदुकः। कालखदिरश्च। महोषधम् ॥ शुंठी। रसोनो ।
 विषं च ॥ मधु क्षोद्रम्। पुप्परसः। मद्यं च ॥ कपीतनः। आम्रातकः ।
 शिरीषः। गर्दभांडश्च ॥ मदनः। पिंडीतकः। धन्तूरः। सिक्खकं च ॥
 शतपर्वा । वंशः। दूर्वा । वचा च ॥ सहस्रवेधी । अम्लवेतसः ।
 नृगमदः। हिंगु च ॥ ताम्रपुष्पी । धातकी । पाटला । श्यामा ।
 त्रिवृच्च ॥ सदापुष्पः। श्वेतार्कः। रक्तार्कः। कुंदश्च ॥ सुरभिः ।
 शल्की । सुरेलवालुकं च ॥ लक्ष्मीः। क्रद्धिर्वृद्धिः। शमी च ॥
 कालानुसार्यम्। कालीयकम्। तगरम्। शैलेयं च ॥ चांपेयः। चंपकः ।
 नागकेसरः। पद्मकेसरश्च ॥ नादेयी । गणकारिका । जलजंबूः ।
 जलवेतसश्च ॥ पाक्यम्। विडम्। सौवर्चलम्। यवक्षारश्च ॥ विश-
 ल्या । लांगली । गुद्धूची । लघुदंती च ॥ इंद्रदुः। ककुभः। देवदा-
 रुः। कुटजश्च ॥ काश्मीरम्। कुंकुमम्। पुष्करमूलम् (खी) गं-
 भारी च ॥ गुंद्रः। पटेरकः। सुंजः। शरश्च ॥ गुंद्रा। प्रियंगुः। फलि-
 ती भद्रसुस्तकश्च ॥ लुक्रम्। शुक्रकम्। अम्लवेतसम्। वृक्षाम्लः ॥
 पारिभद्रः। निंवः। पारिजातः। देवदारु च ॥ पीतदारु। हरिद्रा
 देवदारु । सरलश्च ॥ वीरः। ककुभः। वीरणम्। काकोली च ॥
 वीरतरुः। ककुभावीरणम् । शरश्च ॥ मयूरः। अपामार्गः ।
 अजमोदा । तुत्यं च ॥ रक्तसारः। रक्तचंदनम् । पतंगः। खदिरः ।
 वद्रा । सुवर्चला । अश्वगंधा । वाराही च ॥ वशिरः ।
 रक्तापामार्गः । गजापिष्पली । समुद्रलवणं च ॥ सौवीरम् ।
 अंजनभेदः। वद्रम्। संधानभेदश्च ॥ वंजुलः। अशोकः ।
 वेतसः। तिनिशश्च ॥ शिला । मनःशिला । शिलाजतु ।

१ निर्झोडी पीलणवृक्षे । अयं पत्रकांडफलादिभिरश्वत्याकारः ।

गैरिकं च ॥ सोमवल्ली । वाङुची । गुडूची । ब्राह्मी च ॥ अक्षी-
ब्रः । सौभांजनः । महानिंबः । समुद्रलवणं च ॥ धामार्गवः ।
रक्तापामार्गः । राजकोशातकी । महाकोशातकी च ॥ दुःस्प-
र्शः । यवासः । कंटकारी । कपिकच्छुश्च ॥ पलाशः । किंशुकः ।
गंधपलाशीपत्रं च ॥ कालमेषी । मंजिष्ठा । वाङुची । श्यामा ।
त्रिवृद्ध ॥ पलंकषः । गुगुलुगोऽक्षुरः । लाक्षा च ॥ मधुरसा ।
द्राक्षा । सूर्वा । गंभारी च ॥ रसा । रासना । शङ्खकी । पाठा
च ॥ श्रेयसी । हरीतकी । रास्ता । गजपिप्पली च ॥ लोहम् ।
अथः । कांस्यमगुरु च ॥ सहा । मुहूर्पर्णी । बैलाभेदः । शत-
पत्री ॥ लुवहा । रास्ता । नाकुली । सिंहवारः ॥ कठिल्लकः ।
कारवेल्लम् । रक्तपुनर्नवा । कूणवर्वरी च ॥ मधूलिका । मूर्वा ।
यष्टी मधूकश्च ॥ वितुन्नकम् । धान्यकम् । तुत्थकम् । गोनर्दश्च ॥
देवीसपृक्षा । मूर्वा कर्कोटी च ॥ वसुकः । शिवमल्ली । श्वे-
तार्कः रोमकं च ॥ गडीरः । शाकविशेषः । मंजिष्ठा । गंड-
द्वूर्वा च ॥ लांगली कलिहारी । जलपिप्पली । नारिकेलश्च ॥
पिच्छिला । शिशिपा । शालमालिः । भूतवृक्षश्च ॥ महासहा ।
माषपर्णी । अम्लातकः । कुञ्जकश्च ॥ चंद्रिका । मेथी । चंद्र-
शूरः । वेतकंटकारी च ॥

चतुरर्थकम् ।

थेतपुष्पा । इंद्रवारुणी । सिंहवारः । थेतार्कः । सैरेयकश्च ॥
कारबी । पृथ्वीका । शतपुष्पा । कालाजाजी । अजमोदा च ॥
अंबष्टपाठा । चांगेरी । माचिका । यूथिका च ॥

१. ककही, कंगी ॥ २. सेवतीगुलाब ॥ ३. गडिनी ।

वहर्थम् ।

अक्षशब्दः स्मृतोऽष्टासु सौवर्चलविभीतिके । कर्षपञ्चा-
क्षरुद्राक्षशकेंट्रिग्रपाशके ॥ १ ॥ काकारब्यः काकमाची च का-
कोली काकणंतिका । काकजंघा काकनासा काकोदुंबरि-
कापि च ॥ २ ॥ सप्तस्वर्थेषु कथितः काकशब्दो विचक्षणैः ।
सर्पद्विरदमेषेषु सीसके नागकेसरे । नागबल्यां नागदंत्यां
नागशब्दब्ध युज्यते ॥ ३ ॥ मांसे द्रवे चेषुरसे पारदे मधुगादिषु
बोले रागे विषे नीरे रसो नवसु वर्तते ॥ ४ ॥

वैद्यानामुपकाराय निधंटोरुपरि कृता ।
टिष्पणी वैद्यराजेन गंगापूर्वकविष्णुना ।

संवत् १९६० माघ शुक्र ५

इतिभावप्रकाशनिधंटुः समाप्तः ।



परिशिष्टनामानि ।

— — — ०५४३०० — — —

संस्कृत	भाषा	संस्कृत	भाषा
अद्रकं ।	आद्र वुखारा	उरगः ।	सीसा
अफलं ।	वीहफल	उत्कटः ।	ऊठकटारा
अवरोहकः ।	असगंध	उण्णपत्रिका ।	चाह
अंगभेदनं ।	कुलत्थी	ऋषिका ।	कसई
अर्द्धचंद्रिका ।	कालीनसोथ	ऐशंगूलं ।	ईसरमूल
अग्निकः ।	कलहारी अजमोद	कर्णपूरः ।	सिरस अशोक
अहिपुष्पं ।	नागकेसर		नीलोत्पल
अमृतफलं ।	नासपाती	कपोतवंका ।	झुलहुल
अवाक्यपुष्पी ।	मीठी सौंफ	कंदपालिका ।	आकंद सूरण
अधर्कर्णः ।	ईसवगोल	कटंभरा ।	भद्राणिका
अजगंधा ।	छोटीजवैन	कंचुकी ।	क्षीरवृक्ष
आजं ।	थूहरदूध	कुंद्रमेचकं ।	गोरक्षचाकुल्या
आरुकं ।	आडू	कांतपाषाणः ।	चुंबक
आह्या ।	घनिआ	काढी ।	सौराप्तिका
आखुपाषाणं ।	संखिया	कालपर्णी ।	कालीनिसोत
इत्कटा ।	सूक्ष्म पत्रिका दीर्घ लोहित यष्टिका धान्यविशेष वा ओकण्ड ॥	काकांडीला । (सेम) कोलशिंबिः	
ईधरं ।	पित्तल	कालमारिषः ।	कालीसील
ईषद्वोलं ।	ईसवगोल	कालावकरकः ।	कालावाडा
उपोदिका ।	पुदीना	कीलालः ।	सल्ट की रस
		कुलिंजरं ।	चिरपोटी
		कुची ।	कुचाई बीज

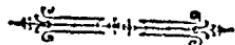
संस्कृत	भाषा	संस्कृत	भाषा
कुलिशं ।	काउज । वं	गोधावती ।	गोहालिया
कुरंगनी ।		मुद्रपर्णी	शोणाल
कुंभी ।	यवासवाका फल	चतुरंगुलं ।	अमलतास की जड़
कुंदनः ।	खोटी मस्तकी	चर्मचटा ।	अजिनपत्रा
कुंदरः ।	तीक्ष्णगंधः	चक्राकः ।	शलगम
कूटर वाहिनी ।	सर्फदत्रिवी	चंडालिनी ।	लमुन, उल
कृष्णवीजं ।	कालादाना	चंडी ।	महिपी, मैस
कुमित्री ।	तमाकू	चंडाली ।	उमा औषधिभेद
कोटिवत्कलं ।	गुडत्वक्	चंद्रलेखा ।	वाकुची
खगः ।	सोना माकखी	चावटी ।	कुंभाङु वा ब्रह्मी
खंडितकर्ण ।	खारकोल कनफोडा	चाविषा ।	चौपकला मूल
गेरुत्वानः ।	सोनामाखी	चेलकं ।	गुवाकत्वक्
गजचिर्भटं ।	कच्चरीचिरभट	जतुका ।	चामचिरिया
गंधपर्णी ।	भडंगी	जलजा ।	मधुयष्टी
गंगापुत्रः ।	गंगाराईळ वं०	जामातृ ।	सूर्यावर्त
गंडीरः ।	शमटशाक	जीवंती ।	दौडीतिगुर्जरदेशे
गंगावती ।	बटगंधारी	जुंगा ।	बृद्धदारुक
गारुडी ।	गरुड़ चूडामणि	जृणः ।	ज्वारधान्य
गांगेयी ।	सुस्ता, सुथरं	ज्वालामरीचं ।	लालमिर्च
गिलोडवं ।	गल्होट	जोंगकं ।	अगुर
ग्रीष्म सुंदरं ।	गीमाशाक	टंगः ।	राजआम्र
गुंठः ।	वृंततृण	टिंडिणिका ।	टिँडैन
गुतस्नेहः ।	अंकोल	तरुणं ।	एरुंड
१ गहड़ो माकिका पझी वृहदपैं स्मृताः द्विती नाम संदर्भिकारः ।		ताम्रवल्ली	मैनफल चित्रकूट

संस्कृत	भाषा	संस्कृत	भाषा
ताम्रकूटं ।	तमाकू	नक्तम् ।	करंजवीज
तिक्तं ।	चिरायता	नागविना ।	नागदंती
तिक्ता ।	कौड	नागर्जुनी ।	दूधी
तिक्तका ।	हिंगोट	नांगा ।	वल्मीकमृत्तिका
दंडोत्पलं ।	श्वेतवला	निकुंभः ।	क्षुद्रदंती
दारमूषा ।	दारुमूसी वा अतीस	निर्विघ्नी ।	न्रसचारिणी
द्विवृतः ।	मैहदी	पयस्या ।	क्षीरकाकोली
दीर्घमूला ।	इयामलता	प्रत्यक्षुष्णी ।	अपामार्गी
दीर्घपिटपी ।	लांगली	पंचतृण ।	अपुठकंडा
दूरमूलं ।	जुवाह	कुशा, काशा, शालि,	
देवदत्तः ।	निव	प्रग्रहः ।	शर, इक्षु,
देवपुष्णी ।	देवहुली	पाषाणजित् ।	कुलत्थी
देवदानी ।	घीयातोरी	पातालनृपतिः ।	सीसा
धन्वंज ।	जांगल मांसरस	पर्विती ।	वेंगामृतिका
धवला ।	श्वेतापगजिता	पाशी ।	वरणा
धन्वंतरीवीजं ।	ढांगढहेला	पिंडारकम् ।	पेढरी
धावनी ।	चाकुल्या	पुलहः ।	मुरदासंग
ध्यामकम् ।	गंधतृण	पुञ्जकम् ।	रसौत
धुनकः ।	लोबान	पुरुषः ।	गुग्गुल
धूम्रपत्रिका ।	हमाकू	पेरुकम् ।	अमरुद
नदीजम् ।	सैंधानमक		
नखरंजकः ।	मैहदी		
नवनीतम् ।	लाड्यागंधक वं०		
		(१) सौराश्री पार्वती मृत्स्ना तथा कांवोज- पर्पटीति शब्दाप्रकाशा ।	
		(२) शोभांजनं च सौवीरं तांत्रिकं पुष्पकं तथा ।	

संस्कृत	भाषा	संस्कृत	भाषा
प्रौष्ठिका ।	मच्छी	मायाफलम् ।	माजू
फणी ।	सुर्फेद चंदन	मारिषा ।	नाठा
फणितजकः ।	पन्हास	मालुकापत्रम् ।	अश्मंतक
वटपत्री ।	पापाणमेद	माद्री ।	अतीस
वहुपुत्रा ।	(जवांह) यवासा	मूलवीरम् ।	पोहकरमूल
चालुपत्रम् ।	पठानीलोध	मोरटः ।	अंकोट
चालुंघ्रिः ।	ज्ञाणा	यज्ञनेता ।	सौमलता
चृहत्पत्रम् ।	हरितकंद	यमचिंचा ।	कच्चीइवली
चृश्चीवम् ।	सुर्फेद इटसिट	रक्तवीजा ।	मूंगफली
वृश्चकाली ।	विलुआवृटी	रात्रिहासकः ।	हारशिंगार
बोटा ।	अलंबुपा	राजावर्त ।	गोविंदमणि
बोलम् ।	फुलसत्व	राजा ।	राजपलांडु
मद्रः ।	देवदारु	राक्षसी ।	राई, मुरा
भव्यम् ।	जीवंती कर्मरंग	रुद्रजटा ।	लटूपरि
भद्रोत्कटा ।	भादांवतक	रैविरम् ।	गेरी, तांवा
भारवाहिनी ।	(वसमा)	रेणुका ।	नेगवीज
	नीलिनी	रोहिणी ।	बडीअरणी
भूचणका ।	मूँगफली	लक्ष्मी ।	लोहा
भूनागः ।	गंडोआ	वैसुः ।	गंधक
भूपणम् ।	हडताल	वराहक्रांता ।	लज्जालृ
भूलता ।	चुच्चत्वक्	वल्द्रम् ।	सूखामांस
सयूरजंत्रा ।	अरल्द	वण्डांगतानः ।	शांता
महावृक्षम् ।	थोहर		
महाराष्ट्रा ।	मरहटी	(१) रक्तं रविस्तु म्लेच्छास्यमिति विक्षः ।	
महापुरुषदेवता ।	शतावर	(२) दोलाथ गंधपापामः पामार्गेवको वमुरिति ॥	

संस्कृत	भाषा	संस्कृत	भाषा
वस्त्रिवः ।	श्वेतबला	श्रूकरी ।	वृद्धदारक
वराहः ।	मुथराँ	पडंगः	भखुडा
वसुकः ।	सांभरनमक	सप्तला ।	सातला
वज्रवल्ली ।	हाडजोड	सर्जकः ।	लोधान
वन्नकर्ण } वज्रिकंदः } वज्रिकंदः } शकरकंदी	हिंगुपत्री चौलाई	समनृपति ।	सुहांजना
घाषिपका ।	वंशसदशाग्रं	सीताफलम् ।	सरीफा
वेत्राग्रम् ।	क चनार	सुदर्शना ।	तानीवेल
शकारिः ।	चर्मकषाकंद	सुरंगी ।	लालसुहांजना
शूनकंदः ।	शतावरी	सुरमिः ।	कुंदरु
शूतसुता ।	पटोउ	स्पृक् ।	पृक्का
शाकं ।	शमठशाक	स्नेहवृक्षम् ।	देवारु
शार्लिंच ।	करंजी	स्थविरः ।	शीलेयं
शार्ङ्गेष्टा ।	नीलिनी	स्वरसः ।	पन्हासः
इयामा ।	लसुन	सौगंधिकम् ।	अनन्तमूल
शावरकंदः ।	रोहिष	हैरिः ।	गुगुलु
इयामलम् ।	जूही रतियां	हंसपादी ।	थानकुनी
शिखंडिनी ।	अतिबला	हस्त्रांगः ।	जीवक
शीतपाकी ।	सरलसाव	हिंसा ।	गुडकाडायि हीस
श्वाहः ।	ज्ञिनाजि	हिंगुपत्रा ।	काकादनी
शुक्तिः	देवदारु	हिंगुपुत्री ।	हिंगुती वाबांकली
श्रीवासः ।	भडंगी	त्र्यष्टिका ।	राई
शुकमाता ।	सूखीमूली	त्रायमोणा ।	वालोयालता वा देववला
शुंठकम् ।	क्षीरकाकोली	त्रिकत्रयं ।	त्रिकटु, त्रिफला त्रिमद्
शुराहा ।	क्रोष्टुविन्ना	त्रिगादी ।	कीटमारिका
शृगालविना ।		त्रुटिः ।	छोटी इलाची

परिशिष्टभाषानामानि ।



मापा	संस्कृत	भाषा	संस्कृत
अम्लवेद ।	अम्लवेतसम्	आंधीङ्गाड ।	अपामार्गः
अग्निज्ञाड ।	दीर्घजीरकम्	इंद्राणी ।	इंद्रवास्णी
अरहड ।	आढकी	उदपर्णी ।	मापपर्णी
असालूँ ।	चंद्रशूरम्	उमजिनी ।	ज्योतिष्मती
अतारकीद्वा ।	अंजरुद	ऊंदर ।	मूषिकम्
अरडोली ।	गोश्तखोरा	कछंजी ।	उपकुंची
अंधाहुली ।	एरंडवीजम्	कठवर ।	कपित्थम्
अंगेशु ।	अवाक्पुष्पी	कणगूगली ।	गुग्गलकणा
अंहप ।	गणकारिका	कट्टवर कठोडी ।	कपित्थमजा
अंकोट ।	मिपगमाता	कवीटफल ।	कपित्थफलम्
अंजरुत ।	दीर्घकालः	कपूर चीनिया ।	पककूरूरम्
अंतर ।	निर्यासविशेषः	कट्टली ।	कंटकारी
आरणे ।	पुष्पसत्त्वम्	कचूर ।	कर्चूरम्
आमी हल्दी ।	वन्यकरीपम्	कछकप ।	कपिकच्छुः
आदों ।	आम्रगंधी हरिद्रा	कधैया ।	काकमाची
आककनपान ।	आद्रिंका	कनगच ।	करंजम्
आसी ।	अर्कपत्रम्	कल्हारी ।	लांगली
अम्लीकाचिया ।	मूलम्	कडाका ।	लंघनम्
	आसवम्	करेले ।	कारबल्दीलता
	अम्लिका वीज	कपास्या ।	कर्पासीवीजम्
१ गलमल । २ अतर ।		कत्तारपाठा ।	कुमारी

भाषा	संस्कृत	भाषा	संस्कृत
कच्छन् ।	काचलवणम्	खपरिया ।	खर्परम्
कहुवावकल ।	धववस्त्वकलम्	खीप ।	प्रसारिणी
कस्स ।	वीरणमूलम्	गवार ।	कुमारी
कसौंदी ।	कासमर्दम्	गजपिण्डी ।	वृहत्पिण्डी
कांडो ।	रक्तमृत्तिका	गड्बा ।	इंद्रबाल्णी
कागण ।	ज्योतिष्मती	गिलवे ।	निंबोऽमृता च
कालाभ्रक ।	कृष्णाभ्रम्	गुड्हल (गुड्हुर्दा) ।	जपाकुमुमम्
कांचली ।	सर्पत्वक्	गोलकाकडी ।	कुलकम्
किरमाल ।	आरग्वथः	गंगेरणा ।	
किसोख्ता ।	पद्मिविशेषः	गुलशकरी ।	नागबला
किरायता ।	केरातः	चव ।	चव्यम्
कीस ।	पीयूपम्	चकवड ।	चक्रमर्दः
कुमेरपाठ ।	पाटली	चंदलेई ।	तंडुलीयः
कुलंजन ।	तांबूलीजटा	चारोली ।	उपकुची
कुचिला ।	विषतिंदुकः	चिंचरीविहना ।	अपामार्गः
कुंदरुः ।	मुकुंदः	चिरपोटन ।	काकमाची
कूठ ।	कुष्ठम्	चिरमटी ।	गुंजा
कूट ।	शालमली	चीलबो ।	वास्तुकम्
कूचकी फली ।	कपिकच्छुः	चूक ।	चांगेरी
केली माहिली ।	कदलीसार	छड ।	शिलापुष्पम्
केसूलोंका चून ।	यलाशपुष्पम्	छीला ।	विनक, पलाशम्
कोबल ।	विष्णुक्रांता	जलकुंभी ।	वारिपर्णी
कंडीर ।	करवीरः	जाल ।	पीलः
खस ।	उशीरम्	जीयोपोता ।	पुत्रजीवः

माया	संस्कृत	माया	संस्कृत
झाझ ।	झावुकः	नागकेसरं ।	नागपुष्पम्
ठेरा ।	अंकोलम्	नागदौैन ।	नागदमनी
डासरया (डांसरा) ।	तिंतिडीकम्	नादवाण ।	कर्पासी
डाम ।	दर्भम्	नागरवेल ।	तांबूलवल्ली
ढोडां ।	खसफलम्	निसोत ।	त्रिवृत्
तसुंत्रा ।	इंद्रवारुणी	निर्मली ।	कृतकम्
ताल ।	हरितालम्	नीलटांच ।	गसडः
तिलकंठी ।	विष्णुकांता	नेगड ।	निर्जुडी
तिलवाणी ।	सूर्यभक्ता	पद्माक ।	पद्मकाष्ठम्
तिंदुकी ।	तिंदुवृक्षः	पत्रज ।	तमालपत्रम्
तूण ।	तुणि	पतंग ।	कुचन्दनम्
तेवरसी ।	त्रिवृत	पंचांगुल ।	एरंडः
तोरं ।	कोशातकी	पठानीलोध्र ।	श्वेतलोध्रस्
त्रायमाणा } सोमलता } चहुला } दृगल ।	देववला	पत्थरफूडी ।	पापाणमेदः
		पाढल ।	पाटल
		फटकडी ।	स्फुटिक
		फ्लफिरंग ।	प्रियंग
दात्यूणी ।	लघुदंती	फरहिंद ।	पारिभद्र
धमासा ।	धन्वयासकः	वावापरो ।	बृद्धदासकः
धव ।	धवः	वंदा ।	त्र
धनवहेर ।	राजवृक्षः	वद्धहल ।	लिकुच
धोली गूँद ।	धातकीनिर्यासः	वमनेटी	भाग
नसल ।	पोटगलः	वावची ।	अवलुञ्ज
नरकचूर ।	वैवमुख्यः	वांझककोटी ।	वंध्याककोट
नवन्या ।	नखी ।	विजयसार ।	वीजव

भाषा	संस्कृत	भाषा	संस्कृत
विसखपरा ।	रक्तपुनर्नेवा	मोचरस ।	शालमलीनिर्यासः
बिजौरा (तुरंज) ।	अम्लवेतसम्	मोरसिखा ।	मग्नुरशिखा
बैद ।	वेतसम्	रात्ना ।	एत्यापर्णी
बोल ।	गंधरसम्	राल् ।	शालनिर्यासः
बौली ।	वंभूलः	रांग ।	त्रिपु
बौलसिरी ।	वकुलः	रुदंती ।	रुद्रवंती
भरहंडा ।	कंटकारी	रेवदचीनी ।	पीतकाष्ठगृ
मसूरा ।	मसूरिका	रोहीस ।	गंधतृणगृ
महलोठी ।	मधुयष्टी	लटजीरा ।	चपामार्गः
मटर ।	कलायः	लाजेरी ।	लज्जालुः
महदी ।	नखरंजकम्	लख ।	तित्तिरिः
मगरेला ।	उपकुंची	वरी ।	शतावरी
मंडुआ ।	निर्गुडी	सर्पाक्षी ।	नाकुली
मंडूर ।	लोहकिञ्चम्	सहदेह ।	महावला
मालकंगुनी ।	ज्योतिष्मती	सतोन्यू ।	सतपर्णी
मुनक्का ।	द्राक्षा	सरकडा ।	मुंजः
माजू ।	मायाफलम्	सरपुंखा ।	प्लीहशशुः
मुर्वा ।	मधूलिका	सरिव ।	शालपर्णी
मुर्दासंग ।	कंकुष्ठम्	सरवन	मापपर्णी
मुच्कुंद ।	क्षम्बवृक्षः	संखाहुली ।	शंखपुष्पी
मेवड ।	निर्गुडी	सामर ।	शाकंभरीयम्
मैडलं ।	मदनफलम्	सामरा ।	न्यकुःमृगः
मोरचूत ।	तुत्थकम्	सांठा ।	इक्षुः
मोठ ।	मकुष्ठकम्	साखोट ।	शाखोटम्

(२२२) भावप्रकाशनिवेष्टपरिशिष्टभाषानामानि ।

भाषा	संस्कृत	भाषा	संस्कृत
सिरन्	शिरीपम्	सोमल् ।	आखुपापाणः
सिन्धरणी ।	दधिशर्करा	संभाद् ।	निर्गुदी
सिंधादा ।	जलफलम्	सांटी ।	पुर्नवा
सरीका ।	सीताफलम्	सोंचरद्धत् ।	सौवर्चलम्
सिण ।	धणः	हरफरेवडी ।	लवडी
सिंगी मौहरा ।	शृंगकम्	हारद्युंगार ।	रात्रिहासकः
सीधा ।	सैधवम्	हुलहुल ।	सुवर्चला सूर्यभक्तः
सस्या ।	शशः	हिंगोरा ।	इंगुदी
सुर्फददोव ।	श्वेतदूर्वा	हिंगुल ।	हिंगुद्वः
श्वेतसर्ज ।	धुनकः	हिंगोटा ।	इंगुदी
सुर्फदद्वावर्ची ।	श्वेतवर्घरी	निउजे ।	निकोचकम्
सुर्पदकंडी ।	श्वेतकरवीरः	सरदा ।	सदासूलम्
सुर्फद खिरसार ।	शुद्धखादिरसारः	गंगेश्वा ।	गांगेश्वकीफलम्

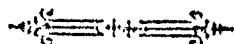
इति परिशिष्टभाषानामानि समाप्तानि ।

पुस्तक मिलनेका पता—

भारुदत्त गुरुदत्त,
श्रीकृष्ण पुस्तकालय सिंद मीठावाजार.
लाहोर.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
“श्रीविङ्गेश्वर” स्टीम् प्रेस,
बंबई.

विक्रिय वैद्यक—ग्रन्थाः ।



नाम.

की. रु. आ.

अष्टाङ्गहृदय—(वाग्भट) मूल सोटा अक्षर वाग्भट विरचित.	२--८
अष्टाङ्गहृदय—(वाग्भट) वाग्भटविरचित तथा पं० रविदत्तकृत भाषा- टीकासहित ।	०--८
अमृतसागर—हिन्दीभाषामें—विना गुरु छोटे नगरमें दवाखाना कर- सकते हैं । इसमें सर्वे रोगोंका वर्णन और वृत्तिलिखेवगयेहैं । ग्लेज कागज.....	२--४
” तथा रफ कागज.....	२--०
अर्कप्रकाश—(रावणकृत) भाषाटीकासमेत । इसमें—नानाप्रकारके यन्त्रोंसे औषधियोंका अर्क खींचना और गुणवर्णन भलीप्रकार कियागयाहै । ग्लेज, कागज.....	१--०
” तथा रफ कागज.....	०१४
स्यायुर्वेदचिन्तामणि—भाषाटीकासहित । पं० बलदेवप्रसादमिश्र संगृ- हीत.....	१--१२
आरोग्यशिक्षा—पं० सुरलीधरशर्मा राजवैद्यसंकलित (भाषामें)	०--५
इलाज्जुलगुरुवा—नूतन मथुराका छपाहै	१--४
कारिकल्पलता—छन्दोवद्ध—हिन्दीभाषामें । केशवसिंहजी तबलुकेदार रचित । इसमें—हाथियोंके शुभाशुभ लक्षण व उनके रोगनाशार्थ अनेक औषधिविधान चित्रोंसमेत वर्णितहै ।	१--०
कामरत्न—योगेश्वर नित्यनाथप्रणीत और विद्यावारिधि पं० ज्वाला- प्रसादजी मिश्रकृत भाषाटीकासमेत ।	१--१२
चर्याचन्द्रोदय—भाषाटीकासमेत । इसमें—व्यंजन वनानेकी क्रिया लिखीहै ।	१--८
चक्रदत्त—भाषाटीकासहित । इसमें और चिकित्साओंके अलावा तील साधनादि प्रकार बहुत अच्छा लिखाहै	३--०

नाम.

की. रु. आ.

चरक्षसंहिता--ठकसाल निवासी वैद्यपञ्चानन पं० रामप्रसाद वैद्योपा-	
व्यायष्टि प्रसादनी भाषाटीकासहित । सुन्दर सुनहरी दो जिल्ड केर्डी हैं. ९--०	
जर्हीप्रकाश--चारोंभाग । जर्हीके उपकारार्थ जर्ही संवंधि- संस्कृत, उर्दू तथा डाकटरी आदि अनेक ग्रन्थोंके आधारसे विभूषित. १--८	
अरतिमिनाशक--भाषाटीका--सर्व प्रकारके दवाइयोंका संग्रह है. १--०	
डाकटरीचिकित्सार्गव--बड़ा--हिन्दीभाषामें--प्रत्येक रोगोंका डाकटरी मतसे और साथ और साथ २ देश वैद्यक मतसे नाम, लक्षण, रोगनिदान, और उपाय आदि लिखेगये हैं । १--८	
सुश्रुतसंहिता--सान्ध्य सटिप्पणसपरिशिष्ट भाषाटीका सहित संपूर्ण १२--०	
सुश्रुतसंहिता--उपरोक्त अलंकारोंसमेत सूत्रस्थान प्रथमभाग ३--०	
सुश्रुतसंहिता--उपरोक्त अलंकारोंसमेत निदान--शारीरस्थान द्वितीय- भाग २--८	
नुश्रुतसंहिता--उपरोक्त अलंकारोंसमेत चिकित्सा व कल्पस्थान तृतीय- भाग ३--८	
नुश्रुतसंहिता--उपरोक्त अलंकारोंसमेत उत्तरतन्त्र चतुर्थभाग ३--८	
सुश्रुतसंहिता--उपरोक्त अलंकारोंसमेत केवलशारीरस्थान १--०	
हंसराजनिदान--भाषाटीकासमेत । इसमें रोगोंकी पहिचान, नाड़ी- परीक्षा, साध्य असाध्यका ज्ञान इत्यादि अनेक विषय वर्णित हैं. १--०	
ज्ञानमैयज्यमंजरी- भाषाटीकासहित । इसमें- प्रत्येक रोगोंपर एक २ औपचिका वैदान्तमतानुसार वर्णन कियागया है । ग्रन्थ छोटाहै किन्तु भिष्मवरोंके देखनेयोग्य है । ०--२	

पुस्तक मिलनेका पता-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीविङ्गटेक्ष्वर” स्टीम प्रेस—बंबई.



COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

I creator of
hinduism
server

